भूमिका ॥

श्लोक

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च ॥
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

प्रकट हो जबकि साक्षात् श्रीभगवत् महाराजने श्रीगीताजीमें अपनी प्राप्तिका मुख्य हेतु भक्तिको ही वर्णन किया है और फिर कृपादृष्टिसे उसके साधन भी श्रीभागवतमें प्रत्येक युगके लिये इस भांतिसे विधान करदीने हैं कि सतयुगमें ध्यान और त्रेतामें यज्ञ और द्वापरमें पूजा और कलियुगमें तो कीर्त्तन ही सार है तो फिर परमपावन और अतिसुलभ केवल भगवत्गुणानुवाद ही भक्तजनोंका जीवन धन ठहरा क्योंकि—

दोहा—हरिपद प्रीति न होय, विन हरिगुण गाये सुनें ॥
भवते छुटत न कोय, विना प्रीति हरिपद भये ॥

इसलिये मैंने सूरदास आदि अष्ट छाप तथा तुलसीदास आदि प्राचीन तथा नवीन भक्तोंके कथन कियेहुए भगवतचरित्रोंको जो अभीतक छपकर विशेष विख्यात न होनेसे कईएक भक्तजनोंको दुर्लभ थे जहां तहांसे संग्रह किया है तथा कछु छपेहुए पदभी चुनकर जो उनके साथ मिलते थे आनंदवृद्धिका हेतु होनेसे उनके वीचमें संचित करदीने हैं और अबकी तृतीयवार अत्यंत विस्तार पूर्वक ६०५३ पद करादिये हैं अर्थात् १००३ पद और ९०० दोहे सो यद्यपि यह सभी पद फुटकर ही थे तथापि जहांतक होसका उन्हें लीलाके क्रम और भावसे ही एकत्र किया गया है और जहांकि वडे वडे ब्रह्मादिक देवताओंने आजतक प्रभुकी विचित्र लीलाओंका पारावार नहीं पाया है और अपने कल्यानतकही सभने यत्न किया है तो फिर यह मंदमति किस गिनतीमें है इसलिये संपूर्ण सज्जनोंसे अतिविनयपूर्वक प्रार्थना है तथा दृढ विश्वास है कि जहां जो कछु भूलचूक हो उसे सुधार लेवेंगे और हरिचरित्र परमपवित्र समझकर अवश्य श्रवण कीर्त्तन करैंगे

दोहा—अपनी ओर निहारके, क्षमाकरो अपराध ॥
जिहिं तिहिं विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति साध॥

और इस परम अमृतमें जो रहस्य है वह वाणीसे परेहै इसलिये भक्तजनोंके निर्मल हृदयमें आपही प्रकाशमान हो जायगा.

रागरत्नाकर तथा भक्तचिन्तामणि संग्रहकर्त्ता
आपका दास भक्तराम जालंधर निवासी.

सूचीपत्र लीलाओंका ॥

इति

हिंडोला झुलनलीला
होरीलीला
मथुरागमनलीला
रघुनाथलीला

सूचीपत्र पदोंका अक्षरोंके क्रमसे।

पद पृष्ठ

पद पृष्ठ

ख

ग

झ

अथ हियहुलास अनुक्रमणिका

इति हियहुलास समाप्त.

अथ रागमालानुक्रमणिका

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रागरत्नाकर तथा भक्तचिंतामणि।

श्रीनिकुञ्जविहारिणेनमः ॥

मंगलाचरणश्लोकाः ॥

अंसालंबितवामकुंडलधरंमंदोन्नतभ्रूलतं।
किंचित्कुंचितकोमलाधरपुटंसाचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयंतंमुदा।
मूलेकल्पतरोस्त्रिभंगललितंध्यायेजगन्मोहनं ॥ १ ॥
जातुप्रार्थयतेनप्रार्थिवपदंनैंद्रेपदेमोदते।
संधत्तेनवयोगसिद्धिषुधियंमोक्षंचनाकांक्षति ॥
कालिंदीवनसीमनिस्थिरतडिन्मेघद्युतौकेवलं।
शुद्धेब्रह्मणिबल्लवीभुजलताबद्धेमनोधावति ॥ २ ॥
ज्ञातंकाणभुजंमतंपरिचितैवान्वीक्षिकीशिक्षिता।
मीमांसाविदितैवसांख्यसरणिर्योगेवितीर्णामतिः ॥
वेदांतःपरिशीलितःसरभसंकिंतुस्फुरन्माधुरी।
धाराकाचननंदसूनुमुरलीमच्चित्तमाकर्षति ॥ ३ ॥
काषायान्नचभोजनादिनियमान्नोवावनेवासतो।
व्याख्यानादथवामुनिव्रतभराच्चितोद्भवःक्षीयते ॥
किंतुस्फीतकलिंदशैलतनयातीरेषुविक्रीडतो।
गोविंदस्यपदारविंदभजनारंभस्यलेशादपि ॥ ४ ॥

नारायणस्यमहिमानमनंतपार
मास्वादयन्नमृतसारमहंतुमुक्तः ॥ १० ॥

दोहा ॥

श्रीगुरु श्रीगोविंदपद, मंगलहित करुँध्यान ।
मंगल श्रीब्रजराज घर, जो पाऊं सन्मान ॥ १ ॥
गोपी ओपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति ।
तिनकेपगबंदनकरूं, जिनकरीकृष्णसोंप्रीति २ ॥
हाथ जोर विनती करूं, सुनो गरीबनिवाज ।
अपनोही कर जानिये, बांहगहेकीलाज ॥ ३ ॥
नंदरायके लाडले, भक्तन प्राण अधार ।
भक्तरामके उरबसो, पहरें फूलन हार ॥ ४ ॥

समाजी वचन ॥

श्रीब्रजराजकुमारबरगाइयेआनंदकीनिधिबरगाइये ॥
भक्तनकोमनभावतोगाइयेश्रीलाडलीललनबरगाइये ॥ ५ ॥

दोहा ॥

नवरसमें कबियन कह्यो, सरस अधिकश्रृंगार।
ताहूमें अतिसरस पुनि, सो यह रासबिहार ॥ ६
नवहि अंग शृंगारके, होरी चोरी दान ।
छलहिकरनबनऋतुगमन,बिरहमिलनअरुमान ७॥
नागरिया नवनागरी, खेलत रास विलास ।
पल पल वारों हेसखो, नित नव नागरिदास ॥ ८
चंद्रमिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार।

मेघैर्मेदुरमंबरंवनभुवःश्यामास्तमालद्रुमैः।
नक्तंभीरुरयंत्वमेवतदिमंराधेगृहंप्रापय॥
इत्थंनंदनिदेशतश्चलितयोःप्रत्यध्वकुंजद्रुमं।
राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरहःकेलयः॥५॥
फुल्लेंदीवरकांतिमिंदुवदनं बर्हावतंसप्रियं।
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंपीतांबरंसुंदरं॥
गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुंगोगोपसंघावृतं।
गोविंदंकलवेणुवादनपरंदिव्यांगभूषंभजे॥६॥
वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्।
पीतांबरादरुणबिंबफलाधरोष्ठात्॥
पूर्णेंदुसुंदरमुखादरविंदनेत्रात्।
कृष्णात्परंकिमपितत्त्वमहंनजाने॥७॥
ध्यानाभ्यासवशीकृतेनमनसायन्निर्गुणंनिष्क्रियं।
ज्योतिःकिंचनयोगिनोयदिपरंपश्यंतिपश्यंतुते॥
अस्माकंतुतदेवलोचनचमत्कारायभूयाच्चिरं।
कालिंदीपुलिनेषुयत्किमपितन्नीलंमहोधावति॥८॥
कुर्वंतिकेपिकृतिनःक्वचिदप्यनंते।
स्वांतंविधायविषयांतरशांतमेव॥
त्वत्पादपद्मविगलन्मकरंदबिंदु
मस्वाद्यमाद्यतिमुहुर्मधुलिण्मनोमे॥९॥
केचिन्निगृह्यकरणानिविसृज्यभोग
मास्थाययोगममलात्मधियोयतंते॥

मानो चंद्र बिछायके, पौंढे शालग्राम ॥ १९ ॥
लट छूटी त्रियशीश ते, रहि कपोल लिपटाय ।
मानो छौना नागको, पीपी अमी अघाय॥२०॥
व्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
इन्हें न नेक बिसारिहों, मोहिँ नंदरायकीआन२१॥
ब्रज तज अनत न जाइ हौं, मेरे है यह टेक ।
भूतल भार उतारिहौं, धरिहौं रूप अनेक॥२२॥

श्रीप्रियाजीको वचन ॥

मैं बेटी बृषभानुकी, राधा मेरो नाम ।
तीनलोकमें गाइये, बर्सानो नँदगाम ॥ २३ ॥
वंसीवारे मोहना, वंसी नेक वजाय ।
तेरी वंसी मन हर्‍यो, घर अँगना न सुहाय॥२४॥
आउ पियारे मोहना, पलक झांप तोहिं लेउँ ।
नामैं देखों औरको, ना तोहिं देखन देउँ॥ २५॥

सखियनको वचन ॥

ए रे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान ।
तो मुख दर्शन कारणे, छाँड दई कुलकान ॥ २६ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांबर वनमाल।
यह मूरति मेरे मनबसो, सदा बिहारीलाल२७॥
करमुरली लकुटी गहे, घूंघरवारे केस ।
यह बानिक नयनन बसो, श्याम मनोहर भेष२८॥
मोहनि मूरति श्यामकी, मोमनें रही समाय।

दृढव्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्त बिहार॥ ९॥
काहूके बल भजनको, काहूके आचार।
व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत पाँव पसार॥१०॥
मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहर गँभीर।
कृष्णदासबाजतसुनी, कालिंदीकेतीर॥ ११॥
सुखमनरूप अनूपहै, कहा बरणे कबिनंद।
अब बृंदावन वरणिहों, जहँबृंदावनचंद॥ १२॥
बृंदावनआनंदघन, कछु छबि बरणि नजाय।
कृष्णललितलीलाकेकारण,धाररह्योजडताय॥१३।

श्रीलालजीकोवचन॥

दोहा॥

राधे मेरी लाडली, मेरी ओर तू देख॥
मैंतोहिंराखोंनयनमें, काजरकीसी रेख॥ १४॥
राधेआधेनयनसों, तिरछी चितवनचाय।
जोनिशानआगेचलै, पाछेको फहराय॥१५॥
लटसम्हारराधानागरी, कहाभयोहै तोहिं।
तेरीलटनागिनभई, लिपटत आवेंमोहिं॥१६॥
राधेजूके बदनपै, बेंदी अति छबि देय।
मानो फूली केतकी, भ्रमरवासना लेय॥१७॥
प्यारीजूके वदनपै, बसत चलीसों चोर।
दशसारस दश हंसहैं,दशचातक दशमोर॥१८॥
गोरे मुखपै तिल बन्यो, ताहि करूं परणाम।

राग आसावरी॥ देखोरे अद्भुत अवगतकी गत कैसो रूप धरयोहै। तीनलोक जाके उदर भवनमें शूपकी कोन परयोहै। जा मुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानीहै॥ सो मुख चूमत मात यशोदा दूध धार लिपटानीहै॥ जिन कानन गजकी बिपता सुन गरुडासन बिसरायोहै। तिन काननके निकट यशोदा हुलरायो गुणगायोहै॥ जिन्हीं भुजा प्रह्लाद उबार्यो प्रगटहोय खँभ फारयो है॥ सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढे होय दुलारयो है॥ जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग ब्रत साध्यो है॥ ताको धाय नंद की रानी ऊखल सों गहि बांध्यो है॥ जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाध नटारी है॥ सो ठाकुर है सूरदास को गोकुल गोप बिहारीहै॥ ३॥

राग बिलावल॥ आदि सनातन हरि अविनाशी सदा निरंतर घट घट बासी॥ पूरणब्रह्म पुराण बखाने। चतुरानन शिव अंत न जाने॥महिमा अगम निगम जिहिं गावै।सो यशुदा लिये गोद खिलावै॥ एक निरंतर ध्यावैं ज्ञानी। पुरुष पुरातन है निर्बानी॥शुक शारद को नाम अधारा। नारद शेष न पावैं पारा।जप तप संयम ध्यान न आवै। सोई नंदके आंगन धावै॥ लोचन श्रवण न रसना नासा। बिन पद पान करे पर्कासा॥अरुण असित सित बरण न धारे। मुनि मनसा में कहा बिचारे॥ बिश्वंभर निज नाम कहावै। घर घर गोरस जाय चुरावै॥जरा मरण ते रहित अमाया।मात पिता सुत बं-

ज्यों मेहँदीके पातपै, लाली लखी नजाय॥२९॥
मनमोहन मनमोहना, मनमोहन मनमाहिं ।
या मोहन ते सोहना, तीनलोकमें नाहिं॥ ३०॥
चलो सखी तहँ जाइये, जहां बसैं व्रजराज।
गोरस वेचन प्रेमरस, एक पंथ द्वै काज॥३१॥
मोरमुकुटकी लटक पर, अटकरहे दृग मोर ।
कान्हकुँवर सखियमुनतट, नटवर, नंदकिशोर॥
जिन मोरनके पंख हरि, राखत अपने शीश।
तिनके भागनकी सखी, कौनकरसकैरीस॥३३॥
वृंदावनके वृक्ष को, मर्म न जाने कोय ।
डार पात फल फूलमें, राधे राधे होय ॥ ३४ ॥
वृंदावन वानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार ।
दुलहिनप्यारीराधिका, दूलहनंदकुमार ॥ ३५ ॥

अथ बाललीलाकेपद ॥

राग भैरव ॥ बंदों श्रीहरिपद सुखदाई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सब कछु दरशाई । बहरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई। सूरदास स्वामी करुणामय वारंवार नमों तिहिं पाई ॥ १ ॥

रागरामकली॥भयो जयकार जन्मे मुरारी॥शीश बसुदेव ले चले हैं कृष्णको शूपमें खेलतेहैं बिहारी॥लालके शीशपर मुकुट सिहरा बन्यो हार हमेल छबि ललित पियारी॥ सूरके प्रभू अवतार लियो भक्तहित बढ्यो आनंद गोकुल मँझारी॥ २ ॥

राग रामकली ॥ हौं इक नई बात सुन आई ॥ महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर बजत बधाई। द्वारे भीर गोप गोपिन की महिमा बरणि नजाई। अति आनंद होत गोकुल में रत्न भूमि निधि छाई।नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरसकीच मचाई। सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदरश्याम कन्हाई।६।

राग भैरव ॥ देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जायाहै। सुंदर बरण कमल दल लोचन देखत चंद्र लजायाहै॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नंद घर आयाहै । मोर मुकुट पीतांबर सोहै केसर तिलक लगायाहै ॥ कानन कुंडल गल बिच माला कोटि भानु छबि छायाहै। शंख चक्र गदा पद्म बिराजे चतुर्भुज रूप बनायाहै ॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलायाहै।मच्छ कच्छ बाराह औ बामन राम रूप दरशायाहै ॥ खंभ फार प्रगटे नरहरि बपु जन प्रहलाद छुडायाहै ।परशुराम बुध निहकलंक होय भुवकाभार मिटाया है॥ कालीमर्दन कंसनिकंदन गोपीनाथ कहायाहै मधुसूदन माधव मुकुंद प्रभु भक्तबछल पद पायाहै ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गायाहै। सो परब्रह्म प्रगट होय ब्रज में लूट लूट दधि खाया है ॥ परमानंद कृष्ण मनमोहन चरण कमल चित लायाहै॥ ७॥

राग वडहंस ॥ मोहिं नंदघर लै चलो ढिढनियां मचल रही ॥ पुत्र भयो सब जगने जान्यो मोते क्यों न कही ॥ मोहिं मिले नखशिख लों गहनो लाऊं तो बात सही ॥ जरदो-

न जाया॥ आदि अनंत रहे जलसाई। परमानंद सदा सुख
ाई॥ ज्ञानरूप हिरदेमें बोलै। सो बछरनके पाछे डोलै॥
ालधर अनल अनिल नभ छाया। पांच तत्त्व में जग उपजा-
ा। लोक रचे पालै और मारे।चौदह भुवन पलकमें धारे। का-
ठडरे जाके डरभारी। सो ऊखल बांध्यो महतारी॥ माया प्र-
कट सकल जगमोहै। करन अकरन करे सोई सोहै॥ जाकी
ाया लखे न कोई। निर्गुणसगुण धरे बपुदोई। शिव समाधि
जाको अंत न पावै। सो गोपन की गाय चरावै॥ गुण अनंत
अवगतहिं जनावै। यश अपार श्रुति पार न पावै॥ चरण क-
मल नित रमापलोवै। चाहत नेक नयनभर जोवै॥ अगम
अगोचर लीला धारी। सोराधा वश कुंजबिहारी॥जो रस ब्र-
ह्मादिक नहिं पायो। सो रस गोकुल गलिन बहायो॥बडभा-
गीयह सब व्रजबासी। जिनके सँग खेलें अबिनासी॥ सूर
सुयश कहि कहा बखानै। गोविंद की गत गोविंद जानै॥ ४॥

रागबिलावल ताल चर्चरी॥साख मुनिजन भरैं दे-
व स्तुति करैं स्मृति पुराण गुण वेद गावैं। तुम प्रभु एक
अनेक ह्वै रम रहे अगिनत जीया जंतु नाहिं अंत पावैं॥ शेष
महेश गंधर्व किन्नर थके व्यासब्रह्मादि नाहिं पार पावैं। चरण
पाताल और शीश आकाश में चंद्र सूरज दोऊ दृग सुहावैं॥
यही परतीत तेरी चहूं युगन में भक्त के हेतु धर देह धावैं॥
कहत मिहरदास नीवास लियो नंदगृह कान्ह सुतजान यशुम-
ति खिलावैं॥ ५॥

सके भय चित चोरी ॥ नंद यशोदा हर्ष निरख मन मानो
निर्द्धन पायो परम धन आदि जुगाद धरणीधर माधो लखे
न जात गति तोरी ॥ व्रजबधुआं मिल नंद गृह आई भाग
भले हरि दर्शन पाए हिल मिल पलना देत झुलाए हाथ गहे
पट डोरी ॥ दैत्यानी इक कंस पठाई कर छल बिष स्तन प
लाई बनी वरंगना अति छबि सुंदर ब्रज बधुआं चितचोरी ॥
पलना सों हरि जाय उठाए चूम नयन स्तन मुख लाए ऐसी
चूस करी मेरे ललना लोने प्राण निचोरी ॥ यमलार्जुनको
दर्शन दीनो नारद वचन सफल कर लीनो ऊखल सों प्रभु
आप बंधाए बिमल बृक्ष दोऊ जाय गिराए शब्दभयो घन-
घोरी॥ तृणावर्त अघासुर मारे और दैत कई कोटि सँहारे क-
हा कहों अगणित गुण तोरे इक रसना प्रभु मोरी॥ १२॥

राग पीलो ॥ आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी ॥
यशुमति नंदलाल पायो कंस राज काल पायो गोपन ने
ग्वाल पायो बनको शृंगाररी । गौअन गोपाल पायो याच-
कन भाग पायो सखियन सुहाग पायो पीयावर सांवरारी ॥
दवनने प्राण पायो गुणियन ने गान पायो भक्तन भगवान
पायो सूर सुखदावरारी ॥ १३ ॥

राग आसावरी ॥ आजनंदजू तुम्हरे घरमें पुत्र ज-
न्म सुन आयों। लग्नशोध ज्योतिष को गिनके चाहत तुम्हें
सुनायों ॥ संवत् सरस भाद्रपद मासे आठें तिथि बुधवार।
कृष्ण पक्ष रोहिणी अर्द्धनिशि हर्षण योग उदार ॥ वृष है लग्न

जीके वस्त्र मिलेंगे फरिया चोलीनई। कृष्ण कृपा बिन कोया जगमें जिन मेरी वांहि गही ॥ ८ ॥
राग आसावरी आज बधाइयां वे बाबानंद देदर्बार हुआ सुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार॥आईंमिल गोपियां वे गावें हर्ष मंगलचार। गुणीजन गावँदे वे नाचें देदे करतार ॥ ९ ॥
कवित्त॥ पूत सुपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनके बसुधा सबदौरी। देवन को आनंद भयो सुन धावत गावत मंगल गौरी।नंद कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुँकी मति बौरी॥ मोहिं देखत ब्रजहिं लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥१०॥ फूल गए गोप गृह गोपिकन भूल गए हुलसी मचाई माते प्रेम सरसाईमें ॥ कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलन में कीकन दे पगे आनंद की बधाई में॥ छोटी सी चोटी कछोटी कटि मोटी भई फैल गई थौन बडे लेद की अवाई में ॥ राजी दिलमोदन बिनोदनजो बिहँस नंद नाचे आज आंगन कन्हाई की बधाई में ॥ ११ ॥
राग प्रभाती ॥ गिरिधर लोरी लै मथुरा के बासी ॥ चिरजीवो बसुदेवके नंदन बलि बलि माता घोरी॥ भूपर भार भयो अति भारी सुर समूह सबजाय पुकारी जगतपिता जगनायक स्वामी धर्म कथा जग थोरी ॥ गगन गिरा सों यों हरि भाष्यो असुर मार संतन पतराखों आदिपुरुष तेरो अंत न पायो धरहो भक्त हित खोरी। वसुदेव देवकी अति हर्षाने पूरणब्रह्म जान सन्माने स्तुति करत बहोर बहोरी कं-

निरख मुख पंकज लोचन नयनन नीर बहाया । सूरश्याम परिकर्मा करके सिंगीनाद बजाया ॥ १५ ॥

राग भैरव ॥ दर्श तो दिखाजा छैला दर्श तो दिखाजा ॥ दिल दा महरम सांवरा यार । जांघनी काछनी कटि पीतांबर श्रवणन कुंडल शीश मुकुट घुंघरवारी अलकें झलकें नयनों में समाजा ॥ बंसी धुन यमुना तीरे नाचत गावत गोपन संग नंदजू के किशोर मेरी तपत बुझाजा । जानकीदास भए निराश निकसत नाहिं पापी श्वास सुपने हूं में दर्श देके सकल दुख मिटाजा ॥ १६ ॥

राग भूपाली ॥ बोलता क्यों नहींरे मज़ाजी बोलता क्यों नहींरे ॥ शिर तेरे ककरेज़ी चीरा गल मोतियन की मालरे । हाथमें दुधारा खांडा मारता क्यों नहींरे ॥ १७ ॥

राग विलावल ॥ काहू जोगिया की लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवैरी । मेरी गली जिन आउरे जोगिया अलख अलख कर बोलैरी ॥ घर घर हाथ दिखावे यशोदा बार बार मुख जोवैरी । राई लोन उतारत छिन छिन सूर को प्रभु सुख सोवैरी ॥ १८ ॥

राग भैरव ॥ चल रे योगी नंद भवन में यशुमति तोहिं बुलावै। लटकत लटकत शंकर आए मन में मोद बढावै। नंद भवन में आयो योगी राई लोन कर लीनो ॥ वार फेर लाला के ऊपर हाथ शीशपै दीनो । व्यथा गई सब दूर बदन की किलक उठे नँदलाला ॥ खुशी भई नंदजू की रानी दीनी

ऊंच के निशिपति तनय बहुत सुखदेहै ॥ चौथे सिंह राशिके दिनपति जीत सकल में होहै ॥ पांचे बुध कन्या के जो है पुत्रन बहुत बढैहै । छठे है शुक्र तुलाके बलयुत शत्रुरहन ना पैहै ॥ऊंच नीच युवती बहु करहै सातें राहु परेहै । भागभवन में मकर महीसुत पूरेऐश्वर्य करेहै । कर्म भवन में ईश शनीचर श्याम बर्ण तनु होहै । लाभभवन में मीन बृहस्पति नौनिधि घर में ऐहै ॥ आदि सनातन हरि अबिनाशी घट घट अंतर्यामी। सो तुम्हरे गृह आय प्रगट भए सूरदासके स्वामी॥१४

राग भैरव ॥ मैं योगी यश गाया री बाला मैं योगी यश गाया ॥ तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तज धाया ॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जामाया । अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिरआया ॥ धन तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया । गुणन बडे छोटे मतभूलो अलख रूप धरआया ॥ जो भावे सो लीजिये रावल करो आपनी दाया। देहु अशीश मेरे बालक को अविचल बाढेकाया॥ ना मैं लेहों पाट पटंबर ना मैं कंचन माया। मुख देखों तेरे बालकको यह मेरे गुरुने बताया ॥ कर जोरे विनवे नँदरानी सुन योगिन के राया । मुख देखन नहिं देहों रावल बालक जात डराया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात डराया । तीन लोक का साहिब मेरा तेरे भवन छिपाया॥ कृष्णलाल को लाई यशोदा कर अंचर मुख छाया। गोद पसार चरणरज बंदी अति आनंद बढाया ॥ निरख

म श्याम सकल मंगल गुण निधान थार में कछु जूठ रही सो मानदास पाई ॥ २२ ॥ जागिये व्रजराज कुँवर कमल कोश फूले । कुमुद बृंद सकुच भए भृंग लता झूले ॥ तमचर खग सोर सुनो बोलत बनराई । रांभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई ॥ बिधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रज नारी । सूर-श्याम प्रात उठे अंबुज कर धारी ॥ २३ ॥

राग रामकली ॥मोहन जाग हौं बलि गई ॥ ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे बेर बन की भई। पीतपट कर दूर मुख ते छाड दे अलसई ॥ अति अनंदित होत यशुमति देख द्युति नित नई । सूरके प्रभु दरश दीजे अरुण कीरण छई ॥२४ ॥

राग भैरव ॥ जागो बंसीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किंवारे । गो-पी दधि मथत सुनियत हैं कंगना के झनकारे ॥ उठो लाल-जी भोर भयो है सुर नर ठाढे द्वारे ।ग्वाल बाल सब करत कु-लाहल जय जय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथ में लीनी गौअन के रखवारे। मीरा के प्रभु गिरिधर नागर शरण आया को तारे ॥ २५ ॥ जागो हो मोरे जगत उजारे । कोटि मन्मथ वारों मुसकन पर कमल नयन अँखियन के तारे॥संग ग्वाल बच्छ सब लैके यमुना के तीर बन जाउ सवारे । परमानंद कहत नंदरानी दूर जिन जाउ मेरे व्रजके रखवारे ॥ २६ ॥

राग ललित ॥ जागो जागो हो गोपाल ॥ नाहिन अति सोइयतहै प्रात परम शुभकाल ॥ फिर फिर जात नि-

मोतिन माला । रहुरे योगी नंद भवन में ब्रज में बासो कीजे । जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दर्शन दीजे ॥ तुम तो योगी परम मनोहर तुम को वेद बखाने । बूढो बाबूनाम हमारो सूरश्याम मोहिं जाने ॥ १९ ॥

राग बिलावल ॥ कर पग गह अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढ़े पालने अकेले हर्ष हर्ष अपने रंग खेलत ॥ शिव शोचत बिषि बुद्धि बिचारत बट बाढ्यो साह्गर जल झेलत ॥ बिडर चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिगदंतौन सकेलत ॥ मुनि मन भीत भए भू कंपत शेष सकुच सहसों फण पेलत ॥ सो सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत ॥२० शोभित कर नवनीत लिए । घुटुरन चलत रेणु तनु मंडित मुख दधि लेप किए।चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन को तिलक दिए। लट लटकन मनो मत्त मधुपगण मादक मधुहिं पिए। कठुला कंठ बज्र केहरि नख राजत रुचिर हिए। धन्य सूर एको पल यह सुख का शत कल्प जिए॥२१ ॥

राग भैरव ॥ जागिये गोपाल लाल जननी बलि-जाई। उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनँद कंद किर्ण चंद मंद मंद प्रकट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई। सिं-गीसब पुरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर बर राई ॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि मांग लियो बिबिध रस मिठाई।जेंवत दोऊरा-

नाच दिखावो॥तारी देदे अपने करकी परम प्रीति उपजावो। आन जंतु धुन सुन डरपत कत मो भुज कंठ लगावो। जिन शंका जियकरो लाल मेरे काहेको शर्मावो। बांह उठाय काल्ह की नाईं धौरी धेनु बुलावो॥ नाचो नेक जाउँ बलितेरी मेरी साध पुरावो॥ रत्न जडित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो। परमदयालु सूर के उर ते टारे नेक न भावो॥ ३१॥ बलि बलि जाउँ छबीले लालके॥ धूसर धूर घुटरुवन डोलन बोलन बचन रसालके॥छिटकरहीं चहूं दिशिजो लटुरियां लटकनि लटकन भालके॥मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमल दल मालके॥ कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन बिशालके। सूरदास प्रभु प्रेम मगन होय ढिग न तजत ब्रजबालके ३२॥आउ गुपाल शृंगार बनाऊँ। अति सुगंध को करूं उबटनो उष्णोदक नहवाऊं। अंग अँगोछ गुहों तेरी बेनी फूलन रचि रुचि भाल बनाऊं। सुरंगलाल जतारी चीरा रत्न खचित शिर पेच बनाऊं॥ बागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण बृचाऊं। पटुका सरस बैंगनी रँगको हसली हेम हमेल धराऊं॥ गज मोतिनके हार मनोहर बनमालालै उर पहिराऊं॥ ले दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि छबि नयन सिराऊं॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुम्हैं खवाऊं। विष्णुदास को यही कृपा फल बाल चरित हौं निशि दिन गाऊं॥ ३३॥

खं मुख छिन छिन सब गोपनके बाल ।बिन बिकसे मनो कमल कोश ते ते मधुकर की माल ॥ जो तुम मोहिं पतियाउ न सूर प्रभु सुंदर श्याम तमाल । तो उठिये आपन अवलोकिये तज निद्रा नयन विशाल ॥ २७ ॥

राग बिलावल ॥ कौन परी नंदलालहिं बान ॥ प्रात समय जागन की बिरियां सोवत है पीतांबर तान ॥ मात यशोदा कब की ठाढी दधि ओदन भोजन घृत सान ॥ उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुंदर बदन दिखावो आन ॥ संग सखा सब द्वारे ठाढे मधुबन धेनु चरावन जान ॥ सूरश्याम सुंदर अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मान ॥ २८ ॥

राग भैरव ॥ दधि के मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें । शीश मुकुट लटा छुटी और छुटी अलकें ॥ सुर नर मुनि द्वार ठाढे दरश कारण किलकें । नाशिका को मोतीसोहे बीच लाल ललकें ॥ कटि पीतांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलकें । सूरदास मदनमोहन दरश देहु भलकें॥ २९ ॥

राग बिलावल॥ नंदनँदन बृंदाबनचंद । यह कह जननी जगावत लालन जागो मोरे आनँदकंद॥आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अतिमंद ।पोंछ बदन अंचरसों यशुमति उर लगाय उपज्यो आनंद ॥ सब ब्रज युवती आई देखनको दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद ॥ ब्रजपति श्री गोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुतिछंद ॥ ३० बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो।अब की बेर मेरे कुंवर कन्हैया नंदहि

हत बल की बेनी ज्यों हो है लांबी मोटी। काढत गुहत न्हवावत जैसे नागिन सी भोंइ लोटी॥ काचोदूध पिवावत मोहन देती माखन रोटी। सूर मैया याही रस रिझयो हरि हलधरकी जोटी॥ ३८॥ अब मेरी खेलन जात बलैया। जबहिं मोहिं देखत लरकन सँग तबहिं खिझत बल भैया॥ मोको कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया। मोल लियो कछु दे वसुदेवहिं कर कर जतन बडैया॥ पाछे नंद सुनत हैं ठाढे तब हँस हँस उर लैया। सूरनंद बलरामहिं हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया॥ ३९॥

सारंग॥ मैया मोहिं दाऊ ने बहुत खिझायो॥ मोसों कहत तू मोल को लीनो कब यशुमति ने जायो॥ कहा करूं या रिसके मारे खेलनहों नहिं जात। पुनि पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरो तात। गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर॥ तारी दे दे ग्वाल हँसत हैं सीख देत बलवीर। तू मोहींको मारन सीखी दाउहिं कभू न खीझै। मोहन को मुख रिस समेत लख सुन सुन यशुमति रीझै॥ सुनो काह्न बलभद्र चवाई जन्महि को वह धूत॥ सूरदास मोहिं गोधन की सौंह हौं जननी तू पूत॥ ४०॥

राग सोरठ॥ इस नंदके फरजंद ने बांकी अदाय धरी॥ भौहैं कमान झुकरहीं गोशे से आन मिली॥ तिरछा मुकुट धर शीश पर मुरली अधर धरी। कानों में कुंडल झलकते गल मोतियों की लरी। चितवन जो तेरी आली जिन

राग देस॥ धूर भरे अंग खेलत मोहन आछी बनी शिर सुंदर चोटी। देखोरी काग के भाग भले हैं हाथ सों लै-गयो माखन रोटी। खात पियत कूदत भए अँगना पाइन पाइन पर्त कछोटी। सूरदास प्रभु या छबि निरखत वार डा-रें शिर रवि शशि कोटी॥ ३४॥

राग गौरी॥ कहन लागे मोहन मैया मैया। नंदराय सों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया॥ खेलत फिरत सकल गो-कुल में घर घर बजत बधैया। परमानंद दास को ठाकुर ब्रज-जन केलि करैया॥ ३५॥

राग रामकली॥ हौं लाल को मुख देखन आई। कल्ह मुख देख गई दधि बेचन जातहि गयो बिकाई॥ दिन सों दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई। आईहों धाय थमाय साथकिन मोहन देहु जगाई॥इतनी सुनत बिहँस उ-ठ बैठे नागरि निकट बुलाई। सूरदास प्रभु चतुर ग्वालनी से-न सँकेत बताई॥ ३६॥

राग बिलावल। मैया मोहिं बडो करलैरी। दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगों तब दैरी। कछू हौंस राखे जिन मेरी जोई जोई मोहिं रुचैरी। होउँ सबल सबहिन में जैसे सदा रहौं निर्भयरी। सूर कंस गहि केश पछारों करहों मथु-रा जयरी॥ ३७॥

राग रामकली॥ मैया मेरी कब बाढेगी चोटी। कि-ती बेर मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूं है छोटी॥ तू जो क-

कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल ॥४४॥

राग धनाश्री ॥ महराने ते पांडे आयो । ब्रज घर घर बूझत नंदरावर पुत्र भयो सुनके उठधायो । पहुँच्यो आय नंदके द्वारे यशुमति देखि आनंद बढायो । पांव धोय भीतर बैठायो भोजन को निज भवन लिपायो । जो भावे सो भोजन कीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढायो । बडी वैस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाय दूध लै आई पांडे रुचिकर खीर चढायो । घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित कर परस कृष्ण हित ध्यान लगायो ॥ नयन उघार विप्र जो देखे खात कन्हैया देखन पायो ॥ देखो आय यशोदा सुत कृत सिद्ध पाक यह आन जुठायो ॥ महरि विनय कर दोऊ कर जोन्यो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो ॥ सूरश्याम कत करत अचगरी बार बार ब्राह्मणहिं खिझायो ॥

राग रामकली ॥ पांडे भोग न लावन पावे ॥ कर कर पाक जभी अर्पत है तभी तांहि छो आवे ॥ इच्छा कर मैं ब्राह्मण नोत्यो ताको श्याम खिझावे। वह अपने ठाकुरहिं जिमावत तू तबहीं छिहि आवै ॥ जननी दोष देत कत मोको बिधि बिधान कर ध्यावै ॥ नयन मूंद कर जोर नाम लै बारंबार बुलावै ॥ यह अंतर नाहिं होत भक्त सों क्यों मेरे मन भावे ॥ सूरदास बलि बलि बिलास पर जन्म पाय यश गावे ॥ ४६ ॥

राग बिलावल ॥ सफल जन्म मेरो आज भयो ॥ धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रगट

घायल मुझे करी ॥ शिर मुकुट सोहै मोर का और पाग जर-
करी ॥ इमि सूर कहे श्याम सों धन्य आज की घरी ॥ ४१ ॥

राग बिलावल ॥ नंदभवन को भूषण माई । यशुदा को
लाल वीर हलधरको राधारमण परम सुखदाई॥शिव को ध-
न संतन को सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई ॥इंद्रको इंद्र देव
देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ काल को काल ई-
श ईशनको अतिही अतुल तोल्यो नहिं जाई। नंददासकी
जीवन गिरिधर गोकुल गांमको कुँवर कन्हाई ॥ ४२ ॥

राग रामकली ॥ हाहा लेहु एको कोर॥ बहुत वेर भ-
ईहै भूखे देख मेरी ओर ॥ मेल मिश्री दूध ओट्यो पीउ ह्वैहै
जोर ॥ अबहिं खेलत टेरहैं तेरे ग्वाल भयो अति भोर॥
जगे पक्षी द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर ॥ खेलवेको उठ
भजोगे मान मोर निहोर॥ लेहौं ललन बलाय तेरी जोर अं-
चल ओर ॥ बदन चंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर॥
वैठ जननी गोद जेवन लगे गोविंद थोर ॥ रसिक बालक
सहज लीला करत माखन चोर॥ ४३ ॥ मानो बात लाल-
न मोरी॥ करो भोजन रोस भूलो हौंजो मैया तोरी । दूध द-
धि नवनीत घृतपक परस राख्यो थार॥ कहा लोटत धरणी
में मेरे लाल होत अवार। गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे
गीत । खेलबेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत । कहो जाको
ताहिं टेरू बैठे तेरे पास । करों दधि मंथान उदयो सूर कमल
बिकास॥ मायके सुन बचन हँसउर आय लगे गुपाल ।

जोवत क्यों न चलो ततकाल ॥ हौं वारी इन प्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल।छांड देहु तुम लाल लटपटी यह गति मंद मराल॥ सो राजा जो पहिले पहुँचे सूर सो भवन उताल॥ जो जैहै बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल॥ ५० ॥

लावनी॥ रूप रसिक मोहन मनोज मन हरण सकल गुण गरबीले। छैल छबीले, चपल लोचन चकोर चित चटकीले ॥ रत्नजटित शिर मुकुट लटक रही सिमट श्याम लट घुंघुरारी । बाल बिहारी, कन्हैया लाल चतुर तेरी बलिहारी। लोलक मोती कान कपोलन झलक बनी निर्मल प्यारी । जोत उज्यारी । हमें हरबार दर्श देहु गिरिधारी । दंत छटा सी बिज्जु घटा मुख देख शरद शशि सरमोले ॥ छैल० ॥ मंद हँसन मृदु वचन तोतरे बय किशोर भोली भाली। करत चोचले, अमोलिक अधर पीक रच रहि लाली ॥ फूल गुलाब चिबुक सुंदरता रुचिर कंठ छबि बनमाली॥ करसरोजमें बुंद मोहिंदी अमंद बहु प्रतिपाली, फूल छरी सी नरम कमर करधनी शब्द भए तुरसीले॥ छैल ० ॥ झगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले। चाल निराली, चरण कोमल पंकजके पात भले ॥ पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमति के तात भले। संग सखनके। निकट यमुना बछरान चरात भले। ब्रज युवतिनके प्रेम भोर भए घर घर माखन गट कीले॥ छैल ० ॥ गावें बाग विलास चरित हरि शरद रैनि रसरास करें॥ मुनिजन मोहे, कृष्ण कं-

भयो अब पुण्य सुकृत फल दीनबंधु मोहिं दर्श दियो ॥ बारं-बार नंदके आंगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो विन जाने को जाने किहिं भेष जियो ॥ सूरदास प्रभु भक्त हेतु वश यशुमति के अवतार लियो ॥ ४७ ॥

राग झंझोटी ॥ चंद्र खिलौना लेहों मैया मेरी चंद्र खिलौना लेहौं ॥ धौरी को पय पान न कर हों बेणी शिर न गुथैहों ॥ मोतिन माल न धरहौं उर पर झगलो कंठ न लैहों ॥ जैहों लोट अभी धरणी पर तेरी गोद न ऐहों ॥ लाल कहैहों-नंद बबा को तेरो सुत न कहैहों ॥ कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहिं नाहिं सुनैहों ॥ चंदाहू ते अति सुंदर तोहिं नवल दुलहैया ब्यैहों ॥ तेरी सौंह मेरी सुन मैया अबहीं ब्याहन जैहों ॥ सूरदास सब सखा बराती नूतन मंगल गैहों ॥ ४८ ॥

राग बिलावल ॥ सुन सुत एक कथा कहूं प्यारी ॥ कमलनयन मन आनँद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुँकारी ॥ दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी ॥ तिनमें राम एक व्रतधारी जनकसुता ताको बर नारी ॥ तात बचन सुन राज्य तज्योहै भ्राता सहित चले वनचारी । तहँ तिन जाय कनक मृग माऱ्यो राजिव लोचन गर्व प्रहारी । रावण हरण सिया को कीनो सुन नँद नंदन नींद निवारी ॥ सूरश्याम प्रभु रटत चाप को लक्ष्मण देहु जननी भ्रम भारी ॥

राग सारंग ॥ नंद बुलावत हैं गोपाल ॥ आवो बेगि बलैयां लेहौं मोहन श्याम तमाल ॥ परस्यो थार धऱ्यो मग

बदन नासिका मोती काह्न कुँवर गही दृढ कर चोटी ॥ मानो हंस मोर भख लीनो कबि उपमा जानो जियाछोटी ॥ यह छबि निरख नंद आनंदे प्रेम मगन भए लोटकपोटी ॥ सूरदास धन धन्य यशोदा भाग भले कर्मन की मोटी ॥ ५४ ॥

रागरामकली ॥ मोहिं दधि मथन दे बलगई। जाऊँ बलि बलि बदन ऊपर छाँड मथनी रई ॥ लाले देहों नवनीत लौंदा आर कित तुम ठई ॥ सुते हेत बिलोकि यशुमति प्रेम पुलकत भई ॥ ले उछंग लगाय उर सों प्राणजीवन जई ॥ बाल केलि गुपाल को व्रज आसकरन नित नई ५५

राग बिलावल ॥ नेक मेरे बारे कान्हा छाँडदे मथनियां ॥ कंठ बघुली सोहे नाक में नथनियां। नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियां ॥ नेक रहो देहों माखन मेरे प्राण धनियां ॥ आर जिन करो मेरे छगन मगनियां॥ सुर नर मुनि काहू के ध्यान न आवनियां ॥ सूर सुत देख सुख लेत नंदरनियां ॥ ५६ ॥

राग गौरी ॥ मैयारी मोहिं माखन भावै॥ जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहीं रुचिआवै॥ व्रज युवती इक पाछे ठाढी सुनत श्यामकी बात ॥ मन में कहत कभूं अपने घर देखों माखन खात। बैठे जाय मथनियांके ढिग तब मैं रहों छिपानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी॥ ५७॥

राग गौरी ॥ गए श्याम तिहिं ग्वालिन के घर ॥ देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर। हरि आ-

सादिक खल दल नाश करें ॥ गिरिधारी महाराज सदा श्री-
ब्रज वृंदाबन बास करें ॥ हरि चरित्र को ॥ श्रवण सुन सुन
कर मन अभिलाष करें ॥ हाथ जोर कर करें वीनती नारायण
दिल दरदीले ॥ छैल० ॥ ५१ ॥

अथ माखन चोरीलीला ॥

राग रामकली ॥ माखन तनक देरीमाय ॥ तनक कर
पर तनक रोटी मांगत चरण चलाय ॥ कनक भूपर तनक
रेखा करन पकर्‍यो धाय ॥ कंपियो गिरि शेष शंक्यो उदधि
अति अकुलाय ॥ मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहिं बला-
य ॥ तनक मुखपर तनक बतियां बोलत हैं तुतराय ॥ यशो-
मति के प्राण जीवन धन लियो उर लिपटाय ॥ नंद कुँवर
गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ५२ ॥

राग भैरव ॥ बिलंब तज माखन देरी माई ॥ बछरे ह-
मरे दूर निकस गए दधि मथती देर लाई ॥ जो न देय तोरे
बछरे ना चारूं हौं नाहिं बिपिन को जाई ॥ यह लै अपनी
कारी कमरिया मुरळी और लकुटाई ॥ इतनी कह हरि अति
ही रिसाने लोटत भूमि कन्हाई ॥ धूर सहित सब अँग लि-
पटाने मैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख
चूम दूध पिलाई ॥ धन धन भाग सूर जननी जाके कृष्ण क-
रत लरकाई ॥ ५३ ॥

राग बिलावल ॥ देरी मैया मोहिं माखन रोटी ॥ दोनों
वीर मैया सों मांगत झूठेहु धामके काम लपोटी ॥ बल गह्यो

बालकही वेरी ॥ युवती अतिभई निहाल भुज भरदे अंक-
माल सूरदास प्रभु कृपालु डार्‍योतन फेरी ॥ ६० ॥

राग रामकली ॥ माखन चोर री हौं पायो ॥ जावत क-
हां जान कैसे पावत बहुत दिनन ही खायो ॥ श्रीमुखते उघ-
री है दतियां तब हँसि कंठ लगायो ॥ परमानंद प्रभु प्राण-
जीवन धन वेदविमल यश गायो ॥ ६१ ॥ सखि मोहिं हरि
दर्शन को चाव ॥ सांवरे सों प्रीति बाढी लाख लोग रिसाव ।
श्याम सुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भाव ॥ सूर ह-
रिकेरूप राची लाज रहो चाहे जाव ॥ ६२ ॥

कबित्त ॥ धेनु के चरैया प्यारे भैया बलभद्रजू के नंदके
ललैया मोरेअँगनामें आउरे । दही दूध बहुत प्याऊं माखन
घनो सो लाऊं मीठी मीठी तान नेक गाय के सुनाउरे । नंद
जूके किशोर मेरे चित्त हूके चोर नेकतो अधर धर बांसुरी
बजाउरे ॥ या छबि ऊपर कोटि कामवार डारों दयासखो
प्रेम बश हीये में समाउरे॥६३॥आया कर सांवरे इन गलि-
योंमें रूम झूम सांझ औ सवेरे कभी दर्श तो दिखाया कर ॥
जायाकर यमुनाके तट रोज रोज प्यारे बांसुरी अनोखीइक
लहिजातो सुनायाकर।कादर कहे छाया कर नयनों बिच मेरी
आय रूखा सूखा थार हम गरीबोंका पायाकर ॥ खायाकर
माखन मलाई दधि लूट लूट कर हावभाव मेरे होये में स-
मायाकर ॥ ६४ ॥ चीरा को चटक औ लटक नव कुंडल की
भौंह की मटक मोहिं आँखिन दिखाउरे ॥ जा दिनां सुजान

वत गोपी जब जान्यो आपन रही छिपाई ॥ सूने सदन मथ-
नियां के ढिग बैठ गए अगाई ॥ माखन भरी कमोरी देखी लै
लै लागे खान ॥ चितहि रहे मणि खंभ छांहिं तन तासों करैं-
सयान ॥ प्रथम आज मैं चोरी आयो भलो बन्योहै संग ॥
आप खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहतका रंग ॥ जो चा-
हो सबदेहों कमोरी अति मीठो कत डारत ॥ तुम्हें देख मैं अ-
ति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत । सुन सुन बात श्या-
म के मुख की उमँग हँसी सुकुमारी ॥ सूरदास प्रभु निरखि
ग्वालि मुख तब भज चले मुरारी ॥ ५८ ॥

राग बिलावल ॥ आज सखी मणि खंब निकट बीर जहँ
गोरसकी खोरी॥ निज प्रतिबिंब सिखावत या शिशु प्रगट क-
रै जिन चोरी ॥ अर्द्ध बिभाग आजते हम तुम भली बनीहै-
जोरी ॥ माखन खाउ कतहिं डारतहो छाँड देहु मति भोरी ॥
हिस्सा न लेहो सभी चाहतहो यही बातहै थोरी ॥ मीठो पर-
म अधिक रुचि लागे देहों काढ कमोरी ॥ प्रेम उमग धीरज
न रह्यो तब प्रगट हँसी मुखमोरी। सूरदास प्रभु सकुच नि-
रख मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ५९ ॥

राग बिलावल। ग्वालिन घर गए श्याम सांझकी अँधेरी ॥
मंदिर में गए समाय सामल तन लख न जाय देह मेह रूप क-
हो को करे निबेरी॥ दीपक गृह दान करयो भुजा चार प्रगट ध-
रयो देखत भई चकृत ग्वालि इत उतको हेरी॥ श्याम हृदय
अति विशाल माखन दधि बिंदु जाल मन मोह्यो नंदलाल

व्रज बनितनके आज आली ह्वैके अनंत नवनीत माँगे ठाढो है ॥ ६९ ॥ जाके पद परसनको तरसतहैं विश्व व्रज ग्वालनको खेल मांझ कंधन चढाएहैं ॥ जाकी माया सुर नर मुनि बांध राखे यह तो सोई नागर यशुदा पै ऊखल बँधाएहैं ॥ जाको देव यज्ञ में बुलावें नाहिं आवें सोतो नंद एक थार मांझ जेमके सिहाएहैं ॥ जाने ले नचाए मईदार ज्यों पूतरी सो प्रेम बश गोपिन के हीय में समाए हैं ॥ ७० ॥ दीन हू के बंधु द्याल मोचो दुख ततकाल अविनाशी नंदलाल वेदन में गाए हैं ॥ गावत हैं नेत नेत नेत कह पुकारें वेद शेषके सहस्त्र मुख पार नहीं पाए हैं ॥ ब्रह्मा ते आदि सनकादि जाको धरेंध्यान शंकर समाधि लाय हीय में बसाए हैं ॥ कहत मयाराम देखो भाग व्रज ग्वालिनी के ऐसे घनश्याम देदे माखन ही नचाएहैं ॥ ७१ ॥ कोऊ कहे मेरे आगे नेक तू नाच लाला लोन मिली छाछ दूंगी आछी सी धुंगारके ॥ भोर भयो वाके गयो वासों मेरो बैर भयो धींगीसी गुजरियाने आनलियो धायके ॥ खिरका सब तोर डारे बासनसब फोर डारे दूध ढकाँय दीयो बंदरा बुलाय के ॥ नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी सूरश्याम उलँभा लियो शीश पै चढायके॥७२

राग कल्याण ॥ व्रज की अहीरनी के भाग देखो मैया देवना को देव कैसी सेवना कर पायो है ॥ शिव बिरंचि जाको पार नहीं पावें गोकुलाकी नारी दे करतारी सों नचायो है ॥ नारद तुंबरू पढ मुनी पचहारे व्यासजू की बाणीसों विमल

गुण रूप के निधान कान्ह बांसुरी बजाय तन तपत सराउरे एहो बनवारी बलिहारी जाऊं तेरी आज मेरी कुंज आउ नेक मीठी तान गाउरे ॥ नंदके किशोर चित्त चोर मोर पंखवारे बंसीवारे सांवरे पियारे इत आउरे ॥ ६५ ॥

राग पीलू ॥ बंसीवारे तु मेरी गली आजारे। तेरे बिन देखे कलना परत है टुकमुखडा दिखला जारे। रैनिदिनां मोहिं ध्यान तिहारो बंसी की टेर सुनाजारे ॥ चरणदास कहे सुख देव पियारे मेरोही माखन खाजारे ॥ ६६ ॥

सवैया ॥ योगिया धर ध्यान रहें जिनको तपसी तनु गार के खाक रमावें ॥ चारों ही वेद न पावत भेद बडे तिर्वेदी नहीं गत पावें ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल हू में जाको नाम लिये ते सभी शिरनावें ॥ चरणदास कहे ताहि गोपसुता कर माखन दे दे नाच नचावें ॥ ६७ ॥ शंकर से मुनि जाहि रटें चतुरानन चारों ही आनन गावें ॥ जो हिय नेकही आवतही मति मूढ महा रसखान कहावें ॥ जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन वार न लावें ॥ ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया भर छाछ पै नाच नचावें ॥ ६८ ॥

कबित्त ॥ ब्रह्माहू के ध्यानमें न आवे कभूं एक क्षण शंकर समाधि लाय ध्यान धरत गाढोहै ॥ ऋषी और मुनी जाको रैनि दिन धरें ध्यान ध्यानमें न आवे कभूं तासों हेत बाढोहै ॥ सोई है निरंजन जाकी माया को न आवे अंत ध्यानी ध्यान लाय रहत सहत धूप जाडो है ॥ देखोरी भाग

राग मल्हार ॥ यहां लौ नेक चलौ नंदरानीजू ॥ अपने सुतके कौतुक देखो कियो दूध में पानी जू ॥ मेरे शिर ते उतार चूनरी लै गोरस में सानीजू ॥ हमरो री तुमरो बैर कहाहै फोरी दधि की मथानी जू ॥ या ब्रजको बसबो हम छाडे यह निश्चय कर जानी जू ॥ परमानंददास को ठाकुर गोकुल कियो रजधानी जू ॥ ७८ ॥

राग ईमन ॥ रानीजू लीजिये यह गाम ॥ दीजिये हमको बिदा राम राम है जु हमारी ॥ बसिहैं अनताहिं जाय बात लख लई है तुम्हारी ॥ आपन तो नाहीं करत री सुतको देत पठाय ॥ तीस दिना की बात है यह कापै सहियो जाय ॥ रानी० ॥ मेरे शिर पर बसो गाम काहेको छोरो ॥ श्याम आपनो जान मान लेयो मेरो निहोरो ॥ जो कछु तुम ते सुत कही मोहिं कहो समुझाय ॥ मैं तो यह जानो नहीं तुम लीजो सौंह धराय ॥ ग्वालिन गाम को मत छोरै ॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गयो भवनन माहीं ॥ वाने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाहीं ॥ बछरा छोरे खिरक ते बांधन को ना जाय। सखा भीर लै द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानी० ॥ जेतो खायो दही दूध करलेयो मोते लेखो ॥ दुगुनो चौगुनो नौगुनो सौगुनो लेहु बिशेखो ॥ माट भरे दही दूध के घर में चाखत नाय ॥ मोहिं यही अचरज बडो पावत तुम घर जाय ॥ ग्वालिन० ॥ काहेको घरको छुए जौलौं कहुँ मिलत परायो॥ अपनो सुंदर माल काहूपै नजात लुटायो ॥ आप खाय तौहूं

यश गायो है॥ कहत रणधीर भाग भले अहीरनी के प्रेमको पयोध व्रज वीथिन बहायो है॥ ७३॥

उराहनोलीला॥

दोहा

योग ध्यान आवें नहीं, यज्ञभाग नालेयँ॥
ताको व्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखनदेयँ॥ ७४॥

राग कान्हरो॥ माखनकी चोरी रे॥ तुम सीखे हो करन॥ जब लागे करन चितचोरीरे॥ जब ते दृष्टि परे नँदनंदन पाछे फिरों दौरादौरीरे॥ लोक लाज मरयादा तोरी बन बन बिहरत नवल किशोरीरे॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर निगम शृंखला तोरी रे॥ ७५॥

राग देवगंधार॥ जो तुम सुनो यशोदा गोरी॥ नंदनँदन मेरे मंदिर में आज करतहैं चोरी॥ हौं भई आन अचानक ठाढी कस्यो भवन में कोरी॥ रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनोभई मति भोरी॥ मोहिं भयो माखन पछतावो रीती देख कमोरी॥ जब गहि बांहि कुलाहल कीनो तब गह चरण निहोरी॥ लागे लेन नयन जल भर भर मैं हरि कान न तोरी॥ सूरदास प्रभु देत निशादिन ऐसे अल्प सलोरी॥७६

राग ठुमरी॥तेरोरी कन्हैया बलको भैया री यशोदा मैया आज मेरे घर आयो॥दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी रह्यो स स्यो ढकांयो॥जो पकरूं तो हाथ न आवे ढूंढ फिरो नहिं पायो॥ जानकीदास याहि बरजो क्योंना पूत अनोखो जायो॥७७॥

यह तो पूर्ण ब्रह्म गत ऋषियों ने नहीं पाईरी ॥ ८१ ॥

राग रेखता ॥ सुनिये यशोदा रानी छोडें यह ब्रज तिहारो ॥ कहीं जायके बसेंगी अतिही करें किनारो ॥ नित कहाँ तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको ॥ घर जाय के हमारे माखन चुरावे सारो ॥ तेरेही पास बालक यह बनके आय बैठे ॥ जब जाय घर सखिन के सुंदर तरुण निहारो ॥ छींके पै हो कमोरी लठिया ते फोर डारे ॥ दधिको मथनियां तोरके माखन सभी बिगारे ।नित करे हानि हमरी रंगीनयाहि बरजो॥ऐसो चपल यह ढीठ है यशुदाजी सुत तिहारो॥८२॥

राग देस ॥ गारी मत दीजो मो गरीबनीको जायो है ॥ तेरो जो बिगाऱ्यो सो तो मोसों आन कहौ बीर मैं तो काहू बातको नहीं तरसायो है । दधि की मथनियां भरी अंगनामें आन धरो तोल तोल लीजो बीर जेतो जाको खायो-है ॥ सूरदास प्रभु प्यारे नेकहू न हूजे न्यारे कान्हरा सा पूत मैंने बडे पुण्य पायो है ॥ ८३ ॥

राग रामकली ॥ मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो ॥ भोर भयो गैयन के पाछे मधुबन मोहिं पठायो ॥ चार पहर बंसीवट भटक्यो सांझ परी घर आयो॥मैं बालक बैयनको छोटो छीको किस विधि पायो । ग्वाल बाल सब बैरपडेहैं वरवश मुख लपटायो ॥ तू जननी मन की अति भोरी इन के कहे पतियायो॥तेरे जिया कछु भेद उपज है जान परायो जायो ॥ यह लै अपनी लकुट कमरिया बहुताहिं नाच नचायो ॥

सहें मर्कट देत खवाय ॥ जो वे भी चाखत नहीं देत भूमि ढरकाय ॥ रानी ० ॥ ७९ ॥

राग भैरवी ॥ मेरी भरी मटकिया लै गयोरी ॥ कछु खायो कछु ग्वालन खवायो रीती कर मोहिं दै गयोरी ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिन में ऊंची नीची मोते कहि गयोरी ॥ परमानंद ब्रजवासी सांवरो गूंठा बताय रस लै गयोरी ॥ ८० ॥

राग जंगलाकाफी ॥ दधि पीगयो री माई आज ॥ तेरो नट खट करगयो चट पट ॥ यह कहा सीख तैं दई कृष्णको ब्रजनारीके दधि लूटन कीरी ॥ चला जाय नट खट पीगयो गट गट फिर दिखतारी नाहीं ॥ एक रोज गूजरी का दांव जोलगा लहिंगे में पकर वाको दाब लाई री ॥ तू जो कहे थी मेरो नट नहीं चोर अब याहि लेरीमाई ॥ ब्रजकी सखी सब देखन को धाईं आज पकरे गएहैं यादोराई री ॥ खोल के दिखाओ इतबार नहीं आवे जाने किसको पकर लाई री ॥ भीतर रहेने ऐसो रूप लियो धार गूजरी को पति भर्तार बनोरी॥ गूजर जैसी पगडी और तगडी गूजर जैसी डाढी गोडों लौं लटकाई री ॥ बोलीं ब्रजनारी ऐसी बावरी भई तू आपनी तो ताली तैं ने बजवाई री ॥ तूतो कहेथी तेरो नट पकरो ले गूजर को पकर लाई री ॥ छल कृत रूप देख गूजरी बेहाल भई काढिके घुंघट बडी शर्माई री ॥ दूसरी कोठरी में आप रहे बोल मैं तो यहां बैठो माईरी॥एक बोली ब्रजनारी तू तो बावरी भई आपनी तो हाँसी तैंने करवाई री ॥ कहे जियाराम

जाके सुमिरन ते जीवन को भव बंधन छिनमें छुटजावै ॥
सोई आज बांध्यो ऊखल ते निर्खन को सगरो ब्रज धावै ॥
पूरण काम क्षीरसागर पति मांग मांग दधि माखन खावै ॥
भक्ताधीन सदा नारायण प्रेम की महिमा प्रगट दिखावै।८७

राग रामकली ॥ यशोदा तू बडी कृपण री माई ॥ दूध दही सब बिधि को दीयो सुतडर धरत छिपाई ॥ बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई ॥ सोऊ तो घरही घर डोलै माखन खात चुराई ॥ वृद्ध बैस पूरे पुण्यन ते तैं बैठी निधि पाई ॥ ताहू के खाइबे पीबे को कहा इती चतुराई ॥ सुनो न बचन चतुर नागर के यशुमति नंद सुनाई ॥ सूर श्यामको चोरी के मिस देखन को यह आई ॥ ८८ ॥

राग गूजरी॥यशोदा कान्ह हूं ते दधि प्यारो॥डार देहु कर मथत मथानी तरसत नंददुलारो ॥दूध दही माखन ले वारें जाहि करत तू गारो ॥ कुम्हलानो मुख चंद्र देख छबि काहे न नेक निहारो॥ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो॥सूर श्याम पर बलि बलि जैये जीवन प्राण हमारो८९।

राग धनाश्री ॥ यशोदा तेरो कठन हियो री माई ॥ कमल नयन माखन के कारण बांधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सुपनेहुँ दे न दिखाई ॥ याही ते तू गर्ब भरी है घर बैठे निधि पाई ॥ तब काहू को सुत रोवत सुनके दौर लेत हिय लाई ॥ अब काहे घर के लरका सों करत इती जड़-ताई ॥ बारंबार सजल लोचन भर जोवत कुँवर कन्हाई ॥

सूरदास तब हँसी यशोदा लै उर कंठ लगायो ॥ ८४ ॥

राग काफी ॥ वर्ज री महरी मोहनको चंचल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आंगन आवै गोरस खावै दधि मटकी भूपर पटकावै बाल रुआवै धूम मचावै ऐसो नित उठ करत बखेरो ॥ पलना पर ऊखलहिं टिकावै तापर चढ कर माखन लावै कपि बालन को टेर खिलावै देखत दुखित भयो मनमेरो ॥ छिप कर भीतर जाय निकासे अंधकार में मणीप्रकाशे ना पावे तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो ॥ सांझहिं धेनु वत्स लिये आवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै राख गांम अपनो हम जावें केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥८५॥

राग भैरवी ॥ कान्हानित नए उराहना लावे ॥ दूध दही घर काहू की कमी नहिं नाहक धूम मचावे ॥ तनक दहीके कारण मोहन माखनचोर कहावे ॥ सूर श्याम को यशुमति मैया वारंवार सिखावे ॥ ८६ ॥

राग शहानो ॥ देख चरित मोहिं अचरज आवै ॥ जो करता जग पालक हरता सो अब नंद को लाल कहावै ॥ बिन कर चरण श्रवण नासा दृग नेत नेत जाको श्रुति गावै ॥ ताको पकर महरि अंगुरी ते आंगनमें चलवो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म अनंत कहावै॥ सो शशि वदन सदन शोभा को नंदरानी निज गोद खिलावै॥ जाके डर डोलत नभ धरणी काल कराल सदा भय पावै ॥ सो ब्रजराज आज जननी की भौंह चढी को निरख डरावै ॥

कहा करूं मैं देखियो तो कैसो तुम्हें नाचनचाऊंगी॥ जो मैं तुम्हें सूधो न बनाऊं नारायण तो मैं निज बाप की न आज से कहाऊंगी ॥ १३ ॥

राग दादरा ॥ प्यारे जिन मेरी बाहिँ गहो ॥ मारग में सब लोग देखत हैं दूरी क्यों न रहो ॥ मनमें तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहो ॥ कहिहों जाय आज यशुमति सों हमरी बाट रोकत हो ॥ इतने पै नहिं मानत आनंदघन लरकाही तुम हो ॥ १४ ॥

राग सोरठ॥ छांडो लंगर मोरी बहियाँ गहो ना॥ मैं तो नारि पराए घर की मेरे भरोसे गुपाल रहोना॥ जो तुम मेरी बैंहां गहत हो नयना मिलाय मेरे प्राण हरो ना॥ बृंदाबनकी कुंजगली में रीत छोड अनरीत करो ना॥ मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चित टारयो टरै ना॥ १५॥

राग मलार॥ छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे॥चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करें सब पुर नर नारी रे॥ हम सुकुमार ठाढी काँपत हैं शिर पर दधि की मटुकिया भारी रे ॥ नारायण ब्रज कौन बसैगो ऐसी अनीति जो करनी बिचारी रे॥ १६॥

राग विहाग ॥ बरजो नहीं मानत बार बार॥ जब मैं जात सखी दधि बेचन भाजत कंकर मार मार। ले लकुटी मटुकी महि पटकत घूंघुट देखत टार टार॥ हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार॥ कपटी कुटिल कठोर

कहा करूं बलि जाऊं छोरती तेरी सौंह दिवाई ॥ जो मूरत जल थल में व्यापक निगम न खोज न पाई ॥ सो यशुमति अपने आँगन ते दे करतार नचाई ॥ सुर पालक प्रभु असुर संहारक त्रिभुवन जाहि डराई ॥ सूरदास स्वामी की लीला निगम नेत नित गाई ॥ ९० ॥

राग सारंग ॥ यह सुनके हलधर तहँ आए ॥ देख श्याम ऊखल सों बांधे तबहीं दोऊ लोचन भर आए ॥ मैं बरज्यो कई बेर कन्हैया भली करी दोऊ हाथ बंधाए ॥ अजहूं छाँडोगे लँगराई दोउ कर जोर जननी पै आए ॥ श्यामहिं छोर मोहिं बरु बांधो निकसत सगुन भले नहिं पाए ॥ मेरो प्राण जीवन धन माधो तिनकर भुज मोहिं बँधे दिखाए ॥ माता सों कहा करों ढिठाई शेष रूप कह नाम सुनाए ॥ सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम एक है आए ॥ ९१ ॥

अब घर काहू के जिन जाहु ॥ तुम्हरे आज कमी काहेकी कत तुम अनतहिं खाहु ॥ जरै जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ महराय ॥ नंद मोहिं अति त्रास करैगो बांधे कुँवर कन्हाय ॥ बलि जाऊं अपने हलधर की छोरत है जो श्याम ॥ सूरदास प्रभु खात फिरो जिन माखन दधि तुम धाम ॥ ९२ ॥

मगरोकन लीला ॥

राग आड़ा कालिंगड़ा ॥ छाँडो मोरी गैल नातो गारी मैं सुनाऊंगी ॥ औरोंके भूले कहूँ मोते जिन अटको अभी यशुमति पै पकर लैजाऊंगी ॥ पहले ही सों अपनी बडाई

चपल कहावे यमुनाके तट बंसीबटके निकट नट झटक मटक दधि गटक पियो ॥ बदन की छबि कान्हा मुकुट को शिर धर कदम के तरु तर कुँवर दुऱ्यो ॥ बांसुरी बजाई मेरी सुध विसराई कान्हा देख ललाई मेरो कर पकऱ्यो ॥ १००॥

ठुमरी ॥ मोको डगर चलत दीनी गारी रे ॥ ऐसो री ढीठ बनवारी री गोइयां विनती सकल कर हारी रे ॥ नीर भरन मैं चली हूं धामसों बीच मिले पनघटमें कान्हरे॥वहतो जाने नदे पनघट को सनदपिया निरखत सगरी पनिहारीरे १०१

राग भैरव ॥ देखो री मथनियां कैसे फोरी नंदलाल ने॥ बन में निवासी भयोरी नंद को करत फिरत बरजोरी ॥ नंदलालने० ॥ जित जाऊं तित आडोई आवे एरी दैया मोते जोर जनावे री ॥ यह ब्रज कैसे बसेगोरी सासुरे जाऊं तो सासलरे इत यह घर घाले री । आत्माराम नरसिंहके स्वामी कहा मुख ले घर जाऊं हो कान्हा मोतिन की लर तोरी १०२

राग टोडी ॥ गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई ॥ हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ॥ घूंघट पट खोल खोल सांवरो कन्हाई ॥ यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ॥ अगर बगर झगरो करत रार तो मचाई ॥ हौं तो बीर यमुना तीर नीर भरन धाई ॥ गिरिधर के चरण ऊपर मीरा बलिजाई ॥ १०३ ॥

राग भूपाली ॥ लंगर मोसे गारियां दे दे जारी ॥ यह कलका छोकरा यह ढीठ लंगर ॥ गारी की गारी टो-

श्याम घन देखत छबि तरु डार डार॥ हरि बिलास ब्रज रा-
ज हठीलो बैठ गई मैं हार हार॥ ९७॥

राग झंझोटी॥बडो ढोटा खोटा नंद को आली जाको ना-
म कहत बनमाली। मिल्यो यमुन तट हँस हँस मटकत लपट
झपट मटकी पटकि चट दधि गट नट खट कठिन हियो मो-
हिं देत चल्यो गयो गाली॥ माथे पै मुकुट धरे कान में कुंड-
ल पहरे भाल पर तिलक गोरोचन को करे गल बैजंती मु-
क्तमाल आली मुख तमोल की लाली॥ कटि पीत बसन मा-
नो घन दामिन नूपुर बजत बरणे छबि को कबि देखतही मन
हर्‍यो युगल प्रभु तिरछी चितवन शाली॥ ९८॥

लावनी॥ सुनरी यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक
लूटी। मैं देत दुहाई बाबा नंदजूकी हाहाखायके छूटी। मैंदधि
बेचन जात बृंदावन शिर धर गोरस की मटकी॥ आन अ-
चानक तेरे कान्हा ने मेरी बैहां झटकी॥ जब झटकी हिरदे में
खटकी लटकी शिर में आ अटकी॥ मैं व्याकुल ह्वै गई रही
ना सुरत मोहिं घुंघुट पटकी॥ ऐसी भई सुध हरन गिरी मैं
धरन मेरी मटुकी फूटी॥मैं देत०॥ एक सखी कह चुकी दूस-
री कहे सुनो यशुदारानी॥ आज या ब्रज में तेरे कान्हा ने ऐ-
सी धूमहै ठानी।घाट बाट पै रोकत डोलै नहीं भरन देवेपानी॥
पानी भरत में दान माँगतहै ऐसो दधि को दानी॥ कर की
चूरी गईं करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी॥ मैं देत०॥९९॥

राग देस॥ सुनरी गुण कान्ह कुँवर के॥ तेरो री सुत

राग छायानट ॥ अँगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना सांवरो ॥ हौंजो जात कुंजन दधि वेचन बीच मिले गिरिधारी ॥ अगरसुने मोरी वगर सुनेगी सास सुने देवे गारी॥ चंद्र सखो भज बालकृष्ण छवि हरि चरणन बलिहारी १०७

राग श्याम कल्याण ॥ नट नागर चितचोर गेंद तक मारी सामलिया ॥ भयो निशंक अंक भरलीनी भ्रुकुटी नयन मरोर ॥ कहा करूं कछु बश ना मेरो ऐसो जालिमजोर॥ रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नाहिं निहोर ॥१०८॥ नयनों की मारी कटारी मेरे ॥ सुनियोरी मेरी पार परोसन ढीठ भया गिरिधारी ॥ यमुनाके तट भेट भई मोसोंऐसो छैल बिहारी । सास बुरी घर ननद हठीली देवर सुनै देय गारी॥मधुर अली घर जात बने ना पीर उठी अति भारी १०९

राग भूपाली ॥ लंगर मोरी गागर फोर गयो॥सखी जाने कहांसों अचक आय लंगर० ॥ नई चुंदरिया चीर चीर कर निपट निडर पुनि आंख दिखावे देख बीर अति कोमल बैंहां दोऊ कर पकर मरोर गयो ॥ मोसों तो कहे सुन एरी सुंदरी तो समान ब्रज सुघर न कोऊ नख शिख लौं छबि परख निरख मुख सघन कुंज की ओर गयो ॥ कहँ लग कहों कुचाल ढीठ की नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण मैं घनो बरजरही मोतियन की लर तोर गयो ॥ ११० ॥

राग रेखता ॥ सुनले यशोदारानी तू लाल की बडाई॥सब लोक लाज वाने यमुना में धो बहाई॥भोरे ही मैं गई जो ज-

ने का टोना तुम जीते हम हारी हारी॥ आवत जावत प्या-
रा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी ॥ मोर मुकुट
माथे तिलक बिराजे कुंडल की छबि न्यारी न्यारी ॥ दोउ क-
र जोरे विनती करतहों सूर शरणगत तिहारी तिहारी १०४॥

राग सिंध॥ रोके मोरी गैलवा मैं कैसे जाऊं पानियां॥
शीश मुकुट कंचन को झलके मकर मनोहर कुंडल अलकें
माथे खौर चंदनकी राजे उर बैजंती माल विराजे पीतांबर
कटि कस्योरी चौतनियां ॥ अधर सुधारस बैन बजावे ग्वा-
ल वाल लिये संगही आवे कहा नमाने नंद महर को माख-
न खात फिरत घर घर को ऐसो री निडर झकझोरी मोरी बे-
नियां॥ कर किंकिणियां नूपुर बाजें रुनझुनात बहु मुनि म-
न राजें पग पैंजनियां सुंदर साजें दर्श देख अघ दूर ते भा-
जें अति चंचल अलबेली चितवनियां॥ गागर फोर मोर
मुख हँसके करते गह निज उर ते लचके सूरश्याम प्रभु
नागर नट को बरज रही मानत नाहिं हटको काहेना बरजो-
री यशोदा महारानियां ॥ १०५॥

राग रेखता॥यमुना न जान पावें भरने न देत पानी॥ढोटो
बडा अनोखा है नंद को गुमानी ॥ लेकर जो गागर गृह से
यमुना पै भरने आई।आगे जो ठाढो मग में वह सांवरो कन्हा
ई॥देखी सखी इकेली बैहां पकर मरोरी।छाती सों कर लगा-
वे गल हीर हार तोरी॥ निरखी अली नवेली या कुंज वाट
पाई॥हँस हँस के ललित किशोरी उर कंठसों लगाई ॥१०६॥

कर कन्हाई घूँघट सम्हार खोलै। ठोढी सों कर लगायके रस कीसी बात बोलै॥ निज दृष्टि बान करके भौंहैं कमान ताने॥ चोरी सिवाय रसके वह और कछु नजाने॥ चोरी करे सो चोरी घरमें डगर में पावे॥ भाजन को देत फोरी माखन दही लुटावे॥ कोई सखी इकेली घर में बगर में पावे॥ हँसके शरीर मसके चोटे दया न आवे॥ हम बार बार तुमपै करती पुकार हारी॥ तुमने दया हमारी कबहूं नहीं बिचारी॥ कीजे कृपा शिताबी हम गोप की कुमारी॥ दीजे निकास देखूं कैसो है रसिक बिहारी॥ ११२॥

राग झूलनाकी स्वरमें॥ लिये फिरत सँग सँग सखियनको जाने मोहनी डारी है॥ ढूंढत डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारीहै॥ आप अमृत घट आपहि पीवै आपहि प्यावन हारी है॥ आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी है॥ बंसी बजन दिशा अवलोकन घुंघट ओट निहारीहै॥ सब सखियन में चतुर राधिका श्रीवृषभानु दुलारी है॥ सुनोसखी जाके संग डोलो सोई त्रिया बपु धारीहै॥ लीजे पकर निकस कहूं जाय ना यही रसिक बनवारी है॥ ११३॥

गोचारन लीला

राग रामकली॥ मैया मैं गाय चरावन जैहों॥ तू कह नंद महर बाबा सों बडो भयो न डरैहों॥ श्रीदामा आदि सखा सब अपने और दाऊ संग लैहों॥ बंसीबट की शीतल छैयां खेलत अति सुख पैहौं॥ देहु भात कामर भरलैहों भख

ल भरवे काज बहना ॥ पीछे सों आय अचानक उन मूँदे मे-
रे नयना ॥ डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढे बैना । हौं तो र-
ही इकेली वा संग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हो हो करके ता-
री मेरी बजाई ॥सुनले०॥ हँस हँस के छैल मोसों करवे लगो
ठठोली ॥ यह छबि तिहारे मुख की अब कासों जावे तोली ॥
निरखे कबूं बदन को कबहूं वह छूवे चोली ॥ मैं तो सकुच
की मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि बैहाँ मेरी झटकी गागर
धरणि गिराई ॥ सुनले ० ॥ अँगियाके बंद तोरे चुंदर झडाक
फारी ॥ दुलरीके निरखवेको गल वैहां मेरे डारी ॥ यह सब
कुचाल देखें मग ठाढे पुरुष नारी ॥ताहू पै नाम मेरो लेके सु-
नावे गारी॥गुरुजन में मेरी वाने या बिधि करी हँसाई॥सुन०
ज्यों ज्यों कहूं मैं हट रे त्योंत्यों ही दूनो अटके ॥ मुसका-
वे दृग मिलावे भ्रुकुटी चलावे मटके ॥ कर कर के सैना बेनी-
तन परसे चीर झटके ॥ अब और कहा कहूं मैं गलहार ह्वैके
लटके ॥इक साथ वाने ऐसी पकरी निलज्जताई ॥ सुनले०॥
कबहूं कहे बतारी तू क्यों इकेली आई ॥ कै घर में तेरे पति-
की तोसों भई लराई ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्र-
ताई॥ बिधना ने तेरी मेरी जोरी भली बनाई॥नारायण वाकी
बातें सुनके मैं अति लजाई ॥ सुनले ० ॥१११ ॥ सुनिये य-
शोदा कान दे अरजी यही हमारी ॥ हम छांड जाँय ब्रजको
मरजी यही तुमारी । नित घाट बाट नट खट जेहर झडाक
पटकै ॥ बैयां मरोरे झटपट छातीसों हार झटकै ॥ पुनि कूद

भई बडी बेर ॥ बैठे कहँ सुध लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर॥वृंदाबन आदि सकल बन ढूंढ्यो जहिं गायनकीटेर॥ सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुराए दुरत डुंगरन की ओट सुमेर ॥ ११८ ॥

राग सारंग ॥ ब्रज बासिन पटतर कोउ नाहीं ॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूठन लैलै खाहीं ॥ धन्य नंद धन जननी यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई ॥ धन्य धन्य बृंदाबन के तरु जहँ बिहरत प्रभु त्रिभुवन राई ॥ हलधर कहत छाक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई ॥ सूरदास प्रभु बिश्वंभर होय ग्वालन कौर अघाई ॥ ११९ ॥

राग अंबीर कल्याण ॥ ठुमक गति चलत अनोखी चाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल केसर बेंदी भाल ॥ आगे गैयां पाछे गैयां संग सोहें ब्रज बाल ॥ विष्णुदास मुरलीधर की छबि देखत भई निहाल ॥ १२० ॥

राग केदारा ॥ बन आए बनवारी ॥ शिर धार चंदन खौर मोतियन की गल माला ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे कुंडल की छबि अति न्यारी ॥ वृंदाबन की कुंज गली में चाल चलत गति अति प्यारी ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि चरण कमल पर बलिहारी ॥ १२१ ॥

राग जंगला ॥ चले आते हैं मोहन बन से धेनु चराए हुए ॥ लिये बंसी अधर पै मधुर सुर गाए हुए ॥ उडी गोरज परी मुख पै छबीले लाला हूं के ॥ लटकता नाक में मोती कुं-

गै तब खैहौं ॥ परमानंद प्रभु तृषा लगे जब यमुना जलहि चैहौं ॥ ११४ ॥

राग सारंग ॥ शीश मुकुट मणि विराज कर्णकुंडल अधिक साज अधर लाल चिवुक सुंदर यशुमति को प्यारो ॥ कमल नयन कुँवर लाल कुंकुम को तिलक भाल गुंज माल कंठ धार कान्ह कमरी वारो ॥ चारन बन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात गोपियन को चित चुरात कहियत नँद वारो ॥ अति स्वरूप श्याम गात दरश देखे पाप जात मिहरदास प्रभु प्रवीन पतित तारन हारो ॥ ११५ ॥

राग विलावल ॥ खेलन में को काको गुसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा बरवश ही कत करत रुसैयां॥जात पात हम ते बड नाहीं ना हम बसत तुम्हारी छैयां॥अति अधिकार जनावत ताते जाते अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करै तासों को खेलै हाहाखात परत तब पैयां ॥ सूरदास प्रभु खेल्यो ही चाहें दाँव दियो कर नंद दुहैयां ॥ ११६ ॥

राग जंगला सिंध॥न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां॥नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दश गैयां अधिकैयां॥ना हम चाकर नंद बबा के ना तुम हमरे नाथ गुसैयां ॥आपन तो ह नींद को मातो हम चारत तेरी बन बन गैयां ॥ कबहूं जाय कदम चढ बैठे हम गैयन सँग लगत पठैयां ॥ मानी हार सूर के प्रभुने अब नहिं जाऊं मोहिं नंदकी दुहैयां ॥ ११७ ॥

राग टोडी ॥ आज कौने धों बन चरावत गाय कहा धों

मकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुबानी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी आए बन ते ले आरती वारत नंदरानी ॥ १२५ ॥ मैया मोरी कमरो चोर लई ॥ मैं बन जात चरावन गैयां सूनी देख गही ॥ एक कहे कान्हा तेरी कामर यमुना में जात बही ॥ एक कहे श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई॥ एक कहत नाचो मेरे आगे लेदेहों और नई ॥ सूरदास यशुमति के आगे अँशुअन डार दई ॥ १२६ ॥

राग कान्हरा ॥ पौढे श्याम जननी गुण गावत ॥ आज गयो मेरो गाय चरावन यह कह मन हुलसावत ॥ कौन पुण्य तप ते मैं पायो ऐसो सुंदर बाल ॥ हर्ष हर्ष के देत सखन को सूर सुमन की माल ॥ १२७ ॥

काली दमन लीला।

छंद ॥ गेंद के संग कूद बालक यमुना जल पैठे धाय के ॥ नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहां जायके ॥ कौन दिशा ते आयो रे बालक कहां तुम्हारो गामहै ॥ कौन सखी के पुत्र जो कहिये कहा तिहारो नाम है ॥ पूर्व दिशि ते आए री नागिन गोकुल हमरो गाम है॥ मात यशोदा पिता नंदजू कृष्ण हमारो नाम है ॥ प्रभु के सन्मुख कहत नागिन जारे बालक भागके ॥ तेरो रूप देखे दया उपजे नाग मारै जागके ॥ भागे कुल को दाग लागे अब भागे कैसे बनै ॥ होनी होय सो होय री नागिन नागतो नाथे बनै ॥ असुर राजा दुखी धरणी नृप चोर बन आइयां ॥ कंस सेती

डल झलकाए हुए॥ मुकुट की लटक पै अटकी मोरी अँखियां यह लाला॥ लेगई जो मन मेरा जुलफें नागिन बल खाए हुए॥ नयनन की सैन दे मोही सकल ब्रज हू की बाला॥ परी बश प्रेम के छुटती नहीं छुडाए हुए॥ अपने कृष्णदास पै कीजिये कृपा नंदजूके लाला॥ दीजिये दर्शन चरणसों रहूं लिपटाए हुए॥ १२२॥

राग कान्हरो॥ देखन दे मोरी बैरन पलकां॥ निरख स्वरूप मदन मोहन को बीच परत बज्जर सो सलकां॥ आगे आगे धेनु पाछे नँदनंदन गोचरणन रज मंडित अलकां॥ कुंडल कर्ण कोटि रवि पसरे परत कपोलन में कछु झलकां॥ ऐसो स्वरूप निरख मोरी सजनी कहा री कियो इस पूत कमल के॥ नंददास जनन की यह गति तर्फत मीन भाव बिन जलके॥ १२३॥

राग खमाच॥लटक लटक चलत चाल मोहन आवै॥आवै मन अधर मुरली मधुर सुर बजावै॥ चंदन कुंडल चपल डोलन मोरमुकुट चंद्रकलन मंद हँसन जीयाकी फसन मोहनी मूरत राजै॥ भ्रुकुटी कुटिल चपल नयन अरुण अधर मधुरे बैन गति गयंद चारु तिलक भालपर विराजै॥ लछनदास श्याम रूप नख शिख शोभा अनूप रसिक भूप निरख बदन कोटि मदन लाजै॥ १२४॥

राग गौरी॥ लटकत चलत युवती सुखदानी॥ संध्या समय सखा मंडल में शोभित तनु गोरज लपटानी॥ मोर-

राग काफी॥ काली के फनन ऊपर निर्तत गोपाल लाल अद्भुत छवि कही न जाय त्रिभुवन मन मोहें॥तत्ता थेईथेई करत हरत सबके चित्त जात गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहें॥रुनक झुनक नूपुर धुन उठत उठत पैजनी पग ठुमक ठुमक किंकिनी कटि बाजत चित करखें। विद्याधर किन्नर गंधर्व जहां उघटत गत जय जय जय भाषत सुर बधू पुष्प बरषें ॥ ज्यों ज्यों फण ऊंचे करत त्यों त्यों कृष्ण मारें लात देत न अवकास प्रभु नाचत गति धीमें ॥ तरुण बदन गरल बमन सरल किये या बिधि कर लटक लटक पटकत पग ललित रंग भीने॥नारदादि शिव बिरंचि तज प्रपंच धरत ध्यान ताको पग दुर्लभ सोई उरग शीश धारें। विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग बिसरत न बिसारें।१२९।तांडव गति मुंडन पर निर्तत बनमाली॥ पंपंपं पग पटकत फंफंफं फनन ऊपर बिंबिंबिं बिनती करत नाग बधू आली॥संसंसं सनकादिक नंनंनं नारदादि गंगंगं गंधर्व सभी देत ताली॥सूरदास प्रभुकीबानो किंकिंकिं किनहूं न जानी चंचंचं चरणधरत अभय भयो काली॥१३०॥

राग कान्हरो॥ जबहिं श्याम तनु अति बिस्तार्‍यो ॥ पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकार्‍यो। यह बाणी सुनताहिं करुणामय तबहिं गए सकुचाए ॥ यही बचन सुन द्रुपदसुताके दीनो बसन बढाए॥ यही बचन गजराज सुनायो गरुड छांड तहँ धाए॥ यही वचन सुन लाक्षा

द्वंद्व कीनो नाग नाथन आइयां॥ कै बालक तुम मग जो भूले कै घर नारि रिसाइयां॥ कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयां॥ ना नागिन हम मग जो भूले ना घर नारि रिसाइयां॥ ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयां॥ लै बालक गल हार माला सवा लख की बोरियां॥ सो तो लै घर जाउ रे बालक नागसों देउँ चोरियां॥ कहा करों गल हार माला सवा लख की बोरियां॥ बृंदावन में गडो हिंडोरा नागकी करों डोरियां॥ चौंसठ चोप मरोर नागिन नाग जाय जगाइयां॥ जागो हो बलवंत योधा बालक जूझन आइयां॥ जब उठे हो जलके राजा इन्द्र जल घहराइयां॥ प्रभु के मुकुट को झपट कीनो शब्द ताल बजाइयां॥ दोऊने मिलके द्वंद्व कीनो राग भेद सुहाइयां॥ सहस्त्र फण प्रति निर्त कीनो थेई थेई शब्द उचारियां॥ कर जोर नागिन करत स्तुति कुटुम सहित उठ धाइयां॥ नाथ अब अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयां॥ बावन बलि के द्वार हरिजू आप रूप बढाइयां॥मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह राम रूप दिखाइयां॥ हम दासी प्रभुजू तिहारी मत मारो छोडो नाग को॥ प्राण दान तुम देहु हम को राखो नाथ सुहाग को॥ नंदनंदन तब भए राजी दियो काली छोडके॥करी अनुग्रह दास कीनो ताके मद को तोडके॥ कालीदह में नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियां॥ प्रभु मदन मोहन रहस मंडल याही बिधि सों गाइयां॥ १२८॥

फिर झपटत लपट कराल॥धूंम धूंख बाढी धुर अंबर चमकत बिच बिच ज्वाल॥हरिन बराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल॥जिन जिया डरो नयन सब मूंदो हँस बोले नंदलाल॥ सूर अनल सब बदन समानी अभय करे ब्र जबाल॥१३४॥

गोवर्द्धनलीला ॥

राग मल्हार ॥ देखो माई बादर की बरिआई ॥ मदन गोपाल धऱ्यो कर गिरिवर इंद्र ढीठ झर लाइ ॥ जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको शमन बडाई ॥ सेवक करे स्वामि सों सर्वर इन बातन पति जाई ॥ इंद्र ढीठ बलि खात हमारो देखो अखिल गँवाई ॥ सूरदास तिनको काको डर जिहिं बन सिंह कन्हाई ॥ १३५ ॥

राग बिलावल ॥ राखि लेहु गोकुल के नायक ॥ भीजत ग्वाल गाय गो सुत सब विषम बूंद लागत जनु सायक॥ बर्षत मूशल धार सैनापति महामेघ मघवा के पायक ॥ तुम बिन ऐसो कौन नंद सुत यह दुख दुसह मेटबे लायक ॥ अघ मर्दन बक बदन बिदारन बकीबिनाशन सब सुखदायक ॥ सूरदास तिनको काको डर जिनके तुमसे सदा सहायक१३६

राग लावनी ॥ साँवरे शरणागत तेरी ॥ इंद्र ने आय ब्रज घेरी ॥ देखोजी यह बादर मिल आए ॥ दामनी दमकत भरलाए ॥ मेघभर लोकां बर्सावें ॥ भाग अब कहो कितको जावें ॥ कहोजी अब कैसे बने पऱ्यो इंद्रसों वैर ॥ कोप्योहै पृथिवीको पालक होगी किसविधि ठैर ॥ जुगत हम बहुतेरी

गृह में पांडव जरत बचाए॥यह बाणी सहजात नप्रभु पै ऐसे परम कृपाल॥सूरदास प्रभु अंग सकोऱ्यो ब्याकुल देख्यो ब्याल॥१३१ बंदों मैं चरण सरोज तिहारे॥सुंदर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे॥जेपद पद्म सदाशिव को धन सिंधुसुता उर ते नहिं टारे॥जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन वच क्रम प्रह्लाद सम्हारे॥जे पद पद्म फिरत वृंदावन अहि शिर धर अगणित रिपु मारे॥जे पद पद्म परस ब्रज युवती सर्बस दे सुत सदन बिसारे॥जे पद पद्म लोकत्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघभारे॥जे पद पद्म परस ऋषिपत्नी नृप अरु ब्याध अमित खल तारे॥जे पद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भए सब काज सँवारे॥तेपद पंकज सूरदास प्रभु त्रिबिध ताप दुख हरण हमारे १३२॥ श्याम कमल पद नख की शोभा॥जे नख चंद्र इंद्र सुर परसें शिव बिरंचि मन लोभा॥जे नख चंद्र सनक मुनि ध्यावें नहिं पावत मर्माहीं॥जे नख चंद्र प्रगट ब्रज युवती निरख निरख हरषाहीं॥जे नख चंद्र फणिंद्र हृदय ते एको निमिष नटारत॥ जे नख चंद्र महा मुनि नारद पलक कहूं न बिसारत॥जे नख चंद्र भजत खल तारत रमा हृदय नित पर्शत॥सूर श्याम नख चंद्र बिमल छबि गोपी जन मिल दर्शत॥१३३॥

राग बिहाग॥अबकी राखि लेहु गोपाल॥दशो दिशा ते दुसह दवागिनि उपजीहै यहि काल॥पटकत बांस कांस कुश चटकत लटकत ताल तमाल॥उचटत अति अंगार फुटत

गिरिवरपरबरसे॥दामनी घन घन में चमके॥ कि मूशलधार परी बरसे॥ वर्ष वर्षके हारयो सुरपति तब जान्यो जगदीश॥ दोनों हाथ पसारके धरयो चरण में शीश॥ मेरी बुधि माया ने फेरी॥ सांवरे०॥ अचंभो याको कछु नाहीं॥ इंद्र तो लाख कोट ताईं॥ बनावत पल छिन के माहीं॥ बिगारत देर कछू नाहीं॥ उत्पति परलै जगत की गिरिधारी को खेल॥ गंगा-धर ब्रह्मा शिव ध्यावें इंद्र बिचारो कौन॥ नाम ते काटो जम बेरी॥ सांवरे०॥ १३७॥

प्रथम सनेहलीला॥

राग गौरी॥ बूझत श्याम कौन तू गोरी॥ कहां रहत काकी है बेटी देखी नहीं कभूं ब्रज खोरी॥ काहे को हम ब्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी॥ सुनत रहत श्रवणन नँद ढोटा करत रहत माखनकी चोरी॥ तुमरो कहा चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिल जोरी॥ सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरी राधिका भोरी॥ १३८॥

राग धनाश्री॥प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यो॥ न-यन सैन बातें सभ कीनी गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो॥खे-लन कभूं हमारे आवो नंद सदन ब्रज धाम॥ द्वारे आय टेर मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाम॥जो जानो घर दूर हमारो ति-हारे बोलत सुन लेहों टेर॥ तुम्हैं सौंह वृषभानु बबा की प्रात सांझ इक बेर। सूधे निपट देखियत तुमको ताते करियत साथ। सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हरि मिल गाथ।१३९।

हेरी॥ सांवरे०॥ कही हम तुमरी सब मानी॥ भेट गिरिवर की मन ठानी॥ इंद्रकी झूठ सभी जानी॥ लखी हम तुमरी नादानी॥ गोकुल राजा नंदजू जाघर कुँवर कन्हाय॥ मिथ्या वचन अब होत तिहारो जनकी करो सहाय॥ जतन में नहिं लाओ देरी॥ सांवरे०॥ कहत हम तुम्हरे गुण भारी॥ पूतना बालक पन मारी॥ दुष्टनी ने माया बिस्तारी॥ आप बनी सुंदर नारी॥ कुच में जहर लगायके दियो कृष्ण मुख माहिं॥ एक मास को रूप तिहारो जीवत छोडी नाहिं॥ मारकर मारग में गेरी॥ सांवरे०॥ जो निर्मल जल यमुना को कियो॥ तुरतही दावानल तैं पियो॥ अभय ब्रजबासिन को करदीयो॥ खैंच कर मन सब को हर लीयो॥ ब्रज तेरी को सांवरे करे इंद्रबेहाल॥ अबके सहाय करो नँदनंदन करुणासिंधु गुपाल॥ शरण यह ब्रज मंडल तेरी॥ सावरे०॥ अधर हरि आपन मुसुकाए॥ बचन यह मुख ते बतलाए॥ कहो तुम यहां कैसे आए॥ सबी मिल गिरिवर पै धाए॥ नख पर गिरिवर धारके कियो कृष्ण ने खेल॥ गोवर्द्धन के शीश पर दियो सुदर्शन मेल॥ अधर धर बंसी को टेरी॥ साँवरे०॥ सोहे शिर पचरंगी चीरा॥ लगे मुख पान न को बीरा॥ गले मोतिन कि माल हीरा॥ सोहे कटि पीतांबर पीरा॥ सात कोस के बीच में गोवर्द्धन विस्तार॥ सात वर्ष को रूप हरी को लीनो पुष्प समान॥ अशीशां दे रही ब्रजसारी॥ साँवरे०॥ इंद्रकर कोप कोप गरजे॥ नहीं जल

के नंदा ॥ तुम को पूछें सब ब्रज चंदा ॥तेरी बहन छैल छि-
न गारी ॥ हमारे श्रीदामा ते यारी ॥ तेरी बडी बिनोदनताई॥
जाकी सभ जग करत हँसाई।नँदनन्दन तेरी बूआ।सो करे झूठ
के पूआ॥नँदनन्दन तेरी काकी। सो काम कलामें पाकी ॥नँद
नंदन तेरी मौसी। सो रहत सदा मन हौसी ॥नँद नंदन तेरी
मामी।सो सब अवलन में नामी ॥नँदनंदन तेरी नानी। वाकी
बात न हमते छानी॥ नँदनंदन तेरी दादी। सो सदा फिरे
उनमादी॥ गोरे नंद यशोदा मैया। तुम कारे कौन के दैया॥
सुध न्हाय यशोदा रानी । काहू कारे ते रति मानी ॥ आपनी
यशुमति को गह आनो। सो आय मिले वृषभानो ॥ यह
नंद वृषभानु स नेही। यह एक प्राण द्वैदेही॥ वे नंद गाम की
बाला ॥ यां बर्साने के लाला ॥गठ जोरो आन करावो। हथरे
लो हमें दिवावो ॥ यह रहस किशोरीदास गायो। सोबास
सदा ब्रज पायो ॥ १४३ ॥

राग जंगला ॥ यशोदा ने कारी अँधेरी में जायो॥ या-
ते कारो रूप हरिने पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुख
चूंमत मोद बढायो ॥ रूपकी राशि मयंक मुखी मेरी राधेके
रूप लजायो॥ नाम अनेक सुने घनश्यामके जब से गर्ग गृ-
ह आयो ॥ ना हमने वसुदेव सुने बासुदेव कहांते आयो॥
कर्म की रेख मिटे ना सजनी वेद पुराणन गायो ॥ सूरदास
प्रभु तुमरे मिलन को वेद विमल यशगायो॥ १४४ ॥

राग काफी॥ भूषण अपने लैरी मैया ॥ मोरकी चंद्रि-

राग आसावरी ॥ खेलन के मिस कुँवरि राधिका नंदम-हर घर आई हो ॥ सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर हैं कुँव-र कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि बाणी निकसे अ-ति अतुराई हो ॥ माता सों कछु कलहिं करत हरि डाऱ्यो रि-स बिसराई हो॥मैया री तू इनको चीन्हत बारंबार बताई हो॥ यमुना तीर काल्ह मैं भूल्यो बाहँ पकर मेरी लाई हो ॥ अब तो यहां तोहिं सकुचति है मैं दे सौंह बुलाई हो ॥ सूरश्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ १४० ॥

कबित्त ॥ कीरति महारानी वृषभानु आदि गोप गोपी कैसे या कलि माहिं धन्य यह कहावते ॥ कौन तप करतो ब्र-ज माहिँ बसबेको कौन बैकुंठ हूके सुख बिसरावते॥नागरि-या जोपै श्री राधेजू प्रगट नहोती तो श्याम पर कामहूं के बि-पती कहावते ॥ छाय जाती जडता बिलायजाते कबि सब जर जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥ १४१ ॥

आँख मचौनी लीला ॥

राग गौरी ॥ हो प्यारी लागे ब्रज की डगर ॥ लुक लुक खेलत आंख मचौनी चरण पहारी बगर ॥ सात पांच मिल खेलन निकसीं कोकिला बन की डगर ॥ परमानंद प्रभु की छबि निरखत मोहिं रह्यो ब्रज सगर ॥ १४२ ॥

राग आसावरी ॥ गावें देदे तारियां हो ब्रज की नारियां सुकमार॥नंद के नंदन हो ब्रज के चंदन रस गार ॥ मिल ब-र्साने की गोरी ॥ गारी गावैं नवल किशोरी ॥ तुम सुनो नंद

हरि कर कमल युगल पर राजत क्यों न बढे अभिमान ॥ एक मराल बैठ आरोहन विधि भयो महा प्रशंस ॥ इनतो सकल बिमान किये गोपीजन मानस हंस॥ श्रीवैकुंठनाथ पुरबासिन सेवत जापद रेन ॥ याके तो मुख सुख सिंहासन कर बैठी निज ऐन॥अधर सुधा लग कुल व्रत टारे नहीं शिखा नहिं ताग॥तदपि गदाधर नँद नंदनको याही ते अनुराग १४७

राग कान्हरो ॥ बांसुरिया बिष भरी बाजी ॥

दोहा ॥ बंसी बंसी नाम है, काहू धस्यो प्रबीन ॥ तान तान की डोरसों, खैंचत है मनमीन ॥ अहो बांसकी बँसुरिया तैं तप कीयो कौन ॥ अधर सुधा पिय को पिये, हम तरसंत बिच भौन ॥ अरी क्षमाकर मुरलिया, परहैं तेरे पाय ॥ और सुखी सुन होत हैं, महा दुखी हम हाय ॥ अहो बांसकी बँसुरिया, निकसी पर्बत फोर ॥ जो मैं ऐसी जानती, डरती तोर मरोर ॥ ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम ॥ अरी चलाए सबन पै, भले चामके दाम ॥ तू है ब्रजकी मुरलिया, हम हैं ब्रजकी नार ॥ तीन लोकमें गाइये, बंसी और ब्रज नार ॥ नयनन के चल तीरतन रह्यो परत नहिं भौन ॥ तापर बंसी बाजमत, देत कटे पर लौन १४८ ॥

कबित्त ॥ बांसुरी बजे तो ब्रज हम न बसेंगी बीर बांसुरी बसावो लाल हमें बिदा दीजिये ॥ जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेती सुर तेती घोर रोम रोम छीजिये ॥ तानन के तिरछे बान लागत हैं मोहिं आन श्रवणन सुनत जाय ब-

का काँच की मणियां गुंजाफल मोहिं देरी ॥ दुरादुरी में खेलत सखन सँग खेलन मैं नहिं पैहौं ॥ मुख शशि प्रभा बारही राखो इनको कहां दुरैहौं ॥ आज सदन वृषभानु गोपके खेलन मैं जो गयो ॥ सगरे सखा अगमनेभागे मैं ही चोर भयो ॥ जबहिं महरि वृषभानु गोपघर गह अंचर मोहिं रोक्यो ॥ बदन चूम मिष्टान्न हाथ धर अंग अंग अवलोक्यो ॥ तब वृषभानु सभा ते आए नंदकुमार नहोई ॥ परमानंद कुँवरि को दूलह कहत रहे सभ कोई ॥ १४५ ॥ मैया मोहिं ऐसी दुलहन भावै ॥ जैसी वह काहू की ढटोनियां रुनक झुनक चलि आवै॥कर कर पाक रसाल अपने कर मोहिं परोस जिमावै ॥ करअंचर पट ओट बबाते ठाढी ब्यार ढुरावै ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारै कर मनुहार मनावै ॥ अहो मेरे लाल कहो बाबा ते तेरो ब्याह करावै ॥ नंदराय नँदरानी दोउ मिल मोद समुद्र बढावै ॥ परमानंद दास को ठाकुर वेद विमल यशगावै ॥ १४६ ॥

बंसी लीला ॥

राग गौरी ॥ माई बिधि हूं ते परम प्रवीन जिन जगत कियो आधीन ॥ लाल की बांसुरिया ॥ चारवदन उपदेश विधाता थापी थिरचरनीत ॥ आठ बदन गर्जत गरबीली क्यों चल है यह रीत ॥ एक बेर श्रीपति के सिखये पायो विधि उर ज्ञान ॥ याके तो ब्रजराज लाडलो लग्योही रहत नित कान ॥ अतुल बिभूति रची चतुरानन एक कमल कर ठाम ॥

राग देस ॥ सखी याकी बंसी लीजे चोर ॥ जिन गुपाल कीये अपने वश प्रीति सभन सों तोर ॥ अधरन को रस लेत मुरलिया हम तरसत निशि भोर ॥ छिन इक घर भीतर निशि बासर धरत न कबहूं छोर॥ कबहुँक कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटि उर मोर ॥ नाजानूं कछु मेल मोहनी राखी सब अंग कोर ॥ सूरदास प्रभु को मन सजनी बंध्यो है नाद की डोर॥१५४॥ कौन बसत या बृंदाबनमें मो मुरलीको चोर ॥ जानी नहीं लई काहू करमें कटि में उरसी जोर ॥ चोरी नहिं बरजोरी एरी प्यारी मो मुरली को चोर ॥ राजा ही को दिये बनेगी यही न्याव कीजे बेगी तोर ॥ बृंदाबन हित रूप सुघर पिया बाट गँवाई ढूंढो काननके कछु देहु अकोर ॥१५५॥

राग खमाच ॥ किन लई देहु बताय मुरलिया राधा॥प्राण ते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हों गुण गाय॥ सप्त सुरन सुर नर मुनि मोहे बंसुरी नेक बजाय ॥ यह विनती बलिहार सुनो क्योंना प्यारीजी होत सहाय १५६

राग काफी ॥ मुरलिया जो पाऊं तो म तेरो ही गुण गाऊं ॥ सुनहो कुँवर किशोरी श्री राधे राधे राधे गाय सुनाऊं॥ चरण छुवाय कहत हों तुमसों तेरो ही ध्यानलगाऊं ॥ यह विनती बलिहार बिहारन तेरे ही हाथ बिकाऊं ॥१५७॥

राग भूपाली ॥ बंसी मेरी प्यारी दीजे प्रान प्रान प्रान ॥ यहि ठौर काल्ह भूल्यो री सुखदान दान दान ॥ नहिं काम की तिहारी दीजे आन आन आन ॥ जाते करूं

नमें बसीजिये॥ बंसीको छोडो श्याम बिनती करत ब्रज की वाम ऐसी कीनी सूर प्रभु ऐसीहू न कीजिये॥ १४९॥

राग परज॥ बंसुरी तू कवन गुमान भरी॥ सोने की नाहीं रूपे की नाहीं नाहीं रत्न जडी॥ जात सफात तेरी सब कोई जाने मधुबनकी लकरी॥ क्यारी भयो जब हरि मुख लागी वाजत बिरहों की भरी॥ सूरश्याम प्रभु अब क्या करिये अधरन लागतरी॥ १५०॥

राग भूपालीकल्याण॥ री बंसी कौन तप तैं कीयो॥ रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरन को रस पीयो॥ श्याम सुंदर कमल लोचन तोहिं तन मन दीयो॥ सूर श्रीगोपाल वश भए जगत में यश लीयो॥ १५१॥

राग देस॥ श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सी ने मन मोह्यो॥ यह सब जीव जंत जल थल के नाद स्वाद सुर पोस्यो॥ धरनी ते गोवर्द्धन धार्यो कोमल प्राण अधार॥ अब हरि लटक रहत हैं टेढे तनक मुरलिया भार॥ हमें छुडाय अधर रस पीवे करे न रंचक काम॥ सूरदास प्रभु निकस कुंज ते चेरी सौत भई आन॥ १५२॥

राग दादरा॥ चोरो सखी बंसी आज दाँव भलो पायो है॥ यह उपकार प्यारी सदा हम मानेंगी गौरी गाय राग रसिक सांवरो रिझायो है॥ बहुत अधरामृत चबायो श्याम मुरली बीच दिन दिनको कसक आज काढ पायो है॥ रसिक पीतम जोपै बिनती करें हजार बार तौहू या बांसुरी को भेद ना बतायो है १५३॥

नाम ॥ जिन घर ऐसे पूत हैं उजरत तिनके गाम ॥ बंसी कसी० ॥ बसोकि ऊजर जाउ तुझे क्या परी हमारी ॥ तुम ऐसी लख चार नंद घर गोबरहारी ॥ इक लख मेरे संग चलैं लख आवैं लख जांय ॥ लख ठाढी दर्शन करैं लख घडी घडी ललचांय ॥ बंसी दीजिये० ॥ सुघर सयानी नार हाथ गहि बंसी लाई ॥ पूरण परमानंद सांवरे मुखहिं बजाई ॥ ल बंसी ग्वालन मिली घूंघट बदन छिपाय ॥ सूरदास हारी गूजरिया जीते यादवराय ॥ बांसुरी लीजिये ब्रजनाथ १५९

राग कल्याण ॥ श्याम की बंसी बन पाई ॥ उठो यशोदा मैया खोलो किंवरिया मैं बंसी गृह देनेको आई ॥ बहुत दिनन के उनींदे मोहन सोने दे वृषभानुकी जाई ॥ इतनी सुनत निकस आए मोहन अंतर्यामी प्रभु कुँवर कन्हाई॥ मुरली के संग पहुँची हमारी दे राधे वृषभानु दुलारी॥ हमजानी कछु मान बढेगो तुम हरि हमको चोरी लगाई ॥ श्रवनन सुनी नयन नहिं देखी चलो ठौर हम देहिं बताई॥सूरदास गुण कहां लग बरणे दोनों में एको चतुराई १६०

वेनी गूंथन लीला ॥

राग कल्याण ॥ बेनी गूंथ कहा कोई जाने ॥ मेरीसी तेरी सौंह राधे ॥ बिच बिच फूल श्वेत पित राते कोकरसके एरी सौंह राधे॥ बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर कंगही सों साधे॥ हरीदास के स्वामी श्यामा नख शिखलौं बनाई दे काजर नख ही सों आधे ॥ १६१ ॥

मैं तेरो री गुण गान गान गान॥विनती सुनो हमारीदे कान कान कान॥कृपा रसिक पै कीजे जन जान जान जान१५८।

राग ईमन ॥ काल्ह सखी यहि ठौर बांसुरी भूल बिसारी ॥ ले जोगई तुम धाम वात हम सुनी है तुम्हारी ॥ तुमरे काम न आवही बंसी हमरी देहु ॥ हम आतुर होय मांगते तुम नाहिं जु नाहिं करो ॥ बांसुरी दीजिये ब्रजनारि ॥बंसी कैसी होत नहीं हम नयनन देखी ॥ पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट बिशेषी॥इत उत खेलत तुम फिरो वाहीं भूलरही ॥ सांच सप्त बाबा की सौंह तेरी बँसुरी नाहिं लई ॥ बांसुरी कैसी है ब्रजनाथ ॥ बंसी हमरी देहु काहेको रारि बढावो ॥ समझ बूझ मन माहिं काहेको लोग हँसावो ॥ लोग हँसें चर्चा करें प्यारी मनमें शोच विचार॥ यह बंसी मनमोहनी तुम देती क्यों नाहिं ग्वार ॥ बंसी दीजिये० ॥ हमको कहत गँवारि आपनी करत बडाई ॥ मारूं गुलचा गाल तोहूं बाबा की जाई ॥ तुम से केते ग्वारिया मांगत हम पै दान ॥ चतुराई तुम छांड देहु जाय चरावो गाय॥ बंसी कैसी० ॥ या बंसी को सार कहा तुम ग्वालिन जानो ॥ तीन लोक पटतार तासों मेरो मन मानो ॥ या वंसी खोजत फिरें शिव बिरंचि मुनिनाथ ॥ परचावो परचें नहीं तुम कहा नचावत हाथ ॥ बंसी दीजिये० ॥ नंद महर के कुँवर कान्ह तोहिं कौन पतीजै ॥ भूल आए कहुँ अनत दोष हमको नाहिं दीजे ॥ ले लकरी मुखपै धरी वँसुरी वाको

वत् रसिक रसकी यह बातें रसिक बिना कोई समझ सकेना ॥ १६६ ॥ तू है मुख कमल नयन अलि मेरे ॥ अति आरत अनुरागी लंपट हर्बरात इत फिरत नफेरे ॥ पान करत मकरंद रूप रस भूल नहीं फिर इत उत हेरे। भगवत् रसिक भए म तवारे घूमत रहत छके मद तेरे १६७॥ प्रीतम तुम मो दृगन बसतहो ॥ कहा औरेसे ह्वै पूछतहो कै चतुराई कर जो हँसत हो॥ लीजे परख स्वरूप आपनो पुतरिन में तुमहीजो लसतहो॥ बृंदाबन हित रूपरसिक तुम कुंज लडावत हिय हुलसतहो॥

राग कबित्त जंगला ॥ चैन नहीं दिन रैन परै जबते तुम नयनन नेक निहारे ॥ काज बिसारदिये घरके व्रजराज मैं लाज समाज बिसारे ॥ मो बिनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं जिन हूजियो न्यारे ॥ मोहिं सदा चित सों अति चाहियो नीके कै नेह निबाहियो प्यारे ॥ १६९ ॥

गोरे ग्वालकी लीला ॥

ठुमरी ॥ चंदा सों बदन जामें चंदन को बिंदा दिये चंदा तन चितवत चंदा छबि छाई प्यारी ॥ चंदन की सारी सोहे चंदन को हार हिय चंदन को लहिंगा सोहे चंदा मुख भाई प्यारी ॥ चंदन की कंचुकी चंदन की बंदनी चंदनको बंगली चंदा तन धाई प्यारी ॥ कहा कहूं कछू कहत न आवे तिहारो मुख देख चंदा गयोहै लजाई प्यारी ॥ १७० ॥

राग बिहाग ॥ यह कहके प्रियाधाम गई ॥ चौंक परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥ दोष नहोय कछू सखि

राग दादरा ॥ प्यारी को शृंगार करत नंदलाला ॥ बार बार में मोती पोए कान बिच झलके बाला॥कलीदार जरीके लहिंगा ऊपर सुर्ख दुशाला ॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निरखत ब्रजबाला ॥ १६२ ॥

राग गौरी ॥ तेरो मुख नीको है कि मेरो राधा प्यारी । दर्पण हाथ लिये नँदनंदन सांची कहो वृषभानु दुलारी ॥ हम का कहें तुमही क्यों ना देखो मैं गोरी तुम श्याम बिहारी॥ हमरो वदन ज्यों चंदा की उजारी तुमरो बदन जैसे रैनि अँधारी ॥ तिहारे शीशपर मुकुट बिराजे हमरे शीश पर तुम गिरिधारी ॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि दोउ ओर प्रीति बढी अति भारी ॥ १६३ ॥

राग विहाग ॥ बेसर कौन की अति नीकी ॥ होड परी लालन और ललना चौंप बढी अति जीकी ॥ न्यावपरा ललता के आगे कौन ललित कौनफीकी ॥ दामोदरहित बिलग नमानो झुकन झुकी कछु प्यारी जीकी ॥ १६४ ॥

राग श्याम कल्याण ॥राधा प्यारी रूप उजारी मोतननेक हेरो मेरी प्यारी ॥ तन मन धन छबि ऊपर वारों नाम उचारूं मैं तेरो ॥ हँस मुसकाय बदन तन हेरो मोहिं करो चरणन को चेरो ॥ अली किशोरी एक बार कहो लाल बिहारी मेरो ॥

रागखेमटा॥तू है मुख चंद्र चकोरी मेरे नयना ॥ पलहूं न लागे पलक बिन देखे भूल गए गत पलहूं लगेना ॥ हर्बरात मिलबे को निशि दिन ऐसे मिलें मानो कबहूं मिलेना॥ भग-

राग पीलू ॥ मेरी सुध आन लियो प्यारी राधा ॥ तनहूं लडैती राधे मनहूं लडैती हरत सकल दुख बाधा ॥ कुंज महल में सदाही बसतह्वो सुख संपति लिये साधा ॥ बीठल विपिन विनोद विहारन सर्वस प्राण अगाधा ॥ १७५ ॥

राग सोरठ॥श्रीराधा प्यारी देखी है चितकी चोर॥ लागी काहू ठौर मैंने देखी है चितकी चोर ॥ चंद्र बदन मृग लोचनि राधे जैसे चंद्र चकोर ॥ नई प्रीति सों सभरस बाढ्यो जोबना करतही जोर॥ पाँयन में नूपुर धुनि बाजे गज गति चलती तोर ॥ याछबि निरखके मगन भए गुण गावत दास किशोर॥ १७६ ॥

राग बिभास॥मेरी तो जीवन राधा बिन देखे न आवे चैन। मोसे तो चूक परी ना कैसे रूठी सुख दैन ॥ पैंयां परूं मैं तोरे ललता तोरे बिशाखा तोरे नेक जाउ राधा लैन। धीरज प्यारी जूके देखे श्रीराधा जूके देखे शीतल होंगे मेरे नयन॥ १७७॥

राग बिहाग ॥ कहो कहूं देखी रे इत जात रूप गरबीली प्यारी राधा ॥ चंपक बरण गात मन रंजन खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल मुख जोत बिलोकत होत शारद शशि आधा ॥ अहो सुगंध मृग शावक नयनी कहुँ देखी प्यारी पिक बैनी सुखमा सिंधु अगाधा ॥ अहो मराल मानसर बासिक अहो अलिंद मकरंद उपासिक देहु बताय मोहिं मयाकर होत अपत अपराधा ॥ अहो कदंब अहो अंब निंब बट सोहत सुखद छाँह यमुना तट हरत तापकी बा-

मेरो उपमा चंद दई ॥ रिसन भरी नख शिख लौं प्यारी जोवन गर्व मई॥लावो वेगि मनाय सखीरी यामिन जात बही॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत लावो वेगि सही ॥१७१॥

राग गौंड मल्हार ॥ वृषभानु कुँवरि जब देखों॥ तब जन्म सफल कर लेखों॥ मैं राधा राधा गाऊं॥ राधा हित बेनु बजाऊं॥ मैं राधारमण कहाऊं॥ काहे दूजा नाम धराऊं॥ जहँ राधा चर्चा कीजे ॥ तहँ प्रथम जान मोहिं लीजे॥ जहँ राधा राधा गावें॥ तहँ सुनबे को हम आवें॥ श्री राधा मेरीसंपत ॥ श्रीराधा मेरी दंपत॥श्रीराधा मेरी शोभा॥ श्रीराधा को चित लोभा ॥ मैं राधाके सँग नीको॥ राधा विन लागत फीको ॥ १७२॥

राग खेमटा॥ देखी कहूं गलिन में मो प्राण जीवनी॥ एहो सुजान प्यारी मम चूक क्या विचारी क्यों दुरगई लतन में देहु दर्श आनंदनी॥ जब चलत चाल छबिसों तब हलत हार उरसों ठुम ठुम चरन धरन पै तू है गति गयंदनी। तेरी छटा चरण की निंदत रवि किरन की हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुख समूहनी॥ यह सुनत वचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो हित रूप लाल चेरो एहो दुख निकंदनी ॥ १७३ ॥

राग देस॥ बाधा दे राधा कित गई॥ वृंदा विपिन अछत प्यारो विन सभ विपरीतभई॥ मेरे मंद भाग सों काहू पोच प्रकृति सिखई ॥ ब्यास स्वामिनी वेगि मिले तो बाढे प्रीति नई ॥ १७४ ॥

कौनसी बाल जगत में जैसी है भानदुलारी॥भाननगरके बसन हार तुम प्यारी की अनुहारी ॥रबि शशि कोटि मदन हूँ की छबि दीजे तुम पर वारी॥ कहो कौनसे मैं ब्याह कराऊं रची कवन बिधि नारी॥करत बास हिरदे मेरे में कीरति कुँवरि दुलारी ॥प्रेम बिवस कछु सुरत रहीना तनु की दशा बिसारी लिये लगाय बेग उर प्यारी तब हँसे रसिक बिहारी॥१८१॥

राग देस ॥सखी री मैं हूं नंद किशोर ॥ मैं दधि दान लेत बृंदाबन रोकतहूं बरजोर॥ यह जो माननी मान कर बैठत बिनती करूं कर जोर॥ पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूं रसिक बर यह मेरी चित चोर॥ १८२ ॥

रास लीला ॥

राग गौड मल्हार ॥ शरद निशि देख हरि हर्ष पायो ॥ बिपिन बृंदाबनहिं शुभग फूले सुमन रास रुच श्याम के मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वलि रैनि चमक रही भूमि पर सदा फल तरुन प्रति शुभग लागहिं॥ तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिबिध बहै पवन आनंद जागहिं ॥ राधिका रमण बन भवन सुख देखके अधर धर बैन सुर ललित गाई ॥ नाम लै लै सकल गोप कन्यान के सभन के श्रवण यह धुन सुनाई॥ सुनत उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन श्रवण भई बिकल भारी॥ सूर प्रभु ध्यान धरके चलीं उठ सभी भवन जन नेह तज घोष नारी॥ १८३ ॥

राग कल्याण ॥ जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो ॥ जं-

धा॥संतत देत गोप गोधन सुख कबहूं न सहसकत मेरो दुख उपकारी वपु वेद बखानत अबहिं मौन क्यों साधा॥ आरत बचन पुकारत लालन मन जो फँस्यो विरहीके हालन मदन जाल सों बांधा ॥ अतिशय बिकल देख बनवारी प्रकट भई वृषभानु दुलारी सूरदास प्रभु को लगाय उर पुरवत रस की साधा ॥ १७८ ॥ ॥

राग काफी ॥ करबिचार वृषभानु दुलारी ॥ ग्वाल रूप धर छलन कृष्ण को नंदगाम की ओर सिधारी ॥ जहँ हरि अपनी गाय चरावें तहां आप चल आई ॥ देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगए चतुराई ॥ अरे मित्र क्या नाम तिहारो बास कहां है तेरो॥मैंतो तोहिं कभूं नहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो ॥ गोरे ग्वाल भानपुरके हम गोधन बृंद चरावें ॥ रसिक बिहारी गाय हमारी आई भज कहां पावें १७९

राग देस ॥गुण सुन वृषभानु कुँवरि के॥जाके लाल तुम रहो आधीन।वहतो गृह से सटक बन रहत अटक नहिंमानत हटक इत उत ही फिरे ॥ ऐसी फिरे इतरात नहीं काहूको सुहात मन माने जित जात नहीं नेकहूडरे ॥ बेटी बडे की कहावे दधि बेचबे को जावे ताहि लाजहू न आवे सभ नाम धरे। इक मेरी सुन लीजे ऐसी नारना पतीजे ब्याह कहूँ जासों कीजे तेरो चित्त हरे ॥ जाकी मुख उज्यारी देख रीझोगे बिहारी पीयो बारबार पानी जब प्रीति करे ॥ १८० ॥

राग प्रभाती ॥ सखा तुम बोलो ना बात बिचारी॥ कहौ

को धाईं बाजी मुरझाईं तान सुनि गिरिधर की॥ बाजी हँस बोलें बाजी करत कलोलें बाजी संग लाग डोलें सुध बिसरी सभ घर की॥ बाजी ना धरें धीर बाजी ना सम्हारें चीर बाजिनके उठी पीर दावानल भर की॥ बाजी कहैं बाजी बाजी कहैं कहां बाजी बाजी कहैं बाजी बांसुरी सांवरे सुघरकी १८८

राग भैरव॥ बांसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी॥ शिव समाधि भूल गई मुनिजन की तारी॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी॥ सुनत ही आनंद भयो लगी है करारी॥ रंभा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारी॥ यमुना जल उलट बह्यो सुध ना संभारी॥ श्रीबृंदाबन बंसी बजी तीन लोक प्यारी॥ ग्वाल बाल मगन भए ब्रजकी सभ नारी॥ सुंदर श्याम मोहनी मूरत नटवर बपु धारी॥ सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी॥ १८९॥

राग जंगला॥ बृंदाबन कुंज धाम बिचरत पिया प्यारी॥ कातककी शरद रैन चंद्रकी उजारी॥पवन मंद मंद चलत फूली फुलवारी॥ बिकसे सर कमल फूल शोभा अतिभारी॥झरना चहूं ओर झरत यमुना सुखकारी॥आनंद को रैन जान मुरली मुखधारी॥ लै लै के नाम सकल टेरी ब्रजनारी॥ सुनके धुन भवन त्याग धाईं सुत डारी॥ उलटे तन चीर पहर आईं मिल सारी॥ बीणा मृदंग चंग बाजत स्वरतारी॥ दास सुखानंद प्यारे चरणन बलिहारी॥ १९०॥

राग कल्याण॥ प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम॥ बांसुरी ब-

गम जड स्थावर चर कीने पाहन जलज बिकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशोदिशि पूरण धुन आच्छादित कीनो ॥ निशि हरि कल्प समान बढाई गोपिन को सुख दीनो ॥ भर्मत भए जीव जल थल के तनु की सुध ना सम्हार ॥ सूर श्याम मुख वेणु बिराजत उलटे सभ ब्यवहार ॥ १८४ ॥

राग झिंझोटी ॥ बंसी यमुना पै बाज रही रे लाल छबि निरखन कैसे जाऊं री आज ॥ बंसी की टेर सुनी मेरे श्रवण-न तन मन सुधि बिसरी रे लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे चंदन खौर लगीरे लाल ॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि चरणन चेरी भई रे लाल ॥ १८५ ॥

राग यमन ॥ बृंदाबन सघन कुंज माधुरी लतान तरे य-मुना पुलिन में मधुर बाजी बांसुरी ॥ जब से धुनि परीकान मानो लागे मयन बान प्राणन की कहा चले पीर होत पां-सुरी॥ब्याप्यो जो अनंग तामें अंग सुध भूलगई कोई कछु कहो कोई करो उपहासरी ॥ ऐसे ब्रजाधीश जीसों प्रीति नई रीति बाढी जाके उर बस गई प्रेम पुंज गांसरी ॥ १८६ ॥

कबित्त ॥एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी एक राख भर कौ-री सुध रहीना तन में ॥ एक खूले बार एक छतियां उघार ए-क भूषण डार चली दामनी ज्यों घनमें ॥ एक उज्यारी गो-पीनाथ ने निहारी एक भई बौरी डोले मदन के उमंग में ॥ ऊधम भयो है घरी चार ब्रज मंडल में बांसुरी बजाई कान्ह जभी बृंदाबन में ॥ १८७ ॥ बाजी घर आई बाजी देखबे

धिका श्याम की प्यारी तुमरी कृपा बास ब्रजपाऊं ॥ आन देव सुपने नहिं जानूं दंपत को शिर नाऊं॥ भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥वृंदाबन बीथिन यमुना तट आनँद कुटी छिवाऊं ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को वेद विमल यश गाऊं ॥ १९४ ॥ महारानी श्री राधे रानी ॥ जाके बल मैंने सभते तोरी लोक बेद कुल कानी ॥ प्राण जीवन धन लाल बिहारी को वार पीवत हैं पानी ॥ भगवत रसिक अनन्य सहायक सर्व ऊपर सुखदानी ॥१९५॥ परम धन राधा नाम अधार ॥ जाको श्याम मुरली में टेरत सुमरत वारंवार ॥ जंत्र मंत्र और वेद तंत्र में सभी तार को तार ॥ श्री शुक प्रगट कियो नहिं याते जान सार को सार ॥ कोटिन रूप धरे नँदनंदन तौऊ नपायो पार ॥ व्यासदास अब प्रगट बखानत डारभारमें भार ॥ १९६ ॥

राग देस ॥ रच्यो श्री वृंदावन में रास गोविंद ॥ चलो सखी देखन चलिये नव रास रंग ॥ रास में रसीलो प्यारो सखियन संग ॥यमुना के नीरे तीरे शीतल सुगंध॥महक पवन चले अति गति मंद ॥ खंजरी सारंगी बाजे ताल मृदंग॥ बीना उपंग मुरली मौहर मुहचंग ॥ भाल तिलक सोहे मृग मद रेख॥मुरली मनोहर जी को नटवर भेख॥ब्रह्मा देखें सभ नारी नरेश ॥ देखन आए शंभु गौरी गणेश ॥ वृंदाबन बीच रच्यो रास बिलास ॥ गुण गावे स्वामी माधुरी दास॥१९७॥

राग केदार ॥ सुन धुन मुरली वैन बाजे हरि रास र-

जावत गावत कल्याण ॥ कबकी मैं ठाढी भैयां सुध बुध-भूल गैयां छौने जैसे जादू डारा भूले मोसे काम ॥ जब धुन कान पैया देह की ना सुध रहिया तन मन हरलीनो विरहों वाले कान्ह ॥ मीरा वाई प्रेम पाया गिरिधर लाल गाया देह सों विदेह भैया लागो पग ध्यान ॥ १९१ ॥

राग विहाग ॥ निशि काहेको बन उठ धाई ॥ हँस हँस श्याम कहत हो सुंदरि की तुम ब्रज मारगहिं भुलाई ॥ गई रही दधि वेचन मथुरा तहां आज अवसेर लगाई ॥ अति भ्रम भयो बिपिन क्यों आई मारग वह कह सभन बताई ॥ जाहु जाहु गृह तुरत युवति गण खीझत गुरु जन लोग लुगाई ॥ की गोकुल ते गमन कियो तुम इन बातन कछु नाहिं भलाई ॥ यह सुनके ब्रज बाम चकृत भईं कहा करत गिरिधर चतुराई ॥ सूर नाम लेले सबहिनको मुरली वारंवार बजाई ॥ १९२ ॥

राग प्रभाती ॥ सानूं मुड घर वंजन कह्यो वे श्यामां साईं साईं वे करें दया सारा जग वे ठगें दया असां माघ्यां ते चोरी इक न्योहडा लगाया ॥ यमुना किनारे श्यामां वचन की तोई जब चोर हमारे हरे वे श्यामां ॥ यमुना किनारे श्यामां धेनु चराइया जब मुरली की धुनक सुनाइया वे श्यामां ॥ सूर के स्वामी प्रभु शरण तिहारी अब लज्या हमारी राखो वे श्यामां ॥ १९३ ॥

राग कान्हरा ॥ कैसे रास रस ही गाऊं मैं ॥ श्री रा-

कबित्त ॥ सौनजुही की बनी पगिया औ चमेली को गुच्छ रह्यो झुक न्यारो ॥ दो दल फूल कदंब के कुंडल सेवती को जामा घूम घुमारो॥नव तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब इजार चमेली को नारो ॥ फूलन आज विचित्र बन्यो देखो कैसो शृँगारचो है प्यारी ने प्यारो ॥ २०३ ॥ सारी सँवारी है सौन जूही अरु जूही की तापै लगाई किनारी ॥ पंकज के दलको लहिंगा अँगिया गुलाबांस की शोभित न्यारी॥चमेली को हार हमेल गुलाब की मौर की बेंदी दे भाल सँवारी । आज विचित्र संवारके, देखो कैसी शृंगारी है प्यारे ने प्यारी२०४

रागपीलू ॥ संग चलीं ब्रजबाल लाल कर तालन लै लै जोरी ॥ लाई गत मृदंग उपजाईं झांईं बन घनघोरी ॥ तत थेई धुम किट ततथेई यह धुन सुन ले जोरी ॥ वल्लभ रसिक बिहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥ २०५ ॥

कबित्त ॥ माथे पै मुकुट देख चंद्रिका चटक देख छबि की लटक देख रूप रस पीजिये ॥ लोचन विशाल देख गरे गुंज माल देख अधर सुलाल देख चित चौंप कीजिये ॥ कुंडल हलन देख अलकां बलन देख पलकां चलन देख सर्वस दीजिये ॥ पीतांबर कि छोर देख मुरली की घोर देख सांवरे की ओर देख देखबोही कीजिये ॥ २०६ ॥

राग पीलू ॥ भागवान वृषभानु सुतासी को त्रिया त्रिभुवन माहीं।जाको पति त्रिभुवन मनमोहन दिये रहत गर बाहें॥होय अधीन संगहि संग डोलत जहां कुँवरि चल जाहीं॥

च्यो॥ कुंज कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिन ख-
च्यो ॥ निरतत युगल किशोर युवती जन रास में राग केदा-
रोरच्यो ॥ हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज बिहारी नीके ही
आज गोपाल नच्यो ॥ १९८ ॥

कबित्त ॥ तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै बृंदा-
वन बीथिन बिहार बंसीबटपै ॥ छितनपै छाननपै छाजत छ-
टाननपै ललित लताननपै लाडली की लट पै ॥ कहै पदमा-
कर अखंड रास मंडल पै मंडत उमंड महा कालिंदी के तट
पै ॥ कैसी छबि छाई आज शरद झुन्हाई आली जैसी छबि
छाई या कन्हाई के मुकुट पै ॥ १९९ शूकर होय कब रास र-
च्यो अरु बावन हो कब गोपी नचाई॥मीन होयकौन के चीर
हरे कछुवा होयके कब बीन बजाई ॥ होय नरसिंह कहो हरि-
जू तुम कौन की छतियन रेख लगाई ॥ बृषभानु सुता प्रगटी
जबते तबते तुम केल कला निधिपाई ॥ २०० ॥

राग पीलू ॥ ठाढी रह री लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं।
नकवेसर की ग्रंथ चुटीली ताहू पैं शुभग बनाऊं ॥ एरी टे-
ढी चाल छांड मैं सूधी चलन सिखाऊं ॥ बृंदावन हित रूप
फूल की माल रीझ जो पाऊं ॥ २०१ ॥ प्रीतम रहे प्रिया म-
न लीये प्रिया रहे मन पीया को ॥ सखी रहें दोउअन मन
लीये रंग बढे नित ही को ॥ कानन छबि ते नये दिखावें प्रा-
ण बढे नित ही को ॥ बृंदावन हित रूप बिहारन सकल त्रि-
यन शिर टीको ॥ २०२ ॥

सुंदर लाल बंद अरु जर्द किनारी॥ झालर दार बन्यो पटु-
का अरु मोतिन की छबि जात कहां री॥ जैसी चाल चले
गजराज कहे बलिहारी है मौज तिहारी॥ देखत नयनन ता-
क रही झुक झांक झरोखन बांके बिहारी॥ २१२॥ सुंदर
सुजान कान्ह सुंदर ही पगिया शीश सुंदरसे नयन अधर सुं-
दर बांसुरिया॥ सुंदर भ्रुकुटी कमान सुंदर पलकन के बान
सुंदर मुसकान मंद चितवन चित हरिया॥ सुंदर बाजू बि-
राजें सुंदर वनमाल साजें सुंदर गल हार मोती जामा जो
केसरिया॥ सुंदर कंकन अमोल सुंदर कुंडल कपोल सुंदर
नारायण बोल दीन दरद हरिया॥ २१३॥ वार डारों शरद
इंदु मुख छबि गोविंद पर दिनेश हूं को वार डारों नखन छ-
टान पर॥ कोटि काम वार डारों अंग अंग श्याम लख वार-
डारों अलिन अली कुंचत लटान पर॥ नयनन की कोरन पै
कंज हू को वार डारों वार डारों हंस हू को चाल लटकान पर॥
देख सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूं कामधेनु वार डारों
भ्रुकुटी मटान पर॥ २१४॥ नयनन चकोर मुख चंद्र हू को
वार डारों वार डारों चित मनमोहन चित चोर पै॥ प्राण हूं
को वार डारों हँसन दशन लाल हेरन कुटिल वाके लोचन की
कोर पै॥ वार डारों मनहिं रंग अंग अंग श्यामा श्याम हिलन
मिलन रस रास की झकोर पै॥ अति ही सुघर बर सोहत
त्रिभंगी लाल सर्वस वारों वाकी ग्रीवा की मरोर पै॥२१५॥
मुकुट के रंगन पै इंद्र को धनुष वारों अमल कमल वारों लो-

रसिक लख्यो जो सुख बृंदाबन सो त्रिभुवन में नाहीं२०७॥

कवित्त ॥ वृंदाबन धाम नीको ब्रज को बिश्राम नीको श्यामा श्याम नाम नीको मंदिर अनंदको॥ कालीदह न्हान नीको यमुना पय पान नीको रेणुका को खान नीको स्वाद मानो कंद को ॥ राधा कृष्ण कुंडनीको संतनको संग नीका गौरश्याम रंग नीको अंग जुग चंदको॥ नील पीत पट नी-को वंसी बट तट नीको ललित किशोरी नीकी नट नीको नंदको ॥ २०८ ॥ भ्रुकुटो तनीको नकबेसर बनीको लट नगन फनी को लख फूल्यो कंज फीको है॥ मैन की मनीको नयन बान की अनीको चोखे सैन रजनी को हौंस हुलसन ही को है ॥रूप रमनी को कै रमा रमनी को गज गती गम-नी को कैधों सिंधु मूर जी को है॥ बेनी बंद नी को मृदुहास फंदनीको मुख चंद हूं ते नीको बृषभानु नंदनी को है॥ २०९

छंद ॥ जैसी है मृदु पद पटकन चटकन कटतारन की॥ त्रियातन मोर मुकुट की लटकन कल कुंडल हारन की॥ सांवरे पिया संग नितत ब्रज को चंचल बाला॥ मानो घन मंडल मंजुल खेलत दामनी सी बाला ॥ २१० ॥

राग कबित्त ॥ मंडल रास बिलास महा रस मंडन श्री वृषभानु दुलारी ॥ पंडित कोक संगीत भरी गुण कोटिक राजत गोप कुमारी॥ प्रीतम के भुज दंड में शोभित संग में अंग अनंगन वारी ॥ तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधव की बलिहारी ॥ २११ ॥ जामा बन्यो जरीतास को

राग झिंझोटी ॥गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं॥ तत्ता थेईता सुधंग निरतत गहि वाहीं॥द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छन नन नन रूप रंग दगता दगता तलंग उघटत रसनाईं ॥ बीच लाल बीच वाल प्रति प्रति प्रति द्युति रसाल अबिगत गति अति उदार निरख दृग सराहीं॥ श्री राधा मुख शरद चंद्र पूंछत जल श्रम अनंद श्री ब्रजचंद लटक लटक करत मुकुट छांई ॥ तत्तत तत सुघर गात सरिगम पद नीमे ठाठ और पदाहिं प्रलाद दांप दंपत अति सादहिं ॥ गावत रस भरे अनंद तान तान सुर अभंग उमगत छबि अति अनंद रीझत हरि राधहिं॥ छाए देवन बिमान देखत सुर शक्र भान देवांगना निधान रीझ प्राण वारहिं॥चकित थकित यमुना नीर खग मृग जग मग शरीर धन धन नंद के कुमार बलि बलि जाए सूरदास रास सुख तिहारहिं ॥ २२० ॥

राग देस ॥ लाल को नचन सिखावत प्यारी ॥ वृंदाबन में रास रच्योहै शरद रैनि उज्यारी ॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी डरपत कुंज बिहारी ॥ थेई थेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥ कोऊ मृदंग झांझ कोऊ वीण बजावत बिहँसत ग्वारी ॥ छबिसों गावत खडी नचावत रोम रोम बलिहारी ॥ देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज शोच बिचारी ॥ व्यास स्वामनी सो छबि निरखत रीझ देत कर तारी ॥ २२१ ॥

राग काफी ॥ देखो री या मुकुट की लटकन ॥ निर-

चन विशाल पर ॥ कुंडलप्रभा पै कोटि प्रभाकर वार डारों कोटिक मदन वारों बदन रसाल पर ॥ तनु की तरुण पै नीरद सजल वारों चपला चमक उर मोतिन की माल पर ॥ चाल पै मराल वारों मन हू को वार डारों और कहा कहा वारों छवि नंदलाल पर ॥ २१६ ॥

राग जैजैवंती ॥ आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बांध्योहै मंजन चोटा ॥ चंचल लोचन चाल मनोहर अबहीं गह आन्योहै खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगौरी सी लागत ऐन मैन मानो कमल के जोटा ॥ नंददास रस रास कोटिन वारों आज बन्यो व्रजराज को ढोटा ॥ २१७ ॥

राग बिलावल ॥ आली री रासमंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडली रूप निधान ॥ चरण चार हँसत भेद मिलवत गति भांत भांत भ्रू बिलास मंद हाँस लेत नयनन हीमें मान॥दोऊ मिल राग अलापत गावत होडा होडी उघटत देकर तारी तान ॥ परमानंद निरख गोपी जन वारतहैं निज प्रान ॥ २१८ ॥

राग भैरव ॥ निरतत गोपाल संग राधिका बनी ॥ बाहू दंड भुजन मंडल मध्य करत केलि सरस गान श्याम करें संग भामिनी॥ मोर मुकुट कुंडल छबि काछनी बनी विचित्र झलकत उरहार बिमल थकित चांदनी ॥ परम मुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसमन वारत तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी॥११९॥

राग सोरठ ॥ चलो तो बताऊं बिहारी जी म्हारे महलों फूलीछै केसर क्यारी ॥ अति सुंदर बहुत अमोलक रंग रंगीली हैं छै बारी ॥ यों मत जानो झूठ कहत है म्हाने सौंह तिहारी ॥ ब्रजनिधि तुम सों लगन लगी है प्रीतिपुरातन यारी ॥ २२५ ॥

राग कान्हरो ॥ लालन मेरे ही आए आज सुहावनी रात ॥ तन मन फूली अंग न समावत कुंजन करत बधाए ॥ एक रसना गुण कहां लग बरणों नख शिख रूप मेरे हीय में समाए ॥ गिरिवरधर पिया रस बश कर लीनी कृष्णदास बलिजाए ॥ २२६ ॥ एजी अब तो जान न दूंगी शकुन भलेजो ॥ बहुत दिनन मेरे घर आए कर राखों उर हार ॥ श्याम सुंदर पिया अतिही रंगीलवा सांची तो कहो तुम काके बसोजी ॥ २२७ ॥

राग कमोद ॥ वारियां वे लाल वारियां ॥ तुसां आमनां फेरा पामनां कुंज हमारियां ॥ कौन सखी के तुम रंग राते हमसे अधिक प्यारियां ॥ ऊंची अटरियां ते लाल किवरियां तक रहियां बाट तिहारियां ॥ मीरा के प्रभु गिरिधर नागर या छबि पर बलिहारियां ॥ २२८ ॥

राग दादरा ॥ सखी नंदलाल आवन नहिं पावें ॥ भीतर चरण धरन जिन दीजो चाहे जिते ललचावें ॥ ऐसे न को बिश्वास कहां री कपटकी बात बनावें ॥ नारायण इक मेरे भवन बिन अंत चाहे जहां जावें ॥ २२९ ॥

तत रास लिये राधा सँग वैजंती बेसर की अटकन ॥ पीतांबर छुट जात छिने छिन नूपुर शब्द पगन की पटकन ॥ सूर श्याम की या छबि ऊपर झूठो ज्ञान योग को भटकन २२२॥

राग बिहाग ॥ आज बनवारी बने मुरारी ॥ सखी कुंज बिहारी संग सोहे राधा प्यारी वृषभानु की दुलारी ॥ दोनों मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी॥ मोर को मुकुट धारी चंदन की खौर न्यारी भ्रुकुटी कुटिल अलकें घूंघर वारी ॥ टेढी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी मुरली अधर सप्त सुरन उचारी॥मोह लीनो ब्रजनारी देह की दशा बिसारी दया सखी पाँयन परके लीनी बलिहारी२२३॥

राग रेखता ॥ नाचत छैल छबीला नंदका कुमार है॥ गल बाहिं दे प्रियाके सुंदर शृंगार है ॥ इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है॥ उत पायजेब पायल घन की सी गाज है ॥ पगिया लसी कुँवर के शिर पेच लालहै ॥ भ्रुकुटी लगो ललोई प्यारी के भाल है ॥ कटि काछनी सुचोली पटुका किनार का ॥ दामन सुरंगी सेला कीरति कुमार का॥ कानों जडाऊ झुमका गल हीर हार है ॥ मोतिन की माल सुंदर शोभा अपार है॥ गुंजा गले गुनी के तर गुंज माल है॥ छतियां लगी लला सों बंसी रसाल है ॥ नासा बुलाक वेसर माथे पै मुकुट सोहे॥प्यारी के नख छटापर रवि चंद्र कोटि मोहे ॥ दोनों झुके परस्पर छबि बेशुमार है॥ केशव खडा बिलोके प्राणन अधार है॥ २२४ ॥

राग देस ॥अब आए प्रात क्यों मेरे धाम॥ तुम जाओ जहां जाके जागेहो जाम बश किये तुम्हें सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन पर डगमगात मुख बचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम ॥ अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल बिन गुण की माल कहां पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जिया भावत है जो बाल मैं परखी रसिक बिहारीलाल अब कीजे पिया वा घर अराम २३४ ॥

राग भैरव ॥ सांची कहो रंगीले लाल ॥ जावक में कहां पाग रँगाई रंगरेजन कोई मिली है ग्वाल ॥ बंदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भए श्याम तमाल॥माला कहां मिली बिन गुण की नख शिख देखत भई बिहाल ॥ जिन तुमरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वे बाल ॥ सूर श्याम छबि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल ॥ २३५ ॥

राग रामकली ॥ आज हरि रैनि उनींदे आए ॥ अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाए ॥ सिथलत बसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाए ॥ लटपटी पाग अटपटे भूषण बिन गुण हार बनाए॥ सिथल गात अरु चाल डगमगी भ्रकुटी चंदन लाए ॥ सूरदास प्रभु यही अचंभो तीन तिलक कहां पाए २३६ ॥

राग बिलावल ॥ नयनन की चंचलता कहा कीने भीने रंग कौन के हो श्याम हमसे कहा दुरावत ॥ और के बदन देखन को नेम लियो किधों पलकन मध्य राखी प्यारी ताके

राग झिंझोटी ॥ मोहिं मत रोकै री तू एरी ब्रज नागरी॥ रूपकी निधान है तू सभी गुण खानहै तू तेरे सम कौन आन तेरो वडो भाग री ॥ कहे तो मैं नृत्य करूं बांसुरी में रागभरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ बिहागरी ॥ तू तो सदा उपकारी हित हू की करन हारी आज नारायण मोसों क्यों राखै लाग री ॥२३०॥

कबित्त ॥ द्वार के द्वारिया पौरि के पौरिया पहरुवा घर के घनश्याम हैं ॥ दासन के दास सखीयन के सेवक पार परोसन के धन धाम हैं। श्रीधर कान्ह कह्यो भामिन मानभरी नहीं बोलत बाम है ॥ एक कहै सुनो अली वृषभानु की लली की गली के गुलाम हैं ॥ २३१ ॥

राग पंचम ॥ जागत जागत रैनि बिहानी॥कह गए सांझ आवने मेरे गृह वसे अनत अनते रति मानी ॥ उर बिच नख छत प्रगट देखियत यह शोभा अतिबानी॥ भाल महावर अधरन अंजन पीक कपोल निशानी ॥ निशि मग जोवत बीती मोको आए प्रात यह जानी ॥चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सिधारो तहां जो तुमरे मन मानी ॥ २३२॥ ॥

राग ठुमरी खमाच ॥ प्यारे तेरे जीया की नजानी जाए बात रे ॥ कहूँ तो सांझ आधीरात रहत कहूं पिछलीरात कहूं प्रात रे ॥ उन हीं सों जाओ बतराओ सुख पाओ तुम जिन यह सिखाए दाँव घात रे ॥ अब तोसों भूल के न बोलूं नारायण जहां लग अपनी बसात रे ॥ २३३ ॥

अंजन भाल महावर चरण धरत डगमगे ॥ आनँद घन पिया वाहीं जाओ तुम जहां तुम्हारे सगे॥ २४१॥

ठुमरी खमाच ॥ प्यारे मेरे गरवा में जिन डारो बैयां॥ छूओ न लंगर मेरो पकरो ना कर तुम छांडो अब कपट बलैयां॥ जाओ पिया वाही मन भाई के भवन में जाके निशि परत हो पैयां॥ झूठी झूठी सौंहैं क्यों खाओ नारायण जानूं मैं तिहारी चतुरैयां॥ २४२॥

राग केदार ॥ सीखे हो छल बल नट नागर॥ मदन मोहन की माधुरी मूरत सभ गुणमें हो आगर॥ ऐसी निठुराई काहूना बदीयन चतुराई गुण सागर॥ २४३॥

राग मल्हार॥राधा जूकी सहज अटपटी बोलन॥ अहोपिया कौन बसत त्रिया उर पाई कहां बिन मोलन॥ मोहूं सों गुण रूप आगरी नीले अंगन चोलन॥ बडे बडे नयन अरुण कजरारे सुंदर अधर कपोलन॥ उमग उमग पिया सन्मुख आवे मन भावत करत कलोलन॥ भगवत्त रसिक कहो क्यों ना सांची नाहिं करो अन बोलन २४४॥

राग ठुमरी॥ प्यारी जी तिहारे बिन कलना परत है॥ मंदिर अटारी चित्रसारी और फुलवारी मोहिं कछू प्रिय ना लगत है॥ घनो समझायो इत उत बहलायो पुनि तौहू मन धीरना धरत है॥ एतो हठ आगे कब कीयो नारायण जेतो हठ आज तू करत है॥ २४५॥

राग जोगिया॥ सांची कहो किधों हांसी करोजी॥

भार भए नहिं आवत॥मधुप गंध लुब्ध सेज समीप निशिबसे संग लागे आवत रति कीरत गावत॥सूरदास प्रभु मदनमोहन तनु की प्रीति प्रगट भई है मुख नाहिं बनत बनावत२३७

राग भैरवी ॥ भोर भए उठ आए मोहन कहा बनावत बात ॥ बिन गुण माल बिराजत उर पर सब अंग चिह्न लखात ॥ बंदन रंग कपोलन दीये सोहत चंद्र दुरात ॥ धौंदी के प्रभु वाहीं जाओ तुम जहां जगे सारीरात ॥ २३८॥

राग जैजैवंती ॥ रंगरहे लाल उनहीं त्रियन संग छवि निरखत गति परत और और ॥ ले दर्पण छबि बदन निहारो प्यारे अधरन अंजन लाग्यो ठौर ठौर ॥ हमसों अवधि बद अनत बिरम रहे करत फिरत प्रीति नई पौर पौर ॥ जाओ जी जाओ तुम जहां सारी रैन जागे काहेको आवत प्रात मेरे दौर दौर ॥ २३९ ॥

राग बरवा ॥ तुम जाओ जी जाओ जाके रहेहो रात म्हारे काहेको आए जब भयो प्रभात ॥ लटपट पेच उनींदे से नयना डगमग डगमग डगमगात॥कपटी कुटिल मैं तोहो ते कहतहों मैं ना मानूंगी तोरी एक बात॥हाहा करत हौं पैयाँ परत हों अबकी चूक मेरी करो जी माफ॥जुगरामदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीकेजाओ जाके लगे हो गात॥२४०॥

राग प्रभाती ॥ लाल तुम कहां से आए जगे ॥ सगरी रैनि के हमने पछाने थारी नजर खुमार भरी अँखियाँ ॥नयन घुमावत लट लटकावत होंठन बिच बोलन लगे ॥ अधरन

शी मथ दावानल अँचयो ॥ त्रिया बपु धर्यो असुर सुर मोहे को जग जो न द्रव्यो ॥ गुरु सुत मृतक काज वे ज्याए साइर सोध लियो॥ जानूं नहीं कहा या रिस में सहजहिं होतन थो॥ सूर सो बल अब तोहिं मनावत मोहिँ सब बिसर गयो २५०

राग पूरवी ॥ हम से रूठ रहत क्यों प्यारी ॥ कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक वृषभानु दुलारी ॥ गयो सखन सँग मैं यमुना तट जहँ जल भरत रहीं ब्रजनारी ॥ मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु उठाय हमारी ॥ मैं न सुनी जब कही सबन मिल लेंगी समझ तुम्हें बनवारी ॥ देहैं मान कराय राधिका सो सब दई आय दरशारी ॥ जोवे कहत करत हो सोई तुम समझत नाहिं भोरी भारी ॥ एक की सात लगाय सुनावत झूठी ग्वालन रसिक बिहारी॥

राग खमाच ॥ इक अरज हमारी सुन भान की दुलारी मान तज कीरति कुमारी प्यारी हो॥ ऐसी चूक क्या किशोरी मोते सांची कहदेवजी काहेको बैठी मुख मोरी जीकी ज्यारी हो॥कृपा अब कीजे लाय उर लीजे अधर रस पीजे दीजे दुख टारी हो॥कहें रसिक बिहारी चरण शिर धारी कुँवरि सुखकारी तू तो भोरी भारी हो॥ २५२॥

राग भूपाली॥ हमते न प्राण प्यारी मुख मोरबो करो॥ बृषभानु की दुलारी चित चोरबो करो॥ कछु दोष नाहिं मेरो री क्यों मान कीजिये॥ रजनी बिहात सजनी री रिस छांड दीजिये ॥ मोतन निहार गोरी मैं तो हूं शरण तोरी ॥

आज कहा कारणजो मोसों बेर बेर कहो यहां से टरो जी ॥ कौन सखी कित में घर वाको तुम जाको मोहिं दोष ध- रोजी ॥ नारायण यह अचरज मोको झूठ कहत नहिं ने- क डरो जी ॥ २४६ ॥

राग जंगला ॥ राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो ॥ जबते तू निकसी मंदिर ते मोहिं न कछू सुहायो ॥ भीतर बाहर द्वार पौंर लौं राधा नाम न पायो ॥ किशोरी गोपाल की यह इक विनती हाहा करत हरायो ॥ २४७ ॥

राग पीलू ॥ राधा प्यारी बात सुनो इक मेरी ॥ मैं आयो चाहतहो तुम पै बीच लियो उन घेरी ॥ अनेक जत- न विनती कर हाऱ्यों कैसे जात न फेरी ॥ परबश पऱ्यो दा- स परमानंद काहि सुनावों टेरी ॥ २४८ ॥

राग भूपाली ॥ विनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मा- न मान ॥ बिन चूक मोते मान की मत ठान ठान ठान ॥ काहे को बैठी श्यामा भौंहें तान तान तान ॥ तूही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान ॥ मेरे हिया कि पीर को तू जान जान जान ॥ जन जान रसिक लीजै दीजै दान दान दान ॥

राग बिहाग ॥ एतो श्रम नाहिंन तबहूं भयो ॥ सुन राधिका जेतो श्रम मोको तैं यह मान दियो ॥ धरणी धर विधि वेद उधारे मधु सों शत्रु हयो ॥ द्विज नृप किये दु- सह दुख मेटे बलि को राज्य लियो ॥ तोऱ्यो धनुष स्वयं- बर कीनो रावण अजित जयो ॥ अघ बक बच्छ अरिष्ट के-

सभ चूक अब,जो कछु भई अजान।एती बिनती मानो मोरी। तिहारे गुण नित प्रति गाऊं।दोहा॥बिना आज्ञा न कहूं जाऊं। ताहू पै दृग अरुण कर,भ्रुकुटी लेत चढाय॥ जोरावर सों निबल की,काहू बिधि न बसाय॥ हारेहूं हार जीतेहू हार॥ जिन्हें तुम समझो हितकारी।सोई अति कपटी ब्रजनारी।दोहा॥हम में फूट करायके, आप अलग मुसक्यात॥ नारायण तुमने करी, खरी न्याव की बात॥ भले को दंड बुरे पै प्यार॥२५६

राग विहाग॥ तनक हँस हेरो मेरी ओर ॥ हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भईहो कठोर॥ निशिदिन तुमरोही नाम रटत हों चातक ज्यों घन घोर॥ कृष्ण प्रिया दर्शन के लोभी जैसे चंद्र चकोर ॥ २५७ ॥

कवित्त॥ एक समय ब्रज कुंजन में री नाचत ग्वाली सभी देतारी ॥ नाचत चंद्रभागा ललतादिक नयन की सैन सों ताल बिचारी॥ वा रिस धार लियो जिय में उन रूठ परी वृषभानु दुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछू उन्हें जान कर लाओ मनायके प्यारी हमारी ॥ २५८ ॥

गुर्जरीरागेण मठताली तालेन॥ मामियं चलिताविलोक्य वृतं वधूनिचयेन॥सापराधतया मयान निवारितातिभयेन ॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव॥ किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण॥किं धनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण॥ हरि हरि ०॥ चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रूरोषभरेण ॥ शोणपद्म मिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ ह-

आनन है चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी ॥ कीजे कृपा किशोरी दीजे अधर सुधा री ॥ लीजे लगाय अपने री हिरदे रसिक बिहारी ॥ २५३ ॥

राग देस ॥ तुम सुनो राधिका बिनय कान ॥ नहिं सोहत मान तजिये सुजान अब करो कृपा जन अपनो जान ॥ ऐसी काहेको रही हो मौन धार मेरे तूही है जीवन अधार अब वेगि मिलो नहीं जात प्रान ॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब भई रिसाय अपराध कौन कहो गुण निधान ॥ सुन रसिक बिहारी जू की बात मेरे आनंद उर में नहीं समात हँस मिलिये कंठ में डार पान ॥ २५४ ॥

राग धनाश्री ॥ सांची कहो के प्यारी हांसी ॥ काहेको इतनी रिस पावत कत तुम होत उदासी ॥ पुनि पुनि कहत कहा तब हीं ते कहा ठगी सी ठाढी ॥ इकटक चितै रही हिरदे तन मनो चित्र लिखि काढी ॥ समझो नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे ॥ सूरश्याम भए कामातुरे भुजा गहन तब लागे ॥ २५५ ॥

लावनी ॥ उठो अब मान तजो गोरी ॥ रही है रैनि बहुत थोरी ॥ सदा सों तुम मन की भोरी ॥ कहूं मैं सत्त खाय तोरी ॥ ॥दोहा॥ औरन के बहकाए ते, करि बैठतहो रोस ॥ झूठ सांच परखत नहीं, वृथा देत हो दोस ॥ यही मोहिं अचरज है भारी तनक हँस चितवो सुकमारी ॥ शशि मुख पै हौं वलिहारी ॥ दोहा॥ अपनी ओर निहार के, देहु अभय बरदान॥ क्षमा करो

तू देमे री प्यारी॥ जाकी मुरली की धुनि सुर मोहे ता तन नेक चितै मेरी प्यारी॥ शिव बिरंचि जाको पार नपावत सो तेरे चरणन परसत री॥ सूरदास बश तीन लोक जाके सो तेरे बश हैं मेरी प्यारी॥ २६२॥

राग बिहाग ॥अलबेली लख लटक मुकुटकी॥मान छाँड वृषभानु नंदनी मान किये क्या नागर नटकी॥है कछु सुरत तोहिं वादिन की जब वनमाल सों बेसर अटकी॥ कर गह कमल कमल मुख मोहन सुरझाई तब नेकन हटकी॥ सा मुखलियो छिपाय सुंदरी नयन ओट कर घूंघट मटकी॥ नख भौं लिखै सिखै क्या सजनी कोन चहत कछु टो-ना टटकी॥ कर गह बाहिं मनावत मोहन मानत नाहिं मान मधु अटकी॥ युगल युगलको बदन बिलोकत भुज भर भेट मेट तप घट की॥२६३॥

राग बरवा॥मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावे री॥हा हा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावे री॥जो हमरे सँग चलो न भामिनि वहतो आपहि आवेरी॥ घन छाया सम जोबन जानो पलक छिनक में जावे री॥यमुना निकट कदम की छैयां गोपीसंग नचावे री॥ मुरलीधर तेरो ध्यान धरत है तेरोही गुण गावेरी॥ २६४॥

राग केदार ॥छांडदे मानती श्याम संग रूठबो॥ रहत-तू अलीनजल मीन लौं सुंदरी करो किन कृपा नव रंग परटू टबो॥ बेगि चल बेगि चल जात यामिन घटत कुंज में केलि

रि हरि ० ॥ तामहं हृदि संगता मनिशं भृशं रमयामि ॥ किं-
विनेनुसरशमि ता मिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि ० ॥
तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो
गतासि नते नुतेनुनयामि ॥ हरि हरि ० ॥ दृश्यसे पुरतो ग-
तागतमेव मे विदधासि ॥ किंपुरेव स संभ्रमं परिरंभणं नद
दासि॥हरि हरि ०॥ क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि॥
देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरि हरि ० ॥
वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रणतेन ॥ किंदुबिल्वसमुद्रसंभव
रोहिणी रमणेन ॥ हरि हरि ० ॥ २५९ ॥

राग देस सोरठ ॥ ललता राधा नेक मनायदे ॥ मैं ब-
लिजाऊं नाम तेरे पै दुखमें सुख सरसायदे॥तू सजनी अति
चतुर शिरोमणि मेरे मन की प्रीति जतायदे॥ब्यास स्वामिनी
सत गुनगत ले सरबस पिया को रिझायदे ॥ २६० ॥

राग बरवा ॥ चलो री क्यों ना माननी कुंजकुटीर ॥ तु-
म बिन कुँवर कोट बनिता युत मथत मदन की पीर॥गदगद
सुर बिरहाकुल पुलकत श्रवत बिलोचन नीर ॥ क्वास क्वास
वृषभानु नंदनी बिलपत बिपिन अधीर । बंशी बिशद ब्या-
लमाला उर पंचानन पिक कीर॥मलै जो गरल हुतासन मा-
रुत शाखामृग रिपु चीर ॥ हित हरिवंस परम कोमिल चि-
त चली चपल पियातीर॥ सुन भयभीत वज्र को पुंजर
सुरत सूर रणवीर ॥ २६१॥

राग केदार ॥ जाके दरश को जग तरसतहै ताहि दरश

राग जिलामें ॥तोसीनहीं कोऊ देखी री हठीली॥ज्यों ज्यों मैं अब तोहिं मनावत त्यों त्यों तू होवै अति गरबीली ॥ ऐसे समय बल रोष न कीजे भौहें कमान तनक कर ढीली ॥नारायण उठ मिल प्रीतम सों तजदे मान की बान छबीली२७०।

राग रेखता॥ इतनो न मान कीजे वृषभानु की दुलारी तेरे मनायबे में मोहिं श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतम को आज तो बिन पल छिन न चैन आवै॥ नहिं जी लगत भवन में नहिं बन की छबि सुहावै ॥ हँस बोलबो कहांको नहिं खान पान भावै ॥हाथन में चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावै॥ अति बिकल ह्वै रह्योहै वह सांवरो बिहारी ॥ इतनो०॥ प्यारे के आगे अपने गुण की मैं कर बडाई ॥ तेरे मनायबे को बीरा उठाके आई ॥ बल बुद्धि मोमें जितनी तितनी मैं सभ लगाई ॥ पै नेकहू नमेरी चतुराई काम आई ॥ सब बिधिसों राजनीती मैं कहके तोसों हारी ॥ इतनो० ॥ तेरी तो नित बडाई सभ सखी जन बखाने॥प्यारी हिये की कोमिल सुपने हूं रिस नजाने॥यह आजका भयोहै बैठी हो भृकुटी ताने॥ उन सखी जनको कहबो अब कौन साँच माने ॥ सब झूठही बडाई भामिन करें तिहारी ॥इतनो०॥लालन के साथ मिलके वन शोभा निरखो प्यारी॥ कहुँ सघन ललित छाया कहु फूली फुलवारी ॥ जलसों भरे सरोवर झुकरहीं द्रुमन की डारी॥ बोलत अनेक पक्षी वर्णत हैं छबि तिहारी॥बल बेग ही सिधारो यह लालसा हमारी॥ इतनो०॥एरी सुघर सयानी मो बि-

कर अमीरस घूटबो ॥ बालकृष्ण दास नव नाथ नंदन कुंवर सेज चढ ललन संग मदन गढ लूटबो ॥ २६५ ॥

राग देस ॥ तुम काहेको लाडली मान करत॥वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जिया में धरत ॥ ताहीसों कीजिये कोप कुंवरि बिन कारण बैठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नितही डरत ॥ ब्यास स्वामिनी चतुर नारि मैं तोहिं मनावत गई जो हारि कब देखूंगी पिया से तोको अंक भरत ॥ २६६ ॥

राग जिलेमें ॥ तोसी त्रिया नहीं भवन भटूरी ॥ रूप राशि रसराशि रसिक बर तोहिं देख नंदलाल लटूरी ॥ लेकर गांठ दईजो दृष्टि भर तेरी सुरंग चूंदरी वाको पीत पटूरी ॥नंददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरो वे नागर नटूरी ॥२६७॥ रैनि गई री प्यारी छाडो हठे री ॥ सुन वृषभानु कुँवरि हरि तो वश निशिदिन तेरो ही नाम रटेरी ॥ मदनगुपाल निरख नयनन भर बेगि चलो अब काहे नटे री ॥ दास गोविंद प्रभु की छवि निरखे प्रीति करे से तेरो कहा घटेरी ॥ २६८ ॥

कवित्त ॥ हाहा हठीली हठ छांडदे छबीली आली भूले हू कान्ह आज पान हू न खात हैं ॥ तेरी चितवन को चाहत गोपाल लाल तजे सभ ख्याल प्राण तोही में बसातहैं ॥ मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी वे ठाढे बनवारी अब देर क्यों लगातहैं ॥ कर कर शृंगार तू उतारतिहै बारबार त तो इतरात उत रात बीती जातहै ॥ २६९ ॥

राग कान्हरो ॥ रहरी माननी मान न कीजै ॥ यह जोबन अंजलि को जल है जो गोपाल मांगे तो दीजै ॥ छिन छिन घटत बढत ना रजनी ज्यों ज्यों कला चंद्र की छीजै ॥ पूरब पुण्य सुकृत फल कीनो काहेना रूप नयन भर पीजै ॥ सौंहि करत तेरे पाँयन की ऐसे जियन दशो दिन जीजै॥ सूर सुजीवन सफल जगत को बैरी बांध बिबस करलीजै २७५॥

राग बिलावल॥ चलोरी ऐसो मान न करिये माननी प्यारा आया तोरे घेरे ॥ तूही मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भए हेरे ॥ झूठी कहों मोहिं सप्त राम की सांचकर बचन आली मान मेरे ॥ छांड निठुराई अब मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भए तेरे॥ २७६ ॥

राग कान्हरा ॥ तूहै सखी बड भाग भरो नंदलाल तेरे घर आवतहैं ॥ निज कर गूंथ सुमन के गजरे हर्ष तोहिं पहरावतहैं ॥ तू अपनो शृंगार करत जब दर्पण तोहिं दिखावत हैं ॥ आनंद कंद चंद मुख तेरो निर्ख निर्ख सुख पावतहैं ॥ जाके गुण सभ जगत बखानत सो तेरे गुण गावत हैं ॥ नारायण बिन दाम आज कल तेरे ही हाथ बिकावत हैं ॥२७७।

राग कान्हरा ॥ अंतर दोहा ॥ मनावतहार परी मेरी माई ॥ राधे तू बड भागनी, कौन तपस्याकीन ॥ तीन लोक के नाथ हरि,सो तेरे आधीन ॥ शिव बिरंचि नारदनिगम, जाकी लहतनडीठ॥ ता हरिसों प्यारी राधिके, दे दे बैठत पीठ॥ अहो लडैते दृगकिये, परे लाल बेहाल ॥ कहुँ मुरली कहुँ,

नती मान लीजै ॥ तजके यह मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजै॥ नितही अधर सुधारस हँस हँसके दोऊ पीजै ॥ फिर कर न उन सों रूठो बरदान यही दीजै॥नारायण याही कारण निज गोद मैं पसारी ॥ इतनो० ॥२७१॥

राग कान्हरा ॥ देखरी आज नव नागरी भेषधर लली के छलन हित ललन कैसे सजे ॥ पहर भूषण बसन दृगन कजरा दियो निर्ख शृंगार सुर बधू मन में लजै ॥ मंद मुसक्यान मग चलत गति ठुमक के मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजें ॥ रूप अभिराम नारायण लख श्याम को कौनसी माननी मान जो ना तजे ॥ ॥ २७२ ॥

राग कमोद ॥ जयति नव नागरी सकलगुण सागरी कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी ॥ जयति हरि भामिनी कृष्ण घन दामिनी मत्त गज गामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभाग मणि कृष्ण अनुराग मणि सकल त्रिया मुकुट मणि सुयश लीजे ॥ दीजिये दान यह व्यास की स्वामिनी कृष्ण सों बहुरि नाहिं मान कीजे ॥ २७३ ॥

राग बिहाग ॥ कह्यो क्यों न मानत मेरो॥मदन मोहन नव कुंजद्वार ठाढे पंथ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सब रैनि गँवाई छिन छिन पल पल झेरो ॥ साज शृंगार हार अपने लै प्राण दान दे तेरो ॥ अजहूं समझ शोचरी आली और नह कछु फेरो ॥ गोविंद प्रभु के हृदय की कौन मेटे तो बिन बिरह अँधेरो ॥ २७४ ॥

किन बदा॥ तज रोष दोष लगायबो सज मोद में मंगल मुदा॥ अपराध विन अपराध धरबो सीख तोहे किन दई॥ धर ध्यान गह मुख मौन बैठी मानो कोई जोगिन नई॥ रस रीति प्रीति प्रतीति बिसरो कठिन कुच संगत किये॥यह जान अब परसो नहीं लग जाय कहुं मेरे हिये॥ सुन बैन आतुर नयन फेरे रसिक भगवत् यूं कही॥हँस कंचुकी बंद खोल लिपटी मनो घन दामिन गही॥ २८१॥

राग पीलू॥ तूतो मोहिं प्राणन हूंते प्यारी॥ भूले मान न कीजिये सुंदरि हौं तो शरण तिहारी॥ नेक चितै हँस बोलिये सुंदरि खोलिये घुंघट सारी॥ कृष्णदास हित प्रीति रीति बश भरलिये अंकन बारी॥ २८२॥

राग भूपाली॥मन मोहनी मन मोहना मन मोहिबो करो॥ मुख चंद चख चकोरी सदा जोहिवो करो॥ घनश्याम रसिक नागर तू हो जो दामिनी॥ तज मान अधर पानकरो जात जामिनी॥ कछु दोष ना पियाको तू भूल क्यों गई॥ प्रतिबिंब देख आपनो तैं पीठ क्यों दई।समझाय कही भगवत जब लाग कान सों॥सुखदान उठी आतुर भेटी सुजान सों २८३

राग देस॥ कुंज पधारो जी रंग भरी रैन॥ रंग भरी दुलहन रंगभरे पिया श्याम सुंदर सुखदैन॥ रंग भरी सैनी बिछी सेज पर रंग भरयो उलहत मैन॥ रसिक बिहारी पिया प्यारी जी दोऊ मिल करो सेज सुखसैन॥ २८४॥

राग बिहाग॥ अब पौढन को समयो भयो॥ इत दु-

पीत पट, कहूं मुकुट बनमाल ॥ बिछुरो होय सोफिर मिलै रूसे लेहि मनाय ॥ मिल्योरहै और ना मिलै, तासों कहा बसाय ॥ तनक सुहागो डारके, जड कंचन पिघलाय ॥ सदा सुहागिन राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय, मानकियो तैं- भली करी, कैसो तेरो मान ॥ जैसो मोती ओसको, तैसो तेरो मान ॥ तूं चट ते मट होत न राधे उन मोहिं लैन पठाई ॥ राजकुमारी होय सो जाने के गुरु सीख सिखाई ॥ नँदनंदन- को जान महातम अपनी राख बडाई ॥ ठोडी हाथ दे चली दूतका तिरछी भौंहि चढाई ॥ परमानंद प्रभु करूंगी दुल्हैया तो बाबा की जाई ॥ २७८ ॥

राग बसंत ॥ गूंजेंगे भ्रमरा बिराग भरे बन बोलेंगे चा- तकवा पिक गायके ॥ फूलेंगे केसू कसुंभा जहांलौं मारेगो काम कमान चढायके ॥ बहेगी सीरी सुगंध मारुत जबहिं लगैगी साखसों साख मिल आयके ॥ मेरे कहे नचलो बाबा की सोंह ऋतु बसंत लिये जाएंगे हुमायके ॥ २७९ ॥

राग बिहाग ॥ पहले तो देखो आय माननी की शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजे प्यारे गोविंद ॥ कर पर धर क- पोल रही है नयनन मूंद कमल बिछाय मानो सोयो है चंद ॥ रिस भरी भौंवां मानो भौंरा बैठे अरबरात इन्दु तरे अरबिंद भरयो मकरंद ॥ नंददास प्रभु प्यारे ऐसी न रूठै येबल जाको मुख देखे ते कटत दुख द्वंद ॥ २८० ॥

राग देश ॥ कर नेह नयन लगायके फिर मान करना

राग रामकली ॥ धन मेरे भाग की शुभ घरी ॥ श्याम सुंदर मदन मोहन भुजा ले उर धरी ॥ जासु चरण सरोज गंगा शंभु ले शिरधरी ॥ जासु चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके बदन सरोज निरखत आश सगरी सरी ॥ सूर प्रभु को भेट ते मेरी सकल अपदाटरी ॥२८९ ॥

राग बिभास ॥ कित श्वास उसास भई सजनी, उत दौर गई इत दौर के आई ॥ टीको जो मिटी अलकें जो छुटीं, प्यारी मैं तेरे लाल के पाँयन पर आई ॥ अरुणाई कहां गई होंठन की, प्यारी मैं ब्रजनाथ ने बहुत बकाई ॥कहां पलट्यो पट प्रीतम को, प्यारी मैं तेरी प्रतीति को लाई२९०॥

राग बिहाग ॥ आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारी को ख्याल चांदनी में पौढी जाते चंदा हू गयो लजाय ॥ मंडप पुहुप हार बहु बिधि नीले पट नाशिकाको मोती देख उडगन सकुचाय ॥ आएहैं निकट लाल देख रीझे ब्रज बाल बारबार मुख की लेत बलाय ॥ नंददास प्रभु प्यारे अधरन बोरी धरी झझक उठी अकुलाय ॥ २९१ ॥ नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय ॥ आए मोहन फिरगए अँगना मैं बैरन रही सोय ॥ कहा करूं कछु बश ना मेरो आयो धन दियो खोय ॥ लछीराम प्रभु अबके मिलें तो राखोंगी नयनन समोय ॥ २९२ ॥ मेरे कर मेंहिंदी लगीहै लट उरझो सुझाय जा ॥ शिर की सारी सरक गईहै अपने हाथ उढाय जा ॥भाल को बेंदी मोरी गिर

र गई द्रुमन की छैयाँ उत ढुर चंद गयो॥ पौढ रहे दोउ सुखद सेज पर बाढत रंग नयो॥ रसिक विहारो बिहारन दोऊ पौढे यह सुख दृगन लह्यो॥ २८५॥

द्वितीयमान लीला॥

राग कान्हरा॥ रैन मोहिं जाग्रत विहानी मोहन सों मैं मान कियो ताते भई तन अधिक तपत॥ सेज सुगन्ध तलप विष लागत पावक हूंते दाह सखी री त्रिविध पवन उडपत॥ ऐसो अति ब्याप्यो हो मन्मथ मेरोई जोया जाने मोहिं श्याम श्याम कह रैनि जपत॥ बेग मिलावो सूर के प्रभु को भूल अभिमान करूं कबहूं नहीं मदन बान ते कंपत॥ २८६॥

राग जैजैवंती॥ बनत बनाऊं कछु बन नहीं आवे सांवरे सजन बिन तरफत प्राण हमारे॥ सोच किये क्या होत री सजनी वे हरि कठिन हृदय समझाऊं कैसे कारे॥ तपोंगी ताप चहूं ओर अगन दे तन को जराऊं तो मैं पाऊं पीया प्राण प्यारे॥ सूर सकल बिधि कठिन भई है बीतत रैनि गिनत गई मई को तारे॥ २८७॥

राग काफी॥ सखी मोहिं मोहन लाल मिलावै॥ ज्यों चकोर चंदाको इकटक भृंगी ध्यान लगावै॥ बिन देखे मोहिं कल ना परेरी यह कह सभन सुनावै॥ बिन कारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुखपावै॥ हाहा करिकरि पाँयन परि परि हरि हरि टेरि लगावै॥ सूर श्याम बिन कोटि करो जो और नहीं जिय भावै॥ २८८॥

हाहा करत न मानत पुनि पुनि चरण गहे॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरणी नखन करोवत॥ आप हँसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत॥कहा करत यह बोलत नाहीं पीया यह खेल मिटावो॥ सूर श्याम मुख चंद्र कोटि छबि हँस कर मोहिं दिखावो॥ २९७॥

राग बिहाग ॥ तनक हरि चितवो मेरी ओर॥ मेरे तो मोहन तुमही इक हो तुमको लाख करोर॥ कबकी मैं ठाढी ठाढी अरज करतहों सुनिये नंदकिशोर॥ कृष्ण प्रिया के प्राण जीवन धन करुणानिधि चित चोर॥ २९८॥

राग परज॥ मृदु मुसुकन कीजे थोरी थोरी॥ हम सों कहा रूसनो हम तुम नेह कुंज के चंद चकोरी॥ तजिये मान तनैनी भृकुटी ढीली करिये ललित किशोरी॥ निठुराई सभ छांड छबीली बचन सुधा दीजे श्रुति ढोरी॥ २९९॥ इत मत निकसै तू चौथ के चंदा देखेते कलंक मोहिं लगजायगो रे॥ दूर ते गुलाल भरो छूओ जिन छैला मोहिं तेरो श्याम रंग मोहिं लग जायगो रे॥ हाहा खाऊं पैयां परूं नीयरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जाय गो रे॥ नागरिया लोभी फाग स्वार्थ ही को मीत मोमन निगोरो भूल लग जायगो रे॥ ३००॥ कान्हारे बांसुरिया वारे रे तू ऐसे जिन बतराय॥ यों ना बोलिये एरे घर बसे मैं लाजन दबगई हाय॥ मैं हारी तेरे खेलन हीं ते तू सहज चल्यो क्यों नाजाय॥ रसिक बिहारी जा सों नाम पायके क्यों एतो इतराय॥ ३०१॥

जो परीहै हाहा करत लगायजा ॥ नीलांबर प्रभु गुणना भूलूं बीरी नेक खवायजा ॥ २९३ ॥

परस्पर मान लीला ॥

राग कल्याण ॥ श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊं ॥ जो तुम तान कहो मुरली में सोइ सोइ गाय सुनाऊं ॥ हमरे भूषण तुम सभ पहरो हौं तुमरे सभ पाऊं ॥ हमरी बिंदरी तुमही लगावो हौं शिर मुकुट धराऊं ॥ तुम दधि बेचन जाहु वृंदाबन हौं मग रोकन आऊं ॥ तुम्हरे शिर माखन की मटुकिया हौं मिल ग्वाल लुटाऊं ॥ माननी होकर मान करो तुम हौं गहि चरण मनाऊं ॥ सूर श्याम प्रभु तुम जो राधिका हौं नंदलाल कहाऊं ॥ २९४ ॥

राग देस ॥ युगल छबि आज अनूप बनी ॥ गोरे श्याम सांवरी राधा नख शिख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख अनी ॥ ललित किशोरी लाल रसिकबर मृदु मुसक्यान घनी ॥ २९५ ॥

राग पीलू ॥ श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई ॥ पूंछत फिरत अपनी सखियन ते प्यारी कहां गई ॥ बृंदाबन बीथिन यमुना तट श्रीराधे श्रीराधे ॥ सखी संग की यह छबि निरखत रहीं सकल मौन साधे ॥ गरुवी प्रीति कहा न करावै क्यों न होय गति ऐसी ॥ कहे भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥ २९६ ॥

राग बिलावल ॥ नंदलाल निठुर होय बैठ रहे ॥ प्यारी

लला घर जानदे अरे हो ॥ प्यारी लिया है सो लेहें गे नई रीति न करते आज हो ॥ प्यारी नित पहराय पठामना मोहिं दे बीरा ब्रजराज हो ॥ वृषभानु०॥ लाला क्या लादे हम जातहो श्याम काहे भरे हम बैलहो ॥ लाला तुम टेढे ठाढे भए मोरी रोक मही की गैल हो॥नंदराय०।प्यारी अंग अंग बसन सुहावना मानो भरेहैं रतन भूपाल हो॥राधे नीके रूप लडैती ये कोई जोबन लादे जायहो ॥ वृषभानु०॥लाला याहीते कारे भए कोई लैलै ऐसे दानहो॥लाला कब छूटोगे भार सों सगरे तीर्थ गंगा न्हायहो॥नंदराय०॥ प्यारी गोरज गंगा न्हात हों और जपत गौअन के नामहो ॥ प्यारी पावन पवित्र सदा रहों ऐसे दान ते ना सकुचाय हों।वृषभानु०लाला देस हमारे बापको जाकी बाहिं बसे नंदराय हो॥लाला घास जो राख्यो सांवरे याते सुख सों चरावो गाय हो॥नंदराय.प्यारी देश तुम्हारे बाप को सो मैं दिया है बसायहो॥प्यारी सभ संकलप्यो वा दिना जादिन पियरे कीने हाथ हो ॥वृषभानु० लाला दान लै दान लै दान लै मन फूल्यो अति सुख पायहो। लाला लै रे मोहन दान लै कछु गाय बजाय रिझायहो ॥ नंदराय ०॥ प्यारी नट ज्यों नाचे सांवरो कोई पढत कबित्त जैसे भाटहो ॥ श्री वृंदावन लीला रची यश गावत अली भगवानहो ॥ ३०६ ॥ हमरे गोरस दान न होय मोहन लाडलेहो ॥ हमारे मग मग फिरत ग्वार ग्वालन दान देहो ॥ कब के तुम दानी भए लाल कब हम दीनो दान ॥ गाय

राग देस॥ हमसे ना बोलो सांवलिया तू मतवारोरे॥ हट मोहन हटको नहिं माने नट खट जात अहीर कहावै जाय कहूं यशुदा सों हटको बारोरे॥ ३०२॥

राग कलिंगडा॥ अपनी डगर चल्यो जा रे ब्रजवासी॥ तू मेरे ढिग जिन ठाढो रह देखेंगे लोग करैंगे मेरी हांसी॥ तुम ब्रजवासी अपनी गरज के नयना मिलाय गले डार गयो फांसी॥ पुरुषोत्तम प्रभु नीठ मिलेहो तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी॥ ३०३॥

रागप्रभाती॥ मैंतो थांपै वारी वारी वारी हो बिहारीजी मृदु मुसकन पर जावां बलिहारी जी॥ लोक लाज तज थारे लडलागी थैं काई उर धारी गिरिधारी जी॥ और तरां जिन जानोहो बिहारी जी लाखां भांति करो म्हांसे प्यारी जी॥ ब्रज निधि अरजी सुनो जी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हाँ से यारी जी॥ ३०४॥॥

दान लीला।

दोहा॥ कछु माखन को बल बढ्यो, कछु गोपन करी सहाय। श्री राधाजूकीकृपा सों,गोवर्द्धन लियो उठाय ३०५

राग बिलावल॥ श्री वृंदाबिपिन सुहावनो जहँ बंसीबट की छांहिं हो॥ श्रीराधे दधिलै निकसी कन्हैया ने रोकी आय हो॥ वृषभानु लडैती दानदे अरी हो॥ लाल सभही स्याने साथ के अरु तुमही स्याने आए हो॥ लाला लिख्या दिखावो सांवरे कब दान लियो पशुपालहो॥नंदराय

की कामर ओढे तापर करत गुमान ॥ गाय चरावत नंद की मोपै मांगत दधिको दान॥रतन जडित मेरी ईंडरी हीरा लगे करोर ॥ एक हीरा गिरजाय गो तेरी सभ गायनको मोल ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार॥ नेक चितै बलि जाऊं सांवरे मेरो बिमल दधिखाय ॥ ३०९॥

राग बिलावल ॥ ग्वालिन दान हमारो दे ॥ हम दानी या माल के ॥ देहो लेहो तुम जात कहां हो लेहों चुकाय नित हाल कोरे ॥ सघन कुंज बन बीथिन गहबर सांकरी खोर कुआँ ताल कोरे॥पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत बार बार ब्रजबाल को रे॥ ३१० ॥ याही मेरा प्यारा रे दान मांगे अरेहो ॥ हाथ लकुटिया कांधे कमरिया अरेहो गौअन रखवारा॥ मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे अरेहो नयनों रतनारा॥कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु प्यारे हो जीवन प्राण हमारा ३११॥

राग दादरा॥ हमारो दान देहु ब्रजनारी ॥ मदमाती गज गामिन डोलै तू दधि बेचन हारी ॥ रूप तोहिं बिधिनाने दीयो ज्यों चंदा उज्यारी॥ मटुकी शीश कटीले नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गले में राजे अलकें घूंघर वारी॥ या ब्रज में जेती सुंदर हैं सभ हम देखी भारी ॥ नारायण तेरी या छबि पर नँद नंदन बलिहारी ॥ ३१२ ॥

राग बरवा पीलूकाजिला॥ पहले मेरो दान चुकारी पीछे बतराइयो प्यारी ॥ ता समान तूही देत दिखाई नव जोबन नव सुंदरताई और कहां लौं करों बडाई मोहन को मन

चरावो बाबा नंदकी तुम सुनो अनोखे कान्ह ॥ हम दानी तिहुँ लोकके तुम चारों युगकी ग्वार ॥ दान न छाँडों अपनो तेरो राखों गहनो हार ॥ ग्वाल रत्न जडितकी ईंडरी मेरी हीरा जडीहो हार ॥ सो तुम राखन कहतहो कामरके ओढन हार॥ ब्रह्मा तानो पूरियो हो बुनी हो बैठ महेश ॥ सो हम ओढी कामरी जाको पार न पायो शेश ॥ ग्वाल भौंएं नचावत चातुरी ढोटा बोलत बढ बढ बोल॥मेरो हार किरोर को तेरी सब गायनको मोल ॥ यह गाय तिहूं लोक तारनी चारों युग परमान ॥ दूध दहीके कारणे तेरो हारलेहों दसदान ॥ काहेको बाद बदतहो ढोटा काहे करत अति सोर ॥ जैसी बाजे तेरी बांसुरी मेरे नूपुर की घनघोर ॥ याबंसी की फूंक पै मैंने गिरिवर लियो है उठाय ॥ ढोठ बहुत यह ग्वालनी इनकी मटुकी लेहों छुडाय॥ हमहैं सुता वृषभानु की तुम नंद महरके कान॥ प्रेमप्रीति रुचमान के ढोटा अब जिन करो गुमान ॥ वृंदावन क्रीडाकरी हो कीनो रास बिलास ॥ सुर नर मुनि जय जय करत गुण गावे माधुरी दास ॥ ३०७॥

राग भैरवी ॥ देजा गुजरिये दधि माखन ॥ गूजरी ये गुजरेट रीये मेरे इतेक मारग आउ री ॥ मैं हूं नंदमहर को ढोटा भरला मटुकी मैं मारूं सोटा तेरे बिच बिच धूम मचाऊं ॥ मैं वृषभानु गोप की बेटी मत जानो कोई और सहेटी कंस राजा की फौजां लाऊं तेरे नंद समेत बँधाऊं॥ ३०८॥ मोहन मैं गूजर बरसाने दी मोते नाहक मांडीरार॥पांच टका-

टी पाय सूधे बाबा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है ॥ किधों शनी मंगल किधों राहु केतु चौथ आए किधों संक्रांत किधों ग्रहणहू लजायो है ॥ अंचरा न गहो कहो कैसो दान मांगत हो कहा जगजीवन जू ऊधम मचायो है ॥ देखो सखी कैसे नयन खंजन से नाचत हैं जाने तो यशोदा मैया कहा खाय जायो है ॥ ३१७ ॥

राग जंगला ॥ द्वार पौरिया को रूप राधे को बनाय लाई गोपी मथुरा ते वृंदावन की लतान में ॥ कह्यो टेर कान्ह सों बुलायो तोहिं कंसजी ने कौन के कहेते दधि लूटत हो दान में ॥ संग के सखा सभ डगर भुलायगए कृष्ण सों सयाने गए पकर भुजा पान में ॥ छूट गयो छल तो छबीलो अवलोकन में ढीली भई भौंह वा लजीली मुसकान में ॥ ३१८ ॥

राग बिलावल ॥ एरी यह कोहै री याहे दान देत गोवर्द्धन के री ग्वैडे ॥ हारन खेतन गाम मडैया कान्हर ठाढो अैडै ॥ बाप भरे कर कंस रजा के पूत जगाती पैडै ॥ या ब्रज की अब रीति नई है औलाती को नीर बरैडै ॥ पराए बगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैडी छैडै ॥ कृष्णदास बरजो नहिं मानत तोरत लाल की मेंडै ॥ ३१९ ॥

राग सोरठ ॥ कांकडली ना घालो म्हारी फूटे गागडली ॥ तूंतो ठानो घर में ठाकड हौंभी ठाकडली ॥ आकड आकड बोलो कान्हा भैंभी आकडली ॥ मोढे थानो कारी कामर हाथ में लाकडली ॥ नौलख धेनु नंद घर दुहिया एक नाबाखड-

मोहन हारी॥अति बांके हैं नयन तिहारे सान धरे पैने अनि-
यारे जिन हमसे घायल कर डारे इन समान नाहिं बान कटा-
री ॥ नारायण जिन भीर लगावो देहु दान अपने घर जावो
क्यों मटुकी चौपट गिरवावो देख हँसेंगे पुर नरनारी॥ ३१३॥

राग मल्हार ॥ जोबन की मदमाती डोलै री गुजरिया॥
अंग अंग जोबन के उठत तरंग नए नयना कजरारे भुहैं
तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकबेसर करन फूल मुंदरी
ललित छबि देत अँगुरिया ॥ अबलों तोसी नहीं देखी नारा-
यण दधि की बेचन हारी नंदकी नगरिया ॥ ३१४ ॥

राग सोरठ ॥ ठाढी रहरी ग्वालिन देजा मेरो दान॥ ढि-
ग नहिं आवत बगद जात तुम फोरूं तेरी मटुकी लकुटिया
तान ॥ कैसो दान मांगे श्याम सुजान ॥ या मारग हम नित
प्रति आवत कबहूं नदीनो दधिकोदान ॥ दान के काजहिं
हम ब्रज आए छांड दियो बैकुंठ सों धाम ॥ या गहवर में
हमहीं बसत हैं त्यां धौं कहा तिहारो काम॥क्या तुम ग्वालिन
आंख दिखावो दावानल को कर गयो पान ॥ सूरश्याम प्र-
भु तुमरे मिलन को मनमोहनको राख्यो मान ॥ ३१५ ॥

राग भैरव ॥ देखत की मुख ऊजरी गूजरी शीश बिरा-
जत बासन कोरो ॥ दान बिगर कहो कैसे जान देउँ तू इत
भोरी कि मैं इत भोरो ॥ गोरसकी सौंह सो रस छाड देउँ त-
नक चखाय घनो है कि थोरो ॥ जैसे तुम लाईहो याहि नि-
होरो कर तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो ॥ ३१६ ॥ अटप-

॥ ३२३ ॥ अब तुम सांची बात कही ॥ एते पर युवतिन को रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहत- ही सो श्री मुख प्रकटायो ॥ नीके जात उघारी अपनी युव- तिन भले हँसायो ॥ तुम कमरी के ओढन हारे पीतांबर नहिं छाजत ॥ सूर श्याम कारे तन ऊपर कारी कमरी भ्राजत ॥ ३२४ ॥ मोसों बात सुनो ब्रजनारी ॥ एक उपख्यान च- लत त्रिभुवनमें सो तुम आज उघारी ॥ कबहूं बालक मोह न दीजै मोह न दीजै नारी ॥ जोमन आवै सोई कर डारै मूंड चढतहै भारी ॥ बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी ॥ सूर कहा ये हमको जानै छाछ की बेचन हारी ॥ ३२५ ॥ यह जानत तुम नंदमहर सुत ॥ धेनु दुहत तु- मको हम देखत जबहिं जात खरकहिं उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूंढत भांडे ॥ मारग रोक भए अब दा- नी वे ढंग कबते छांडे ॥ और सुनो यशुमति जब बांधे तब हम करी सहाय ॥ सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ ३२६ ॥

राग आसावरी ॥ को माता को पिता हमारे ॥ कब ज- नमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुन बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बांधे महतारी ॥ दुहत कौन गैया को चारत बात कही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंद ढटोना नंद कहांते आए ॥ मैं पूरन अविगत अविनाशी माया सभन भुलाए ॥ यह सुनि ग्वालि सबी मुसकानी

ली॥ माखन माखन आपने खायो रहगई छाछडली॥ जा-
य पुकारूं कंस के आगे मारे थापडली॥ वृंदाबन में रास र-
च्योहै मोरकी पांखडली॥ नरसी के स्वामी सामलिया दूध-
में साकडली॥ ३२०॥

राग परज॥ तुम टेढो म्हारी टेढी गगरिया॥ टेढी टेढो
चाल चलो त्रिभंगी काहेको दिखावें लाला टेढो पगरिया॥
टेढी अलक में क्या बांधूंगी कछु नसुहावे मोहिं थारी सग-
रिया॥टेढो श्रीवृंदावन गोकुल टेढी वाहूसे टेढी वृषभानु नग-
रिया॥टेढो श्रीनंद बाबा मात यशोदा और टेढो वृषभानु दु-
लरिया॥सूरदास टेढेकी संगत टेढे होकर पार उतरिया ३२१

राग गुर्जरी॥ गिरिवर धरयो आपने घर को॥ ताही
के बल दान लेतहो रोक रहतहो हमको॥ अपनेही मुख बडे
कहावत हमहूं जानत तुमको॥ यह जानत पुनि गाय चरा-
वत नित प्रति जातहो बनको॥ मोर मुकुट मुरली पीतां-
बर देखे आभूषनको॥ सूर कांध कमरी हूं जानत हाथ
लकुटिया कर को॥ ३२२॥

राग बिलावल॥ यह कमरी कमरी कर जानत॥ जाके
जितनी बुद्धि हृदय में सो तितनी अनुमानत॥ या कमरी
के एक रोम पर वारों कोटिन अंबर॥ सो कमरी तुम निंदत
गोपी तीन लोक आडंबर॥ कमरी के बल असुर सँहारे कमरी
ते सब भोग॥ जात पात कमरी है मेरी सूर सबहिं यह योग

मोहे गोपी ग्वाल बाल गौअन को चरैया मैंही तो हूं॥ बत्सासुर को पटक अघा के प्राण कढैया मैंही तो हूं॥ नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैंही तोहूं॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैंही तो हूं॥चीर चोर चढ गयो कदम युवतिनको रिझैया मैंही तो हूं॥ गोबर्द्धन नख धर्‌यो इंद्रको गर्ब हरैया मैंही तो हूं॥ बंसीबट के तट अधर धर बंसी को बजैया मैंही तो हूं॥ श्यामाके संग रास में नीको तो नचैया मैंही तो हूं॥ पकरूं कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैंही तो हूं॥उग्रसेन को राज्य मथुरा को दिवैया मैंही तो हूं॥ सब खेलन को खेल खेल खेलन को खिलैया मैं ही तो हूं भक्तन हितकारी बलदेव को भैया मैं ही तो हूं॥ मंझधार के बीच टेर गज की सुनवैया मैं ही तोहूं॥ कुंदन विप्रयों कहत नाम राधा को रटैया मैं ही तो हूं॥ ३३०॥

कबित्त॥ अंत ते न आयो याही गांवरे को जायो माई बाप री जिवायो प्याय दूध दधि बारे को॥ सो तो रसखान तज बैठो पहिचान जान लोचन नचावत नचैया द्वार द्वारे को॥ भैया की सौंह सोच कछु मटकी उतारे को ना गोरसके ढारे को ना चीर चीर डारे को॥ यही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार बगर हमारे को॥ ३३१॥

राग झिंझोटी॥ चल परे हटरे काहेको इतरावे॥ भूषण बसन दधि माखन चुरैया अब कैसी कैसी बात बनावे जिनके बसाए तुम उनहीं सों झगरत निलज न नेक लजा-

मैंही गुण जानत ॥ सूरश्याम जो निदरयो सभही मात
ता नहिं मानत ॥ ३२७ ॥

राग सोरठ ॥ तुम का जानोरी गूजर दधि की बेचन
र ॥ कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रंग
रे भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार ॥
री माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गा-
त वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुति चार ॥ जो मेरो
नेज दास कहावे रसिक प्रीतम निज भक्ति पावे ब्रह्मादिक
सनकादिक नारद शेष न पावत पार ॥ ३२८ ॥

राग आसावरी ॥ भक्त हेत अवतार धरों मैं ॥ कर्म
धर्म के वश मैं नाहीं योग यज्ञ मनमें न करों मैं ॥ दीन गु-
हार सुनों श्रवणन भर गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं ॥ भा-
वाधीन रहों सभही के और नकाहू ते नेक डरों मैं ॥ ब्रह्मा
आदि कीटलौं व्यापक सभको सुख दे दुखहिं हरों मैं ॥ सू-
र श्याम तब कह्यो प्रगट ही जहां भाव तहांते न टरोंमें ३२९

लावनी ॥ मैंही तो हूं नंद को लाला मात यशोदा को
कन्हैया मैंही तो हूं ॥ धर धरके अवतार भूमि को भार हरैया
मैंही तो हूं ॥ मथुरा में लियो जन्म ब्रज मंडल को बसैया
मैंही तो हूं ॥ प्रथम पूतना तृणावर्त्त सकटा को हनैया
मैंहीतोहूं ॥ कागाको मार के चोंच को फार फरैया मैंही-
तो हूं ॥ ब्रजवासिन को प्रेम देख माखन को खवैया मैंहीतो
हूं ॥ यमला अर्जुन हेत ऊखल सों हाथ बँधैया मैंही तो हूं ॥

न्ही बूंद सुहामनी लागत चमकत बिज्जु छटा॥गरजत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा॥ गावत सुरही देत चातक पिक प्रगट्यो मदन भटा॥ सभ मिल भेट देत नंदलालाह बैठे ऊंची अटा॥ चतुर भुज प्रभु गिरिधरन लाल शिर कसूमी पीतपटा॥ ३३६॥ आज कछु कुंजन में बरषासी॥ बादर गण में देख सखी री चमकतहै चपलासी॥ नान्ही नान्ही बूंदन कछु धुरवा सी पवन बहत सुख रासी॥ मंद मंद गर्जन सी सुनियत नाचत मोर सभा सी॥ इंद्र धनुष में बग मिल डोलत बोलतहै कोकला सी॥ इंद्र बधू छबि छाय रहीहै गिरि पर श्याम घटा सी॥ उमग महीरहु से महि कंपत फूली मृगमाला सी॥ रटत ब्यास चातककी रसना रसपीवत हौं प्यासी॥ ३३७॥

राग देस मल्हार॥ सामन घन गरजें घूम घूम॥ बरसत शीतल जल झूम झूम॥ कोयल कीर कोकिला बोलें हूंस चकोर चहूं दिशि डोलें नाचत बन अति करत कलोंलें मोर मोरनी चूम चूम॥ गावें राग रागनी भामिन दमक रही मानों छबि दामिन झूटा देत रपट गज गामन पायल बाजे छम छूम छूम॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इंद्रनिशान बजावत हर्षत दास गणेश युगल छबि निर्खत छाय रह्यो सुख रूम रूम॥ ३३८॥

राग मल्हार॥ आई बदरिया बरसनहारी॥ गरज गरज दामिनि दमकावे ज्यों चूंदरमें झलक किनारी॥ मधुर म-

व॥ नित प्रति धेनु को चरैया नारायण आज तू भूप कहावे।

राग कल्याण ॥ रजधानी तुम्हरे चित नीकी॥मेरे दास दासन के तिनको लागत है अति फीकी॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यही अगाध॥ कंस मार शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध॥ तबही लग यह संग तिहारो जबलौं जीवत कंस॥ सूरश्याम के मुख यह सुन तब मनमें कीनो संस॥ ३३३॥

राग रामकली ॥ राधा सों माखन हरि मांगत॥ औरन की मटुकिन को चाख्यो तुमरो कैसो लागत॥ ले आई वृषभानु नंदनी सदलैानी है मेरो॥ लै दीनो अपने कर हरि मुख खात अलप हँस हेरो॥ सभहिन ते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई॥ सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रज ललना मन भाई॥ ३३४॥

राग कालिंगडा ॥ अच्छा लेहु ब्रजवासी कन्हैया अच्छा लेहुरे॥ बरसाने से चलीरे गुजरिया आगे मिले महाराजरे॥ कोरी कोरी मटुकी मैं दही रे जमाया चाख लेहु महाराजरे॥ दधि मेरो खायो मटुकिया रे फोरी इंडरी कहां डारी लाल रे॥ हार शृंगार सभी मेरो तोऱ्यो दुलरी कहां डारी लालरे॥जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराजरे॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहारी रे॥३२५

हिंडोरा झूलन लीला॥

राग मल्हार ॥ ब्रज पर नीकी आज घटा॥ नान्ही ना

न अब अवारी ॥ झूलें निकुंज अपनी अबही चलो पिया-
रे॥ कीजे बिहार हमसों तुम नंदके दुलारे॥ तब संग ले पि-
याको सुनि कुंज में सिधारी ॥ बैठो कुँवर हिंडोरे अब मैं तुम्हें
झुलाऊं ॥ गाऊं तुम्हें रिझाऊं छबि देख दृग सराऊं ॥ बैठो
सुरंग पटली डोरी गहो सँभारी ॥ बाढे न रमक मोहन टुक
मंदही झुलाओ ॥ डरपे हियो हमारो पिया रमक ना बढा-
ओ ॥ यह बात सुन प्रियाको उरसों लई लगारी ॥ भीजेगी
लाल सारी कारी घटा जो आई ॥ लीजे उढाय मोको का-
मर कुँवर कन्हाई ॥ तब हँस रसिक बिहारी कामर उढाई
कारी ॥ चल० ॥ ३४२ ॥

राग देस॥आज बन्यो रसरंग हिंडोरो कदम तरे॥सघन
लता झुक सुमन सुगंधन अलि गण गुंज करें॥ वर्ण वर्ण तनु
भूषण चुँदरी श्यामा जू पहरें ॥ लाल लडाय चाय हित चित
सों रूप समुद्र भरें ॥ ३४३ झूलौ प्यारी आज निकुंज हिं-
डोरना ॥ बोलत चातक मोर पवन झकझोरना ॥ सघन ल-
ता निधि बनकी आज सुहाई हैं ॥ श्याम घटन सों परतबूंद
सुखदाई हैं ॥ तैसो ही दामिनी चमक चमक छबि छाई है ॥
मनो डरत तुअ तेज लाज दरशाई है ॥ हरित भूमि हुलसा
तुअ आगम जानके॥ मनो बिछौना कियो मदन मद भान
के॥ ३४४॥ चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानु की लली ॥
तिहारे काज आज इक मैंने बिरची कुंज भली ॥ रत्न जडित
को बन्यो हिंडोरो कैसी झला झली॥ब्रज बनिता झूलत अ-

धुर कोयल बन बोले भवन भवन गावत ब्रजनारी॥ चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी॥ ॥ ३३९॥ देख युगल छबि सामन लाजै॥ उत घन इत घनश्याम लाडलो उत दामनी इत प्रिया संगराजै॥ उत वर्षत बूंदनकी लरियां इत गल मोतियन हार विराजे॥ उत दादुर इत वजत बांसुरी उत गरजत इतनूपुर बाजै॥उत रँगके बादर इतबागे उते धनुष वनमाल इत साजै॥ उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षा सुखआजै॥ ३४०॥ श्याम सुन नियरे ही आयो मेह॥ भीजेगी मेरी सुरंग चुनरिया ओढ पीतांबर लेह॥ दामिनी सों डरपतहों मोहन निकट आपने लेह॥ कुंभन दास लाल गिरिधर सों बाढ्यो अधिक सनेह॥ ३४१॥

राग रेखता॥ आयोहै मास सामन इक मान कह्यो प्यारी॥ चल झूलिये हिंडोरेबृषभानु की दुलारी॥ यमुना के तीर बंसीबट कैसी छबि छाई॥ शीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई॥ करतीहै शोर यमुना उठते तरंग भारी॥ प्रति कुंज कुंज छाय रह्योहै परागरी॥ लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी॥ फूली लता द्रुमन की धरणी झुकीहैं डारी॥ जापै अलिंद घूमें मकरंद हेत छाए॥ नाचतहैं मोर बनमें लागत परम सुहाए॥ माती कोयल पुकारे बैठी कदमको डारी॥ कालिंदिया के तटपै झूलतहैं सभ सहेली॥ नव सत सिंगार साजे इक एक ते नवेली॥ तुमहूं प्रिया सिधारो कीजे

सुहाई तान तरंगनललित भान तृण तोरना॥ ३४८॥धवल महल चढ रत्न बंगला झूलो सुरंग हिंडोर॥ नव किशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भुज जोर॥ सुरंग कसूमी सारी प्यारी हरत झगाली कोर॥ हित अली रूप लाल रुच औरै पियाछबि उठत हिलोर॥ ३४९॥

राग मल्हार ॥तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रंगीली अति सोहै॥ तु गुण रूप यौबन रंग रस भरी तेरी उपमाको कोहै ॥हाथन चूरी महाउर मेहिंदी चटक चौगनी सोहै ॥ रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन तू दामिनी मन मोहै ॥ ३५० ॥

राग पीलू॥चलो पिया वाही कदम तरे झूलें॥झुकी हैं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिंदी के कूलें ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलि गण गुंजत भूलें॥ ललित किशोरी मग बतरावें कह कह बतियां फूलें॥ ३५१ ॥

राग मल्हार ॥ हर्ष झुलाइये मन भामन ॥ उघर पर्यो हिय हेत गह गह्यो झूटा देयो चित चामन ॥ यह जो कल्पतरु यह रविजा तट वह बन घन झुक आमन ॥ वृंदावन हित रूप बलि गई वह हरियाली सामन ॥ ३५२ ॥

राग खेमटा ॥हिंडोरे आज झूलत रंग रह्यो॥अचल सुहाग शुभग श्यामा को दिन प्रति होत नयो॥ हरित भूमि बंसी बट यमुना सो सुख दृगन लह्यो ॥ रसिक प्रीतम मिल गावत भावत ब्रज सभ रीझ रह्यो ॥ ३५३॥

नेक तहाँ एक एक नवली॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर बली॥ रसिक बिहारी की सुन बानी तुरतहिं कुँवरि चली॥ ३४५॥ चलो इकेले झूलें बनमें प्यारी मेरे प्रान॥ तुम नई नागर रूप उजागर सुख सागर छबिखान॥ वर्ण वर्णके बादर छाए मानो गगन बितान॥ बर्षत बूंद सोई मोतियन की झालर शोभावान॥बोलत खग मृग डोलत इत उत सो नहिं जात बखान॥ रंग रंगके फूल खिले हैं भ्रमर करत रसपान॥ ऐसे समय बिपिन सुख बिलसें एरी परम सुजा नारायण उठ बेगि पधारो कुल दीपक वृषभान॥ ३४६॥

राग खेमटा॥ झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नंदनी॥ सावन की तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परें बूंद मंदनी॥सुंदर कदंमकी डारी झूला पर्योहै प्यारी देखो कुमर हाहारी सभ दुख निकंदनी॥पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुख चन्द्रकी उजारी मृदु हास फंदनी॥मम मान सीख लीजे सुंदर न देर कीजे हम तो विलोक जीजे तूहै गति गयंदनी॥ शोभा लखो बिपिन की फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिक जनकी करों चरण बंदनी॥ ३४७॥

राग सोरठ॥झूलो मेरी राधा प्यारी रंगीलो हिंडोरना॥ डांडीचार सुदेस बनाई हीरा खम्मन झुम्मकलाई जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना॥उमडी घटा घुमर घिर आई रिमझिम रिमझिम बूंद सुहाई दमक दमक दामिनियां बोल मोरना॥ गावत राग मल्हार अघाई शीतल मंद सुगंध

री पहरे कुसमल सारी प्यारे के मन भाँदियां॥ चहूं ओर सभ सखी झुलावें झुक झुक झूटे खांदियां॥पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन नयन सरांदियां॥ ३५८॥

राग मल्हार॥ आज हिंडोरे झूलें फूलें॥नवल कुँवर नव दुल्हन दूलें॥धादा किडता धादा किडता बजत मृदंग सखो सुघर तान गावें झन नन नन नन नाचत मोर सघन बन प्रफुलित श्री यमुनाजी के कूलें कूलें॥नवल किशोरी वृषभानु की कुंवरि भोरी भोरी संग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकबेसर अंग अंग भुज मूलें फूलें॥ ३५९॥

राग देस॥ मन भामन हर्षामन आमन सामन तीज सुहाई॥ चामन गामन रीझ रीझामन दंपति रति दरशाई॥चढे हिंडोरे नयनन जोरें चित चोरें सुखदाई॥ युगल चंद रसकंद कोरनी लख रूपलाल बलिजाई॥ ३६०॥

राग रेखता॥ प्यारी पीतम के संग झूलें रंग हिंडोरना॥ दो खंभ हैं जडाऊ जडे चित के चोरना॥डाँडी मरुवे लगन लगी बेलन अमोलना॥पटली संदलकी साफ देखो खूब है बनी॥ लागेहैं उसके बीचमें हीरा चुनी मनी॥ चुंदरी घूंघट की ओटमें नयना बिशाल है॥ खंजन भुलामनेके घेरन को जालहै॥ मुझको रसिक गोविंदकी छबिही में झूलना॥ प्यारी अनूप रूप को दिलसे न भूलना॥ ३६१॥

राग खेमटा॥ युगल बर झूलत डार गर बाहीं॥ रतनजडित को बन्यो है हिंडोरा सघन कुंज के माहीं ॥ रेशम डोर

राग रेखता॥झूलन युगल किशोर की दिल में मेरे बसी॥ बैठेहैं रंग हिंडोरना करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोर दार ॥शिर पै सुरंग सारी प्यारी के क्यालसी बेसर बुलाक बेनी बेंदी जो भालपै ॥ हीरोंका हार उरपै कटि काछनी कछी॥ जोबनके जोर शोरसों रमकें बढावती॥ललता किशोरी श्याम की छबि देखके हँसी ॥ ३५४ ॥

राग मल्हार ॥ झूलत तेरे नयन हिंडोरें ॥ श्रवण खंभ भुहैं भईं मयारी दृष्टि किरण डांडी चहुँ ओरें ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूप रति जोरें ॥ बरुनी चमर ढुरत चहुँ दिशिते लर लटकत फुंदना चित चोरें॥ दुर देखतअलकावलि अलि कुल लेत है पवन सुगंध झकोरें ॥ कच घन आड दामनी दमकत इंद्र मांग धन करत निहोरें ॥ थकित भए मंडल युवतिन के युग ताटंक लाज मुख मोरें ॥ रसिक प्रीतम रस भाव झुलावत बिबिध कटाक्ष तान तृण तोरें ३५५

राग खेमटा ॥ युगल बर झूलत दे गर बाहीं ॥ बादर बरसें चपला चमकें सघन कदम की छाहीं ॥ इत उत पेग बढावत सुंदर मदन उमंगन माहीं ॥ ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बढ यमुना लौ जाहीं ॥ ३५६ ॥

राग देस॥झूलत श्याम श्यामा संग॥अतितरंग शोभाके मानो लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरत श्याम गोरे अंग॥ललित किशोरी हिंडोरने पै आज बरसत रंग ३५७

राग जंगला सिंध॥बलि बलि जाँदियां झूलन पर॥प्या-

राग यमन ॥ झूका दीजो सम्हार मेरी सारिन लटके ॥ सघन कुंज द्रुम डार कँटीली काहू छोर जिन अटके ॥ उन बातन अब भेट नहीं कछु और धोखे जिन भटके ॥ ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चट मटके॥ ३६७॥

राग मल्हार ॥ कैसे झूलों हिंडोरे बतियां माने नाहिं हरी॥ बरजो न मानत यह काहू को लोककी लाज टरी ॥ हाहा खात यह तो पैयां परतहै प्रेमके फंद परी ॥ रसिक गोविंद अभिराम श्याम ने भुज भर अंक भरी॥ ३६८ ॥

राग वड़हंस मल्हार ॥ हिंडोलनामें काई छै झूलो राज ॥ म्हारा झूलत हीया लरजे ॥ रत्न जडित के खंभ जडाए अगर चंदन के पटा ॥ रेशम डोर पवन पुरवैया जुरआई सामन की घटा॥श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिंदी के तटा॥ उड उड अंचरा परत भुजन पर निरखत नागर नटा॥३६९

राग सारंग ॥ फूलन के बंगले में राजें पिया प्यारी हो॥ फूलन के भूषण बिचित्र सोहें अंग अंग फूलन के बसन वदन छबि न्यारी हो ॥ फूल से मुखाविंद बचन फूलन सम फूली सखी तन मन शोभा लख भारी हो ॥ जैसोही समाज साज आज नारायण मानो कुंज भवन में फूली फुलवारी हो॥

कवित्त ॥ फलन के खंभा पाट पटरी सुफूलन की फूलन के फुँदने फंदे हैं लाल डोरे में॥ कहै पद्माकर वितान तने फूलन के फूलन की झालरें सु झूलत झकोरे में ॥ फूल रही फूलन सुफूल फुलवारी तहां फूल ही के फर्श फबे हैं कुंज को-

पवन पुरवैया लख रति काम लजाहीं ॥सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाहीं ॥ मध्य श्याम श्यामा दोउ हिल मिल पुनि पुनि हिय हर्षाहीं ॥ऊंची डार तोर कलियन दोउ निज निज कलिन सराहीं ॥ या छबि निरख प्रिया की प्रीतम मोहन मन न अघाहीं॥३६२॥आज दोऊ झूलत रंग भरे ॥ झूटा खरे लेत कबंहुक सखी कबहूं हरे हरे ॥ कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मानो शशि मीन लरे ॥ चंद्रमाल हलकत उर राधे हरि वनमाल गरे॥ बिहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे ॥ ललित किशोरी टरत न लखि छबि दृग शिशु अरन अरे ॥ ३६३॥

राग देस ॥ कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू ॥ अंचल अलक पलक सुनिरंतर इक संकोच सहो जू ॥ यह बिनती मानिये जो श्रवण सुन नाह न बचन कहो जू ॥ बिहारनदास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू ॥३६४ सुहावन सावन राधा सुख तिहारे बाट पऱ्यो ॥ यह जो शत गुणो रूप अंग संग झूलनमें उघऱ्यो ॥ यह जो चौगुनो चाव कौन बिधि भागनते जो बढ्यो ॥ बृंदाबन हित रूप रसिक प्रीतम को लहनो सुकृत कऱ्यो ॥ ३६५॥

राग मल्हार ॥एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे ॥ काहेको इतनी रमक बढावत द्रुम उरझत चीरे चीरे ॥ जो तुम झुक झुक झूटन के मिस आवतहो नीरे नीरे॥ नागर काह्न डरात न काहू लेत भुजन भी रेभीरे॥ ३६६॥

राग दादरा ॥ सुन सखी आज झूलन नहिं जैहों ॥ श्याम सुंदर पिया रस लंपट है अतिही ढीठ्यो देत ॥ झूटा तरल करे पाछे ते धाय भुजन भरलेत ॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमें जनावत नेह ॥ रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यों नजाय रस लेह ॥३७६॥

राग सोरठ ॥कौन समय रूठन को प्यारी झूलो ललित हिंडोरे ॥ रंग बरंग घटा नभ छाई बिच विच चपला चमक सुहाई परत फुहार परम सुखदाई चलत समीर झकोरे ॥ बिबिध भांति पक्षी बन बोलें मृगिन सहित मृग बिहरत डोलें जलजंतु मिल करत कलोलें यही अचरज मन मोरे॥ कुसुमचीर पहरे ब्रजनारी साज समाज आज है भारी नारायण बलिजाऊं तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥ ३७७॥

राग मल्हार ॥ या ऋतु रूस रहन की नाहीं ॥ बरसत मेघ मेदनी के हित प्रीतम हरष बढाहीं॥ जे बेली ग्रीषमऋतु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं ॥ उमडी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलन को जाहीं।यह संपदा दिवस चार की शोच समझ मन माहीं॥सूर सुनत उठ चली राधिका दे दूती गरबाहीं ३७८

राग गौरी ॥ झूलन हार नई कौन है ॥ श्यामा के सँग रंग भरी सोहत सखी नवेल॥ अति सुंदर तनु सामरी मानो नील मणिन की बेल॥ श्वेत कंप रोमांच हो जान परत कछु और ॥ झुक झुक झूटन में मिले हँस कुंवर लजोईं होत ॥ निरखो झूलन नेह की सखी चतुर शिरमौर ॥ हम जानी

रे में ॥ फूलझरी फूल भरी फूल जरी फूलन में फूल ही सी फूल रही फूल के हिंडोरे में ॥ ३७१ ॥

राग कान्हरा ध्रुपद ॥ फूलन की चंद्रकला शीश फूल फूलन को फूलन के झुमका श्रवण सुकमारीके॥ फूलन की बंदनी विशाल नथ फूलन की फूलन को बिंदा भाल राजत दुलारी के॥ फूलन की चंपाकली हार गले फूलन के फूलन के गजरा ललित कर प्यारी के ॥ फूलन की पगमें पायल नारायण फूले फूले भाग सदा लाडली हमारीके॥ ३७२ ॥

कवित्त ॥ फूलन चँदोआ तने फूलन फरश बिछो फूलन की सेज और फूलन छबिछै रही ॥ फूलन की गरे माल फूलन करनफूल फूलन को टीको मांग फूलन भरे रही॥ फूलन के वस्त्र और शृंगार सभ फूलन के विक्रम मिरगेश मन उपमा बनै रही॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राण प्यारी देखत बसंत या वसंतु ऋतु ह्वै रही॥ ३७३ ॥

राग पीलों ॥ सो.तू राखलै री झूटा तरल भए ॥ इत नव कुंज कदम लौं परसत उत यमुना लौं गए॥ आवत जात लता निर्वारत कुसुम बितान छए ॥ कल्याण के प्रभु रीझ विवस भए झूलत नएनए ॥ ३७४ ॥ मेरो छांडदे अंचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी ॥ झूटन मिस मोहन लँगरैयाँ अजहूं टहोकत ना भूलोंगी ॥ ललता संग रंगीले झूलें झूल झूल मनही मन फूलोंगी॥ललित किशोरी तरल पेग कर लालन तो संग सम तूलोंगी ॥ ३७५ ॥

खिलवार॥नई पाहुनी आई झूलन बैठी घूंघट मार॥वृंदाबन हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार ३८१॥ बांकी छबि सों झूलत प्यारी॥ बांकी आप बिहारी बांके बांकी संग सु-कुमारी॥बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूं की न्यारी॥ ललित किशोरी बांकी मुसकन बंक पेग पर वारी॥ ३८२॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें॥ कौन चढे पहले सुरंग हिंडोरें॥ सोई करत मनोहार हीये हित रमकदेत जोराजोरें गावत राग तान मधुरे सुर कोटि काम चित चोरें॥ रसिक प्रीतम यह होड पिया परी रीझ देत तृण तोरें॥ ३८३॥

राग सोरग॥ गाय चरायके गिरि धाऱ्यो तुम्हें झूलन समझ कहा है॥ अति सुकमार प्रिया गौरांगी तासंग झूलो ही चाहै॥ हम जो सिखावें तैसेही सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहै॥ वृंदाबन हित रूप बलिगई स्यां पायो के वांहै ३८४

राग बरवा सारंग॥ तेरी झूलन अति रस सानी सुख-दानी श्री राधा बल्लभ लाडले॥ गावत बजावत रिझावत प्रिया को तान तरंगन सभ मिल आवरे॥ सभ श्रृंगार हार फूलन के प्यारी को पहरावत मनमें चाव रे॥ राधे बर कृष्णा याही कृपा कर विपिन बसावो अनत न जावरे॥ ३८५॥

राग मल्हार॥ झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊं॥ मरु-वे मयार करूं हित चित दे तन मन खंभ बनाऊं॥ सुध प-टली बुध डांडी बेलन नेह बिछौना बिछाऊं॥ अति अवसर धरूं टुक कलसा प्रीत धुजा फहराऊं॥ गरजन कुहक कि-

जानी सभी, सखी यह झूलन कछु और ॥ सभी छकाईं नागरी दृगन सुधारस प्याय ॥ कपट रूप धर मोहनी, प्रगट भई व्रज आय ॥ ३७९ ॥

राग यमन ॥ झूलत को श्यामा के संग सखी सामरी प्यारी है ॥ कजरे नयन सैन सों बतियां अँखियन कोर कटारी है ॥ जोबन जोर मरोर भौंह की ललित किशोरी बारी है॥ ललता कर परिहास कही यह नागर नंददुलारी है ॥ ३८०॥

राग झिंझोटी ॥ श्यामाजी झूलें पीरी पोखर पार ॥ गावत हैं ऊंचे स्वर कोकल रही मौन मुख धार ॥ रमकन की दमकन नग भूषण शोभा बिपिन निहार ॥ चौकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामनी वार ॥ थरकत है अतरस अतरोटा शिर पर सूही सार॥ खुमक बनो उर पीत कंचुकी मुख पर श्रम कण वार॥ सजनी री इक सांवरि आई झूलनको रिझवार॥ ताके संग झूलत है प्यारी करत अधिक मनुहार॥ कौन गाम क्या नाम तिहारो कहिये कृपा बिचार ॥ तरुणन में अति सुंदर प्यारी चतुरन में बरनार ॥ ललता कहे बोलरी सामर नातर देहोंउतार ॥ राजसुता संग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललता ने दोऊ दिये उतार ॥ हँस पनि चपल बलैयां लेवे कोउ पीवत जल वार ॥ सैनन में समझावत मुखसे बचन न सके उचार ॥ नंदगाम की ओर बतावे ऊंचे हाथ पसार॥ अँचरा की सरकन में कौस्तुभ मणि की परी चिन्हार॥ हर हर हँसत सकल व्रज सुंदरि यह वोही

ब्रज पर वारों बैकुंठ करोरी ॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी ।३८९

राग होरीसारंग ॥ श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई ॥ नंदनँदन को राधे कीनो माधव आप भई ॥ सखा सखी भए सखी सखा भई यशुमति भवन गई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ठफ नाचत थेई थेई । गोरे श्याम सामरी राधे या मूरत चितई ॥ पलट्यो रूप देख यशुमति की सुध बुध बिसर गई॥सूर श्याम को वदन बिलोकत उघर गई कलई॥

राग जंगला ॥ याब्रजमें कैसी धूम मचाई ॥इत ते आई कुवँरि राधिका उत ते कुवँर कन्हाई॥ खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छबि बरणी नजाई ॥ घेर घर बजत बधाई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई॥उडत गुलाल लाल भए बादर केसर कीच मचाई॥मनो मघवा झर लाई॥ राधे सैन दई सभ सखियन यूथ यूथ मिल धाई ॥ पकरोरी पकरो श्याम सुंदर को यह अब जान न पाई ॥ करो अपने मन भाई ॥ छीन लियो मुख मुरली पीतांबर शिर पर चुनरी उढाई ॥ बेंदी भाल नयनमें काजर नकबेसर पहराई ॥ मनो नई नारि बनाई ॥ कहां गए तेरे पिता नंदजी कहां यशोमति माई ॥ कहां गए तेरे सखा संगके कहां गए बल भाई ॥ तुझे अब छेत छुडाई ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीबृंदावन धनि यमुना यदुराई ॥ राधा कृष्ण युगल जोरी पर नंददास बलिजाई ॥ प्रीति उर रही न समाई ॥ ३९१ ॥

राग सारंग ॥ रसिया को नारि बनावो री ॥ कटि ल-

लक मिलवे की नेह नीर बरसाऊं ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल को जो इकले कर पाऊं ॥ ३८६ ॥ भीगत कब देखूं इन नयना ॥ राधाजू की सुरंग चूनरी मोहन को उपरैना ॥ श्यामा श्याम कुंज तन चितयो यत्न कियो कछु मैना ॥ श्रीभट के प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥ ३८७ ॥ भीगत कुंजनमें दोऊ आवत ॥ ज्यों ज्यों बूंद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ॥ अधिक झकोर होत मेघन की द्रुम तर छिन बिलमावत ॥ वेहँस ओट करत पीतांबर वे चुनरी ओढावत ॥ तैसेही मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावत॥ ले मुरली कर मंद घोर स्वर राग मल्हार बजावत ॥ भीजे राग रागनी दोऊ भीजे तनु छबि पावत ॥ सूर दास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत॥ ३८८

होरीलीला ॥

राग जंगला ॥ पियाप्यारी दोउ खेलत होरी॥ नंदनँदन ब्रजराज सांवरो श्री वृषभानु किशोरी ॥ परमानंद प्रेम रस भीने अंबीर लिये भर झोरी ॥ करत मनमें चित चोरी ॥ भुज भर अंक सकुच तज गुरुजन बिचरतहैं मिल जोरी ॥ छुटी अलकां उरझीं कुंडल सों बेसरपीत फरयोरी ॥ चलो सुझावो गोरी ॥ कर कंकण कंचन पिचकारी केसर भर लैं दोरी ॥ छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत निरखत हँस मुख मोरी ॥ चलो क्यों होइयो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्री वृंदाबन जहँ यह फाग रच्योरी॥श्री रसरंग रीझ रहे

जावोगे नयननमें॥ भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूं-गी सैनन में॥ जो तोरे मनमें होरी खेलन की तोले चल कुंज-न में॥ चोआ चंदन और अर्गजा छिरकूंगी फागनमें॥ चंद्रस-खी भज बालकृष्ण छबि लागी है तन मनमें॥ ३९५॥

राग जंगला॥ जिन जाओरी आज कोऊ पनियाँ भरन॥ ठा-ढो मग में मोहन इक इकको मारत पिचकारी तक तक जिन को चाहत तिनको रँगमें भिगोय डारे गारियां देन लागो न्यारो बकबक॥ उनको देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इक बारी ढक ढक॥ शीश कँपन लागो पाँय थकन लागे छतियां करन लागी न्यारी धक धक॥ आई बसंत बिरहों को मौज सों सभ रंग रह्यो बनवारी छक छक॥ मौज हरी तिहारो यही रंग रहैगो संग चलन को मैं रही तक तक॥ ३९६॥

राग गजल॥ मची है आज बंसीबट पै होली॥ खडा न-ट गैल में भर रंग कमोली॥ गईथी मैं अभी दधि बेचबे को॥ झपट मोहन मली मुख मेरे रोली॥ पटक मटकी झपट अंच-ल झटक कर॥ लपट दरकाई चूनर और चोली॥ अजब नट-खट है नँदका हँस मटक कर॥ लगा बातोंमें मेरी नीबी खो-ली॥ यह लख मैं ढीठता उसनंदके की॥ कहा मैं क्यों जी य-ह क्या है ठठोली॥ अटकतेहो जो हरदम हमसे मगमें॥ च-लो अब माफ कीजे होली होली॥ नहींहूं दासी मैं कछु कृष्ण तरी॥ बस अब हमसे न बोलो टेढी बोली॥ ३९७॥

राग बरवा होरी॥ मोको रंगमें बोर डारी रे इस नंदके छै-

हिंगा गल माहिं कंचुकी चुंदरी शीश उढावोरी॥गाल गुलाल दृगन में अंजन बेंदी भाल लगावो री ॥ नारायण तारी बजायके यशुमति निकट नचावो री ॥ ३९२॥

राग जंगला सिंध ॥ श्याम मोसे खेलो न होरी पालागों कर जोरी॥ गैयां चरावन मैं निकसीहूं सास ननँद्की चोरी ॥ सगरी चुंदरिया नरंग भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोर से बैयां मरोरी॥ दिल धडकत मेरो सांस चढत है देह कँपत गोरी गोरी ॥ अबीर गुलाल लिपट गयो मुखसे सारी रंग में बोरी ॥ सास हजारन गारी देवे अरु बालम जीती न छोरी ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी ॥ सूरदास आनंद भयो उर लाज रही कछु थोरी ॥ ३९३ ॥

राग जंगला॥ थारे करूंगी कपोलन लाल जी म्हारी अँगिया न छूओ ॥ यह अँगिया नहीं धनुष जनक को छुअत टुटो ततकाल ॥ नहिं अँगिया गौतम की नारी छुअत उडी नँद्लाल ॥कहा बिलोकत भ्रुकुटी कुटिलकर नहीं यह पूतना खाल ॥यह अँगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल॥ गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नहीं जानो व्रजबाल॥ जाओ जी खाओ सुदामा के तंदुल गौअन के रखवाल ॥ इतनी सुन मुसकाय सांवरो लीनो अबीर गुलाल ॥ सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अँग सखियन कियो निहाल॥ ३९४॥

राग भूपाली जंगला॥ डगर मोरी छाडो श्याम बिंध-

परम सुंदरी आई हमारी ओरी॥ धायके मैं चरण गह्योरी॥ चरण पखाल मंदिर लै आई हँस हँस कंठ लग्योरी॥ सुंदर वर्ण मधुर सुर सजनी तब मेरा जिया बश भयो री॥ प्रेम तन होरही बोरी॥ मोहिं लिवाय गई कुंजनमें कर छल बल बहुतेरी॥ निपट इकेली मोहिं जान मेरो तन मन आन गह्यो री॥ ढीठ छलिया नँद को री॥ ऐसो री यह कुंज बिहारी याते कोऊ न बच्योरी॥ सूरदास ब्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगट्यो री॥ जाने सभको री॥ ४०३॥

इति रागरत्नाकरे प्रथमभागः समाप्तः

श्रीः॥

अथ रागरत्नाकरे द्वितीय भागः॥

अनुराग लीला॥

राग सोरठ॥ तोहिं डगर चलत का भयोरी बीर॥ कहूं पगकी पायल कहूं शिरको चीर॥ भई बावरी न कछु सुध बुध शरीर॥ तेरे मतवारन सम झूमत नयन॥ मुख भाषत है तू अतिविरहके बैन॥ मानो घायल काहू ने करी दृगन तीर॥ मोसों नारायण जिन रख दुराव॥ जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाव॥ जासों रोग हू घटे हटे सकल पीर॥४०४

राग पीलू॥ आली री तू क्यों रही मुरझाय॥ पनिघट गई यमुनाजल भरने आई है रोग लगाय॥ केशो कारो चंद्र

ल विहारी॥ ले बूका मेरे सन्मुख आवे भर पिचकारी मेरे मुख पर डारे ले करवा ऊपर ढरकावे ऐसो ढीठ बिहारी॥ कहा करूं कहाँ जाऊं मोरी आली या बन में अब भई कुचाली चितवन हँसन फांस गल डारे ऐंचतहै मोरी सारी॥ जे कर पाऊं पकरूं वांको हौंभी कसर कछू नाराखों ब्रह्मदास हिये में अभिलाषों मुख मींडों गिरिधारी॥ ३९८॥

राग होरी॥ छैल रंग डार गयो मोरी बीर॥ भीगगयो अति अतलस रोटा हरत कंचुकी चीर॥ घालत कुंकुम ताक कुचन पर ऐसो निपट बेपीर॥ ललित किशोरी कर बर जोरी मुखसों मलत अबीर॥ ३९९॥ रंगन भीग गई हो मोहन सारी सुरख नई॥ बरजत ननदी पहिरत निकसी अबहींमोल लई नेक अनोखी गारी गावे या मति किनहूं दई॥ दयासखी या गोकुल बसके ऐसी कभूं न भई॥ ४००॥

राग परज॥ होरी रे मोहन होरी रंग होरी॥ काल हमारे आँगन गारी दे आयो सो कोरी॥ आय अचानक भुज भर पकरी गह बैयां जो मरोरी॥ दया सखी यह निठुर नंदको कीनी मोसे जोरा जोरी॥ ४०१॥ रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दाँव लगा॥ सुनरी सखी तोहिं सांची कहत हौं तैं मेरा लाल वताया॥ वहुत दिनन पाछे मोरी सजनी सुहाग भाग मैं पाया॥ दया सखी या गोकुल बसके किया अपना मनभाया॥ ४०२

राग जंगला॥ या मोहना मोहिं आन ठग्योरी॥ सखी को रूप धन्यो नंदनँदन आयो हमारी पोरी॥ मैं जान्यो कोई

बन तजों नागर नगर तजों बंसीवट वास तजों काहू पै नल-जहों ॥देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसे तजों आज काज रा-ज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयोहै लोक बावरी कहत मोको बावरी कहेते मैं काहू ना बरजहों ॥ कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजहों ॥४१०॥गले तबक पहिरावो पांव बेरी ले भरावो गाढे बँधन बँधाओ औ खिचावो काची खाल सों॥ बिष ले पिलावो तापर मूठ भी चलावो मांझीधारमें बहावो बांध पत्थर कमाल सों॥बिच्छू लै बिछावो तापै मोहिं लै सुतावो फेर आग भी लगावो बांध कापर दुसालसों ॥ गिरिसे गिरावो काली-नागसे डसावो हाहा प्रीति ना छुडावो गिरिधारी नंदलालसों ॥ ४११ ॥ मोरपखा मुरली बनमाल लगी हिय में हियरा उमग्योरी ॥ ता दिनते निज बैरनको मैं बोल कुबोल सभी जो सह्योरी ॥ अब तो रसखान सों नेह लग्यो कोऊ एक कहो कोऊ लाख कहोरी ॥ और ते रंग रहो न रहो इक रंग रंगीले ते रंग रहोरी ॥ ४१२ ॥ जिन जानो वेद तेतो बादकी बिदित होंय जिन जानो लोक लोक लीकन पर लडमरो ॥ जिन जानो तप तीनो तापन सों तप तप पंच अगन संगले समाधि धर धर मरो॥जिन जानो योग तेतो योगी युग युग जिये जिन जानो जोत सोऊ जोत लेजरमरो ॥हौं तो देव नंदके कुमार तेरी चेरी भई मेरो उपहास कोऊ कोटन कर कर मरो ॥ ॥ ४१३ ॥ सुंदर मूरति दृष्टिपरी तबते जिय चंचल होय रहा

उजारो टोना डार गयो ॥ करो उपाय सखी अब मेरो व्रज निधि वैद मँगाय ॥ ४०५ ॥

राग रामकली ॥ मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय ॥ सूली ऊपर सेज पियाकी किस बिधि मिलना होय ॥ घायल की गति घायल जाने जिस तन लागी होय ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर बैद समलिया होय ॥ ४०६ ॥

राग देस ॥ नारी हू न जाने बैदा निपट अनारो रे ॥ बूटी सभ झूठी परी औषध नकारीरे॥जाउ बैद घर अपनेको मेरे पीर भारी रे ॥ यमुना किनारे ठाढी ओढ कसूमी सारी नंदजू के ढोटा मोहिं नयना भर मारी रे ॥ श्री गोकुल में बैद बसत है वाहीको बुलायके दिखाओ मेरी नारी रे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे॥४०७

कवित्त॥काहेको बैद बुलालतहो मोहिं रोग लगाय जिन नारी गहोरे ॥ वह मधुआ मधुरी मुसकान निहारे बिना कहो कैसे जियोरे ॥ चंदन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरोरे॥और इलाज कछू न बने ब्रजराज मिलें सो इलाज करोरे ॥ ४०८ ॥ कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूं॥कैसो देवलोक परलोक तिरलोक में तो लीनो है अलोक लोक लीकन. ते न्यारी हूं ॥ तन जाओ धन जाओ देव गुरुजन जाओ जीव क्यों न जाओ नेक टरत न टारी हूं ॥ वृंदावन वारी गिरिधारीके मुकुट वारी पीत पट वारी वाकी मूरत पैवारीहूं ॥ ४०९ ॥ घर तजों

चाव री ॥ निरखं के रूप नारायण हरष्यो हियो कौनसे भाग्यसों लग्यो है दाँवरी ॥ ४१८॥

राग खट ॥ आज नंदलाल मुख चंद नयनन निरखं परम मंगल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर वारों तबहीं जबहिं नेक हेरे ॥ सकल सुखसदन हर्षत वदन गोपबर प्रबलदल मदन जनो संग घेरे ॥ कहो कोऊ कैसे हूं नाहिं सुध बुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे॥४१९॥ मुकुट माथे धरे खोर चंदन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे॥ पीत पट कटि कसे कर्ण कुंडल लसे निशि दिनां उर बसें प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे॥ लाल लोचन बने ललित रस में सने सैन से अन गिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरे ॥ प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्न से मग्न मनमें बसेरे॥ ४२० ॥

राग बिलावल ॥ माईरी आज और काल्ह और दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन ॥ दिन प्रति नई छबि बरणे सो कौन कबि नितही शृंगार बागे वरन वरन ॥ शोभा सिंधु श्याम अंग छबिके उठत तरंग लाजत कोटिक अनंग बिश्व को मन हरन ॥ चतुर्भुज प्रभुश्री गिरिधारी को स्वरूप सुधा पान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन ॥ ४२१ ॥ माईरी आज को शृंगार शुभग सांवरे गोपालजी को कहत न बने कछु देखेही बन आवै ॥ भूषण ब-

है॥ शोच संकोच सभी जो मिटे और बोल कुबोल सभी
जो सहाहै॥ रैनि दिना मोहिं चैन न आवत नयनन ते जल
जात बहाहै॥ तापै कहैं सखी लाज करो अब लाग गई
तब लाज कहा है॥ ४१४॥

राग भैरवी॥ लाग गई तब लाज कहांरी॥ जे दृग लगे नंदनंदनसों औरन सों फिर काज कहांरी॥ भर भर प्रिये प्रेमरस प्याले होछे अमल को स्वाद कहांरी॥ ब्रजनिधि ब्रज रस चाख्यो चाहे या सुख आगे राज कहांरी॥ ४१५॥

राग पीलू॥ लागीरे लागनियां मोहना सों॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन नंदजूको छैल छकनियां॥ कछु टोना सा डार गयोरी कैसे भरन जाऊं पनियां॥ कृष्णदास कीप्यास मिटे जब निरखों गिरिके धरनियां॥ ४१६॥

राग गिरिनारीसोरठ॥ मैंने देखी री आज मोहन की हँसन॥ अधरन पै अद्भुत अरुणाई मोतियन की लर पांति दशन॥ वा शोभा के दृग रहे प्यासे पीने लगे भर भरके पसन॥ नारायण तब सों मोहिं सजनी सुध न रही निज बदन बसन॥ ४१७॥

राग कान्हरो॥ आज ब्रजराज की देख शोभा नई गई तन भूल सुध भई हौं बावरी॥ अधर रंग पान मुसक्यान जादू भरी ताहूपै चित हरन दृगन के भाव री॥ कुंडलनकी हलन छलन मन मदन की चलत गज चाल बश करनके

रंगो चीरा शिर सोहै चितवन पै बलिहार ॥ कानों में मुति-
यन को चौकडा गल फूलन को हार ॥ नारायण जे आप ही
सुंदर तिनको कहा शृंगार ॥ ४२६ ॥

राग बिहाग॥सुपने में दरश दिखाय मोहन मन हरलीनो
प्यारे॥रैन दिनां मोहिं कल न परत है तलफत जीया अकुला-
य ॥ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयनन में रही छाय॥कृष्ण
प्रिया छबि देख मनोहर विन दामन गई हौं बिकाय४२७॥

राग देस ॥ हँसके मारी मेरो मन लैगयो बडी बडी आं
खन वारो कारो ॥ भौंह कमान बान जाके लोचन मेरे हियरे
मारे कसके ॥ रेजा रेजा रेजा मेरा भयो री कलेजा मेरा भी-
तर देखो धसके। यत्न करो यंत्र लिख ल्यावो ओषधि ल्याओ
घसके॥रोम रोम बिष छायरहो है कारे खाइयां डसके ॥ जो-
कोई मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हँसके ॥
चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि क्यारी करूं घर बसके४२८॥

राग खमाच॥ सुंदर मुख सुख सदन श्यामको निरख
नयन मन थाक्यो ॥ बारिक होय बीथिन सों निकस्यो उच-
क झरोखे झाक्यो ॥ लाल ने इक चतुराई कीन्हीं गेंद उछाल
गगन मिस ताक्यो ॥ बहुरों लाज बैरन भई मोको मैं ग्वारन
मुख ढाक्यो ॥ कछू करगए प्रेम चितवन सों ताते रहत
प्राण मद छाक्यो ॥ सूरदास प्रभु सर्वस्व लैगए हँसत
हँसत रथ हांक्यो ॥ ४२९ ॥

राग देस ॥अपने गृहसे निकसी अबलासी दूजको चांद

सन भांति भांति अंग अंग अद्भुत कांति लटपटी सुदेस पाग चित्त को चुरावै ॥ मकर कुंडल तिलकभाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन बिशाल कोटि काम लजावै॥कंठ श्री बनमाल फेंटा कटि छोरन छबि हरष निरख त्रियन के धीरज मन न आवै ॥ मेरे संग चल निहार ठाढे हरि कुंज द्वार हित चितकी बात कहत जो तेरे जिया भावै।चतुर्भुज प्रभु गिरिधा- री को स्वरूप सुधा पीवत नयनन पुट तृप्त हूं न आवै४२२॥

राग भैरवी॥ छबि अच्छी बनी बनवारी की ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलकां घूंघर वारी को ॥ मृदु मुसु- कान आन नयनन की को बरणे गिरिधारी की ॥ कृष्ण दा- स युगल जोरी पर तन मन धन सभ वारी की ॥ ४२३॥

राग कान्हरा ॥ री हौं तो या मग निकसी आय अचा- नक कृष्ण कुँवर ठाढे री अपनी पोर॥ दृष्टि हूं से दृष्टि मि- ली रोम रोम शीतल भई मन में दीखत कछु काम शेर ॥ लाल पाग लिपटी भाल परी री भुजन पर पान खात मु- सकरात और किये चंदन खोर ॥ सूरदास मदन मोहन बाँ- के बिहारी लाल मनमें आवत कब मिलूंगो दौर ॥ ४२४ ॥

राग सिंदूरा॥ एरी मैं तो सहज स्वभाव गई नंदजू के तहां देख्यो सुख और॥ इकले श्याम नई सी धज सों ठाढे भवन की पौर ॥ रतन शृंगार बहार हँसन की माथे केसर खौर॥ नारायण सो छबि दृग छाई रही न काजर ठौर॥४२५

राग कालिंगडा॥ भवन ते निकसे नंदकुमार॥ पंच-

जारे ॥ छबि देत आरसी में सुंदर कपोल दोऊ ॥ बरछीसमान लोचन नई सान पै सँवारे ॥फूलों के हाथ गजरे मुख पान की ललाई॥कानों में मोतीबाले कुंडल हूं झलकें न्यारे॥लखश्याम की निकाई सुध बुध सकल गँवाई॥ बौरी बनाय मोको कित गए बंसी वारे॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तवीज टोना स्याने तबीबपंडित कर कोटि यत्न हारे ॥ नारायण इन दृगन ने जबसे वह रूप देखा तबसों भएहैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥४२३ ॥

राग गजल ॥दिल ले गयो हमारो नंदलाल हँसते हँसते ॥ वृंदाबिपिन की कुंजों जाती थी रस्ते रस्ते ॥ वह आगयो अचानक जूडे को कस्ते कस्ते ॥ चित छुट पडा बदन पर बालों में फँस्ते फँस्ते॥मुशकल से बची नागिन अलकों से डस्ते डस्ते ॥ प्यारीके संग खडाथा वह सांवरा बिहारी ॥ दृग कोर मोर मेरे सैनों जडीकटारी॥सुध बुध रही नतनकी सभ भुलगई हमारी ॥यमुना के तीर सुंदर जहँ फली फुलवारी ॥ कछनी कमर से काछे सुंदर सलोना ढोटा ॥ कस पीत बसन आछे कटि बांधे वह कछोटा॥गैयान हू के पाछे दृग देखनेमें छोटा॥ चितवन के बाण मारे सभ भांतिसे है खोटा। गोकुल की गैल मुझसे हँस पूछे आबिहारी॥ थीसंग उसके सुंदर वृषभानुकी दुलारी॥क्या हंस कीसी जोडी आंखों लगी पियारी॥मैं होगई दिवानी जबसे वह छवि निहारी ॥ वृंदा बिपिन कि गलिया दो चांद से खडेथे॥मुसकाके करत बातें नयनों से दृग लडे-

चढ्यो ॥ कोऊ कहे काहूकी सुंदर कोऊ कहे काहूकी दासी ॥ आगे मिले नंदजू के नंदन मारत गेंद मचावत हासी ॥ घूं- घट को पट छूट गयो री दूज की होगई पूरनमासी ॥ ४३०

राग प्रभाती ॥ मोर मुकुट बंसी वारे ने मन मेरा हरली- ना ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना ॥ मुझको देख मुसकात सांवरा चितवन में कछु टोना ॥ बिबस भई जल भरन बिसर गयो घडा धरणि धर दीना ॥ लोक लाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना॥कृपा सखी भई रूप दिवानी अधर सुधारसपीना ॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल करलीना ॥४३१॥

राग अडाना ॥ हौंगई यमुना जल लेन माई हौं सांव- रे से मोही ॥ सुरँग केसरी खोर कुसुम की दाम अभि राम- कंठ कनक की दुलरी ढुलकत पीतांबर की खोही ॥नान्ही ना- न्ही वूंदन में ठाढोरी बंसुरिया बजावे गावे मालाकरी मीठी- तान ने तोला की छबि नेकहू नजोही ॥ सूरश्याम मुर मुस- क्यान छबि री अँखियन में रही तब नजानौं हौं कोहो४३२

राग रेखता ॥ मन हरलियोहै मेरो वा नंदके दुलारे ॥ मुसकाय के अदासों नयनों के कर इशारे ॥इक दृष्टिही मेंवा- ने जाने कहा किया है ॥नहिं चैन रैन दिन में वाके बिना नि- हारे ॥ चीरे के पेच बांके शिर मुकुट झुक रह्यो है ॥कटि किं- किणी रतन की नूपुर बजत हैं प्यारे ॥बेसर बुलाक सोहै ग- ल मोतियों की माला ॥ कंकन जडाऊ करमें नख चंद्रसों उ-

घन घोर ॥ रसिक बिहारी बिहारन दोऊ मिल नीर क्षीर इकठौर॥ ४३६ ॥

राग भैरवी ॥भला रे रँगीले छैला तैं जादूडा मोपैडारा॥ रसभरी तान सुनाय मुरली में मोह लियो प्राण हमारा ॥ तांडी आन मोरे जीयामें बसगई जानत है जग सारा॥ बिट्ठल बिपिन बिनोद बिहारन इक पल होत न न्यारा ॥४३६

गजल ॥ तैंने बंसी में जो गाया मेरा जी जानताहै॥ सैंकडों बंसी सुनी हजारों ताने वह मजा फेरनहीं पाया मेराजी ०॥ नाथ ने कूद के नाथ लिया कालीको ॥ श्यामला श्याम कन्हाया मेराजी ०॥ ऐसे भार को कौन उठावे मोहन॥ डूबता ब्रज को बचाया मेराजी० ॥जब द्रौपदी को चीर खींचा दुशासन ने ॥ अंबर को ढेर लगाया मेराजी ०॥ कहांतक सिफत करूं करुणाकर तेरी॥ कृष्णदास के मन भाया मेराजी० ॥ ॥४३७॥ याद आताहै वही बंसी का बजाना तेरा ॥ छा गया दिल पर मेरे तानका लगाना तेरा॥ जिस दिनसे दिलमें समाया क्यों नजर आता नहीं॥ मैं पता कैसे लगाऊं चोर का ठिकाना तेरा॥ खुशनुमा आवाज शीरीं सुनके मायल दिल हुआ॥ अब कहूं लगता नहीं फिरताहूं दिवाना तेरा ॥ कानों में कुंडल शिर मुकुट जुलफें तेरी क्या खूब हैं॥ यह अदा जीसे न भूले झलकें दिखाना तेरा ॥ दाम में ऐसे फँसे ग्वाल और गोपी सभी ॥ यह बयां किस से करूं गउओं का चराना तेरा॥ नाग नाथन केशी मथन इंद्र का तोडा गरूर॥ सा-

थे ॥मद रूप छबि छकेसे टलते नहीं अडेथे ॥सखियों के यूथ केते बेहोश हो पडेथे॥ पट आरहा असन पर प्यारी का खस्त खस्ते॥कहीं आय निकसे मोहन कुंजों में बस्ते बस्ते॥तन मन सुरत बिसारी बगिया में धस्ते धस्ते॥मुसकान पर बिकानी क्या खूब सस्ते सस्ते॥ घुंघरारी झूमें अलकें मधुकर से मस्ते मस्ते ॥ पगियासे निकसी नागिन डबिया में बस्ते बस्ते॥ हूआ हलाल देखके मुख बदन नस्ते नस्ते ॥ झांका लतान रंध्र से जब छकके पस्ते पस्ते॥आई ललित किशोरी व्रजबाल हँस्ते हँस्ते॥ कुंजोंमें लेगया छल गोपाल हँस्ते हँस्ते॥कछु जादूकी सी पुडिया पढ डाल हँस्ते हँस्ते ॥वह करगयो बेदरदी बेहाल हँस्ते हँस्ते ॥ ४३४ ॥

राग रेखता ॥ सुंदर अनप जोडी अति मनकी भावती ॥ देखी मैं आज मगमें कुंजन सों आवती॥अँग अंग देत शोभा भूषण जडाऊ आली॥ नयनन में सोहे काजर अधरन पै पान लाली ॥ प्रीतम के कांधे कर धर प्यारी अनंद सों ॥हँस हँसके करत बातें मुख ललित चंद सों॥पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजें ॥ नूपर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजें॥या भांति सों मगन है क्रीडा करत हैं दोऊ ॥ नारायण रसिक जन बिन यह रस नजाने कोऊ ॥ ४३५॥

राग देस सोरठ ॥ राधा नंद किशोररी सजनी जो मिले कुंजन में दोऊ री ॥ शीतल सुगंध तीर यमुना के बोलत शुक पिक मोर ॥ ज्यों तमालसे मिली है माधुरी ज्यों सामन

आनंद सों मुख सम्हार रह्योरी मुसकाई ॥ मोर मुकुट अति चटकत घूंघर वारी अलक झलक केसर की खोर उमग चली सुंदरताई ॥ कहै भगवान हित रामराय प्रभु को निहार श्री गुपाल श्री गुपाल रसना लव लाई ॥ ४४० ॥

राग जंगला ॥बट तर सांवरो ठाढो॥पीत दुकूल गले बिच सेली चंद्र चीर बाढो॥मोर मुकुट पीतांबर सोहे फेंटाकस गाढो॥पुरुषोत्तम प्रभु तुमरे मिलन को मोहित अति बाढो४४१

राग रोडी ॥ जब ते मोहिं नँदनंदन दृष्टि परो माई ॥ कहा कहूं वाकी छबि बरणी नहिं जाई ॥ मोरन की चंद्रकला शीश मुकुट सोहै ॥ केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहै॥ कुंडल की झलकन कपोलन पर छाईं ॥ मानो मीन सरबर तज मकर मिलन आईं ॥ ललित भ्रुकुटी तिलक भाल चितवन में टोना ॥ खंजन औ मधुप मीन भूले मृग छौना ॥ सुंदर अति नाशिका सुग्रीव तीन रेखा ॥ नटवर प्रभु भेष धरे रूप अति बिशेषा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मंद हासी ॥ दमक दमक दामन द्युति चमकी चपलासी ॥ क्षुद्रघंटिका अनूप बरणी नहिं जाई ॥ गिरिधर प्रभु चरण कमल मीरा बलि जाई ॥ ४४२ ॥

राग लावनी ॥ सखी कैसे करूं मैं हाय न कछुबश मेरो॥ बिन देखे सांवरो चंद्र दृगन में अँधेरो ॥ सखी ऐसो सुंदर नाहिं कहूं मैं सभ जग हेरो ॥ वाकी जो लिखे तसबीर सो कौन चितेरो ॥ सखी कठिन छैल को बिरह आन मोहिं घेरो ॥

त वरस के शनी में गोवर्द्धन का उठाना तेरा ॥ हौं गुनहगार रोशन मुद्दत से दरपै पडा॥यह सिफत जाहिर जहां में पारल-गाना तेरा ॥ ४३८ ॥

राग भैरव ॥ श्रीकृष्णजी को ध्यान मेरे निशिदिना री माई ॥ माधुरी मूरत सोहनी सूरत चित्त लियोहै चुराई ॥ लाल पाग लटक भाल चिवुक बेसर कंठ माल कर्ण फूल मंद हास लोचन सुखदाई ॥ मोर पंख शीश धरे मोतिन को हार गरे बाजूबंद पौंहची कर मुद्रिका सुहाई ॥ क्षुद्रघंटिका जेहर नूपर बिछिया सुदेश अंग अंग देखत उर आनंद नसमाई ॥ मुरली धर अधर श्याम ठाढे ब्रज युवती माहिं सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई ॥ निर्ख रूप अति अनूप छाके सुर-नर बिमान बल्लभ पद किंकर दामोदर बलिजाई ॥ ४३९ ॥ सांवरे सों ध्यान मेरो निशिदिना री माई ॥ मनके महल प्रीति कुंज तामें जादोराई ॥ कोमल चरण सांवरे बरण नख दिख चख चोंहदी होत पाँयन परपैजनी सो बिधना ने ब-नाई ॥ दाहने पद पद्म ताते टेढो कर धरत आली ऐसे चर-ण दुख के हरन हैं सदा सुखदाई ॥ लालसी इजार तामें कंचन को तार सखी काछनी पचरंगी तापै किंकिणी छबि छाई ॥ गुंजमाल मुक्तमाल कंठ बनी कौस्तुभमणि पीतांबर की चटक तामें दामनी द्युति पाई ॥ बाजूबंद पौंहची मुंदरी नगन को अति चमत्कार अरुण अधर मुरली मधुर मधुर सुर बजाई ॥ कमल नयन कुंडल कांति गंडन प्रतिबिंब होत

राग देव गंधार ॥ प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे ॥ ब्रज बनितन कानन में लग लग छिनमें मानहिं छोरे ॥ सुनत बनतहैं कहत बनत नहीं प्रेम प्रीति के डोरे॥श्रीरघुराज सुनावो निशिदिन मागों यह कर जोरे॥४४८॥कमलसी अँखियां लाल तिहारी तिनसों तक तक तीर चलावत बेधत छतियां हमारी॥इन्हें कहा कोऊ दोष लगावत यह अजहूं नसम्हारो॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी ४४९॥

राग बिलावल ॥ लाल तेरे चपलनयन अनियारे॥ नंदकुमार सुरत रस भीने प्रेम रंग रतनारे ॥ कछु अस रीझे चकित चहूं दिशि नव बर जोबन वारे ॥ मानो शरद कमल पर खंजन मधुप अलक घुंघरारे॥ एजो मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे॥ गोवर्द्धन धर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु प्यारे॥ ४५० ॥

राग खमाच ॥ तोरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे॥ रतनारे कजरारे मीना मृग छौना वारे अंजना सँवारे खंजन वार डारे॥ नंदकेदुलारे मोह लीनो बंसी वारे प्यारे ऐसे जी आनोखे नयना काहेसे सँवारे॥ कृष्णदास बलिहारे तन मन धन वारे बिधना सँवारे टरत हूं न टारे॥ ४५१ ॥

राग बिभास ॥जादूगर रे थारे नयन ॥भवां कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन॥लगत कलेजे में बरछी सी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजब गजब तेरी चितवन मोमन नाहिं रुकैन ॥ युगल बिहारी के बिन देखे रंचक परत न चैन४५२

सगरी निशि तारे गिनत ही होत सबेरो ॥ सखीजो तू मिलावे आज मोहिं वह रूप उजेरो ॥ जबलौं जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखी नारायण जो नाहिं मिलेगो वह मनको लुटेरो ॥ तौ नंद द्वारपै जाय करूंगी मैं डेरो ॥ ४४३ ॥

राग काफी ॥ बेदरदी तोहिं दरद न आवै ॥ चितवनमें चित बशकर मेरो अब काहेको आंख चुरावै ॥ कब सों परी तेरे द्वारे पै विन देखे जियरा घबरावै ॥ नारायण महबूब सांवरे घायल कर फिर गैल बतावै ॥ ४४४ ॥ नयनों रे चितचोर बतावो ॥तुमहीं रहत भवन रखवारे बांकेबीर कहावो ॥ तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौंह खावो ॥ अब क्यों रोवतहो दई मारे कहूं तो थांग लगावो ॥ घरके भेदी बैठ द्वार पै दिनमें घर लुटवावो ॥ नारायण मोहिं बस्तु न चहिये लेने हार दिखावो ॥ ४४५ ॥ बिन देखे मन मान न मेरो ॥ श्याम बरन चित हरन लाडलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर बोलन चपल नयन मोतन हँस हेरो ॥ नारायण त्रिभुवन को स्वामी श्री वृषभानु कुँवरि को चेरो ॥ ४४६ ॥

राग मल्हार ॥ नहीं बिसरत सखी श्यामकी सुरतियां॥ हँसन दशन द्युति दामनी सी दमकन चंदसे बदन सों अति मृदु बतियां ॥ कुंडल झलक लख लगेना पलक नकवेसर की हलन चलन गज गतियां ॥ नारायण जब निरखूं लाल को सफल नयन शीतल ह्वै छतियां ॥ ४४७ ॥

जब बरज्यो बरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारे सों ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल लगरही सांझ सवारेसों ॥ मधुर अली दरशन विन तरसत नेह लगा बंसीवारे सों ॥ ४५७ ॥

राग रामकली ॥ लोचन भए श्याम के चेरे ॥ एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेर नहेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे बश भए उनहीं ॥ उनको बदन बिलोकत निशिदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललितत्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसों तोरी ॥ सूरदास यह मेरी कीनी आपुन हरि सों जोरी ॥ ४५८ ॥ नयना मान अपमान सह्यो ॥ अति अकुलाय मिले री बर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बान परी सखी जैसी तेही टेक रह्यो ॥ ज्यों मर्कट मूठी नहिंछांडत नलिनि सुबास गह्यो ॥ जैसे नीर प्रबाह समुद्रहिं मांझ बह्यो सो बह्यो ॥ सूरदास इन तैसेई कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४५९ ॥

राग बिहाग ॥ ललित छबि निर्ख अघात न नयन ॥ रोम रोम प्रति जो चख होते तोऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिक वर करुणानिधि सुख ऐन ॥ कृष्ण प्रिया छिन बिलम न कीजे कल नपरै दिन रैन ॥ ४६० ॥

राग बिभास ॥ अँखियन यह टेव परी ॥ कहा करूं बारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहिं बिसरत मोहिं एक घरी ॥ यद्यदि हटक हटक हौं राखत त्यों त्यों होत खरी ॥ चुभ जोरही वारूप ज-

राग भैरवी ॥ जादूगर नयन नयन बडे बिशाला मोर मु-
कुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांबर कटि क-
छनी काछे नंद यशोमति लाला ॥ नाम लिये जाके पाप क-
टत हैं मेटत काल को ताला ॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत
टेढी बिरहों वाला ॥ ४५३ ॥

कबित्त ॥ टेढी चंद्रकला सकल जग बंदित है टेढी तान
मोहे मन्मथ के जाल की ॥ टेढी कमान बान लागत ही बेध
जात श्रीपति न चूके चोट टेढी तलवार की ॥ टेढी लकडी
बन में न काटे कोऊ टेढी काशीपुरी जामें शंका नहीं काल
की ॥ टेढी जरकसी भाल टेढी उर बनमाल मेरे मन बसी
टेढी मूरत गोपाल की ॥ ४५४ ॥

कबित्त ॥ टेढे सुंदर नयन टेढे मुख कहत बैन टेढो मुकुट
बात टेढी कछु कहगयो ॥ टेढे घुंघरारे बाल टेढो गल फूल
माल टेढो बुलाक मेरे चित्त में बसै गयो ॥ टेढे पग ऊपर
नूपुर झनकार करैं बांसुरी बजाय मेरे चित्त को चुरै गयो ॥
ऐसी तेरी टेढी को ध्यान धरै मयाराम लटपटी पागसे
लपेट मन लैगयो ॥ ४५५ ॥

राग भैरव ॥ देखोरी यह नंदका छोरा बरछी मारे जा-
ताहै ॥ बरछी सी तिरछी चितवन की सैनों छुरी चलाताहै ॥
हमको घायल देख बेदरदी मंद मंद मुसकाताहै ॥ ललित
किशोरी जखम जिगर पर नोन पुरी बुरकाताहै ॥ ४५६ ॥

राग कालिंगडा ॥ अँखियां लागीं सामलिया प्यारे सों ॥

ढी लगन लागी॥हाथ लकुटी कांधे कमरी काछनी बांधे कि-
छोटा॥निशि दिन ही लागो रहत गोपिन के पाछे भर भर पीव-
त छाछा महरी के ढोटा॥ पुरुषोत्तम प्रभुके निरखन को फिर
फिर खावत प्रेमकी चोटां॥ ४६५॥ तेरी हँसन बोलन लाल
मेरे मन बसियां ॥ चलते मृगराज चाल कांधे सोहे रुमाल
केसर के तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां॥ मुरली अधरा-
न धरे गुंजमाल सोहे गरे हरी हरी कुंजन में संग लिये सखि-
यां॥ अरजी जुगरामदास सुनिये महाराज श्याम निरख नि-
रख नयनन की कोर मांझ रखियां॥ ४६६ ॥

राग देस ॥ सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेम दी कटारि
यां॥ सखी पूछें दोऊ चारे ब्याकुल क्यों भैयां नारे रंगके रंगी-
ले मोसें दग भर मारियां॥ब्याकुल बेहाल भैयां सुध बुध भू-
ल गैयां अजहूं न आए श्याम कुंज बिहारियां॥यमुना को घा-
टी बाटी असां तेरी चाल पछाती बंसिया बजावीं कान्हा भैयां
मतवारियां॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया तू
तो मेरा प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहारिया॥४६७॥

ठुमरी॥ इस सामरिया की लटक चाल जिय में मोरे ब-
सगई रे॥मुकुट पीतांबर अधिक सुहावे ले मुरली पढ फूंक ब
जावे लटकारो नागिनसी लपटें तन मन मोरा डसगई रे ॥
बिन देखे नहिं परत चैन अब बिरहन कैसे कटत रैन कहा क-
रूं मेरी गोइयां बिन दरश तरस गईरे॥ लिखी ललाट मिटत
नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी

लधि में प्रेम पियूष भरी ॥ सूरदास गिरिधर तन परसत लूटत निशि सगरी ॥ ४६१ ॥

राग भैरव ॥ आंखन में दुराय प्यारो काहू देखन नदीजिये ॥ हीये लगाय सुख पाय सभ गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मन इच्छा होय सोई सोई क्यों न कीजिये ॥ मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन सुख दीजिये ॥ निर्मल प्रभु नंद नँदन निरख निरख जीजिये ॥ ४६२ ॥

राग बिहाग ॥ श्यामा मोरी आंखन बीच बसो लोक जानन कजरो ॥ दुरत नहीं घूंघट पट उरझ्यो प्रेम प्रीति को झगरो ॥ जित देखूं तित माधुरी मूरत पीत बसन बनमाल गरे ॥ बलि बलि जाऊं छबीली छबि पर मदन गोपाल लला के ॥ वरज रही बरज्यो नहिं मानत दिन दिन को अगरो ॥ सूर सुधा सम रूप श्याम को याही परच्योधगरो ॥

राग रेखता ॥ चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चांदसे मुख पर ॥ छुटे बिखरे से बालों को सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नहीं कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई ॥ जरा टुक नयन ऊंचे कर निहारोगे तो क्या होगा ॥ तुम्हारे हो चुक वारी हमारे हो नहो प्यारे ॥ भला मुखपान का बीरा जो धारोगे तो क्या होगा ॥ ललित किशोरी करजोरी हाहा यह है बिनय मोरी ॥ तडफते मुझ विचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥ ४६४ ॥

राग बरवा ॥ सुंदर सांवरे सलोने ढोटा तेरी सानूं डा

दा बिहारी प्यारे ॥ दर्श दिखाय निहाल करोगे सुंदर रूप उ-
जारे प्यारे ॥ तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आं-
खन के तारे ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन धन
सभ वारे ॥ ४७१ ॥

राग काफी ॥ मिल ना वेम हबूब बिहारी ॥ भोर भए वृं-
दावन कुंजों जाना होकर गली हमारी ॥ मृदुमुसकन सानूं-
दिल बिच भांदी झमक चलन नूपुर धुन प्यारी ॥ ललित कि
शोरी सांवरी सूरत घुंघरी अलकों परब लिहारी ॥ ४७२ ॥
मिलनावे दिलदार साँवरे ॥ हुसन तुसाडे चूर हुआ दिल ली-
ता तैं नकबका दावरे ॥ बांकी अदा चशमों बसदी दीठा परे
न दूजा ठांव रे ॥ ललित किशोरी नूं लख समझावो एक नहीं
मेरे मन भाव रे ॥ ४७३ ॥

राग देस॥मेरे नयनों का तारा है मेरा गोविंद प्यारा है॥
वह सूरत उसकी भोलीसी वह शिर पगिया मठोली सी वह
बोलीमें ठठोलीसी बोल दृग बाण मारा है ॥ वह घुंघर वारि-
यां अलकें वह झोंकें वारियां पलकें मेरे दिल बीचमें हलकें
छुटा घर बार सारा है ॥ दरश सुख रैन दिन लूटे न छिन भ-
रतार यह टूटे लगी अबतो नहीं छूटे प्राण हरिचंद वारा है

राग रामकली ॥ एक गामको बास धीरज कैसे कै ध-
रों ॥ लोचन मधुप अटक नाहिं मानत यद्यपि यत्न करों ॥ वे
यामग नित प्रति आवत हैं हौं दधि लैनिकरों ॥ पुलकत रो-
रोम गदगद सुर आनँद उमग भरों ॥ पल अंतर चलजात

माधोवन कुंजन परबश होय फस गई रे ॥ मधुसूदन पिया
प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां स-
जनी सभ कसक निकस गई रे ॥ ४६८ ॥

राग जंगला ॥ कभी गली हमारी आवरे मोरे जिया की
तप्त बुझावरे नंदजूके मोहन प्यारे लाला ॥ तेरे सांवरे बदन
पै कई कोटि काम वारे ॥ तेरी खूबीके दरश पै लाल नयन तर
सते हमारे ॥ घायल फिरूं तडफती पीर जाने नाहीं कोई ॥
जिस तन लागी पीर प्रेमकी जिन लाई जाने सोई ॥ जैसे ज-
लके सोख हुए मीन क्या जोवें बिचारे ॥ कृपा कोजो दरशन
दीजो मीरा माधो नंददुलारे ॥ ४६९ ॥

राग रेखता ॥ दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरअजा
आंखें तरस रही हैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे
इतना तू मत सतारे लाखोंही दुख सहारे टुक अबतो रहम
खाजा ॥ तेरेही हेत मोहन छानी है खाक बन बन दुख झेले
शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूं मैं मारे
कबतक बतादे प्यारे सूखे बिरहमें तारे पानी इन्हें पिला-
जा ॥ सभ लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई जिसका कहीं
न कोई तिसका तूजी बचाजा ॥ मुझको न यूं भुलाओ क
शरम जीमें लावो अपनोंको मत सताओ ए प्राण प्यारे-
राजा ॥ हरिचंद नाम प्यारो दासी है जो तुम्हारी मरती है
वह बिचारी आकर उसे जिलाजा ॥ ४७० ॥

राग जंगला झिंझोटी ॥ गली वे हमारो क्यों नहीं आम-

जाने सभ कोई ॥ अंसुअन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ॥ दास मीरा लाल गिरिधर होनी होसो होई ॥ ४७९ ॥

राग बरवा ॥ मैं गिरिधर संग राती गुसैयां॥पचरंग चोला रंगादे सखी मैं झुरमट खेलन जाती ॥ ओही झुरमट मेरा साईं मिलेगा खोल तनी गल गाती॥ चंदा जायगा सूरज जायगा जायगी धरन अकासी ॥ पवन पानी दोनोही जाएंगे अटल रहे अविनासी ॥ सुरत निरत का दीउडा संजोले मनसा की करले बाती॥ प्रेम हटी का तेल मंगाले जग रह्या दिन ते राती॥ जिनके पिया पदेरश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती ॥ मेरे पीया मेरे माहिं बसत हैं ना कहूं आती न जाती ॥ पेईये बसूं ना बसूंगी सास घर सद्गुरु शब्द सुनासी ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा कहगई मीरा दासी ।४८०।

राग सोरठ ॥ रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी ॥ जबलग कंचन कसिये नाहीं होत न बारां बानी ॥ लोक लाज कुल कान जगत की बहाय दीनी जैसे पानी ॥ अपने घरको परदा करले मैं अबला बौरानी ॥ तरकश तीर लग्यो मेरे हियरे गरकगयो सनकानी ॥ मीराप्रभुजीके आगे नाची चरण कमल लपटानी ॥ ४८१ ॥

राग जंगला ॥ मैं नूं बरज न भोलडी मां पीया नाल मैं रत्ती यां ॥ना तकीया ना आसरा माए ना कोई राह गली॥ मैं शौह ढूंडां आपना माए कर कर बांहि खली॥ साईं फूल गुलाब दा मेरी झोलडी टूट पया॥बेसर भोले सुंघया मेरे रोम

कल्पभर बिरहा अनल जरों॥सूर सकुच कुछ कान कहां लग आरज पंथ डरों ॥ ४७५॥

राग गौरी॥अबतो प्रगट भई जग जानी॥वा मोहन सों प्रीति निरंतर क्यों नरहेगी छानी ॥ कहा करों सुंदर मूरत इन नयनन मांझ समानी ॥ निकसत नहीं बहुत पचहारी रोम रोम उरझानी ॥ अब कैसे निर्वार जात है मिले दूध ज्यों पानी ॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी ४७६

राग काफी ॥ या सांवरे सों मैं प्रीति लगाई॥ कुल कलंक ते नाहिं डरोंगी अबतो करों अपने मन भाई॥ बीच बजार पुकार कहूं मैं चाहे करो तुम कोटि बुराई ॥ लाज मरजाद मिली औरन को मृदु मुसकान मेरे बट आई।बिनदेखे मनमोहन को मुख मोहिं लागत त्रिभुवन दुखदाई ॥ नारायण तिनको सभ फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥ ४७७ ॥

राग रामकली ॥ मेरे जिया ऐसी आन बनी ॥ बिना गुपाल और नहिं जानूं सुन मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रह के कीने अमृत एक कनी ॥ मन बच क्रम मोहिं और न भावे अब मेरे श्याम धनी ॥ सूरदास स्वामी के कारण तजी जात अपनी ॥ ४७८ ॥

राग सोरठ ॥ मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई ॥ जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥ तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ॥ छाड दई कुल की कान क्या करैगा कोई॥ संतन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ अबतो बात फैल गई

भक्तन के प्रतिपाल॥ ४८५ ॥ बसे मेरे नयनन में दोऊ चंद ॥ गौर बरण वृषभानु नंदनी श्याम बरण नँदनंद ॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँद कंद ॥ जय श्रीभट्ट युगल रस बंदों क्यों छूटे दृढ फंद ॥ ४८६ ॥

राग परज ॥ या ब्रजमें कछु देख्योरी टोना ॥ लेमटुकी शिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नंदके छोना ॥ दधिका नाम बिसर गयो प्यारी लेलेहु री कोऊ श्याम सलोना ॥ बृंदाबन की कुंज गली में आंख लगाय गयो मनमोहना ॥ मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सुंदर श्याम सुघर रस लोना ४८७

राग मल्हार ॥ कोऊ माई लैहै री गोपाल हिं॥ दधि को नाम श्याम सुंदर घन मुख चढ्यो ब्रजवालहिं ॥ मटुकी शीश फिरत ब्रज बीथिन बोलत वचन रसालहिं ॥ उफनत तक्र चहूं दिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटी चालहिं ॥ सूरश्याम बिन और न भावत या बिरहन वेहालहिं ॥ ४८८ ॥

राग भैरव ॥ नयनन की कोरैं कोऊ लैहै ॥ है कोई ऐसी रसिक रंगीली प्राण निछावर देहै ॥ नूतन मधु में मेल लेआई छुअत खुमारी ऐहै ॥ ललित किशोरी ततछिन जियरा टूक टूक होय जैहै ॥ ४८९ ॥

राग बरवा ॥ हमीं को प्यारे दरश दिखायदे ॥ लपट झपट कर मटुको फोरी कर मोर मुकुट की छैयां ॥ मोहन प्यारे नंददुलारे तुम लीजो कांधे धर उनको ॥ सुन यशु-

रोम रच गया॥शाह सरफा महिंदी रंगुली माए लाई कुल्ल ज-
हान॥इकनां नूं रंग चढ गया इक रह गए अमना मान ४८२

राग बिहाग ॥ मन अटक्या बेपरवाहे नाल ॥ नयन
फसे दिल मिलया लोडे मूरख लोक असानूं मोडे मेरा
हर दम जांदा आहे नाल ॥ मुल्लां काजी नमाज पढावन हुकम
शरादा भय दिखलावन साडे इशक नूं की इस राहे नाल ॥
नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी जाना कुछ
करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इशक क-
मावे जितवल प्यारा उतवल जावे बुल्लेशाह जामिल तू अ-
लाहे नाल ॥ ४८३ ॥

राग पहाड ॥ मैंनू हरदम रहिंदा चा सज्जन दे शौक
नजारे दा ॥ ज़ब तैं कीता असांवल फेरा हार सिंगार प-
या भठ मेरा सीने रडके सांग गुझडा इशक प्यारे दा ॥ र-
ल मिल सैयां मारन बोली ओह मेरा साहिब मैं ओहदी गो-
ली रखदीहां जान पछान जामिन हशर दिहाडेदा ॥ मीरां-
शाह बिभूति रमावां सांवरे दे दर अलख जगावां ओही है
सिरताज आजज नीच नकारे दा ॥ ४८४ ॥

राग देवगंधार ॥ बसे मेरे नयनन में नंदलाल ॥ सां-
वरी सूरत माधुरी मूरत राजिव नयन बिशाल ॥ मोरमुकुट
मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल ॥ अधरन बंसी
करमें लकुटी कौस्तुभमणि बनमाल ॥ बाजूबंद अभूषण सुं-
दर नूपर शब्द रसाल ॥ दास गोपाल मदन मोहन पिया

राग देस ॥ नीको लगे राधाबर प्यारो ॥ मोर मुकुट पियरो पटरा है लकुटी कर मतवारो ॥ रोकत गैल छैल अलबेलो नटवर भेष सँवारो ॥ ललित किशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो ॥ ४९४ ॥

राग खेमटा ॥ सखी राधाबर कैसा सजीला ॥ देखोर गोइयां नजर नहीं लागे कैसा खुला शिर चीरा छबीला ॥ वार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रंगीला ॥ हरीचंद मिल लेहो बलैयां अंगुरिन कर चटकाय चुटीला ॥ ४९५ ॥

राग देस ॥ दंपति दर्पण हाथ लिये ॥ निरखत मुख अरबिंद कपोलन मेल मुदित गल बाहिं दिये ॥ ललित किशोरी मदन तरंगे पर्श अंग सर्सात हिये ॥ छिनहूं यह छबि जिन न बिलोकी कहा कोटि शत कल्प जिये ॥ ४९६ ॥

राग देवगंधार ॥ निरख सखी चार चंद्र इक ठौर ॥ बैठे निरखत पिया तिया दोऊ सूर सुताकी ओर ॥ द्वै बिधु नील श्याम घन जैसे द्वै बिधु की गति गोर ॥ ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि शशि संग प्रबाल कुंद अली तहां उरझ्यो मन मोर ॥ सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगलकिशोर ॥ ४९७ ॥

राग खेमटा ॥ तू मेरा मनमोहा सामलिया ॥ भौंह कमान तान कानन लौं नयन बान हँस मारे छल बलिया ॥ ठुमक चलन बोलन मुख पंकज मधुरे हँसन कर डारे बेकलिया ॥ जन रघु-

मति इक न्याउ सुन्यो प्रीतहिं इन मोहन की ॥ हमीं को० हौं वृंदाबन जात हती शिर धर मटुकी माखन की ॥ बैयां आन झकोरत मोहन सब सखियां मुसकाय घर को सरकी ॥ हमींको० ॥ यह मटुको अनवेध मोतिन की मोल जो लागे नंद यशोदा दोऊ बिकेंगे ॥ सूरदास कहा ब्रज को बसबो नित उठ मांगत दान ॥ हमींको० ॥ ४९० ॥

राग बिहाग ॥ तुम्हें कोऊ टेरतहै रे कान्ह ॥ गोरी सी भोरी थोरे दिनन की बारी सी भेस उठान ॥ छूटी अलक लाल पट ओढे नागरी परम सुजान ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरश बिन धीर धरत नहिं प्रान ॥ ४९१ ॥

राग गौरी ॥ ग्वारन क्यों ठाढी नंद पौरी ॥ बेर बेर इत उत फिर आवत बिजया खाय भई बौरी ॥ सुंदर श्याम सलोने से ढोटा उन दधि लैन कह्यो री ॥ हमको कह गयो नेक खडी रह आपुन बैठ रह्यो री ॥ नौलख धेनु नंद बाबा घर तेरोही लैन कह्यो री ॥ जोवन माती फिरत ग्वारनी तैं मेरो लाल ठग्यो री ॥ इतनी सुनत निकस आए मोहन दधि को मोल कहोरी ॥ परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि भलो बिक्योरी ॥ ४९२ ॥

राग जिला ॥ श्री वृंदाबन रज दरशावे सोई हितू हमारा है ॥ राधा मोहन छवि छकावे सोई प्रीतम प्याराहै ॥ कालिंदी जल पान करावे सो उपकारी साराहै ॥ ललित किशोरी युगल मिलावे सो अँखियोंका तारा है ॥ ४९३ ॥

तो कर दिया शैदा ॥ भला पूछे कोई उस महलका के हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुंचये दिल को कभी उसने नआ खोला॥ गई बालाई बाला उस सबा के हाथ क्या आ-या ॥ लगाना खून दिल चाहाथा मैंने उसके पाऊं से ॥ वले इस पेश कदमो से हिना के हाथ क्या आया ॥ फिरा शहरो बिया बां तालबे दीदार नारायण ॥ बिठाया उसको परदे में हयाके हाथ क्या आया ॥ ५०१ ॥ जहां ब्रजराज कल पाए चलो सखी आज वा बनमें ॥ बिना वा रूप के देखे बिरह की दौं लगी तनमें ॥ न कल पडतीहै बे कल को न जी लगता है बिन जानी ॥ भई फिरती हूं योगिन सी सरे बाजार गलियन में ॥ करूं कुर्बान जी उसपर जनम भर गुण न भूलूंगी ॥ मेरा महबूब जो लाकर बिठादे मेरे आंगन में ॥ नहीं कछु गर्ज दुनिया से न मतलब लाज से मेरा ॥ जो चाहो सो कहो कोई बसा अब तो वही मनमें ॥ तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायन ॥ जो सूरत का है मस्ताना वह परचे कैसे बातन में ॥ ५०२ ॥

राग खट॥ कान्हर कारो नंददुलारो मोनयनन को तारो री ॥ प्राण प्यारो जग उज्यारो मोहन मीत हमारो री ॥ दृग-में राजत हिये में छाजत एक छिना नहिं न्यारो री ॥ मुरली-टेर सुनावत निशिदिन रूप अनूपम वारोरो ॥ चरण कमल मकरंद लुब्ध होय मन मधुकर गुंजा रो री ॥ रस रंग केलि छ-बीले प्रभु संग हित सों सदा बिहारो री ॥ ५०३ ॥

नाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया ४९८॥

राग रेखता ॥ लगाहै इश्क तुम सेती निबाहोगे तो क्या होगा ॥ मुझे है चाह मिलने की मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुसन चश्मोंके प्यालेभर पिलाओगे तो क्या होगा ॥ चमन बिच आन कर मुखडा दिखाओगे तो क्या होगा ॥ भ्रम धर्ता है कुल आलम हँसाओगे तो क्या होगा ॥ सजन तुमबिन तडफता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवाने को सताओगे तो क्या होगा ॥ अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल पराए को दिलाओगे तो क्या होगा ॥ जिगर के दर्द की दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ रसिक गोविंद सीने से लगाओगे तो क्या होगा ॥ ४९९ ॥

गजल ॥ हम तेरे इश्क में श्याम बहुत दिन भटके ॥ अब मिला हमें तू सनम खुले पट घट के ॥ किये रंजो अलम मंजूर जरा नहीं भटके ॥ अब दहिशत दिलकी निकल गई छट छट के ॥ कई लाख वजा के सनम दिये तूने झटके ॥ पर गिरे न हरगिज कदम पकड हट हट के ॥ कई बार गया शिर तेरे इश्क में कट के ॥ फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम वनाकर फांद जानकर लटके ॥ तब मिला हमें तू सनम खुले पट घट के ॥ ५०० ॥ किया बिस्मिल मुझे उसकी अदा के हाथ क्या आया ॥ तडफता छोडकर तेगेकजाके हाथ क्याआया॥दिखा कर टुक जमाल अपना मुझे

र नहिं भावै ॥ लेकर मीन दूध में राख्यो जल बिन सच नहिं पावै ॥ जैसे शूरमाँ घायल घूमत पीर न काहू जनावै ॥ ज्यों गूंगो गुड खाय रहत है स्वाद नकाहू बतावै॥जैसे सरितामिली सिंधु में उलट प्रवाह न आवै ॥ तैसे सूर कमल मुख निरखत चित इत उत न चलावै ॥ ५०८॥

राग देस॥गौर श्याम बदनारबिंद पर जिसको वीर मचलते देखा ॥नयन बान मुसक्यान संग फँस फिर नहिंनेक सँभलते देखा॥ललित किशोरी युगल इश्क में बहुतों का घर घलते देखा ॥ डूबा प्रेम सिंधु का कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥५०९॥ सांवरे की जिन निरखी मुसक्यान ॥ सोतो भई घायल ताही छिन बिन बरछी बिन बान ॥ कल नहीं लेत धरत नहीं धीरज तडफत॥ मीन समान नारायण भूली सुध तनकी बिसर गयो सब ज्ञान ॥ ५१० ॥

राग काफी॥राधा रमण मनोहर सुंदर तिनके संगनित रहते हैं॥छके रहत छबि ललित माधुरी और नहीं कछु चहते हैं॥चितवन हँसन चोट दशनन की निशि दिन हिय पर सहते हैं॥ललित किशोरी करें न ओटें फरी नहीं कर गहते हैं५११

राग धनाश्री ॥ सबसे ऊंचो प्रेम सगाई ॥ दुर्योधन को मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई ॥ जूठे फल शबरी के खाए बहु विधि प्रेम लगाई ॥ प्रेम के बश नृप सेवा कीनी आप बने हर नाई ॥ राजसू यज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ उठाई ॥ प्रेम के बश अर्जुन रथ हांक्यो भूल गए ठकुराई ॥ ऐसी प्रीति

राग भैरव ॥ प्यारा नयना लगाय छिप जामदा ॥ याद-तां रहिंदी हरदम तेरी मुखडा क्यों नहीं दिखलामदा मेरा जीया तसामदा ॥ जबते लग्न लगीहै मनमें गृह अंगना न सुहामदा ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरश को मन बिच क्योंना बस जामदा ॥ ५०४ ॥

राग देस ॥मन मोह लिया श्याम ने बंसीको बजाके॥बेखुद किया दिलदार ने जुलफों को दिखाके।पट पीत मुकुट मोर लकुट लटपटी पगिया। चलते हैं लटक चाल से भ्रुकुटी को नचाके॥अलमस्त किया दममें ब्रज नार को मोहन ॥ मुरली के साथ किंकणी नूपुर को बजाके।कुर्बान सनम तुझ पै दिलो दीन हमारा॥राखो ललित किशोरी को गरसे लगाके५०५॥

ठुमरी ॥ कोई दिलबर की डगर बताय दे रे ॥ लोचन कंज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनायदे रे ॥ जाके रंग रंग्यो सभ तन मन ताकी झलक दिखायदे रे ॥ ललित किशोरी मेरी वाकी चितकी सांट मिलायदे रे ॥ ५०६ ॥

राग कान्हरो ॥ श्याम भुजा की सुंदरताई॥ चंदन खौर अनूपम राजत सो छबि कही नजाई ॥ अति बिशाल जानूं लौं परसत इक उपमा मन आई ॥ मनो भुअंग गगन सों उतर्यो अध मुख रह्यो झुलाई॥रत्न जडित पहुँची कर राजत अंगुरी सुंदर भारी॥ सूर मनो फणि शिर मणि सोहत फण फण की छबि न्यारी ॥ ५०७ ॥

राग सारंग॥ जाको मन लाग्यो गोपाल सों ताहि औ-

न बिसरिये॥ कृष्ण नाम लेले भवसागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी॥ उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी॥ ५१६॥

राग मांझ॥ हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हांदे जाइयेजी॥धूड तिन्हांदे चरणांदी लै मस्तक अपने लाइयेजी दुर्मति दूर करें निहकेवल शिव घर बासा पाइयेजी॥ दुनीदास हर साध संगत मिल निर्मल महल समाइयेजी॥५१७॥

राग आसा ॥ हर हर हर हर हर हर हरे॥ हर सुमरत जन बहु निस्तरे॥ हरी के नाम कबीर उजागर॥ जन्म जन्म के काटे कागर ॥ जन रमदास राम सँग राता॥ गुरूप्रसाद नरक नहिँ जाता॥गोविंद गोविंद संग नाम देव मन लीना॥ आढ दाम को छीपरो होयो लाखीना॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा॥ नीच कुला जोलाहरा भयो गुणी गहीरा॥ सैन नाई बुतकारीया ओह घर घर सुनिया॥ हिरदे बस्या पारब्रह्म भक्तन में गिनिया॥ रमदास अधम ते बाल्मीकि तिन त्यागी माया ॥ परगट होये साध संग हरि दर्शन पाया॥ एह बिधि सुनके जाटरो उठ भक्ति लागा॥ मिले प्रत्यक्ष गुसाइयां धन्ना बडभागा॥ ५१८॥

राग मलार ॥ प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई॥ प्रेम भक्ति कर जो जन ध्यावे उत्तम कहिये सोई॥ कुलवंता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धास्यो ॥ जाय बिदुर के भाजी अरपी जात न जन्म बिचारयो॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको

बढी वृंदाबन गोपिन नाच नचाई ॥ सूर कूर इस लायक नाहीं कहलिग करे बडाई ॥ ५१२ ॥

कबित्त ॥ चढे गजराज चतुरंगनी समाज सहित जीत क्षितिपाल सुरपाल सों सजत हैं ॥ विद्या अपार पढ तीरथ अनेक कर यज्ञ और दान बहु भांति सों करत हैं॥तीन काल में नहाय इंद्रियो को बश लाय कर संन्यास विषय बासना तजत हैं ॥ योग और जप और तप को अनेक करैं विना भगवंत भक्ति भव ना तरत हैं ॥ ५१३ ॥चाहे तू योग कर भ्रुकुटी मध्य ध्यानधर चाहे नाम रूप मिथ्या जानके निहार लै ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यो ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मनमें तू धार लै ॥नारायण अपने को आपही बखान कर मोते वह भिन्न नहीं या बिध पुकार लै॥जौलौं तोहिंनंदके कुमार नहीं दृष्टि परैं तबलों तू भले बैठ ब्रह्म को बिचार लै ॥ ५१४ ॥ चारोंही वेद पुराण अठारों चौसठ तंत्र के मंत्र बिचारे ॥ तीन सौ साठ महाव्रत संयम मंगल यज्ञ पुरी पुर सारे॥योग नियोग प्रयोग उपासन मैं हरिदत्त सभी निरधारे तीनोंही लोकन के सगरे फल मैं हरि नाम के ऊपर वारे५१५

राग भैरव ॥ कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलि में ॥ ताके पद पंकज की रेणु की बलि में ॥ सोई सुकृत सोई पुनीत सोई कुलवंता ॥ जाको निशि बासर रहै कृष्ण नाम चिंता ॥ योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्ण नाम माहीं ॥ बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं॥सब सुख को सार कृष्ण कबहूं

गुपाल किये बश अपने उर धर श्याम भुजा ॥ शुक मुनि ब्यास प्रशंसा कीनी उद्धव संत सराहीं ॥ भूरि भाग्य गोकुल की बनिता अति पुनीत जग माहीं ॥ कहा भयो जो बिप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमरन नाहीं ॥ सोई पुनीत दास परमानंद जो हरि सन्मुख जाहीं ॥ ५२२ ॥

राग बिहाग ॥ प्यारो पैये केवल प्रेम में ॥ नाहिं ज्ञान में नाहिं ध्यान में नहीं करम कुल नेम में ॥ नहिं भारत में नहीं रामायण नहिं मनु में नाहिं वेद में ॥ नहीं झगरे में नहीं युक्ति में नहीं मतन के भेद में ॥ नहीं मंदिर में नहीं पूजा में नहीं घंटा की घोर में ॥ हरीचंद वह बांध्यो डोलै एक प्रेम की डोर में ५२३ ॥

मुंदरिया लीला ॥

ठुमरी ॥ माथे पै मुकुट श्रुति कुंडल बिशाल लाल अलक कुटिल सो अलिन मद गंजनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी बिचित्र चित्र पीत पट अंग सों बिराजे द्युति बैजनी ॥ दीये गल बाहीं प्रिया प्रीतम बिहार करैं अति अनुराग भर आई नई द्वै जनी ॥ कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोह लियो मंद मंद बाजत गोबिंद पायँ पैंजनी ॥ ५२४ ॥

राग कान्हरा ॥ कहां करते मुंदरिया डारी ॥ मैं बलि जाऊं बताय किशोरी तैं कबते न निहारी ॥ आवतहैं भुज अंसन दीने एहो छैल बिहारो ॥ जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कहा भारी॥चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्या-

भोग न लीना ॥ धन्ने जाट के शौच न काई होय प्रगट दुध पीना ॥ऊंचे जन्म कर्म के तपसी ना किसे मंदिर धावै ॥ महा कुचील भील दे कर ते लै जूठे फल खावै। जाय पंडे सब आगे बैठें ना किसे देत दिखाई ॥ नामदेव को देहरा फेर्यो लीनो कंठ लगाई।पार ब्रह्म पूरण अबिनाशी सब घट की मति जानै ॥दुनीदास प्रभुभक्त वछल है कपट हेत नाहिं मानै५१९॥

राग कान्हरा ॥माधव केवल प्रेम पियारा॥गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जान लेहो जो जानन हारा ॥ ब्याध आचर्ण अवस्था ध्रुवकी गज ने शास्त्र कौन बिचारा ॥ भक्त बिदुर दासी सुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहीं धारा ॥ सुंदर रूप नहीं कुब्जा को निर्धन मीत सुदामा हूं तारा ॥ कहांलौ वरण सकौं सबहिन को मोपै पायो जात न पारा॥ सुन प्रभु सुयश शरण हौं आयो मोसे दीन को काहे बिसारा ॥ भक्त- राम पर वेग द्रवो क्योंना कहिये दासन दास हमारा ।५२०।

राग जंगला काफी॥मन माने की बात नहीं कछु जाति को कारन ॥ कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद॥ गति पाई जिन यशुमति जैसी भये भवन बिख्यात ॥ बाल्मीकि रमदास बिदुर और केशो कबीर किरात ॥ सैन भक्त और सधन कसाई कहु इनकी क्या जात॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात ॥ रसिक नाथ प्रभु एक रस साँचो भाव भक्ति पतियात ॥ ५२१ ॥

राग जिल्हा झिंझोटी ॥ गोपी प्रेम की धुजा ॥ जिनन

ली बनआवत है ॥ ५२९ ॥ कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अंग कौन काज महाराज त्रिया भेष कीयो है॥नाकहूमें नत्थ हाथ चूरिन भरन भरे काननमें कर्णफूल बेंदी भाल कीयोहै ॥ चंद्रहार उर बिराजे चंपकली कंठसाजै मुकुट को उतार ओढ चूनरी को लीयो है ॥ नारायण स्वामी देख चीन गई प्यारी भेष खिल खिल खिल हँसत राधे अँचरा मुख दीयो है ॥ ५३० ॥

इति रागरत्नाकरे द्वितीयभागः समाप्तः ॥

श्रीः ॥

अथ रागरत्नाकरे तृतीय भागः ॥

छंदम

मालिन लीला ॥

राग कालिंगडा ॥ प्यारी इक मालिन पौर तिहारी ॥ टेक ॥ रंग सांवरो वा मालिन को नील मणिन अनुहारी ॥ ठाढीहै वृषभानु पौरपै पूछत नाम दुलारी ॥ बेंदी भाल नयन बिच काजर बेसर की छबि न्यारी ॥ चलत चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटा री ॥ यह सुनके वृषभानु नंदनी बोली तब मुसकाई ॥ ले आवो तुम वा मालिन को कैसी है वह आई ॥ ले आज्ञा प्यारी की तबहीं सखी बेग उठधाई ॥ चलरी मालिन याद करी तू दास चरण बलिजाई ५३१

री॥वृंदावन हित रूप दरश पडी लाल फेंट जब झारी५२५॥

राग प्रभाती ॥ गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादो राय-को ॥ हाथकी अंगूठी लीनी तोरालीनो पांवको ॥ माथेको शिरपेच लीनो रत्न जडाव को ॥गाम तो बरसानो कहिये श्री सुखधाम को ॥ लालजी को सासरो श्रीराधेजू की माय को॥ लेके तो भाग आई फेर नहीं पायगो ॥ सूरश्याम मदन मो-हन नयो गढवायगो ॥ ५२६ ॥

राग आसावरी ॥ मोहनी रूप बनायो हरिने बाना बाहिं बरा बाजूबंद सोहे छल्ला छाप गुस्ताना ॥ मुखभर पान सींक भर सुरमा ले दर्पण कान्हा मन मुसकाना ॥ माय य-शोदा यों उठबोली तू क्यों भयो जनाना ॥ मोहिं छलगई वृ-षभानु किशोरी ताहि छलबे को बरसाने मोहिं जाना ॥ बर-सानेकी कुंज गलिन में कान्हा फिरे दिवाना ॥ भानराय की पौर बूझ के वाहू गूजरिया सों जाय बतराना ॥ ५२७ ॥

राग दादरा ॥ तुम या ग्राम कहां रहो आली ॥ हम क-बहूं देखी न सुनी है यह शोभा छबि रूप निराली ॥ नख शिख लौं श्रृंगार मनोहर अधर रची पानन की लाली ॥ ना-रायण कहो प्रगट खोलके बात नराखो बीच बिचाली५२८

कवित्त ॥ मनमोहन लाल बडो छलिया सखी बारू की भीत उठावतहै ॥ करतोरतहै नभ की तरियां चट चंदमें फंद लगावत है ॥ जहां पवन नजाय सके मुरली धुन की तहां दूती पठावत है ॥ कहूं चोर कहूं दधिदानी बने कहूं शाह ल-

गनयनी कौन बाग सों लाई॥ त्रिभुवन पति जगदीश दया निधि नंद कुँवर यदुराई ॥ वा मोहन के बाग सों प्यारी नवल फूल चुनलाई ॥ यह सुनके वृषभानु नंदनी तन मन सुख अधिकाई॥आज की रैन रहो घर हमरे भोर भए उठ जाई॥ सांची प्रीति देख प्यारी की रैन की शैन ठहराई॥ यह छबि निरख मगन भए सुर नर दास चरण बलि जाई॥ ५३२ ॥

मुन्यारी लीला ॥

राग गौरी ॥ मिठ बोलनी नवल मुन्यारी ॥ भौंहैं गोल गरूर हैं याके नयन चुटीले भारी ॥ टेक॥ चूरी लख मुख ते कहै घूंघट में मुसकात ॥ शशि मनो बदरी ओट ते दुर दर्शत यहि भांत ॥ चूरो बडे जो मोल को नगर नगाहक कोय॥ मो फेरी खाली परी आई घर घर सभ जु टटोय ॥ चूरी नील मणि पहरवे नाहिन लायक और ॥ भागवान कोई लैचलो मोहिं दीसत है इक ठौर॥ जिहिं नगरी रिझवार नहिं सौदागर क्यों जाय॥ बस्तु घनेरी गांठ में बिन गाहक सों पछताय ॥ रंग सांवरी गुण भरी धन मुन्यार कुल ओप ॥ मुदित होत सभ देखके री यह पुर गोपी गोप॥ काहू पै न ठगायहै तेरी बुद्धि बिशाल॥ लाभ अधिक कर जायगी भटू बेच बडे घर माल ॥मेरे मालहिं लेहि सो जो मुहिं मांग्यो देह ॥ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेह॥ बेचन हारी काँच की कहा अधिक इतराय॥ पौर भूप वृषभानुकी लाखन की बस्तु बिकाय॥ पुर बजार देखे नहीं है गर्वीली

मालिन मधुभरे नयन रसीले॥ टेक॥ कहो कौन है तात तुम्हारो कौन तुम्हारी माई ॥ क्या है सुंदरी नाम तिहारो कौन गाम ते आई॥ अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई॥ श्याम सखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई॥ तुमरो रूप देख मन उमग्यो सुन मालिन की जाई॥ हम लेंगी सभ वस्तु तिहारी क्या क्या सौदा लाई॥ चंपाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई॥ सेवती गुलाब सुमन के झुमका तिहारे कारण लाई॥ कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित बरसाने आई॥कौन बतायो नाम हमारो किन यह ठौर बताई॥ तीन भुवनमें सुयश प्रकट है अरु तुमरी ठकुराई॥ राधे नाम रूप की राशी श्रीवृषभानु की जाई॥ चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई॥ फूलन हार बने अतिसुंदर और कहो क्या लाई॥ सुंदर तेल फुलेल उबटनो अतर सुगंध मिलाई॥ जो रुचि होय सो लै मेरी प्यारी बेर भई मोहिं आई॥ बेर बेर तू जिन कर मालिन देहों माल अघाई॥ हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण बसन मँगाई॥ बडे घरन की मालिन हूं मैं धन की रुचि कछु नाहीं॥ मैं सौदागर प्रेमरतन की और न कछू सुहाई॥फूल फुलेल की बेचन हारी कहा अधिक इतराई॥लेहु लेहु फूल करत कुंजन में हमपै करत बडाई॥सुकृत जन्म के फल ते भामिन यह मेरे फूल सुहाई॥ पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल नपाई॥ जिन फूलन को खोज थकित भये सुर नरपति मुनिराई॥ऐसे फूल कहो मृ-

दरों नहीं कपटी जन पत्याउँ ॥ मेरे जिय यह टेक है कहे दे-
तहौं सांच ॥ हौं भूखी सन्मान की नहीं सहों झूंठ की आंच॥
आउ आउ री निकट तू देखो बदन निहार ॥ एक बातही
में चिरी तू गुस्सा हिय ते डार ॥ शीतल हो व्यापारिनी ते-
रो ऐसो काम ॥ तनक नई यह बैस की तज तोहिं फिरनो स-
भ धाम ॥ हौं आई तक राज घर करन प्रथम पहचान ॥ म-
णि लीयेही विन करी यह हांसी होय हितकी हान ॥ कासों है
तैं हित कियो अब लग परी न दृष्ट ॥बात कहत उरझै सखी
तू रची कौन विधि सृष्ट ॥ अब अपनी कर हित कहो भूषण
युवती समाज ॥ सभ बिधि पूर्ण होय तो प्यारी मोमन बांछि-
त काज ॥ मणि चौकी बैठी कुँवरि दीनी भुजा पसार ॥ काढ
चूरी अति सोहनी पहराई सुघर मुन्यार॥भुजा कढत मुन्यारि
दृग फूल्यो मनो बसंत ॥ मन छुट चल्यो जु हाथते धीरज
बांधत गुणवंत ॥ जबहीं करसों कर गह्यो शिव अरि कियो
प्रताप॥तनु गति बेपथ जानके कछु मधुरे कियो अलाप ॥ तु-
म लायक चूरी कुँवरि भूल जुआई ग्रेह॥ निरख निरख प्यारी
कह्यो तेरी क्यों कांपतिहै देह ॥ सरस्यो प्रेम हिये बली उत्त-
र देह जुकौन ॥ रूप अमल तापै चढ्यो लाल क्यों न गहै मु-
ख मौन ॥ ललता कह यह प्रेम है कोऊ परस्योरोग ॥यत्न क-
रो तनु पेखके सखी कौन दई संयोग ॥ परम गुणीलो नंदसुत
मैं देख्यो टकटोय ॥ अहो प्रिया प्रीतम बिना बल ऐसो प्रेम
न होय ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाय ॥ प्रे-

नार ॥ व्यापारिन अबही बनी कछु बात न कहत बिचार ॥ तोहिंले चलहों नृप घरै क्यों जीया होत उदास ॥लेहिं लडीली राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ यह सुनके ठोढी गही सुखित भई अंग अंग॥भलो जो तेरो मानहों लैचल अपने संग लैगई पौरी भान की बात कही समझाय ॥ गुणन प्रगट कर सांवरी तोहिं लैहैं बेग बुलाय।हौं जो मुन्यारी दूरकी आई राज द्वार॥बेंचोंचूरीचूरला कोऊ बोल लेहु रिझवार॥सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावर मांझ॥ प्रात चूरी पहराइये अब बसरह पर गई सांझ॥अलभ लाभसों पायके हिय जिय पायो चैन॥रूखे से मुख सों कहैगौं गर्जिन रच रच बैन।पर घर बसत जुबलिगई खिझै सकल परिवार॥बडे भोर ही आयहौं मैं यह मन कियो बिचार॥एक बार भीतर जुचल प्यारी सों बतराय॥ भली लगै सो कीजियो लगजा अतिलडो के पाय ॥ चलीजो झूमत झुकतसी बेनो रुरकत पीठ ॥ घूंट अमी को सो भऱ्यो जब मिली दीठ सों दीठ ॥ बहुत हँसी नव नागरो देखी परम अनूप ॥ क बेचत चूरी सखी तू कै बेचत है रूप ॥ मोहिं खिलौना जिन करो राजकुँवरि बलि जाउँ ॥ तनथाक्यो बासरगयो मोहिं फिरत फिरत सब गाऊँ॥ मुख दीखत तेरो डह डह्यो लगत चीकनो गात ॥ थाकी कौन बतावही कछु ऊपर की सी बात ॥ हौं तो सूधे जीयकी घट बढ समझत नाहिं ॥ तुम्हें कछू दरश्यो कहा प्यारी कपट मेरे हिये माहिं॥ रंग पहराऊं चूरला चोखो बणिज कमाउँ॥चोखीप्रीति जु आ-

सो राखो बडे गोप की जाई ॥ औरौ बात कहत सकुचतहौं प्रीति जुदेख बिकाई ॥ नाना विधिकी डिबिया छल्ला आरसी मणिन जडाई ॥ श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेट चढाई ॥ तुम नृप अति लडी हो जुबिसातन देखत कृपा अघाई ॥ हौं भूखी याहीको चाहों द्रव्य न बहुत कमाई ॥ श्याम पोत को पुंजा सुन्दर मो घर धऱ्यो दुराई ॥ मोसों प्रीति करै जो भामिनी ताहि देहों पहराई ॥ हौं हित करों बचन मन क्रम कर रह मोपास सदाई ॥ प्राणन हूंते प्यारी मोको भाग्य बडे ते पाई ॥ बटुवा खोल दिखाई बेंदी नागरि के मन भाई ॥ सुघर विसातन अपने करलों माथे कुँवरि लगाई ॥ पुनि झोरी ते दर्पण काढ्यो मुख शोभा दरशाई ॥ उदित भालपर मनो सुहाग मणि लख श्यामा मुसक्याई ॥ हर्ष अंक भर ताही बैठो मन खोल जबै बतराई ॥ परसत अंग दशा बदली तब प्यारी मन में धरी भुराई ॥ बूझत अरो डरी कै तोकों छाया आय दबाई ॥ तबलग परगई सांझ कहूं मोहिं बासो देह बताई ॥ बिसर नसकत प्रीति अति बढगई व्यारू संग कराई ॥ रजनी गुण उघरे जब शय्या अपने ढिग पौंढाई॥ जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो जान परी लँगराई॥ वृंदावन हित रूप छदम तज सुखकी लबधमनाई ॥ ५३४ ॥

योगिन लीला ॥

राग देस ॥ देखियत गुणन गरूर तेरो अति चटकीलो रूप ॥ छकन और हीसी लगत काहू सुता बडेकी भूप॥

म गहर ते काढके सखी पुनि पुनि लेत बलाय ॥ यश दीयो सभही कुलन बनिता रूप बनाय ॥ कौन बडाई कीजिये यश बर्द्धन गोकुलराय ॥ कौतुक रूपी खेलमें रजनी बाढी शोभ ॥ रसिकन हिये बढावनी यह नवल प्रेमकी गोभ ॥ युगल प्रीति गाढीनिरख भयो हिये अहलाद ॥ बरणी लीला मोहनी यह श्री हरिवंश प्रसाद ॥ बलहित रूप चरित्र यह जो विचार है नित्त।वृंदाबन हित भीजहै दंपत रस ताको चित्त ५३३

विसातन लीला ॥

राग परज ॥ गली गली में कहत फिरत कोई लालहिं लेहु मुल्याई ॥ यों कहत बिसातन ।आई ॥ टेक ॥ जबहिं गई बृषभानु पौर तब ऊंची टेर सुनाई ॥ श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई ॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई ॥ तनु ढांपै पुनि घूंघट मारै लाज जुभीजत जाई ॥ भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई ॥ कौन अपूर्व वस्तु पास तोहिं कहु मोसों समुझाई ॥ कौन नगर तू बसत बिसातन अबहीं दई दिखाई तोसी भटू बडे घरचहिये धन बिधि जिन जुबनाई ॥ सभही भांति ऊजरी तनकी किहि मुख करों बडाई ॥ तोहिं बसाऊँ राजद्वार जो मनमें होय सचाई॥कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई ॥ है लघु बैस कौन पै सीखी परखन की चतुराइ। कांख माहिं ते गांठ काढ कर श्यामाजू लरी गहाई ॥ बडे मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई ॥ जो जो रुचै वस्तु

को भेद ॥ पलँग देहु मोहिं बैठनो मन मिलनी सजनी पास ॥ यहि बिधि मोहिं बिलमाइये मैं कबहूं न होऊं उदास ॥ भूमि शयन योगी करैं तू कहत बचन विपरीत ॥ भूल न आदर पाइये तप मारग की रीत ॥ तुम मन मृदु कीरति लली यह सजनी को हियो कठोर ॥ तपसिन को शिक्षा करै कछु आयो कलि को ओर ॥ भुज भरलीनी कँवरि ने तू जिय जिन पावै खेद। वृंदावन हित रूप छद्म को समझ पर्यो है भेद ५३५

बीणावारीकी लीला ॥

राग गौरी ॥ छबि आगरी कोबिद राग ॥ बीणा अंक बिराजही बैठी बाबाके बाग ॥ टेक ॥ ऊंचो जामें बंगला कमनी सरवर तीर ॥ जाके अंग सुबास ते जहां ह्वैरही भँवरन भीर ॥ पक्षीहू कौतुक ठगे ऐसी शोभा अंग ॥ आभा नील मणी मनो अस तनको दरशत रंग ॥ जे देखन तरुणी गईं ते जो बिलोई प्रेम ॥ बीध गई रस नाद में सभ भूली नित कृत नेम ॥ तुम चल लावो नगर में मिले अधिक सुख होय ॥ भूखी वह जो सनेह की प्यारी मैं देखी टकटोय ॥ गुणी न ऐसी देश यह रीझोगी सुन गान ॥ औरन को जो छकावही वह आप छकै लैतान ॥ कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति बिकाय ॥ जो अब आदर देहुगी तो फिर आवैगी धाय ॥ सरिता जल थिर ह्वैरहै जाको सुनत अलाप ॥ शिव समाध टारै बली बिधि को टारतहै जाप ॥ व्रज मंडल ऐसी नहीं नहीं भरत के खंड ॥ अति गुणवंती भामिनी सखी यह आई प्र-

॥ टेक ॥ सो चलरी चल घर लैचलों तू कहदे मनकी लाग ॥ योग लियो किहि कारणे दृग दरशत है अनुराग ॥ श्रीराधा-नृप लाडली मन आवत भाषत सोय ॥ अंत लेत तपसीन को नहीं योग खिलौना होय ॥ तन साधैं मन बश करैं हम बन फल करैं अहार ॥ क्यों ग्रेहिन के घर बसैं जिन तर्क तज्यो संसार ॥ भोजन भूखी हौं नहीं कछु मन न बासना और ॥ प्रीति सहित आदर जहां हम बिलमैं ताही ठौर ॥ आदर देहों अधिक तोहिं गुणहिं करो प्रकाश॥गिरि गहबर बन-सेइये बरसाना निकट निवास ॥ गाम निकट ग्रेही बसैं योगी रमैं वन खंड ॥जिनके जप तप से थमैं सात द्वीप नौखंड॥ हम जो सुनी यह शेश शिर तूकहत अनेती बात ॥ सत्य बोल नहीं जानही बिधि रचे जो सांवल गात ॥ प्रीति प्रतीति न बचन की करो बैस सुता पुनि राज ॥ दुर बैठो घर जायके तुम्हें योगिन से कहा काज ॥ गोपन के गोधन परख तुम तिन गुण करो बखान ॥ योगिन के घर दूर हैं अति दुर्लभ पद निर्वाण ॥ राजसुता तुम करतहो योगिन संग विवाद ॥ सेवा कीने फल मिलै चर्चा उपजै बिषाद ॥ हम सेवा बहुविधि करैं जो तुम मन थिरता होय ॥ यह पुर बसै बड भागनी ब्रज सम लोक न कोय ॥ क्यों न बडाई कीजिये लायक कुल बृषभान ॥ अब हौं निश्चय चाल हौं पायों मन बांछित सन्मान ॥ बाहिं पकरके लेचली बैठारी जाय निकेत ॥ अब छिन पास नछाडहों समझ्यो उर अंतर

नहीं करजैयो गौन ॥मसक उठी कर बीण लै लगी कुँवरि के साथ॥निपट मंद गमनी भइ गह प्यारीजू को हाथ।गोपन के मंदिर जिते सभको बूझत नाम॥ तन श्रम अधिक जनावही कहै कितक दूर तुम धाम॥ हम जो चढैं रथ पालकी अतिही आदर योग॥गुणी रीझ जानै कहा ये ब्रज के भोरे लोग॥ कहो मँगाऊं अश्व रथ कहो पालको रंग॥आज्ञा पहलो करी नहीं योंही उठ लागी संग॥ हम जान्यो नियरे भवन यहतो निकस्यो दूर॥याते खवर परी नहीं तुम नेह रह्यो उर पूर॥और सुनो मो बीण को नीके धरियो साज ॥मेरो जीवन प्राण है मेरो याही सों रंग समाज॥तुम मानतहा खेलसों सुन मो मुख रसरीत ॥ नारद शारद के सदा अतिया बाजे सों प्रीत॥ हौं सीखी उनकी कृपा सों हिय की गाढी लाग॥ता प्रताप ते करतहो सखी तुम मोसों अनुराग॥ लाई न्यारे भवन में बहुत करत सन्मान॥ अब एकांत सुनाइये सखी सुघर सांवरी गान॥बीणा के सुर साध के अंक लाय मुसकाय॥गायो चित की चौंप सों जिन लीनो सभन रिझाय॥जैसीही रजनी ऊजरी तैसोई हिये हुलास॥ चपल करज तैसे चलैं भयो तैसोइ प्रकाश॥ अहो सहेली सांवरी कर इहि नगर निवास॥असन बसन करहो सखी चल रह नित मेरे पास॥मोहिं अंसा यह नगर घर यामें शंक न कोय॥ आवत जात रहों सदा जा रावर हित होय॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर वीन ॥ग्रीवढुराई साँवरी

ड ॥ यह सुन अति अकुलाय के चली सखी लै संग ॥ रूप सिंधु उमग्यो मनो तामें नाना उठत तरंग ॥ उठ सन्मानत सांवरी फूली सरबस पाय ॥ दृग सों दृग मनसों जो मन ल-ख उरझे सहज सुभाय ॥ अहो कुशल मति नागरी तुम गुण भए प्रशंस ॥ राग अलाप सुनाइये सखी बीणा धरके अंस ॥ चपल करज नख द्युति बडो गौरी गाई बाल ॥ रीझी अति ललीभूपकी दई ताहि आप हिय माल ॥ मान बडी तानन बडी बढी रूप लहि लाह ॥ प्रगट करो सभ चातुरी जाके म-नमें विपुल उमाह ॥ विद्या निपुण उजागरो धन तुम सिख-वन हार ॥ कोऊ दिन बर्साने बसो अब चलो हमारे लार ॥ सुनत कछू मोऱ्यो बदन चुप ह्वै रही सुजान ॥ बीणा धर दि-यो कंध ते रूखी ह्वैगई निदान ॥ ललता बूझत समझके को कारण बलिजाउँ ॥ तुम उदास अतिही भई सुन धाम हमारे नाउँ ॥ मेरे छक है गुणन की सुनो खोल के कान ॥ पर घर गए जो को सहै सखी जो न होय अपमान ॥ तुम्हें प्राण सम राखहैं लाड नयो नित होय ॥ अहो गुनीली भामनी यह सं-शय मनते खोय ॥ गुण गायक बिरचै नहीं दूर करो संदेह ॥ जे गुण को समझैं नहीं परहरिये तिनको ग्रेह ॥ यह सुन भई जो डहडही सखी सांवरी गात ॥ चंपक बरणी धन्य तू कही निपट समझकी बात॥अब हौं निश्चय चलोंगी जान तुम्हारो हेत॥तो मन थाह मिली भटू नृपसुता न उत्तर देत॥कहा न्याव सो करतहो कहत अतिलडी बैन ॥ सुख पावो तो बिरमियो

नहीं मरयाद ॥ लखी जुरसिकन की गली श्री हरिबंश प्र-
साद ॥ यह रस रसिक जो विलस हैं जामें अतिही चोज ॥
वृंदाबन हित बलि रुचै दंपति केलि मनोज ॥ ५३६ ॥
॥ इति रागरत्नाकरे तृतीयभागः समाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ रागरत्नाकरे चतुर्थ भागः ॥

मथुरागमन लीला ॥

राग बिहाग ॥अब नंद गैयां लेहु सँभार ॥ हैं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराईं दिन चार ॥ दूध दही तिहारो बहुतही खायो बहुतही कीनी रार॥तिहारे गुण हिरदे में राखों पल न देयों बिसार ॥ कोकिला सुत काग पाले अंत होत परार ॥ तिहारे यशुमति आन बिलमें दृग मत आंसूं डार ॥ पिता कौन पुत्र हैं काके देखो मनहिं बिचार॥ सूर श्याम प्रभु होत न्यारे कपट कागज फार ॥ ५३७॥

राग सोरठ ॥ यशुमति बार बार यह भाषै ॥ है कोउ ब्रजमें हितू हमारो चलत गोपालहिं राखै ॥ कहा काज मेरे छगन मगन को नृप मधुपुरी बुलाए ॥ सुफलक सुत मेरे प्राण हरण को काल रूप होय आए॥बरु यह गोधन कंस लेइ सब मोहिं वंदी लै मेलै॥ इतनो मांगत कमल नयन मेरी आंखन आगे खेलै ॥ को कर कमल मथानी गहिहै को दधि माखन खैहै॥ बहुरो इंद्र बरस है ब्रज पर को गिरि नख पर

असगायो कुँवरि प्रवीन ॥ जब उघरी संगीत गत प्यारी देकर ताल ॥ छदम बिसर गई सांवरी लगी निरतन गति नंदलाल ॥ ह्वै त्रिभंग ठाढी भई कर मुरली को भाव ॥ फूंक चलै अंगुरी चलै गई भूल कपट को दाव ॥ राधा राधा रट लगी अधरन ही के माहिं ॥ समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं ॥ भुजा अंस पर धरन को झुकी प्रिया की ओर ॥ सावधान होय सांवरी कहा कौतुक रचत जुजोर ॥ राजभवन में आयके भूल न आदर पाय ॥ स्यानी है के बावरी तू अपनो रूप बताय ॥ यासों प्रीति न तोरिये हौं लाई जुबुलाय ॥ भेद हिये को बूझ के देहु सादर बेग पठाय ॥ प्रीतम को देख्यो कहूं इन लीनी गति चोर ॥ परम चातुरी सीव यह गुण आछे लेत टटोर ॥ कान लाग चित्रा कह्यो है यह नंदकिशोर ॥ मैं लक्षण नीके लखे दृग चालत गौहीं कोर ॥ भटू बहुर नीके परख बात न भाँडो फोर ॥ लायक सो समझे बिना अति गरुवो नेह न तोर ॥ भरी कटोरी अतर की लाई सखी सुजान ॥ सभ की चोली लगाय क तिहिं चोली परसे पान ॥ वह अधरन ही में हँसी यह जो हँसी मुख खोल ॥ है यह दूत शिरोमणि कह्यो सभ सखियन सों बोल ॥ मेरीही भूलन सखी तब तुम लियो बिलोक ॥ प्रेम सिंधु उमगत जहां कहा छदम जो तिनका रोक ॥ कबहुं दुर कबहूं प्रगट आवत भान निकेत ॥ मधुप अनत बिरमैं नहीं, दृढ कियो कमल सों हेत ॥ बरण्यो कौतुक प्रेम को नेम

लाहल नाचत गह गह वाहीं ॥ यह मथुरा कंचनकी नगरी मणि मुक्ता जिहिं माहीं॥जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिया उमगत सुध नाहीं ॥ अनगिन भाँति करी बहु लीला यशुदानंद निवाहीं ॥ सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताहीं ॥ ५४२

राग बिहाग ॥ऊधो ब्रज को गमन करो॥मेरे बिना बिरहनी गोपिका तिनके दुःख हरो ॥ योग ज्ञान प्रबोध सभनको ज्यों सुख पावें नार॥पूर्ण ब्रह्म अलख परचोकर मोहिं बिसारें डार ॥ सखा प्रबीन हमारे हो तुम याते थाप महंत ॥ सूरश्याम कारण यह पठवत है आवोगेसंत ॥ ५४३ ॥

कबित्त ॥ कामरी लकुट मोहिं भूलत न एक पल घूंघची बिसारों ना जो लाल उर धारे हैं॥ जा दिन ते छाके छूट गई ग्वालन की तादिन ते भोजन नपावत सकारे हैं॥भने यदुबंश हूं पै नेह नंदबंश सों बंसी न बिसारों जो पै बंस बिस्तारे हैं ऊधो ब्रज जैयो मेरी लाइयो चौगान गेंद मैयाते कहियो हम ऋणियां तिहारे हैं ५४४ ॥कौन बिधि पावे यह कर्म बलवान उदय छाछ छछिया की ब्रज भामिन को भातेहैं ॥ मुक्तिहू पदार्थ सो देचुके बाकी को अब देहिं जननी को कहा याते पछतात हैं॥ बिधि जो बनाई आहि कौन बिधि मेटे ताहि ऐसे कर शोचत रहत दिन रात हैं॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी कहियो समुझाय मैया जापै ऋण बाढै सो बिदेश उठ जात हैं ॥५४५॥परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो अंतर बिथा

लै है॥बासर रैनि बिलोकों जीयों संग लाग हुलराऊं॥हरिबि-
सरत जो रहों कर्म बश तो किहि कंठ लगाऊं॥ टेर टेर धर प-
रत यशोदा अधर बदन बिलखानी ॥ सूर सो दशा कहां लग
बरणों दुखित नंदकी रानी ॥ ५३८ ॥

राग बिहाग ॥ उठ चले ग्वाँढों यार रब्बा हुन की करीये ॥
उठ चल्ले हुन रहिंदे नाहीं होया साथ त्यार ॥ चारों तर-
फ चलन दी चरचा केही पडी पुकार ॥ डाढ कलेजे बल ब-
ल उठदी बिन देखे दीदार ॥ बुल्लाशाह प्यारे बाझों ना रह-
सां घर बार ॥ ५३९ ॥

राग सोरठ ॥ उलट पग कैसे दीने नंद ॥ छांडे कहां उ-
भय सुत मोहन धृग जीवन मतिमंद॥कै तुम धन जोबन मद-
माते कै तुम छूटे बंद॥सुफलक सुत बैरी भयो मोको लै गयो
आनंदकंद॥रामकृष्ण बिन कैसे जीवों कठिन प्रीतिके फंद ॥
सूरदास अब भई अभागन तुम बिन गोकुलचंद ॥ ५४० ॥

राग बडहंस ॥ सांझ परी घर आए ना कन्हैया॥ गोपी
पूछें ग्वालनसों कहां गए मोरे ब्रजके बसैया ॥ घर रहे बछरू
बन रहीं गैयां यमुना किनारे ठाढी यशुमति मैया॥जाय पता
ल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया॥लालदा-
स प्रभु कह कर जोरी चरण कमल पर चितको धरैया ५४१

राग धनाश्री ॥ ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं ॥ हंस
सुता की सुंदर कल रव अरु कुंजन की छाहा ॥वे सुरभी वे ब-
च्छ दोहनी खिरक दुहावन जाहीं॥ग्वाल बाल सब करत कु-

राग टोडी ॥ पाती मधुबन हूं से आई॥ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरीं ले पाती उर लाई ॥ नयनन नीर निर्ख नाहिं खंडित प्रेम न विथा वुझाई ॥ कहा करूं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई ॥ सूरदास प्रभु कौन चूक ते श्यामसुरत बिसराई ॥८५० ॥

राग जंगला होरी ॥ सांवरे सों कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीनो कर बिनती कर जोरी ॥ ऐसी चूक कहा परी मोसों प्रीति पाछली तोरी सुरत ना लीनी बहोरी ॥ भूषण बसन सभी तज दीने खान पान बिसरो री॥ बिभूति रमाय योगिन होय बैठी तेरोही ध्यान धऱ्योरी अब मैं कैसे करों री ॥ निशि दिन ब्याकुल फिरत राधिके विरह ब्यथा तनु घेरी ॥ बार कलेजा जार दियो है अब मैं कैसे करों री बेग चल आवो किशोरी ॥ रोम रोम विष छाय रहीहै मधु मेरे बैर पऱ्योरी ॥ श्याम तुम्हें ढूंढत कुंजन में शीश लटा गह झोरी कहो हरि हो हरि होरी॥जादिन गमन कियो मथुरा में गोपिन सुध बिसऱ्यो री ॥ हमको योग भोग कुब्जा को कहा तकसीर है मोरी कहा कछु कीनी चोरी॥ सूरदास प्रभु सों जाय कहियो आय अवध रही थोरी॥ प्राण दान दीजो नँदनंदन गावत कीरति तोरी प्रीति अब कीजे बहोरी८५१

कबित्त ॥ जो हरि मथुरा जाय बसे हमरे जिया प्रीति बनी रही सोऊ ॥ ऊधो बडो सुख यह हू हमैं और नीके रहैं

कीकथा मेरी सुन लीजिये।ब्रज कीवे बाला जपैं मेरी जप मा-
ला बढी बिरहकी ज्वाला तामें तन मन छीजिये॥मेरो बिश्वाश
मेरी आश रस रास मेरी मिलबे की प्यास जान सावधान की-
जिये ॥ प्रीति सों प्रतीति सों लिखी है रस रीति सों पत्रिका
हमारी प्राण प्यारिन को दीजिये ॥ ५४६॥ जैसे तुम दीनो त-
न मन धन प्राण मोहिं तैसेही समाधि साध ध्यान धरवा वो
गी॥ अलख अनाथ घट घट को निवास मोहिं जान अबि-
नाशी योग युगत जगावोगा॥प्राणायाम आसन ध्यान धार-
णा ते ब्रह्म को प्रकाश रस रास दरशावोगी ॥ ऐसे चित ला-
वोगी तो सुख में समावोगी मुक्ति पद पावोगी हमारे पास
आवोगी ॥ ५४७॥ भेजा तुम योग हम लीया धर शीश पर
बडोही परेखो चेरी कौन की कहावेंगी ॥ आंसूअनकी माला
ले जपैं नित राम नाम लोचन के खप्पर ले भिक्षा को धावें
गी ॥पहरेंगी कंथा गल डारेंगो सेली मरघट पै बैठ के मशान
हू जगावेंगी ॥ ऊधोजी एती बात हरि जी सों कहियो जाय
पूछएतीब्रजबाला मृगछाला कहां पावेंगी ॥५४८॥
न र. राग देस ॥ श्याम का सँदेशा ऊधो पाती लैके आयोरे॥
ाली तो उठाय लीनी छाती सों लगाय लीनी घूंघट को ओ-
पात क ऊधो समुझायो रे॥ बसदी उजाड दीनी उजडी बसा-
ट देके नी ज्जा पटरानी कीना मोहिं न सुहायोरे॥ सूर श्याम
य लीनी कु क पे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भ-
जू के आगे ऐ क दे ५४९ ॥
सम रमायो रे॥

गी कान मुद्रा हम भूषण बनाय राखे हमरे शिर केश वह योगी शिर जट हैं॥ जानके अजान आज कहा भयो ऊधोजी योग की युगत सों वियोगी कहा घट हैं॥ ५५६॥ श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठों याम ऊधो हमें श्यामही सों काम है॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम बिन नाहिं तीये आंधे कीसी लाकरी अधार श्याम नाम है॥ श्याम त श्याम मत श्यामही हैं प्राणपत श्याम सुख दाई सों भलाई शोभा धाम है॥ ऊधो तुम भए बौरे पातीलै आये दौरे योग कहां राखे यहां रोम रोम श्याम है॥ ५५७॥

राग मल्हार ॥ जित देखों तित श्याम मई है॥ श्याम कंज बन यमुना श्यामा श्याम गगन घन घटा छई है॥ सभ रंगन में श्याम भरोहै लोग कहत यह बात नई है॥ मैं बौरन के लोगन हीकी श्याम पुतरिया बदल गई है॥ चंद्र सार रवि सार श्याम है मृगमद श्याम काम विजयी है॥ नीलकंठ को कंठ श्याम है मनो श्यामता बेलि बई है॥ श्रुति को अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पर श्याम तई है॥नर देवन की मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है५५८

राग देस ॥ कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री॥ निशिदिन चलत रहत नाहिं राखे इन नयनन जलधारा री॥ अब यह प्राण कैसे हम राखें बिछुरे प्राण अधारा री॥ ऊधो तबते कल नपरत है जबते श्याम सिधारा री॥ अबतो मधुबन जाय ले आवो सुंदर नंददुलारा री॥सर-

वे मूरत दोऊ ॥ हमरे ही नाम की छाप परी और अंतर बीच कहै नहीं कोऊ ॥ राधाकृष्ण सभी तो कहैं और कूवरी कृष्ण कहै नहीं कोऊ ॥ ५५२ ॥ जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो धाय कर मारी नार निठुर मुरार हैं ॥ जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मारी अनमिल हूं मारी जो मिलहैं ताहि मारहैं ॥ सुनरी ए चेरी मैं तेरो सौंह कहत हौं वे तो हरि सरस नयन आंसूअन ढार हैं ॥ बडे हैं शिकारी पर इन्हें न संभारी नार मारवे को नवल कन्हैया तलवार हैं ५५३ याही कुंज कुंजन तर गुंजत भँवर भीर याही कुंज कुंजनतर अब शिर धुनत हैं ॥ याही रसना ते करी रसकी रसीली बातें याही रसना ते अब गुणगण गनत हैं ॥ आलम बिहारी बिन हृदय हूं अचेत भए एहो दई हित कहत कैसे बनत हैं ॥ जेही कान्ह नयनन के तारे हुते निशि दिन तेही कान्ह कानन कहानी सी सुनतहैं ॥ ५५४ ॥ आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रज मंडल में राग में कुराग योग रीत कह सुनायो है ॥ झोली झंडा गोदडी औ भसम मुद्रा कानन में हाथन में खप्पर यह स्वांग लै दिखायो है ॥ संयम नियम ध्यान धारणा दृढात हो ब्रह्म को प्रकाश रस रास दरशायो है ॥ कबरी पै पढ आयो वेदको भुलाय आयो रथ चढ आयो अनरथ गढ लायो है ॥ ५५५ ॥ योगी तजे जगत हम जगत योग दोऊ तजे योगी लावें छार हम छार हूके मट हैं ॥ योगी बेधें कान हम हीये बेधे प्रान योगीकहें नाथ हम नाथ नाथ रट हैं॥ यो-

रामदास हम रती श्याम रँग जाहु योग घर लेके ॥ ५६२ ॥

राग सारंग ॥ बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे ॥ यह मथुरा काजर की कोठर जे आवैं ते कारे ॥ कारे भँवर सुफलक सुत कारे कारे रत्न पवारे ॥ यहां ज्ञान को कौन चलावे सूर श्याम गुण न्यारे ॥ ५६३ ॥

राग देस ॥ ऊधो प्यारे कारे कारे सभही बुरे ॥ कारे की प्रतीत न करिये कारे बिष के भरे ॥ कारो अंजन देत दृगनमें तीखी सान चढे ॥ नाग नाथ हरि बाहर आए फण फण निरत करे ॥ कोयल के सुत कागा पाले अपनो ही ज्ञान धरे ॥ पंख लगे जब उडने लागे जाय कुटंब रले ॥ सूर श्याम कारो मतवारो कारे से काल डरे ॥ ५६४ ॥ उर माखन चोर गडे ॥ अब कैसे निकसत हैं ऊधो तिरछे हो जो अडे ॥ यदपि अहीर यशोदा नंदन तदपि नजात छडे ॥ वहां कहत यदु बंश महाकुल हमहिं न लगत बडे ॥ को बसुदेव देवकीहै को जो माने सो बूझे ॥ सूर श्याम सुंदर विन देखे और न कोऊ सूझे ५६५ ॥

राग बडहंस ॥ हो गये श्याम दूज के चंदा ॥ मधुबन जाय भए मधुबनियां हम पर डारो प्रेम को फंदा ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर अबतो नेह पर्‌यो कछुमंदा ॥ ५६६ ॥

राग जिल्हा ॥ चले गये दिलके दामन गीर ॥ जब सुधि आवे प्यारे तेरे दरशकी उठत कलेजे पीर ॥ नटवर भेष नयन रतनारे सुंदर श्याम शरीर ॥ आपन जाय द्वारका छा-

दास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सभ वारा री॥ ५५९
राग नट॥ ऊधो धन तुम्हरो ब्यवहार॥ धन वे ठाकुर
धन तुम सेवक धन धन परसन हार॥ आम को काट बबूर
लगावत चंदन कीकर बार॥ शाह को पकर चोर को छोरत
चुगलन को अधिकार॥ हमको योग भोग कुब्जा को ऐसी
समझ तिहार॥ हंस मयूर शुकापिक त्यागत कागन को इ-
तवार॥ तुम हरि पढे चातुरी विद्या निपट कपट चटसार॥
सूरश्याम कैसे निबहेगी अंध धुंध सरकार॥ ५६०॥
राग रामकली॥ ऊधो कर्मन की गति न्यारी॥ सभ
नदियां जल भर भर रहियां सागर किस बिधि खारी॥ उ-
ज्ज्वल पंख दिये बकुला को कोयल कित गण कारी॥ सुं-
दर नयन मृगा को दीने बन बन फिरत उजारी॥ मूर्ख मूर्ख
राजे कीने पंडित फिरत भिखारी॥ सूरश्याम मिल बे की
आशा छिन छिन बीतत भारी॥ ५६१॥
राग आसा॥ ऊधो सो मूरत हम देखी॥ शिव सन-
कादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इंद्र नहिं पेखी॥ खोजत फि-
रत युगो युग योगी योग युगत ते न्यारी॥ सिद्ध समाधि
स्वपन नहिं दरशी मोहनी मूरत प्यारी॥ निगम अगम बि-
मला यश गावें रहत सदा दरबारी॥ तिल भर पारवार नहिं
पायो कह कह नेत पुकारी॥ नाथ यती अरु योगी जंगम
ढूंढ रहे बन माहीं॥ शेष धरे धरती भ्रम हारे तिनहूं दरशी
नाहीं॥ सो हम गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके॥

राग बिहाग ॥ मधुकर श्याम हमारे चोर ॥ मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयनकी कोर ॥ पकरे हुते आन उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर॥गये छुडाय तोर सभ बंधन दैगए हँसन अकोर॥उचक परों जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर॥ सूरदास प्रभु हृत मन मेरो सरबसलै गयो नंद किशोर५७१

राग केदार॥ नाहिन रह्यो मनमें ठौर॥नंदनंदन अछत कैसे आनिये उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात॥हृदय ते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित पति मृदु हास ॥ सूरऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास॥ ५७२ ॥

राग सारंग ॥ बिन गोपाल वैरन भइ कुंज ॥ तब एलता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वाल को पुंजैं ॥ वृथा बहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलिगुंज ॥ सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं बरणज्यों गुंजैं ॥

राग मल्हार ॥ निशिदिन बरसत नयन हमारे ॥ सदा रहत पावस ऋतु हम घर जब सों श्याम सिधारे ॥ अंजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे ॥ कंचुकी पट सूखत नाहिं कबहूं उर बिच बहत पनारे॥ आंसूं सलिल भए पग थाके बहे जात सित तारे ॥ सूरदास अब डूबत है व्रज काहे न लेत उबारे ॥ ५७४ ॥ हरि परदेश बहुत दिन लाए ॥ कारी घटा देख बादर की नयन नीर भर आए ॥ पालागों तुम बीर बटाऊ कौन देशते धाए ॥ इतनीपतियां मोरीदीजो जहां

ए खारी नद के तीर ॥ ब्रजगोपियन को प्रेम बिसाऱ्यो ऐसे भए बेपीर ॥ वृंदावन बंसीबट त्याग्यो निमल यमुना नीर ॥ सूरश्याम ललता उठ बोली आखिर जात अहीर ॥ ५६७ ॥

राग बसंत ॥ ऊधो माधो सों कहियो जाय ॥ जाकी चपल बुद्धि तासों क्या बसाय ॥ उडियोरे भ्रमरा जाइयो वादेश मेरे पिया से कहियो सुख संदेश सखी फागुन के दिन बीते जात मोरी अँगिया तडक गई योवन भार ॥ इक तो सतावे मोहिं ऋतु वसंत दूसरा सतावे मोहिं बाला कंत तीजी कोइल बोले अंबकी डार चौथा पपीहा पिया पिया करे पुकार ॥ इक बनफूल सकल बन फूले जैसे चंद्र चकोरन हूले तीया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय जब मैं तजूंगी प्राण फिर क्या करोगे आय ॥ ५६८ ॥

राग धनाश्री ॥ हरि के संग मैं क्यों ना गइ ॥ हरि संग जाती कंचन बन जाती अब माटी के मोल भइ ॥ बरजोरी कोई इन दूतियन को जाती बेर मोहिं रोक लई ॥ हरि विछुरन इक मरन हमारा नई दासी संग प्रीति भई ॥ छल गयो काल बहुरि नहिं आवे अपने हाथसे मैं बिदया दई ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पिछली प्रीति अब नई भई ५६९

राग बसंत ॥ जा जा रे भँवरा दूर दूर ॥ तेरो सो अंग रंग है उनको जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जब लग तरुन फूल महकत है तबलग रहत हजूर जूर ॥ सूर श्याम हरि मतलब मधुकर लेत कली रस घूर घूर ॥ ५७० ॥

गुजरिया नंदगाम को जाना ॥ आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके बाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना ॥ भौंरा रहगए प्रीतिके धोखे फेर मिलन को जाना ॥ बृंदावन की कुंज गली में नूपुर रुनझुन लाना ॥ मीरा वाई को दरशन दीजो ब्रज तज अनत न जाना ॥ ५८० ॥

राग आसा ॥ कृपा कर दरशन दीजो हरी ॥ नित प्रति ठाढी तुम्हरे द्वारे निरखां पंथ खरी॥ छिन छिन अंतर बाहर आवां शांत न होत घरी ॥ बिरहों अगिन रची प्रति रोमन हाहा दग्ध करी ॥ तेरी लगन लगी मोरे अंतर नाहिंन जात जरी॥ दुनीदास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत धरणी परी ॥ ५८१ ॥ ऐसो है कोई सखी हमारी मेरे हरिजी को आन मिलावेरी॥ तन मन धन मैं तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री॥ कर शृंगार मैं सेज बिछावां सो मोहिं कछु न सुहावेरी॥ अहनिशि या तनु संकट उपजे तलफत रैनि बिहावे री ॥ क्या करूं मन कहूं न लागत मैं फिरतीहूं प्रेम प्यासी री॥ दुनी दास धीरज ना होवे बिन देखे अबिनाशी री ॥ ५८२ ॥ सुंदर श्याम देखन दीआशा नयननबान परी ॥चार याम मोहिं तलफत बीते रहगई एक घरी॥ भूषण बसन भवन नहीं भावे विरह वियोग भरी॥ दया सखी अब बेग मिलो क्योंना हौं अकुलात खरी ॥ ५८३ ॥

ठुमरी॥ छतियां लेहु लगाय सजन अब मत तरसाओ रे॥ तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सों बहें जलकी

श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोले सोवत मदन जगाए ॥ सूरदास स्वामी के बिछुरे प्रीतम भए पराए ॥ ५७५ ॥

राग देस ॥ नाथ अनाथन की सुध लीजै ॥ तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी बेगहि दर्शन दीजै ॥ नयनन जल भर आए हरि बिन ऊधो को पतियां लिख दीजै ॥ सूरदास प्रभु आश मिलन की अबकी बेर हरि आवन कीजै ॥ ५७६ ॥

राग बिहाग ॥ पिया बिन नागिन कालडी रात ॥ कबहूं यामिन होत जुन्हैया डस उलटी ह्वै जात ॥ यंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत आयु सरानी जात ॥ सूर श्याम बिन बिकल बिरहनी मुर मर लहरी खात ॥ ५७७ ॥

राग भैरव ॥ अँखियां हरि दर्शनकी प्यासी ॥ देख्यो चहत कमल नयनन को निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिन की माला वृन्दाबन के वासी ॥ नेह लगाय त्यागगए तृण सम डार गए गलफांसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगन के मन हासी ॥ सरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लेहौं कर्वट कासी ॥ ५७८ ॥

ठुमरी खमाच ॥ बतादे सखी कौन गली गए श्याम ॥ रैनि दिवस मोहिं तलफत बीती बिसर गए धन धाम ॥ गोकुल ढूंढ वृंदाबन ढूँढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ५७९ ॥

राग आसावरी ॥ कहीं देखेरी घन श्यामा ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै कुंडल झलकैं काना ॥ सांवरि सूरत पर तिलक बिराजै तिस सों लगे मोरे प्राना ॥ बरसाने सों चली

शोरी नयन चकोरन द्युति मुख चंद दिखायजा॥ भयो चहत यह प्राण बटोही रूसे पथिक मनायजा॥ ५८८॥

राग वडहंस॥ बिरहों ने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके॥ सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिंदी लोके॥ आजानी गल ला वे असानूं तिखीयां नोक चभोके॥ वंज वे राही वंज माही वल खडी उडीकां वाटां॥ मैं जाता-सी इशक सुखाला मुशकल इस दीयां घातां॥ मुखदेखन नूं फिरां दिवानी दर दर देनीहां होके॥ आंखीं माही गल बां-हि तसाडे अरज करां मैं खलोके॥ इशक तुसाडे ने घायल कीती एह गल आँखीं रो के॥ सूरत सोहनी दसके मेरा ली तोंई मन मोहके॥ आपे टुंब जगायाई मैनूं हंसके मुख दिखलाके॥ जां म मोही तां तूं छिप्या बिरहों नूं मोड भुवाके॥ इस बिरहों मैं वल वल कुट्ठी हसदा हैं पास खलो के॥ कैदर कूकां कूक सुनावां लाया नेह मैं आपे॥ जां मैं ज ग बिच रोशन होइयां रहन नदेंदे मापे॥ दुःखांसूलांदा हार म पहिदा हत्थीं आप परोके॥ मैं दरमां दी दरस तेरे दी मुख दिखला इक बारी॥ तैं मुख डिठियां सभ दुख जाँदे तूं तबीब हैं भारी॥ मुख देखन नूं फिरां दिवानी तैं डी सुहागन होके॥ बखश रब्बा वे मैं औगुण हारी तूंही बखश अलाही॥ एको-नजर तुसाडी काफी दुःख न रहिंदा काइ॥ बरकत नाल साहिब दे बुल्लिया देई दीदार खलोके॥ ५८९॥

राग पीलू॥ सुरतिया रे लागरही हरि सों॥ आमन कह

धारें बाढो है तन बिरह पीर सूरत दिखला ओरे॥ हरीचंद पिया गिरिवर धारी पैयां परूं जाऊं बलिहारी अब जीया नाहीं धरत धीर जलदी उठ धाओरे॥ ५८४॥

राग खमाच॥ सजन मुखडा दिखलाजारे तेरे दरशन को तरसैंहैं नयन॥ बाले पन की लागी लगन छूटत नहीं करों कोटि यतन दिखलाजा सूरत मोहन जरा बंसिया बजाजा रे॥ ढूंढ फिरी सारा बन बन मैं तौऊ न पाए नंद के नंदन बिरमाय राखे काहू सौतन रसिया महाराजा रे॥ लेकर भसम रमाई बदन सभ छाड उतारे भूषण बसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तज लाजा रे॥ जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदकेनंदन श्रीधर पिया आजा जलदी से मोहिं गरवा लगाजा रे॥५८५॥

राग बिहाग॥ मिलजाना हो प्यारे नंद किशोर॥ देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर॥ तेरे दरश बिन फिरां दिवानी ढूंढतीचहूं ओर जानकीदास तुसीं देख हर्षां- जैसे चंद चकोर॥ ५८६॥

राग परज॥ कबलग तरसाएं रहिये नंदनंदन व्रजराज सांवरो दरशन दीजे तनक तनक॥ बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जबते सुनी मुरली की धुनक॥ जानकी दास बसो जो दृगन में कर राखों उर नयन पलक॥ ५८७॥

राग खमटा॥ रे निरमोही छबि दरशायजा॥ कान चातकी श्याम बिरह घन मुरली मधुर सुनायजा॥ ललित कि-

बकूल की ह्वैहौं त्रिबिध समीर ॥ युगल अंग अंग लाग हों, उड है नूतन चीर॥३९॥ मिलि है कब अँग छार होय, श्री बन बीथन धूर॥पर है पद पंकज युगल,मेरी जीवन मूर॥४०॥कब गहबर की गलिन में, फिर हों होय चकोर ॥ युगल चंद मुख निरख हों, नागरि नवल किशोर ॥ ४१ ॥ कब कालिंदी कूल की, ह्वै हौं तरुवर डार ॥ ललित किशोरी लाडले, झूलें झूला डार॥४२॥श्यामा पद दृढ गह सखी, मिल हैं निश्चय श्याम॥ नामाने दृग देखले, श्यामा पद बिचश्याम ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ दीनबंधु दीनानाथ व्रजनाथ रमानाथ राधानाथ मो अनाथ की सहाय कीजिये ॥ तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी नातो तुमहीं सो प्रभु बिनय सुन लीजिये॥रीझिये निहाल देर कीजिये ना झीनी कहूं दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिये ॥ कीजिये कृपा कृपालु सांवरे बिहारी लाल मेटदुख जाल बास बृंदावन दीजिये ॥ ५९३ ॥ गिरि कीजे गोधन मयूर नव कुंजन को पशुकीजे महाराज नंदके बगर को ॥ नर कीजै तौन जौन राधे राधे नाम रटै तट कीजै बर कूल कालिंदी कगर को ॥ इतने पै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह राखिये न आन फेर हठी के झगर को ॥ गोपी पद पंकज पराग कीजै महाराज तृण कीजे रावरेई गोकुल नगर को ॥ ५९४ ॥ मानस हूं तो वहीं रसखान मिलूं पुनि गोकुल ग्वार मझारन ॥ जो पशु होऊं कहा बश मेरो चरूं पुनि नंद की धेनु मझारन ॥ पाहन हूं तो वही गिरि को

गए अजहूं न आए बीत गैयां बरसों ॥ यहतो जोबन चार दिहाडे आज कल्ह परसों ॥ अंबुआ मौलै केसू फूले और फूली है सरसों ॥ ५९० ॥

कवित्त ॥ योग दैन गयो हौं वियोग बारि बारिध में बूडत बच्यो हौं नाथ नारी नयनां यूं बहे॥ गंगा हू सहस्त्र धारा अधिकही सुधारा जान बर्षा नहोय जो रहोगे गिरिहू गहे॥ एतो जल अवनी न समाये कहूं बारिध में मुनी पै न अच्यो जात कानखोल हौं कहों ॥ कबि प्रह्लाद जो मिलाप पाल बांधा नाहिं बट के बटूक पात सांवले भले रहो ॥ ५९१ ॥

राग खमाच॥ बहुत दिनान में बिदेश होय आए मेरे प्यारे मनमोहन बधाए सभ गावोरी ॥ नाचो रस राचो नीकी नीकी गति लै लै कर नीकी नीकी भांतिन सों भावन बतावोरी ॥ ताल कठताल औ तमूरा मुहचंगन सों घूंघरू बजायके मृदंग सों मिलावो री॥ नंदके कुमार रिझवार को रिझावो आज सकल समाज कर रंग सरसा वोरी ॥ ५९२ ॥

विनयके पद ॥

दोहा ॥

कदम कुंज व्है हों कबै, श्री वृंदाबन मांह ॥ ललित किशोरीलाडिले, विहरैंगे तिहि छांह ॥ ३६ ॥ कब हौं सेवा कुंज में, व्है हों श्याम तमाल ॥ लतका कर गह बिरम हैं, ललित लडैतीलाल ॥ ३७ ॥ सुमन वाटिका बिपिन में, व्है हों कब हौं फूलकोमल कर दोउ भामते, धर हैं बीन दुकूल ३८ कालीदह क-

चतुर्दश तिहूं लोक लौं सुपनेहुँ नहिं अभिलाखै॥ ललित कि-
शोरी परे कोन में श्याम राधिका भाखै ॥ युगल रूप बिन
पलक न खोलै लोभ दिखावो लाखै ॥ ६०० ॥

राग धनाश्री ॥ हमारे श्रीवृंदावन उर ओर ॥ माया का-
ल तहां नहिं ब्यापै जहां रसिक शिरमौर ॥ छूट जात सत्य
असत्य बासना मनकी दौरादौर ॥ भगवत रसिक बतायो
श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ ६०१ ॥ ऐसे बसिये ब्रजकी
बीथन ॥ साधुन के पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथ-
न ॥ पैंडेके सभ वृक्ष बिराजत छाया परम पुनीतन ॥ कुंज कुं-
ज प्रति लोट लोट कर रज लागे रँगरीतन ॥ निशिदिन निर-
ख यशोदा नंदन अरु यमुना जल पीतन ॥ परसत सूर होत
तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६०२ ॥

राग बिलावल ॥ कहाकरूं बैकुंठहिं जाय ॥ जहां नहीं
नंद जहां न यशोदा जहां न गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहां न-
हीं जल यमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाय॥ प-
रमानंद प्रभु चतुर ग्वालनी ब्रज रज तज मेरी जाय ब-
लाय ॥ ६०३ ॥

राग गौरी ॥ ब्रज रज मोहनी हम जानी ॥ मोहनि कुं-
ज मोहन श्रीबृंदाबन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नार
सकल गोकुल की बोलत अमृत बानी ॥ श्रीभट के प्रभु
मोहन नागर मोहनी राधारानी ॥ ६०४ ॥

राग शहानो ॥ धनि धनि श्रीबृंदावन धाम ॥ जाकी

जो कियो जिमि छत्र पुरंदर कारन ॥ जो खग होऊं बसेरो करूं जहां कालिंदी कूल कदंब की डारन ॥ ५९५ ॥

राग चैतीगौरा ॥ यमुना पुलिन कुंज गहबर की कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचाऊं ॥ पद पंकज प्रिया लाल मधुप ह्वै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊं ॥ कूकर होय बन बीथिन डोलों बचे सीथ रसिकन के पाऊं ॥ ललित किशोरी आश यही मम ब्रज रज तज छिन अनत न जाऊं ॥ ५९६ ॥

राग देस ॥ अब बिलंब जिन करो लाडली कृपा दृष्टि टुक हेरो ॥ यमुना पुलिन गलिन गहबर की बिचरूं सांझ सबेरो ॥ निशि दिन निरखों युगल माधुरी रसकन ते भट भेरो ॥ ललित किशोरी तन मन अकुलत श्री बन चहत बसेरो ५९७ ॥

राग यमन ॥ प्यारीजी मोतन हूं टुक हेरो ॥ श्री बन द्रुमन लतन क नीचे रसमय चहूं गान गुण तेरो ॥ आन न जानों अन्य न मानों तूही कृपापद साधन मेरो ॥ ललित माधुरी आश पुरावो अब जिन करो हहा अवसेरो ॥ ५९८ ॥

कबित्त ॥ एक रज रेणुका पै चिंतामणि वार डारों वार डारों विश्व सेवा कुंजके बिहार पै ॥ लतान की पतान पै कोटि कल्प वार डारों रंभा को वार डारों गोपिन के द्वार पै ॥ ब्रजकी पनिहारन पै रची शची वार डारों बैकुंठ हू को वार डारों कालिंदी की धार पै ॥ कहै अभयराम एक राधा जूको जानत हों देवन को वार डारों नंदकेकुमार पै ॥ ५९९ ॥

राग झिंझोटी ॥ जो कोऊ वृंदावन रस चाखै ॥ भवन

प्यारे को सभ अँग नागर गोरी ॥ अति बिलास नव नव रुचि उपजत बल किंकनी झंकार॥अति प्रबीन रति कोक कलन में करत निकुंज बिहार॥ भजो० ॥ निर्खे निर्खे बल जाईं ॥ श्रम जल कण झलकाईं ॥ श्रम जल कन रहे झलक बदन बिब कहूं कहूं पीक जो सो है ॥ हँस मुर चित चोरत प्यारे को ऐसी को जिन मोहै ॥ चितहिं चिह्न रजनी के सजनी नयनन में मुसकाई ॥ जैश्रीहित ध्रुव सखी सरस रंग भीनी निर्खे निर्खे बल जाई ॥ भजो० ॥ ६०७॥

राग बहार ॥ वृंदावन विपिन सघन बंसीबट पुलिन रमन निध बन कोकला वन मोहन मन भावै॥ सेवा कुंज सुखको पुंज जहां राजत पीया प्यारी ललतादिक संग लिये उमग उमग गावै॥ यमुना जल अति गंभीर कदमन की जहां भीर ललित लता कुसम भार अपने बरसावै ॥ हंस मोर कोकिला पपीहा शब्द कैर पशुपक्षी दास कान्हर राधा कृष्ण राधा कृष्ण गावै॥ ६०८॥

राग धनाश्री ॥ नमो नमो वृंदावनचंद ॥ आदि अनंत अनादि एक रस पियाप्यारी विहरत स्वछंद ॥सत चित आनंद रूप घन खग मृग द्रुम बेली और वृंद ॥ भगवत रसिक निरंतर सेवत मधुप भए पीवत मकरंद ॥६०९॥

कबित्त ॥ नंद के आनंद हो मुकुंद परमानंद हरि काटो जम फंद मोहिं भय सों बचाइये ॥ नहीं जानों ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कीयो भन्यो मान ते हँकार प्रभु कैसे तोहिं

महिमा वेद बखानत सबविधि पूरणकाम ॥ आश करत हैं जाकी रज की ब्रह्मादिक सुर ग्राम ॥ लाड़ली लाल जहां नित विहरत रति पति छवि अभिराम ॥ रसिकन को जीवन धन कहियत मंगल आठो याम ॥ नारायण बिन कृपा युगल वर छिन न मिले विश्राम ॥ ६०५ ॥

राग दादरा ॥ ऐसो कब करहै, मन मेरो ॥ कर कर्वा गुंजन के हर्वा कुंजन माहिं बसेरो ॥ ब्रजवासिन के टूक जूँठ और घर घर छाछ महेरो ॥ भूख लगे तब मांग खाय हों गिनो न सांझ सवेरो ॥ इतनी आश व्यास की पुजिये मेरो गांव न खेरो ॥ ६०६ ॥

राग परज ॥ भजो मन वृंदावन सुखदाई ॥ अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरंग चित्र छबि कालिंदी मणि कूलें ॥ लतन रहे भर पाय सखी यह कंचन के द्रुम मूलें ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहां वरण वरण छबि छाई ॥ सहज रैन सुख दैन विराजत वृंदाबन सुखदाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुंजहिं ॥ लालन निरख होत सुख पुंजहिं ॥ निरख होत सुख पुंज कमल दल रचीहै सुंदर सैन ॥ बहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मैन ॥ डोलत केक कार पिक बोलत जित तित मधुपन गुंजहिं ॥ रत्न खिचत फूलन सों फूला राजत नवल निकुंजहिं ॥ भजो० ॥ करत निकुंज विहार ॥ सखियन प्राण अधार ॥ सखियन प्राण अधार रसिक वर नवल किशोर किशोरी ॥ हँस मुर चित चोरत

आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हो तो दया जीमें धरोईगे॥ मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीबन के तारक गरीब हो तो विरद बरोईगे॥ मेरी करनी पै कछु मुकर न कीजे कान्ह करुणानिधान हो तो करुणा करोईगे॥ ६१४॥ श्याम घन तनुपर बिज्जुसे दशन पर माधुरी हँसन पर खिलत खगी रहे। खौर वारे भाल पर लोचन बिशाल पर उर वनमाल पर जुगत जगी रहे॥ जंघ युग जानु पर मंजु मुरवान पर श्रीपति सुजान मति प्रेम सों पगी रहे॥ नूपर नगन पर कंज से पगन पर आनँद मगन मेरी लगन लगी रहे॥ ६१५॥ जौन हाथ वामन हो बलि द्वारे दान मांग्यो जौन हाथ कूबरी मिलाई गह गात सों॥ जौन हाथ प्रहलाद तात सों उबार लीनो जौन हाथ कंस माऱ्यो बलभद्र साथ सों॥ जौन हाथ गोपन को गिरिवर की ओट कीनो जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजात सों॥ हौं तो कहूं बार बार सुनो नाथ एक बार वही हाथ गहो मोको हाथी वारे हाथ सों॥ ६१६॥ दीनदयालु सुने जब ते तबते मनमें कछु ऐसी बसी है॥ तेरो कहायके जाऊं कहां तुमरे हितकी पट खैंचि कसी है॥ तेरो ही आसरो एक मलूक नहीं प्रभु सों कोउ दूजो यशी है॥ एहो मुरार पुकार कहों अब मेरी हँसी नाहिं तेरी हँसी है ६१७ मोरमुकुट वारो धरे भेष नटवारो छुटी लोल लट वारो सोतो जगत उज्यारो है॥ सांवरे बरण वारो मुरली धरण वारो संकट हरण वारो नंदजूको प्यारो है॥ दानव दलन वारो छवि को छलन वारो मंद

ध्याइये॥ सुनो कृष्ण हरी जैसी करीसों करी दयालु तैसे दीन जान मेरी पीर को मिटाइये॥ सुख के निधान दान दीजे प्रेम भक्ति हू को अपने चरणारविंद में चित्त मयाराम को लगाइये॥ ६१०॥ तारो पतित जानके सुधारो बिरद आनके काढो भुजा तानके कहाँ देर डारी है॥ सुदामा यार तार्‍योहै प्रह्लाद तैं उबार्‍योहै द्रौपदी की लाज राखी सभादेख सारी है॥ गज ने ध्यायो प्रभु गरुड छोड धायो व्रज को बचायो ताते नाम गिरिधारीहै॥ दास तो पुकारे प्रभु काटिये कष्ट कोटि भारे अरजी हमारी आगे मरजी तिहारीहै ६११॥ आप सब नेरे और दूरकी पहचानतहो छिपी नाहिं कूर की और साहिब शऊर की॥ निकता निवाजी कर राजी छिन ही में होत करत इतराजी नाहिं सुनके कसूर की॥ तुमसों न दूसरो दयालु श्री बिहारी लाल जाहि लाज आवे निज जन के जरूर की॥गरजी बिचारे को तो अरजी कियेही बने मानी न माननी यह मरजी हुजूर की॥ ६१२ ॥ दीनानाथ दयासिंधु आरत हरण भारी द्रौपदी उबारी तैसे मोहू को उबार ल्यो॥ गणिका उबारी गज संकट निवारी प्रहलाद हितकारी दुख दारुण निवार ल्यो॥ गौतम त्रिया तारी चरणांबुज रज धारी गो ब्राह्मण हितकारी भवसागर उधार ल्यो॥टेरत प्रभु नंदलाल दीनबंधु भक्त पाल करुणामय कृपालु लाल विरद को सम्हार ल्यो॥६१३॥मैंतो हूं पतित आप पावन पतितनाथ पावन पतित हो तो पातक हरोइंगे॥ मैंतो महादीन

जनी जठर अंतरगत शत अपराध करै ॥ तौऊ तनय तन तोष पोष चित बिहँसत अंक भरै ॥ यदपि बिटप जर हतन हेत कर कर कुठार पकरै ॥ तदपि स्वभाव सुशील सुशीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ कारण करन अनंत अजित कह किहि बिधि चरण परै ॥ यह कलिकाल चलत नहिं मोपै सूर शरण उबरै ॥ ६२२ ॥

राग भैरवी ॥ जेजन शरण गए ते तारे ॥ दीनदयालु प्रगट पुरुषोत्तम सुनिये नंददुलारे ॥ माला कंठ तिलक माथ दे शंख चक्र बपु धारे ॥ जितने रवि छाया के कनका तितने दोष हमारे ॥ तुमरे दरश प्रताप तेज ते तत् छिन ते सभ टारे॥मानकचंद प्रभु के गुण ऐसे महा पतित निस्तारे ६२३

राग धनाश्री ॥ कबहूं नाहिंन गहर कियो ॥ सदा स्वभाव सुलभ सुमरन वश भक्तन अभय दियो ॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर कमल लियो ॥ अघ अरिष्ट केशी काली नथ दावा अनल पियो ॥ कंसबंश बध जरासन्ध हत गुरु सुत आन दियो ॥ कर्षत सभा द्रुपद तनया को अंबर आन छियो॥ काकी शरण जाउँ यदुनंदन नाहिंन और बियो॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो ॥ ६२४ ॥

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल ॥ काम क्रोध को पहर चोलना कंठ बिषय की माल ॥ महा मोह के नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना बिधि की ताल ॥ माया को कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ को-

सी चलन वारो पोखी उर धारो है॥ कंज से चखन वारो भृगु-
लता लख वारो मोरपक्ष वारो सो रखवारो हमारो है ६१८॥
देव हग तारे ध्याहिं देव तारे एते पतित तारे जेते नभ में न
तारे हैं ॥ तारे रतनारे जिन कई कोट दीनन के दुःखबिडारे
श्रीपति पुकारे हैं॥ नव नीर घन कारे राधा के प्राण प्यारे य-
शोदा के बारे हैं॥ नंदके दुलारे धरा धरन के धरन हारे मोर
पक्षवारे सो रखवारे हमारे हैं॥ ६१९ ॥

राग जंगला ॥ श्याम सुंदर मनमोहनी मूरत सुंदर रूप
उजारी रे ॥ चरण कमल पिंडरी जंघन पर सोहत कट लच-
कारी रे ॥ नाभि गंभीर हृदय अति कोमल कृपासिंधु बनवा-
री रे ॥ भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरिधारी
रे ॥ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लख छक वलिहारीरे॥
नाशा नयन भौंह अति वांकी जिन मोही व्रजनारी रे ॥ श्रव-
ण कपोलन पर छूटी वे नागिन लट बलदारी रे ॥ भाल वि-
शाल पेच शिर जडा मुकुट झुकन सुख कारी रे॥ युगल कि-
शोर मोर पख धारी अब क्यों सुरत बिसारी रे॥ ६२० ॥

राग भैरवी ॥ मेरी तो बिहारी जी प्यारे तोहिं लाज॥
माया फंद गले में डारयो जग भर्मायो वे काज ॥ भवसागर
के पार जानको पायो नाम जहाज ॥ वलिहारी का बेडा पार
उतारो अपनो जान व्रजराज ॥ ६२१ ॥

राग बिलावल ॥ माधोजू जो जन ते बिगरै ॥ सुन कृ-
पालु करुणामय कबहूं प्रभु नाहिं चित्त धरै ॥ ज्यों शिशु ज-

राग झिंझोटी ॥ मोसम कौन अधम जग माहीं ॥ भ्रमत रहत नित विषय वासना तज निध बन द्रुम बेलिन छाहीं॥ चिंतन करत न ललितकिशोरी युगल लाल दीने गर बाहीं॥ निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछाहीं ६२९

राग धनाश्री ॥ मेरी सुध लीजो श्री नंदकुमार ॥ अधम उधारन नाम तिहारो मैं अधमन सरदार॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार ॥ शोभन जनकी तारन बिरियां लाई एती बार ॥६३०॥ मेरी सुध लीजो श्री ब्रजराज॥ और नहीं जग में कोऊ मेरो तुमहीं सुधारन काज ॥ गणिका गीध अजामिल तारे और शबरी गजराज ॥ सूर पतित तुम पतित उधारन बांह गहे की लाज ॥ ६३१ ॥

राग बिलावल॥तुम गुपाल मोसों बहुत करी॥नर देही सुमरन को दीनी मो पापीसे कछु ना सरी॥ गर्भ बास अति त्रास अधोमुख ताहि न मेरी सुध बिसरी ॥ पावक जठर जरन नहिं दीनो कंचन सी मोरी देह करी ॥ जग में जन्म पाप बहु कीने आदि अंत लौं सब बिगरी ॥ सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद की लाज धरी ॥ ६३२ ॥

राग पीलों ॥ टुक नजर मिहर दी देख असांवल सांवरो गिरिधारी॥चरण सपरश अहल्या तारी द्रुपद सुता की लज्जा राखी पाप करंती गणिका तारी सोच कहा मेरी वारी ॥ भक्त सुदामा के दरिद्र विदारे जल डूबत गजराज उबारे अजामील से पापी तारे हमरी कहा बिचारी॥

टिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहीं काल ॥ सूरदास की सबी अविद्या दूर करो नंदलाल ॥ ६२५ ॥

राग कल्यान ॥ तुम्हारे आगे हौं बहुत नच्यो ॥ सुनिये दानी दयालु देव मणि बहु बड रूप रच्यो ॥ कियो स्वांग जल हूं थल हूं में एकै तो न बच्यो ॥ शोध सबै गुण गूढ दिखाए अंतर हो जु सच्यो ॥ रीझत नाहिं गोविंद गुसाईं कहा कछु जाय जच्यो ॥ इतनी तो कहो सूर पुरोदै काहे मरत पच्यो ॥ ६२६ ॥

राग टोडी ॥ दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी ॥ अजामेल गीध ब्याध इनम कहो कौन साध पक्षीहूं पद पढात गणिका सी तारी ॥ध्रुव के शिर छत्र देत प्रहलाद को उबार लेत भक्त हेत बांध्यो सेत लंकपुरी जारी ॥ तंदुल देत रीझ जात साग पात सों अघात गिनत नाहीं जूठे फल खाटे मीठे खारी ॥ गज को जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी ॥इतने हरि आय गए बचनन आरूढ भए सूरदास द्वारे ठाढो आंधरो भिखारी ६२७॥

राग धनाश्री ॥ मोसम कौन कुटिल खल कामी॥ जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी ॥ भर भर उदर विषयन को धावों जैसे शूकर ग्रामी ॥ हरि जन छांड हरी बिमुखन की निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बडो है मोते सब पतितन में नामी ॥ सूर पतित की ठौर कहां है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ६२८ ॥

शरीर ॥ रंका तार्‍यो बंका तार्‍यो तार्‍यो सधन कसाई ॥ सुआ पढावत गणिका तारी तारी मीराबाई ॥ धने भक्तका खेत जमाया नामे छान छवाई ॥ सैन भक्त की विपति निवारी आप भयेप्रभु नाई ॥ वृंदावन की कुंज गलिन में लगी श्याम से डोर ॥ अबकी बेर उबारो प्यारे लीनी कबीरा ने ओट ॥ ६३६ ॥

राग देस सोरठ ॥ सुन लीजै विनती मोरी ॥ मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ तैं पतित अनेक उधारे ॥ भवसागर पार उतारे ॥ मैं सब का नाम न जानूं ॥ मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥ अंबरीष सुदामा नामां ॥ पहुंचाये हैं निज धामां ॥ ध्रुव पांच बरस का बाला ॥ तैं दर्श दियो नंदलाला ॥ धन्ने का खेत जमाया ॥ कबीर घर बैल ल्याया ॥ शबरी के तैं फल खाए ॥ सभ काज किये मन भाए ॥ सधना ते सैना नाई ॥ तैं बहुत करी अपनाई ॥ कर्मा की खिचडी खाई ॥ तैं गणिका पार लगाई ॥ मीरा तुमरे रंग राती ॥ यह जानत हैं सब साथी ॥ चरणदास तेरो यश गावे ॥ भव जन्म मरन नहिं पावे ॥ ६३७ ॥

राग कान्हरो ॥ ऐसी कब करहो गोपाल ॥ मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल ॥ चित चरणनजु निरंतर अनुरत रसना चरित रसाल ॥ लोचन सजल प्रेम पुलकत तनु कर कंजल दल माल ॥ ऐसी रहत लिखत छिन छिन जम अपनो भायो भाल ॥ सूर सुयश रागी न डरत मन सुन जातना कराल ॥ ६३८ ॥

सकल धरणि के भार उतारे लंकापति रावण तैं मारे हरणा-
कुश नख उदर बिदारे महा दुष्ट बल कारी ॥ भीर समय प्र-
भु लेत बचाई बाहन तज पायन उठ धाई निज भक्तन के स-
दा सहाई सुध लेहु बेग हमारी ॥ नाम सुजानराय तेरो कहि-
ये निशि दिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब
तुमको सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ६३३ ॥

राग देस सोरठ ॥ प्रभु मोरे औगुण चित्त ना धरो ॥ स-
मदरशी है नाम तिहारों चाहे तो पार करो ॥ इक नदियाइक
नाले कहावत मैलो ही नीर भरो ॥ जबमिल करके
एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजा में राख्यो
इक गृह बधिक परो ॥ पारस गुण औगुण नहीं चितवे कंचन
करत खरो ॥यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो ॥
अबकी बेर मोहिं पार उतारो नहीं प्रण जात टरो ॥ ६३४ ॥

राग सोरठ ॥ म्हाने पार उतारो जी थाने निज भक्तन की
आन ॥ हमरे औगुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह बश भूल्यो पद निर्वान ॥ अबतो
शरण गही चरणन को मत दीजो मोहिं जान ॥ लाख चुरा-
सी भरमत भरमत नेकन परी पछान ॥ भवसागर में बह्यो
जात हों रखिये श्याम सुजान ॥ हौं तो कुटिल अधम अपरा-
धी नहिं सुमरयो तेरो नाम ॥ नरसी के प्रभु अधम उधार-
न गावत वेद पुरान ॥ ६३५ ॥

राग बडहंस ॥ कहोजो कैसे तारोगे मेरो औगुण भऱ्यो

की जाय प्रतिज्ञा दीनी धरू राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥ सुवा पढावतगणिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नानक वेदी कियो हजूरी राख्यो लायतनी ॥दुनोदास प्रभु संतसहाई असुर संहारत वेगही आई ताको नाम हृदय में राखो सुमरो एक मनी ॥ ६४१ ॥

राग भूपाली जंगला ॥गज की बाणी सुनके सिंहासन तज उठ धाए महाराज ॥ श्री श्री श्री चकृत भई सुनके खगपति पार न पाए महाराज ॥ कटि को पीतांबर कहूं गिरोहै तनुकी सुध बिसराए महाराज ॥ ग्राह मार गजराज उबाऱ्यो सुरन सुमन झर लाए महाराज ॥ रत्न हरी प्रभु शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज ॥ ६४२ ॥

राग बिहाग ॥ दीन भयो गजराज हीन भयो बल हूं ते टूट गयो मान टेऱ्यो हरी हरी करक ॥ पौढे प्रभु रमा संग पीत पट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयना आये भरके ॥ आधीरात धाये नाथ चक्र सुदर्शन लिये हाथ तोड दीने तंदुवा जरी जरी करके॥ तुलसीदास त्रिलोकी नाथ भक्तन के सदा साथ गरुड छोड धाये नाथ करि करि करके॥ ६४३ ॥

चौपई ॥ द्रौपदी धाऱ्यो ध्यान जबहिं मन आतुर होई ॥ तुम बिन श्री नंदलाल मेरो नहिं कोई॥बूडत हों दुख सिंधु में, शरन द्वारकानाथ ॥ त्राहि त्राहि सुध लीजिये, अब म भई अनाथ ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोवर्द्धन धारी ॥ हाय हाय बलबीर हाय श्री कुंज बिहारी ॥ हाय

राग झिंझोटी ॥ राधा रमण चरण जो पाऊं ॥ शुक समान दृढ कर गह राखों नलनी सम दुलराऊं ॥ सौरभ युत मकरंद कमल बर शीतल हीय लगाऊं ॥ बिरह जनित दृग तपत किशोरी सहजे निरख नशाऊं ॥ ६३९ ॥

राग सारंग ॥ आनंद कंद सुख निधान दीनानाथ भक्तपाल शोभा सिंधु राखो मान अनेक बिघन टारियेजो ॥ जहां जहां परी भीर तहां तहां धरी धीर गरुड छोड बेग धाए ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदी को दिये चीर काटत प्रभु जनकी पीर भक्त हेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी ॥ कहत हैं महीधर दास चाहत प्रभु पद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुसे उबारिये जी ॥ ६४० ॥

राग प्रभाती ॥ नाम की पैज राखो धनी ॥ संकट काट निवाजे केते गिनत न जाय गिनी ॥ खंभ ते प्रह्लाद छुडाए द्रौपदी के पुनि चीर बढाये गज के फंदन काट निकाले सुनत ही टेर कनी॥नामदेव की गऊ जिवाई धन्ने के दुध पीया जाई सुदामाके मंदिर ऊंचे साजे सुरत सों सुरत बनी ॥ कबीर राख हस्ती से लीनो सूर भक्त को दर्शन दीनो पीपा बीच सभा कर सांचा दियो मिलाय जनी ॥ जयदेव की अष्टपदी बिचारी मीराबाई को जहर निवारी रामदास को कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु प्रणी ॥ भीलनी ते लै बन फल खाए त्रिलोचन के व्रतिया हो धाए अंबरीख भक्त को बरत रखायो चक्रकी फेर अनी ॥ कर्माबाई की खिचडी लीनी सैने

मौन धरी॥ अब नहीं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी॥ बसन प्रवाह किये करुणानिधि सैना हार परी ॥ सूर श्याम जब सिंह शरणाई स्यालों की काहि डरी॥ ६४५॥

ठुमरी॥जब पट गह्यो दुशासन कर सों॥ इत उत चितै सकुच कमठी जिम करत पुकार राधिकाबर सों ॥ हो यदुनाथ अनाथ होतहों कुल परिवार सभापति घर सों॥ बूडत बेग बांह गह राखो दीनानाथ दुःख के सरसों ॥ हो भगवंत अंत पछितैहो बहुरि मिलोगे आय नरहरि सों॥ युगल करी मानो बसन पूतरो लई लपेट शोश पद करसों॥ ६४६ ॥

कवित्त॥ दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु दीन ह्वै के द्रुपद दुलारी यों पुकारी है॥ आपनो सबल छाँड ठाढे पति पारथ से भीम महा भीम ग्रीवा नीचे कर डारी है॥ अंबर लौं अंबर पहाड कीनो शेश कबि भीषम करण द्रोण सभो यों बिचारी है ॥ सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है॥ ६४७॥

राग देस॥ मेरे माधोजी आयों हौं सरे॥ तेरा बार बार यश गाऊं सांवरे आयों हौं सरे ॥ करुणा करे लिखे गुणवंती यह मन में उचरे॥ लिख पतियां द्विज हाथ पठाऊं द्वारका गमन करे ॥ लगन लिखाय चंदेरी को भेजो कागज मेल धरे॥ रुकमैया जब मानत नाहीं कूडे बचन करे॥ दल जोडे शिशुपाल जो आए लंगर घेर खडे ॥ पदम के स्वामी बेग पधारो रुक्मिणि यादकरे॥ ६४८ ॥

हाय राधारमण,हा श्रीकृष्ण मुरार॥ हाय हाय रक्षा करो,श्री ब्रजराज दुलार॥ शरन शरन सुख धाम शरन दुख भंजन स्वामी॥ शरन शरन रछपाल शरन प्रभु अंतरयामी॥ शरन परी मैं हारके, शरणागत प्रतिपाल॥लज्या राखो दास की, दीनानाथ दयाल॥ भीर परी प्रहलाद रूप नरसिंह बनायो॥ गज ने करी पुकार पांय प्यादे उठ धायो॥ दुर्बाशा अंबरीष हित,निज जन करी सहाय॥ कौन अवज्ञा दास की, बिलम करी यादवराय॥ युग युग भक्त सहाय पैज तिनकी तुम राखी॥ सभही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी॥ मैं तो दासी चरण की, जानत सभ संसार॥बिरद आपना जानके, लज्याराख मुरार॥ अंतर्यामी सांवरे बेर इतनी क्यों लाई॥ कापै करूं पुकार ताहि तुम देहु बताई॥ तुम माता तम पिता तुम,बांधव सुहृद सुबीर॥ तुम बिन मेरो कौन है,जाहि सुनाऊं पीर॥ नगर द्वारका माहिं सार खेलत गिरिधारी॥ जाना श्री बलबीर दीन होय दासो पुकारी॥ नयन रहे जल पूरके, पासा डार अनंत॥पचहारी सैना सकल, चीर न आयो अंत॥ नग्न न होई द्रौपदी,रक्षा करी मुरार॥ पुष्प देव वर्षा करी,जय जय शब्द उचार॥ ६४४॥

राग धनाश्री॥ लज्जा मोरी राखो श्याम हरी॥ कीनी कठिन दुशासन मोसे गह केशों पकरी॥ आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी॥ पांचो पांडव सब बल हारे तिन सों कछु न सरी॥ भीष्म द्रोण बिदुर भए बिस्मय तिन सब

श्याम भूषण वसन हैं अति श्याम ॥ श्यामा श्याम के प्रेम भीने गोविंद जन भए श्याम ॥ ६५२ ॥

राग आसावरी ॥ संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी ॥ संकट में इक संकट उपज्यो अरज करे मृग नारी॥ इक ढिग बावर जाय गडरिया इक ढिग स्वान बिहारी ॥ इक ढिग जा अग साडी इक ढिग जा बैठ्यो फंद कारी ॥ उलटी पवन बावर को लागी स्वान गयो ससकारी ॥ बरनी से भुवंग जो निकस्यो तिन डस्यो फंद कारी ॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरश को चरण कमल बलिहारी ॥ ६५३ ॥ बंधन काट मुरारी हमरे बंधन काट मुरारी ॥ ग्रह गजराज लडैं जल भीतर ले गयो अंबु मझारी ॥ गज की टेर सुनी यदुनंदन तजी गरुड असवारी ॥ पंचाली कारण प्रभु मोरे पग धारयो गिरिधारी ॥ पट शठ खैंचत निकसत नाहीं सकल सभा पचहारी ॥ चरण सपर्श परम पद पायो गौतम ऋषि की नारी ॥ गणिका शबरी इन गति पाई बैठ बिमान सिधारी॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन को सुख सों भज्यो इक बारी॥ विधीचंद दर्शन को प्यासो लीजिये सुरत हमारी॥ ६५४ ॥

राग कान्हरा ॥ दीजो दरश मोहिं चतुर भुजन कर ॥ शंख चक्र गदा पद्म धार कर ॥ पीतांबर ओढंबर साजे गल मोतियन की माल मनोहर ॥ ६५५ ॥

राग टोडी ॥ तुम बिन श्री कृष्ण देव और कौन मेरो॥

राग धनाश्री ॥ म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी ॥ छोनी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूं न सुनी ॥ कुंदनपुर को घेर लियो है गाढी विपति बनी ॥ हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके संग जीवत न- हीं जैहौं यह निश्चय मति ठनी ॥ थोरी से बहुती कर जानो और कहां को धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजे राख लो- जिये रुकमनी ॥ ६४९ ॥

राग आसावरी ॥ संतन प्रतिपाल राखो लाज हरि मे- री ॥ पिता कहै मैं ब्याहूं द्वारका भैया कहत चंदेरी ॥ लिख लिख पतियां रुक्मिणि भेजै दासी तडफ रही तेरी ॥ इतदल जोड शिशुपाल आयो ब्याहनको वर जोरी ॥ जब शिशुपाल बेदीपर बैठे जल बल हो जाऊं ढेरी ॥ सिंहको शिकार स्यार लिये जात है यह गति भई अब मेरी ॥ जो मेरे को बरलै जा- वै क्या पति रहजाय तेरी ॥ कुंदनपुरमें अंबिका देवी पूजन जात सबेरी॥पदम के स्वामी अंतर्यामी बेग खबर लीजे मेरी

राग सोरठ॥ सुन अलकां वाले कृष्णजी मोरे मनमें आ- न वसो ॥ जरद बाना पहर के शिर मुकुट को धरो ॥ चलतेहो टेढी चाल मत घायल मुझे करो ॥ शिवगिर की अरज मा- निये दीनानाथ हरे ॥ महाराज तेरी कृपा से कई कोटि पतित तरे॥ ६५१ ॥

राग झपताल ॥ मोमन बसो श्यामा श्याम ॥ श्याम तन मन श्याम कामर माल की मन श्याम ॥ श्याम अंगन

कुंदनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरो गाय ॥ भाग राख्यो हंस कारण काग पहुँचे आय ॥ लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गडाय ॥ रुकमैया शिशुपाल आए जरासंध सहाय ॥ अंबिका पूजन चली है रुक्मिणि संग सहेलियां नाल ॥ जे अंबे बर देत हैं श्री कृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आईहै रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय ॥ अपने बिरद की लाज राखो सूर बलि बलि जाय ॥ ६५९ ॥

कवित्त दण्डक ॥ कैसे तुम गणिका के औगुण नागिने नाथ कैसे तुम भीलनी के जूठे बेर खाए हो ॥ कैसे तुम द्वारका में द्रौपदी की टेर सुनी कैसे तुम गज के काज नंगे पग धाए हो ॥ कैसे तुम सुदामा के छिन में दरिद्र हरे कैसे तुम उग्रसेन बंदी ते छुडाएहो ॥ मेरी बेर एती देर कान मूंद रहे नाथ दीनबंधु दीनानाथ काहे को कहाएहो ॥ ६६० ॥

राग बिलावल ॥ किन तेरो गोविंद नाम धऱ्यो ॥ लेन देन के तुम हितकारी मोते कछु ना सऱ्यो ॥ विप्र सुदामा कियो अजाची तंदुल भेट धऱ्यो ॥ द्रुपदसुता की तुम पति राखी अंबर दान कऱ्यो ॥ संदीपन के तुम सुत लाए विद्या पाठ पढ्यो ॥ सूर की बिरियां निठुर होय बैठे कानन मूंद धऱ्यो ॥ ६६१ ॥

राग धनाश्री ॥ पतित पावन हरी नान तिहारो कौनेहूं धऱ्यो ॥ हौं तो दीन दुखित संशृत रत द्वारे रटत पऱ्यो ॥ गज गणिका नृग गोध व्याध ते मैं घट कहा कऱ्यो ॥ ना जानों यह सूर महाशठ कौन दोष बिसऱ्यो ॥ ६६२ ॥

कई अनेक ऐरावत ऐसो बल मेरो ॥ मैंतो अभिमानी
नाम जान्यो नहीं तेरो ॥ भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाल्यो
चित मेरो ॥ सभी कुटंब छोड नाथ सागर पद गेरो ॥ जल
में पग बोरत ही आन ग्राह घेरो ॥ मैं तो बल हीन नाथ
वाहि बल घनेरो ॥ मात पिता भाई बंधु कुटंब तो घनेरो॥दशो
दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो॥केते गज ग्राह फंद अतुलित
बल श्री मुकुंद काटो भव फंद प्रभु जरा नजर फेरो ॥ डूबत
गजराज जान टेरत श्री कृष्ण नाम दीनबंधु दीनानाथ बि-
रद जात तेरो ॥ लडत लडत देर भई आयो अंत मेरो ॥ जब
लग मैं जीवों नाथ जपों नाम तेरो ॥ गोपी नाथ मदन मोहन
करुणा कर हेरो॥सूरदास गरुड छोड करदियो निवेरो॥६५६

राग कान्हरा ॥ आए आए जी महाराज आए ॥ अपने
भक्तके काजसारे ॥ तज वैकुंठ तज्यो गरुडासन पवन वेग
उठि धाये ॥ जबके दृष्टिपरे नँदनंदन भक्त हेतु रूप धारे ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चितलाए॥ ६५७॥

राग देस ॥ म्हारो काई बिगरेगो थारोई बिरद लजेगो ॥
रुकमैया बंधू जो बैरी कूडी साख भरेगो ॥ जरासन्ध शिशु-
पाल जो आए भूप से भूप अडेगो ॥ पदम के स्वामी अंत-
र्यामी करता कौन कहेगो ॥ ६५८॥

राग देस सोरठ ॥ पाती मेरी द्वारका लेजाय ब्रिप्र तुम
बेग धायो जाय ॥ लिख लिख भेजूं चीठियां जीमें लिखां दु-
राय दुराय ॥ है कोई हितकारी हमरो सुनत ही उठ धाय।

पी था लिया नाम मरने पै बेटे का॥ वह नरक से जो बचा दिया तुम्हें०॥ जो गीध था गणिका जो थी जो ब्याध था मल्लाह था॥ उन्हें तुमने ऊंचों का पद दिया तुम्हें०॥ खाना भीलनी के वह जूठे फल कहीं साग दास के घर पै चल॥ यूं-हीं लाखों किस्से कहूं मैं क्या तुम्हें०॥ जिन बानरों में न रूप था नतो गुण ही था न तो जात थी॥ तिन्हें भाइयों का सा मानना तुम्हें०॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रज के सभ उ-न्हें इतना चाहा कि क्या कहूं॥ रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हें०॥ कहो गोपियों से कहा था क्या करो याद गीता की जरा॥ वैदा भक्त उद्धार का तुम्हें०॥ यह तुम्हारा ही ह-रीचंद है गो फसाद में जग के बंद है॥ है दास जन्म से आ-पका तुम्हें०॥ ६६५॥ अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत॥ पापी हूं मुझे अरज से आती है खिजालत॥ कैदी की तरह उमर कटी मोह के बश में॥ पाबंद किया लोभने बेदाना कफस में॥ हर एक घडी गुजरी है दुनिया की हवस में॥ इक दिन भी नहीं काम का हर माह बरस में॥ इक वक्त का तोशा नहीं और शिर पै सफर है॥ पापों का बहुत बोझ है बिशकिस्ता कमर है॥ हूं आपके चरणों से लगा जानलो इतना॥ कुछ और नहीं चाहता पर मान-लो इतना॥ जिस दम मेरी उम्मेद से घर वालों को हो यास॥ सब दूर हों सरकार ही सरकार हों इक पास॥ फैलीहुई शृंगार क फूलों की हो बूबास॥ मुरली की सदा

राग देश सोरठ ॥ हरि हौं बडी बेर को ठाढो ॥ जैसे और पतित तुम तारे तिनही में लिख काढो ॥ युग युग बिरद यही चल आयो टेर कहत हौं ताते ॥ मरियत लाज पंज पततिन में हौं घट कहो कहांते ॥ कै अब हार मान कर बैठो कै करहो बिरद सही ॥ सूर पतित जे झूठ कहत हैं देखो खोल बही ॥ ६६३ ॥

राग धनाश्री ॥ नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो ॥ तुम नाथन के नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो ॥ करम हीन जन्म को अंधो मोते कौन नकारो ॥ तीन लोक के तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो ॥ तारीजात कुजात प्रभू जी मोपर कृपा धारो ॥ पतितन में इक नायक कहिये नीचन में सरदारो ॥ कोटि पापी इक पा संग मेरे अजामील कौन बिचारो ॥ नाठो धरम नाम सुन, मेरो नरक कियो हठतारो ॥ मोको ठौर नहीं अब काऊ अपनो बिरद सम्हारो ॥ क्षुद्र पतित तुम तारे रमापति अब न करो जिया गारो ॥ सूरदास सांचो तब माने जो होय मम निस्तारो ॥ ६६४ ॥

गजल ॥ वह नाथ अपनीदयालुता तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ वह जो कौल भक्तों से था किया तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ सुनी गजकी ज्यूंहीं आपदा न विलंब छिन का सहा गया ॥ वहीं दौडे उठके प्यादे पा तुम्हें० ॥ यह जो चाहा दुष्टों ने द्रौपदी से कि शरम उसकी सभा में लें ॥ बढाया वस्तर को आप जा तुम्हें० ॥ अजामील एक जो पा-

सैयां गुन वालडियां वे मैं औगुन हारी॥जिस कारन शौह भेज्या लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा सोईयो गल्ल बिसारी॥ पकड तुला मैं तर पैयां लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा सिर पर गठरी है भारी॥ इकनां दाज रंगा लिया लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा आईया साडडी वारी॥ हुकम साईं दे पर्वत तरदे लाल वे मैनूं तारीं वेरब्बा बंदी कौन बिचारी॥ इकनां सेजां मानीयां लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा बंदीं रही है कुआरी॥ कैहे शाह हुसैन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैनूं तारीं वे रब्बा अमलां बाझ खुआरी॥ ६६७॥

राग वडहंस ॥ अपने संग रलाईं वे मैनूं अपने संग रलाईं ॥ राह पवां तां धाडी बेढे बेलें लखँ बलाईं॥ चीते बाघे कौडल हारे भखँर करन अदाईं॥ भार तेरे जागत्तर चढ्या बेडा पार लंघाईं॥ हौल दिले दा थर हर कंबे झबदे पार लंघाईं॥ पहलां नेह लगायासी रोवें आपे चाईं चाईं॥ मैं लायाके तुध लाया सी अपनी ओर निभाईं॥ जेकर आगे है लड लाया तीवें गले लगाईं॥बुल्ला शाह शहाना मुखडा घूंघट खोल दिखाईं ६६८॥

राग सोरठ ॥ मालक कुल आलम केहो तुम सांचे श्री भगवान॥ स्थावर जंगम पानी पावक धरती बीच समान॥ सभमें जलवा तेरा देखा कुदरत के कुरबान॥ सुदामा के दरिद्र खोए पांडे की पहचान ॥ दो मूठी तंदुल की चाबी बखशे दो जहान॥ भारत में अर्जुन की खातर आप

कान में आतीहो चशो रास ॥ होजाऊं फना पाऊं जो इतना मैं सहारा ॥ जब बंद हों आंखें तो मुकुट का हो नजारा दम लब पै हो सीने में तसव्वुर हो तुम्हारा ॥ मिट कर भी जुदाई नहो चरणों की गवारा ॥ जो ब्रज की रज है वही खाके कफे पा है ॥ मिट्टी यहीं रहजाय तो वैकुंठ में क्या है ॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकीं है ॥ जो जर्रा है यां खातमे कुदरत का नगीं है ॥ उठा है यहीं आके निकाबे रुखे तौहीद ॥ हर वक्त नजर आताहै यां जलवएजावीद ॥ जोखाक में यां मिल गए किसमत है उन्हीं की॥जो मिट गए यां आके हकीकत है उन्हीं की ॥ गलियों में जो यां घिसटे हैं जिन्नत है उन्हीं की ॥ जो भीखका यां खाते हैं दौलत है उन्हीं की ॥ वह ताज शाही पर भी कभी हाथ न मारें ॥ दुनिया का मिले तख्त तो इक लात न मारें ॥ कहसक्ताहूं क्या ब्रज की खूबी व लताफत ॥ वह आंख नहीं जिसमें हो नजारे की ताकत ॥ मैं यह भी नहीं चाहता तकलीफ उठाओ ॥ मैं यह भी नहीं चाहता बिगडी को बनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बताओ ॥ इतना भी नहीं हूं जिसे चरणों से लगाओ ॥ नकशे कफे पाफूंक निकलने को तो मिलजाय ॥ दो हाथ जमीं ब्रज में जलने को तो मिल जाय ॥ देखो न खुदाई की करामात बिगड जाय ॥ ऐसा नहो शोले की कहीं बात बिगड जाय ॥ ६६६ ॥

राग परज ॥ मैनूं तारी वे रब्बा बंदी औगुण हारी ॥ सभ

गट रूप करायो॥रंक जन्म के मित्र सुदामा कंचन धाम बना-
यो॥सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कह गायो॥६७१॥

राग धनाश्री ॥ अबगत गति जानी न परै ॥ मन बच
अगम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि संचरै ॥ अति प्र-
चंड पौरुष सों मातो केहरि भूख मरै ॥ तज उद्यम अकाश
कर वैठ्यो अजगर उदर भरै ॥ कबहुँक तृण बूडत पानी में
कबहुंक शिला तरै ॥ बागर से सागर कर राखे चहुँ दिशि
नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल बिकसाहीं जल में अगिन ज-
रै ॥ राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित त-
रजाय छिनक में जो प्रभु टेक धरै ॥ ६७२ ॥

राग सोरठ ॥ हरिकी गति नहिं कोऊ जानै॥ योगी यती
तपी पचहारे अरु बहु लोग सयाने ॥ छिन में राव रंकको
करहीं राव रंक कर डारे ॥ रीते भरे भरे ढरकावे यह ताको
ब्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारै आपे देखन हारा ॥
नाना रूप धरे बहु रंगी सभ से रहत नियारा ॥ अमित अ-
पार अलक्ष निरंजन जिन सभ जग भरमाया ॥ सकल भर-
म तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥ ॥ ६७३ ॥

राग कान्हरा ॥ ज्यों भावे त्यों राख गुसाईं ॥ हमरे सं-
कट काटो जी सांवरे कृपा करौ प्रहलाद की नांई॥तोहिं त्याग
और जो सुमरें सो नर पैं दे नरकन माहीं ॥ नंददास को
दीजै अभय पद चरण कमल राख्यो मन माहीं ॥ ६७४॥

राग सोरठ ॥ दरमां देठाढे दरबार ॥ तुझ बिन सुरत

भए रथवान ॥ उसने अपने कुल को देखा छूट गए तीर कमान ॥ ना कोई मारे ना कोई मरता तेरोही अज्ञान ॥ यह तो चेतन अचल अमर है यह गीता को ज्ञान ॥ मुझ आजज परकृपा कीजे बंदा अपना जान ॥ मीरा माधो शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ ६६९ ॥

राग कालिंगडा ॥ माधव तेरी गति किनहू नाजानी॥ मारन कारन चली पूतना स्तन विष लपटानी॥ ताको गति यशुमति की दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लाख गऊअन का दान करत है राजा नृग सों दानी ॥ ताको मुख किरले का दीना पाछे कूप पठानी ॥ बलिराजा स्वर्ग धाम की खातर रचे यज्ञ बहु दानी ॥ सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥बडे बडे राज भूपनकी बेटी तिन को योग दृढानी ॥ कुब्जा मालन कंस की चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पांचो पांडव अधिक सनेही सो हिमंचल गिरानी ॥ दुर्योधन राजाबडा अभिमानी ताको मुक्ति निशानी ॥ शेषनाग को नेता कीनो पर्बत कियो मथानी ॥ चौदा रत्न मथन कर काढे तब लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी ॥ सूरदास आनंद मगन भयो प्रेम भक्ति मन मानी ॥ ६७० ॥

राग कान्हरा॥पूतना बिष दे अमृत पायो॥जो कछु दैयत सो फल पैयत नाहक वेद ने गायो ॥ शत यज्ञ राजा बलि कीनो बांध पताल पठायो ॥लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिर-

नु ललीहै॥सुबल आदि ले सखा श्याम के राधा संग ललता जो अली है॥ नित को लाड चाव सेवा सुख भाग बेलि बढ सुफल फली है॥ वृंदावन बीथिन यमुना तट बिहरन ब्रज रज रंग रली है॥ कहे भगवान हित रामराय प्रभु सभते इनकी कृपा बली है॥ ६७९॥

राग बिहाग॥हमरी आंखन के दोउ तारे॥राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर ब्रज बरसाने वारे॥शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे॥ ६८०॥

कुन्डलिया॥ आचारज ललता सखी, रसिक हमारी छाप॥ नित्त किशोरउपासना, युगल मंत्र को जाप॥ युगलमंत्र को जाप वेद रसिकन की बानी॥ वृंदाबन निज धाम इष्ट श्यामा महारानी॥प्रेम देवता मिले बिना सिद्ध होय न कारज॥ भगवत सभ सुखदेन प्रगट भए रसकाचारज॥६८१॥

राग धनाश्री॥ हैं हम रसिक अनन्य प्रिया पीया कुंजमहल के बासी॥ नई नई केलि बिलोकत छिन छिन रति बिप्रीत उपासी॥ बीरी बसन सुगंध आरसी रुच लेकरत खवासी॥देत प्रसाद प्रेम सों हँस हँस कह कह भगवत दासी६८२

राग कालिंगडा॥ हम नँदनंदन मोल लिये॥ यम की फांस काट मुकराये अभय अजात किये॥ सभ कोऊ कहत गुलाम श्याम के गुनत सिरात हिये॥ सूरदास प्रभुजू के चेरे जूठन खाय जिये॥ ६८३॥

करे को मेरी दरशन दीजे खोल किवार ॥ तुम धन धनी उ-
दार त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार ॥ मागों कौन
रंक सभ देखों तुमही ते मेरो निस्तार ॥ जयदेव नामा विप्र
सुदामा तिन पर कृपा भई है अपार ॥ कह कबीर तुम समर-
थदाते चार पदारथ देत न बार ॥ ६७५ ॥

राग झंझोटी ॥ हरी अब बनिहै नाहिं बिसारे ॥ दीन द-
यालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजा-
मिल गणिका आदिक जा पन पै तुम तारे॥ मोहन लाल आ-
पनो पन सोई बनिहै नाथ सम्हारे ॥ ६७६ ॥

राग अडाना ॥ अपने बिरदकी लाज बिचारो ॥ सभ
घट के तुम अंतर्यामी भवसागर ते पार उतारो॥गुण औगुण
यह कछू नमानो ज्यों जानो त्यों पतित उधारो ॥ जानकी
दास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमन का दोष निवारो६७७॥

राग परज ॥ भरोसो कृष्ण को भारी॥ग्राह ने गजराज घे-
रचो बल कियो भारी ॥ हारके जब टेर कीनी धाए गिरिधारी
प्रह्लाद गिरि सों डार दीनो कीनी रखवारी ॥ अगिन हूं-
सों राख लीनो दूसरी बारी ॥ द्रौपदी की लाज राखी कूबरी
तारी ॥ ध्रुव को दीनी अटल पदवी कियो घर बारो ॥ बिभी-
षण को लंक दीनी रावणा मारी ॥ आगे पतित अनेक
तारे सूरकी बारी ॥ ६७८ ॥

रागबिभास ॥और कोई समझो तो समझो हमको एती
समझ भली है॥ ठाकुर नंद किशोर हमारे ठकुरायन वृषभा-

रिसाय असुरन को उदर छेद प्रहलाद तिलक थापत ॥ गहरे गंभीर ग्रस्यो काल बश ले ब्याल धरयो गज की जब टेर सुनी फंदन काटत ॥ बीच सभा आन खडी द्रौपदी को भीर पडी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढत ॥ दौडके हरि आन खडे अपने जन काज करे बिलम न लायो नेक दुनोदास आखत ॥ ६८६ ॥

राग सोरठ ॥ जानत प्रीति रीति यदुराई ॥ को अस जग मतिमंद मनुज जो भजत न सकल बिहाई ॥ कनक भवन में रुक्मिणि के संग राजत सभ सुख छाई ॥ रंक दीन लख मीत सुदामहिं धाय लियो उर लाई ॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहिं जहिं भई सगाई ॥ तहिं तहिं व्रज वासिन की बातें वर्णत बदन सुखाई ॥ छप्पन विधि ब्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई ॥ सो तज बिदुर साग भोजन कियो बहुत सराह मिठाई ॥ सुर दुर्लभ यदुकुल बिलास बर प्रभुता प्रभु बिसराई ॥ श्रीरघुराज भली भारत में पारथ सारथि आई ॥ ६८७ ॥

राग पूरवी ॥ जय मनमोहन श्याम मुरारी ॥ जय व्रजनाथ मुकुंद बिहारी ॥ जय नख पर श्री गिरिवर धारी ॥ जय श्रीकृष्णचंद्र बनवारी ॥ मोसे नाथ कछु लखी न जाई ॥ बरणों कहां लग तोर बडाई ॥ महिमा तुम्हारि अपार कन्हाई ॥ थकित भई बर्णत श्रुति चारी ॥ है अपार अलख तव माया ॥ ब्रह्मादिक ने भेद न पाया ॥ कोटिन मुनिन ने ध्यान

राग जंगला॥सांवरो जग तारन आयो॥निशि दिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो॥मथुरा में हरि जन्म लियो है गोकुल जाय बसायो लाल यशुमति को कहायो॥भानुसुता में कूद परे हैं विछुअर जाय जगायो॥ फणपति लै पाताल पठायो तीन लोक यश गायो मनो मेंघुला झुक आयो॥ भारत में प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथ में बहायो॥ गीता ज्ञान दया कर दीनो रूप बिराट् दिखायो भ्रम मन को जो मिटायो॥ वृंदावन में रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो॥ सूरदास यह प्रेम को झगरो हरष निरख कर गायो बहुरि इतना सुख पायो॥ ६८४॥

चौपई॥ चार बीस अवतार धर, जनकी करी सहाय॥ राम कृष्ण पूरण भए, महिमा कही न जाय॥ नेति नेति कह वेद पुकारैं॥ सो अधरन पर मुरली धारैं॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावैं। ताहि पूत कह नंद बुलावहिं॥ शिव सनकादिक अंत न पावैं। सो सखियन सँग रास रचावैं॥ सकल लोक में आप पुजावैं। सो मोहन ब्रजराज कहावैं॥ निरंकार निर्भय निरबाना॥ कारण संत धरे तिन जामा॥निर्गुण सरगुण भेद न कोई। आदि अंत मध्य एको सोई॥ योगी पावै योग सों, ज्ञानी लहै बिचार॥ नानक पावै भक्ति सों, जाको प्रेम अधार॥ ६८५॥

राग धनाश्री॥ हरि संतन की पैज राखत आप निरंकार भाषत॥ खंभ से प्रभु निकसे आय नरसिंह रूप होय

खबर मेरी लीजोगिरिधारी ॥ ऐसोको या जगतमें, मेरो राखनहार ॥ इतनी सुनत तब तुरतही,गज घंटा दियो डार ॥ करी अंडन की रखवारी ॥ नाथ० ॥ सभामें द्रुपदसुता नारी ॥ करन जो लगे जवाब भारी ॥ देखते सकल धर्म धारी ॥ कर्ण भीष्म द्रोणाचारी ॥ कहा भयो वैरी प्रबल, जो सहाय बलबीर ॥ दश हजार गज बल घट्यो, घट्यो न दश गज चीर॥दुशासन बैठ गयो हारी ॥ नाथ० ॥ ग्राह ने गज को गह लीनो ॥ परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥ भयो गजराजको बल हीनो ॥ याद तब गोविंद को कीनो ॥ सुनत हि टेर गजेंद्र की, उठधाए ब्रजराज ॥ सुध ना रही शरीर की, कियो भक्त को काज ॥ जनार्दन संतन दुख हारी ॥ नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ ६९० ॥

राग देस ॥ हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश ॥ हे पूरण हे सर्व में दुख भंजन गुण तास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक ॥ हे गोविंद हे, गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपर हर हरे है भी होवन हार ॥ हे संतन के सदा संग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर हौं दासरो मैं निर्गुण गुण नहिं कोय ॥ नानक दीजै नाम दान राखौं हिये परोय ॥ ६९१ ॥

छंद ॥ श्रीकृष्णजी के कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं ॥ मुकुट कुंडल कर लकुटिया सांवरे राधे वरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपियन मन हरं ॥ पी-

लगाया ॥ ॥ पर कछु समझ परी न तिहारी ॥ कहां तलक गुण तुमरे गाऊं ॥ कौन हृदय में ध्यान लगाऊं ॥ कहा समझ प्रभु तोहिं मनाऊं ॥शोच भयो जन उर यह भारी ॥सुध लीजे अबतो प्रभु मेरी॥निज जन समझ करो मतदेरी॥दीनदयालु शरण हूं तेरी॥कृपा करो भक्तन सुख कारी ॥६८८॥

राग जंगला ॥ जय नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमलाकंतं ॥ नाम अनंत कहां लग बरणों शेष न पावत अंतं ॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं ॥ मच्छ कच्छ शूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंतं ॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग लीला कोटि करंतं ॥ जन्म लियो वसुदेव देवि गृह नाम धर्‍यो नँदनंदं ॥ ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण फण निरत करंतं ॥ बलभद्र होकर असुर संहारे कंस के केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगपति चिंतामणि होय बैठे स्वछंदं ॥ कलियुग अंत अनंतत होकर कलकी रूप धरंतं ॥ दश अवतार हरिजूके गाए सूर शरण भगवंतं ॥ ६८९ ॥

लावनी ॥ नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ पतित पावन कलिमल हारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धार्‍यो ॥ नखन सों हरनाकुस मार्‍यो ॥ ब्रह्मादिक थरहर करें, लक्ष्मी ढिग नहिं जात ॥ जन अपने प्रह्लाद के, धर्‍यो शीश पर हाथ ॥ भक्त की विपति कटा सारी ॥ नाथ० ॥ जुडे दल दोऊ ओर भारी ॥ करी जब भारत की त्यारी ॥ भ्रमरी दीनहो पुकारी ॥

सागर के तरन को ॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी बदरीनाथ विश्वंभरं॥द्वारका के नाथ श्रीपति केशवं करुणामयं ॥ कृष्ण अष्टपदी की धुन सुन कृष्ण लोक सगच्छतं ॥ गुरू रामानंद नीमानंद स्वामी कबि दित्तदास समापतं ॥ ६९३ ॥

राग भैरव ॥ मंगल आरती गोपाल की ॥ नित उठ मंगल होत निरखे मुख चितवन नयन विशाल की ॥ मंगल रूप श्यामसुंदर को मंगल छबि भ्रुकुटी भाल की।चतुर भुजदास सदा मंगल निधि वानिक गिरिधर लालकी ॥ ६९४ ॥

राग रामकली ॥ आरती कीजै श्याम सुंदर की॥ नंदकुमार राधिका बर की॥ भक्ति कर दीप प्रेम कर वाती साधु संगत कर अनुदिनराती॥ आरती ब्रज युवती मन भावै ॥ श्याम लीला हित हरिबंश गावै॥ ६९५ ॥ आरती कीजै सुंदर वर की ॥ नंदकिशोर यशोदा नंदन नागर नवल ताप तम हरकी ॥ नव विलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन कर की ॥ बिहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया भुज धरकी॥ ६९६ ॥

राग कालिंगडा ॥ आरती लीजै श्री नंदके लाला मदन गुपाला॥ टेरत हैं कबके जन ठाढे होऊ बेग दयाला॥ कोटि शशि तेरे नख की शोभा कहां लौं दीपक बाला ॥ धुन मरदंग अनाहद बाजे क्या रंका मेरी ताला ॥ नाचत लक्ष्मी सदा तेरे आगे नाना बिधि बहु बाला ॥ खंड ब्रह्मंड त्रैलोक नाचे हौं क्या कीट कंगाला ॥ आछी तेरी आरती

त वस्त्र गरुड बाहन चरण नित सुख सागरं ॥ करतकेलि कलोल निशि दिन कुंज भवन उजागरं ॥ अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुस हरं ॥ गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुंदर केशवं ॥ बंसीधर वसुदेव छैया बलि छल्यो हरि बामनं॥जल डूबते गज राख लीनो लंका छेद्यो रावनं ॥सप्त द्वीप नौ खंड चौदा भुवन कीने रामजी इक पलं ॥ द्रौपदी की लाज राखी कहां लौं उपमाकरं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं ॥ कवि दित्तदास बिलास निशि दिन नाम जप नित नागरं ॥ ६९२ ॥

पुनःछंद ॥ प्रथमें गुरूजीके चरण बंदो जासों ज्ञान प्रकाशतं ॥ आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेव ते शिव शंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण यादवपति केशवं ॥ श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविंद माधव वासुदेव श्रीवामनं ॥ मच्छ कच्छ बाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरा में केशोराय बिराजे गोकुल बाल मुकुंदजी ॥ श्रीवृंदावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविंदजी ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे ॥ धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल वाल सखाबने ॥ ग्वाल बाल संग सखा बिराजें संग राधा भामनी ॥वंसीबट तट निकट यमुना मुरली की टेर सुहामनी ॥ कृष्ण कलिमल हरन सब के जो भजें हरि चरण को ॥ भक्ति अपनी देह माधो भव-

नूप अति राजत रमा ॥ जग करन पालक हरन सेवत चरण नित शारद उमा ॥ भुज चार कर में शंख चक्र गदा पदम अति राजई ॥ कटि पीत धोती किंकणी दोउ चरण नूपुर बाजई ॥ श्री सहित विष्णु स्वरूप ऐसो प्रेम से जो ध्यावई ॥ ततकाल पावन होतहै चारों पदारथ पावई ॥ ६९९ ॥

राग गुर्जरी ॥ श्रितकमलाकुच मंडल धृतकुंडल ए॥ कलित ललित वनमाल जय जय देव हरे॥ दिनमणि मंडल मंडन भवखंडन ए॥ मुनिजन मानस हंस जय जय० ॥ कालिय विषधर गंजन जनरंजन ए॥ यदुकुलनलिन दिनेश जय जय० ॥ मधु मुर नरक विनाशन गरुडासन ए ॥ सुर कुल केलि निदान जयजय० ॥ अमल कमल दल लोचन भवमोचन ए॥ त्रिभुवनभवन निधान जय जय० ॥ जनकसुता कृत भूषण जित दूषण ए ॥ समर शमित दशकंठ जय जय०॥ अभिनव जलधर सुंदर धृतमंदिर ए॥श्री मुख चंद्र चकोर जय जय० ॥ तव चरणे प्रणतावय मितिभावणए ॥ कुस कुशलं प्रण तेषु जय जय ० ॥ श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्ज्वल गीत जय जय० ॥ ७०० ॥

राग धनाश्री ॥ परम पुनीत प्रीति नँद नंदन यही बिचार बिचार॥कहो शुक श्री भागवत बिचार ॥ हरिजीकी भक्तिकरो निशिबासर अलप जीवन दिन चार॥चिंता तजो परीक्षित राजा सुन सिख सीख हमार ॥ कमलनयनकी लीला गावो मिट गये कोटि बिकार॥भजन करो विश्वास तजो नृप चिंता

आछी तेरी शोभा आछी तेरी भक्ति रसाला ॥ भगवान दास पर किरपा कीजे मेटियैजी यमजाला ॥ ६१७ ॥

राग श्याम कल्यान ॥ आरती युगल किशोर की कीजै ॥ आछे तन मन धन न्योछावर कीजै ॥ गौर श्याममुख निरखन कीजै ॥ हरि को स्वरूप नयन भर पीजै ॥ रवि शशि कोटि बदन जाकी शोभा ॥ ताहि देख मेरो मन लोभा ॥ फूलन की सेज फूलन गल माला ॥ रत्न सिंहासन बैठे नंदलाला ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहै ॥ नटवर भेष निरख मन मोहै ॥ ओढे नील पीत पट सारी ॥ कुंजन ललना लाल बिहारी ॥ श्री पुरुषोत्तम गिरिवर धारी ॥ आरती करत सकल ब्रज नारी ॥ नंद नँदन वृषभानु किशोरी ॥ परमानंद स्वामी अबिचल जोरी ॥ ६१८ ॥

राग बरवा ॥ कंचन सिंहासन रत्न जडित प्रकाश रवि सम सोहई ॥ तापर बिराजत श्याम सुंदर रूप मुनि जन मोहई ॥ मुख कमल पर अलिमाल सम अलकां कुंडल छबि पावई ॥ हरि नाशिका गर रुचिर मोती भाल तिलक सुहावई ॥ शिर मुकुट हीरा जडित कानन स्वर्ण कुंडल छाजई ॥ पट पीत गज मणि माल भूषण अंग धाम बिराजई ॥ शुभ कंठ कंठी मणि मयी उर माल बैजंती लसै॥ भृगु रेख कौस्तुभ मणि जनेऊ देव मुनि जन मन बसै॥ कंकण जडाऊ सहित पहुँची श्री कृष्ण हाथन में बने॥ प्रति अंगुरी मुँदरी बिराजत रत्न गन लागे घने॥ हरि बाम अंग स्वर्ण बरण अ-

ज लाज हिय धरके पांय पियादे धाए ॥ जहँ जहँ भीर परी भक्तन को तहँ तहँ होत सहाए ॥ जो भक्तन सों बैर करत है सो निज बैरी मेरो ॥ देख विचार भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो ॥ जीतों जीत भक्त अपने को हारे हार बिचारों॥सूर श्याम जो भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारों॥७०३

राग सारंग ॥ दास अनन्य मेरो निज रूप ॥ दर्शन निमिष ताप त्रयमोचन पर्सत मुकत करत गृह कूप ॥ मेरी बांधी भक्त छुडावै बांधे भक्त न छूटे मोही ॥ एक बेर मोको गह बांधे तो पुनि मोपै जुवाब नहोय ॥ मैं गुण बंध सकल को जीवन मेरे जीवन मेरे दास ॥ नामदेव जाके जीया जैसा तैसो ताको प्रेम प्रकास ॥ ७०४ ॥

राग बिभास ॥ ऊधो हौं दासन को दास ॥ जो जन मेरो नाम जपतहैं मैं तिनही घट प्रकास ॥ धन्ने के मैं गऊ चराइ नाने को देहरा फेराया॥त्रिलोचन के मैं भयो ब्रतीया सुदामें को दलिद्र हरिया ॥ कबीर के मैं रह्यो बनिजारा॥सैने की बिरती धाया ॥गज के जाय चरण गहे मैं काढ जलों थल ल्याया ॥ जो जन कहत करां मैं सोई संत मेरी रहरास ॥ हित चित प्राण भक्त हैं मेरे गावतहैं दुनीदास ॥ ७०५॥

राग काफी ॥ जो जन ऊधो मोहिं ना बिसारे ताहि ना विसारों छिन एक घरी॥ जो मोहिं भजे भजूं मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूं जन्म जन्म के फंदन राखों सुख आनंद करी ॥ चतुर सुजान सभामें बैठे दुःशासन अनरोतक-

शोक निवार॥खट्वांग दिलीप मुहूरत उधरे तुमरे हैं सतबार॥ तुम तो राजा परम भक्त हो मानो वचन हमार। हरि जीकी भक्ति युगोयुग बरणों आन धर्म दिनचार। एक समय दुर्वाशा पठये आए समय बिचार ॥ कै राजा मोहिं भोजन दीजै कै जावो ब्रत हार॥ राजा कहै मोहिं का शटक दीजो नाहिन और उपाय॥ द्रुपद सुता कहै कृष्ण सुमर लेहु तुमरे सदा सहाय॥ तब पांडव सुत सुमरन कीनो प्रगटे कृष्ण मुरार॥ चक्र सुदर्शन की सुधि आई ऋषि चले ब्रत हार॥ अष्टादश षट तीन चार मिल करते एक बिचार॥ एको ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार॥ सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार ॥ सूर भजन कलि केवल कीर्त्तन लज्जा कान निवार॥७०१॥

राग सोरठ ॥ टेर सुनो ब्रजराज दुलारे॥ दीन मलीन हीन शुभ गुणसों आय पर्‍यो हूं द्वार तिहारे॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीतम प्यारे॥ भ्रमत रह्यो इन संग बिषयन में तोपद कमलन मैं उर धारे॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गए भूल सो लिये उधारे॥यहां लौ खेप भरी रच पच के चकित रहे लख के बनजारे॥ अबतो एक बार कहो हँसके आजही सों तुम भए हमारे॥ याही कृपा ते नारायण की बेगि लगेगी नाव किनारे ॥ ७०२

राग मल्हार ॥ हम भक्तन के भक्त हमारे ॥ सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मोरी यह ब्रत टरत न टारे ॥ भक्तन का-

कोऊ कछु औरहूं फल कहो॥करम कोऊ करो ज्ञान अभ्यास हूं मुक्तिके यत्न कर वृथा देहो दहो ॥ रसिक बल्लभ चरण कमल युग शरण पर आश धर यह महा पुष्ट पथ फल लहो ७०९॥

राग मल्हार ॥ हमारे माई श्यामाजी को राज ॥ जाके अधीन सदाही सांवरो या व्रज को शिरताज ॥ यह जोरी अबिचल श्री बृंदाबन नहीं और से काज ॥ बिट्ठल विपुल विनोद बिहारन ज्यों जलधर सों गाज ॥ ७१० ॥

राग परज ॥ हम श्री श्यामा जू के बल अभिमानी ॥ टेढे रहैं मोहन रसिया सों बोलें अटपटी बानी॥पडे रहें अलमस्त झकोए शिरपर राधा रानी॥ किशोरी अली के प्राण जीवन धन बृंदाबन रजधानी ॥ ७११ ॥

कवित्त ॥ ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुराणन वेदन भेद सुन्यो चित चौगुने चायन ॥ देख्यो सुन्यो न कहूं कबहूं वह कैसे स्वरूप और कैसे सुभायन॥ ढूंढत ढूंढत ढूंढ फिर्यो रसखान बतायो न लोग लुगायन ॥ देख्यो कहां वह कुंज कुटीन में बैठो पलोटत राधिका पायन ॥ ७१२ ॥

राग कल्यान ॥ राधाजी सुहागन राधे रानी ॥ श्याम सुंदर ब्रजराज लडीलो ताके बश अभिमानी ॥ शोभाको शिर छत्र बिराजे बृंदाबन रजधानी ॥ जीत लियो ब्रजराज पपीहरा आनंद घन रसदानी ॥ ७१३ ॥

राग बिहाग ॥ राजत निकुंज धाम ठकुरानी ॥ कुसम सेज पर पौढी प्यारी राग सुनत मृदु बानी ॥ बैठी ललता

री ॥ सुमरन कियो द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर अंबार धरी ॥ ध्रुव प्रह्लाद रैनि दिन ध्यावें प्रगट भए बैकुंठ पुरी ॥ भारत में भँवरी के अंडा तापर गज को घंट ढुरी॥अंबरीष गृह आए दुर्बासा चक्र सुदर्शन छांहि करी॥ सूर के स्वामी गजराज उबारे कृपा करो जगदीश हरी ॥ ७०६ ॥

इति रागरत्नाकरे चतुर्थभाग संपूर्णम् ॥

अथ रागरत्नाकरे पंचम भागः॥

फुटकर पद ॥

राग रामकली ॥जयति श्री राधिके सकल सुख साधि के तरुण मणि नित्त नवतनु किशोरी ॥ कृष्ण तनु लीन घन रूप की चातकी कृष्ण मख हिमकरन की चकोरी ॥कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मनी कृष्ण दृग मृगज बंधन सुडोरी॥कृष्ण अनुराग मकरंदकी मधुकरी कृष्ण गुण गान रससिंधु बोरी॥ और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यो सुन्यो चतुर चौसठ कला तदपि भोरी॥बिमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा करत निज नाहकी चित्त चोरी ॥ प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी।७०७।धनि यह राधिका के चरण॥ शुभग शीतल अति सकोमल कमल के से बरण ॥ रसिक लाल मन मोद कारी विरह सागर तरण ॥ बिबस परमानंद छिन छिन श्यामजी के शरण।७०८।मेरी मति राधिका चरण रज में रहो ॥ यही निश्चय करयो अपने मनमें धर्‍यो भूलके

प्रेम भक्ति की महिमा सहचरि ब्यास बखानी ॥ ७१६ ॥

राग देवगंधार ॥ ब्रज नव तरुणी कदंब मुकुट मणि श्यामा आज बनी ॥ नख शिष लौं अंग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥ यों राजत कवरी गूंथत कच कनक कंज बदनी॥ चिकुर चंद्रकन बीच अरध विधु मानो ग्रसत फनी ॥ शौभग रस शिर श्रवत पनारी पिया सीमंत ठनो ॥ भ्रुकुटी काम कोदंड नयन शर कज्जलरेख अनी॥तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी॥दशन कुंद सरसाधर पल्लव प्रीतम मन समनो ॥ चिबुक मध्य अति चारु सहज सखी श्यामल बिंदु कनी ॥ प्रीतम प्राण रत्न संपुट कुच कंचुकी कसव तनी॥ भुज मृणाल बल हरत बलै युत परस सरस श्रवनो ॥ श्याम शीश तरु मनो मिंडवारी रची रुचिर रमनी ॥ नाभि गंभोर मीन मोहन मन खेलत को ह्रदनी॥कृश कटि पृथु नितंब किंकनी भृत कदली खंभ जंघनी ॥पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी ॥ नव नव भाव बिलोक भाम इव बिहरत वर करनी॥हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरत बिशद घनी॥ गावत श्रवणन सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥७१७॥

राग कान्हरो ॥ आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ॥ ब्रज युवती यूथ में रूप औ चतुरई शील शृंगार गुण सभन में आगरी॥कमल दक्षन भुजा बाम भुज अंस सखी गावती सरस मिल मधुरसुर राग री ॥ सकल विद्या विदित रहस हरबंश हित मिलत नव कुंज में श्याम बड भागरी ॥७१८ ॥

चरण पलोटत लाल दृष्टि ललचानी ॥ पांय परत सजनी के मोहन हित सों हाहा खानी ॥ भई कृपालु लाल पर ललता दे आज्ञा मुसुकानी ॥ आवो मोहन चरण पलोटो जैसेकुँवरि न जानी ॥ आज्ञा दई सखी को प्यारी मुख ऊपर पटतानी ॥ बीण बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजे सुख सानी ॥ गावनलगे रसिक मन मोहन तब जानी महारानी ॥ उठ बैठी व्यास की स्वामिन श्रीबृंदाबन रानी ॥ ७१४ ॥

राग रामकली ॥ नव कुँवर चक्र चूडा नृपति सांवरो राधिके तरुण मणि पट्टरानी ॥ शेश गृह आदि बैकुंठ पर्यंत लौं लोक थानैत ब्रज राजधानी॥ मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारों जहां भरत पानी॥सूर शशि पहरुवा पवन जल इंद्र चरण दासी भाट निगम बानी ॥ धर्म कुतवाल शुक सूत नारद जहां करत चरचादि सनकादि ज्ञानी ॥ सत्त गुन पौरिया काल बंधुवा जहां डांडी यत काम रति सुख निशानी ॥ कनक मरकत धरणि कुंज कुसमत महल मध्य कमनीय सैनीय ठानी ॥ पल न बिछुरत दोऊ तहिं न पहुँचत कोऊ ब्यास महलिन लिये पीकदानो ॥ ७१५ ॥

राग गौरी ॥ बृंदाबन के राजाहैं दोऊ श्याम राधिका रानी ॥ चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरै जहँ पानी ॥ कर्म धर्म दोऊ बटत जेवरी घर छाए ब्रह्मज्ञानी ॥ योगी यती तपी संन्यासी तिनहूं नेक न जानी ॥ पनिहारे वेद पुराण लगनिया गावत सगुण यां बानी ॥ घर घर

छूटे सेज हूं के सुख लूटे सूर प्रभु बिलसत कदम की छैयां ॥
राग प्रभाती ॥ छांडो कृष्ण युगल बैयां भोर भई अंगना ॥ दीपक की ज्योति फीकी चंद हूं को चांदना ॥ मुख को तंबोल फीको नयन हूं को अंजना ॥ पनिघट पनिहारी जात हौंभी जाउँ यमुना ॥ गैयां सब बन को जात पक्षी जात चुगना ॥ घर घर दधि मथन होत छनकत है कंगना ॥ ग्वाल बाल द्वारे ठाढे उठो नंद नंदना ॥ सूरश्याम मदन मोहन ऐसो नयन ठगना ॥ श्रीराधा जू के कुंडल सोहैं कृष्ण जू के बंगना ॥ ७२४ ॥

राग कालिंगडा ॥ प्रीतम नूपुर मति न उतारो ॥ इनकी धुन सुन पार परोसन कहा करेंगी हमारो ॥ भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज प्रण नाहिं टारो ॥ नारायण जे शरण चरण की तिन्हें न कीजे न्यारो ॥ ७२५ ॥

राग भैरव ॥ भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राण प्यारी ॥ बोलत तमचर मुखर सुहावन निशि तम बिगत भई उजियारी ॥ दधि मथ माखन तुमपै ल्याई मिश्रत मिश्री मधुर सुधारी ॥ ललतादिक सखियां सभ ठाढी मेवा पान लिये जल झारी ॥ सुन प्रिय बानी सुख रस सानी नयन कमल खोले गिरिधारी ॥ दरश परश नयनन फल पायो वार अपनपौ भई सुखारी ॥ आदि सनातन राधे मोहन बिलसत हुलसत संग सुकुमारी ॥ दंपत लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी ॥ ७२६ ॥

राग परज ॥ आज उज्यारी भई लो रात॥ आप उज्यारी तेरीसेज उज्यारी चमक सुंदर पीया प्यारी ॥ कान्हके शिर मुकुट बिराजै राधा शिर जरद किनारी ॥ ७१९ ॥

राग देवगंधार ॥ आज बन राजत युगल किशोर ॥ नंद नँदन वृषभानु नंदनी उठे उनींदे भोर॥ डगमगात पग परत शिथिल गत परसत नख शशि छोर ॥ दशन बसन खंडत मुख मंडत गंड तिलक कछु थोर ॥हित हरबंश सम्हार न तन मन सुरत समुद्र झकोर ॥७२०॥ आज अति राजत दंपति भोर॥सुरत रंग के रसमें भीने नागर नंद किशोर॥ अंसन पर भुज दिये बिलोकत इंदु बदन बिब ओर॥करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चित चोर॥ परिरंभन चुंबन आलिंगन सुर मंदिर कल घोर॥पग डगमगत चलत बन बिहरत नव निकुंज घन घोर॥ हित हरिबंश लाल ललना मिल हियो सिरावत मोर ॥ ७२१

राग बिलावल ॥ आज इन दोउअन पै बलि जैये ॥ रो-म रोम सों छबि बरसतहै निरखत नयन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये ॥ नारायण या गौर श्याम को हिये निकुंज बसैये ॥ ७२२ ॥

राग रामकली ॥ उरझ्यो नीलांबर पीतांबर महियां ॥ कुंडल सों लर लट बेसर सों पोत पट हारन सों ब-नमाल वैयां सों वैयां ॥ हंस गति अति छबि अंग अंग रही फबि उपमा बिलोकबे को पटतर नहियां ॥ काम के कलोल

रफ से क्या गुलाबकी क्यारी॥ क्या सर्व सुफेद कनेरहै क्या गुलाबांस न्यारी॥ हँस करके ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई॥ गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई॥ ॥ ७३० ॥ कीजे गमन भवन में वृषभानु की दुलारी॥ देखो बहार कैसी बड गोप की कुमारी॥ फूले गुलाब चंपा केसर की फूली क्यारी॥ सुंदर खिली चंबेली गेंदा खिले हैं चारी॥ चहूँ ओर मोर बोलैं कोयल की कूक प्यारी॥ पहरो सम्हार भूषण ओढो सुरंग सारी॥ जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी॥ माखन को चोर ठाढो बिनती करे तिहारी॥ ७३१॥ महलन चलो नवल अलबेली॥ रंग महल में सेज बिछीहै चुन चुन कुसुम चमेली॥ चंपा मरुवा और केवडा बिच बिच फूल रवेली॥ चित्रकारी मेरे देखोजी मंदिरमें सुंदर गर्ब गहेली॥ पुरषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि थारे चरण की मैं चेली॥ ७३२॥

लावनी॥ चल वृषभानु कुमारि बाग अवलोक बनी शोभा भारी॥ भांति भांतिके खिलेहैं फूल झुकी धरणी डारी॥ सुन पिया बचन चली हँस सुंदर पहुंची नजर बाग की ओर॥ बचन अमीसे कहतहैं नागरि से पिया नंद किशोर॥ देखो बाग मनोहरता क्यारिन में कैसी बनी मरोर॥ अति सुढार हैं रौस सुरखी पट्टी की हरी किनोर॥ फूले चीन गुलाब चारु गुलतुर्रा केतकी है न्यारी॥ भांति भांतिके०॥ गेंदा गुलाबांस गुलतुर्रा गुलसब्बु और गुलगोटी॥ गुल

राग रामकली ॥ लटकत आवत कुंज भवन ते ॥ दुर दुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथल गमन ते ॥ चौंक परत कबहूं मारग बिच चलत सुगंध पवन ते ॥ भर उसास राधा वियोग भय सकुचे दिवस रमन ते ॥ आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहूं प्यारी तन ते ॥ रसिक टरो जिन दशा श्याम की कबहूं मेरे मनते ॥ ७२७ ॥

राग कान्हरा ॥ प्रीतिकी रीति रंगीलोई जानै ॥ यद्यपि सकल लोक चूडामणि दीन अपनपौ मानै ॥ यमुना पुलिन निकुंज भवन में मान माननी ठानै॥निकट नवीन कोटि कामिन कुल धीरज मनहिं न आनै ॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यों आन आन सै बानै ॥ जय श्री हित हरवंश चतुर सोई लालहिं छाँड मैड पहचानै ॥ ७२८॥

राग रेखता ॥ हर एक तरफ चमन में कैसी बहारछाई ॥ चल देखिये छबीली गुलशन की खुशनुमाई ॥ गेंदा गुलाव तुर्रा क्या मालती निवाई ॥ फूलों के हार सेती क्या नरगसें सुहाई ॥ सखियों के संग जाके देखी बिपिन की शोभा ॥ नागर नवल छबीली छबि देखके मन लोभा ॥ फूलन की गूंथ वेनी सखियन भली बनाई ॥ हँस हँस के ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई ॥ ७२९ ॥ टुक बंगला में बैठो बाग की बहार है ॥ घर को न जावो प्यारो यां भई अवार है ॥ जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई ॥ क्या सर्व सुहागिल सेवती क्यू गुल डोरी लगाई ॥ चारों तरफ त-

नाई ॥ चलो न बेग कुँवर कुंजन में फूल रही फुलवारी प्यारी तोहिं श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ ७३५ ॥ ललित लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे ॥ मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समंसखि विरहिजनस्य दुरंते॥उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन जनित विलापे॥अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥ मृग मद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम विकाशे ॥ मिलित शिली मुख पाटलिपटल कृतस्मर तूण विलाशे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृत हासे ॥ बिरहिनि कृंतन कुंत मुखाकृति केतकि दंतुरिताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालिक जाति सुगंधौ मुनि मनसा मपि मोह न कारिणि तरुणाकारण बंधौ ॥ स्फुरदति मुक्तलता परिरंभन मुकुलित पुलकित चूते॥वृंदावन विपिने परिसर परिगत यमुना जल पूते ॥ श्रीजयदेव कवेरिद मुदयति हरि चरण स्मृति सारं॥सरस वसंत समय वन वर्णन मनुगत मदन बिकारं ॥ ७३६ ॥ देख सखीरी आज बन्यो श्री बृंदाबिपिन समाज ॥ आनंदत सभ लोक ओक सुख सदा श्याम को राज॥राधारमण वसंत मचायो पंचम धुन सुन कान ॥ धरणि गिरत सुर किन्नर कंन्या बिथकत गगनां ब-

इलायची लगीहै गुलमहिंदी रंगकी मोटी ॥ फूली गुलचांदनी भली यह गुल बहार झुक में लोटी ॥ कुंद केवडा भली कचनारन की सुंदर जोटी ॥ रायबेल चंपा बेला मोतिया जूही फूली प्यारी ॥ भांति भांतिके ० ॥ गुलखैरा गुलदाऊद नोकी आवत महक चमेली की ॥ मौलश्री है ललित केवरा माधुरी बेली की ॥ सरू सरस कनेर फुहारन में बहार जलरेली की ॥ हौज बीच में भली शोभा बाढी जल केली की ॥ फूलें कंज तडागन में तिनपै अलिपाती झुक्यारी ॥ भांति भांतिके ० ॥ करो बिहार आज या उपबन सुनो कुँवर जिया भावतहै॥कुंज छबीली छबीली ऋतु बसंत सरसावत है ॥बोलत मोर चकोर हंस कोयल मधुरे सुर गावत है॥पवन सुहावन बिबिध बिधि चलत आनंद बढावत है॥कुंजभवन मिल बैठे दोऊ निरखै रसिक जन बलिहारी ॥ भांति भांतिके७३३

राग दादरा ॥ प्यारी जी तोरे अंग में फूलन की बहार ॥ फूलन के बाजूबंद फूलनके गजरे फूलन के सोहैं गल हार ॥ चंपा मरुवा राय चमेली सभ फूलन में गुलाब ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि सभ गोपियन में गुपाल ॥ ७३४ ॥

राग बसंत ॥ नई बहार आई मन भाई ब्रज की नार सभ बन बन मिल मिल फुलवा बीनन को धाइ ॥ डारी डारो रस लेत भमरवा कोयलिया बोल रही अंबुआ मौल रहे सभ शीतल मंद सुगंध मारुत बहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सु-

राग जंगला दादरा ॥ प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियां मेरी फुलबगियामें चलोगे के ना॥बिबिध रंग फूली फुलवारी अलबेली मन भामिनियां ॥ बहुत दिनां की आशा लागी सींच सींच कर कामिनियां ॥ सफल करो पद तल अंकित कर ललित किशोरी दामिनियां ॥ ७४१ ॥

राग गौरी ॥ द्वारे मेरे बंसी कवन बजावे ॥ नई नई तान लेत बंसी में ठाढो गौरी गावे ॥ चलो सखी वाको मुखदेखें नंदकी धेनु चरावे ॥ साँवरी सखी सोई बड भागन जो हँस कंठ लगावे ॥ ७४२ ॥

राग गौरी ॥ मुरली की टेर सुनावे री मई को ॥ मोरे आंगन में ऐडोई डोल मोर मुकुट छबि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी बतियां रहस रहस कर गरे लगावे ॥ सूर घूंघट बाहन सुत देखत लज रिपु छूटत जावे ॥ ७४३ ॥

राग देस ॥ इकेली मत जइयो राधे यमुना तीर ॥ बंसोबट में ठग लागत हैं सुंदर श्याम शरीर ॥ बिन फांसी बिन भुज बल मारत बिन गांसी बिन तीर ॥ वाके रूप जाल में फँसके को बचहै ऐसो बीर ॥ घर बैठो भर देउँ गगरिया मनमें राखो धीर ॥ बीरन पान करन हम त्याग्यो कालिंदीको नीर ॥ धन सुत धाम गए नाहिं चिंता प्राण गए नहिं पीर ॥ सूरदास कुल कान गई ते धृग धृग जन्म शरीर ॥ ७४४ ॥

राग बिहाग ॥ मेरे गिरिधारी जी सों कवन लरी- गिरिधारी जी के चरण कमल पर वार डारों सगरी ॥ चलरी

मान ॥ किलकत कोकिल कुंजन ऊपर गुंजत मधुकर पुंज॥ बजत महावर वेणु झांझ डफ ताल पखावज रुंज॥ केसर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहिं धाईं ॥ छिरक कुंवर बूका भर चोआ लिये कंठ लिपटाईं॥ बर्षत सुमन बिबुध कुल ऊपर पावन परम पराग॥ तन मन धन न्योछावर कीनो निर्खे ब्यास बडभाग ॥ ७३७॥ कोयरिया बोलन लागीरे ॥ फूल रही फुलवारो पिया प्यारी ऋतु वसंत आई मदन जागे॥केसू फूले अंबुआ मौले भ्रमर करत गुंजार ॥ पिया बिन मेरो मन भयो बिरागी ॥ अवध बीती अजहूं नहीं आए कब्जा सौति बिरमाए॥ रैनि दिवस रसना रटत उनहीं संग लागी ॥ प्रीत रीत श्याम जाने दर्शन देहु सुखनिधान॥ कृष्णदास मिटे प्यास आनँद उर बाढे ॥ ७३८॥

राग बिभास ॥ प्यारी तुम कौन होरी फुलवा बीनन हारी नेह लगन को बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी॥नंदलाल बनमाली सों तुम बोलो क्योंनहीं प्यारी ॥हँस ललता तबकही श्याम सों यह वृषभानु दुलारी॥ तिहारो कहा लागे या बन में रोको गैल हमारी॥ राधेज फल फूल लिये हैं बिबिध सुगंध सँवारी॥सूर श्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी ७३९

राग कालिंगडा ॥कोई फुलवा लेहुरी फुलवा॥नीलश्वेत पीरे पचरंगी बरण बरण के हरवा ॥ चुन चुन कली चमेली चटकी टटकी दोना मरुवा॥ ललित किशोरी बिबस होय चट पहराए पिया गरवा॥ ७४०

यो दिखाई प्रेम सहित अँखियां भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्ने में मोहिं मारा रे ॥ तभी द्वारका पहुँची जाई पलंग सहित वाको लै आई ऊषा को जब दियो मिलाई तब वाने कछु दछना पाई विष्णुदास मथुरा को बासी जीवन प्राण हमारारे ॥ ७४७ ॥

पद ॥ भजन भावना होय न परसी प्रेम नहीं उर कपटी ॥ कुआँ पर्‌यो आकाश उडत खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावें वेई जिनके युगल मिलन की चट पटी ॥ वृंदावन हित रूप कहां लग बरणों सृष्टि अटपटी ॥७४८॥

कुण्डलिया ॥ सांचे श्रीराधा रमण, झूठो सभ संसार बाजीगरको पेखनो, मिटत न लगत अबार ॥ मिटत न लगत अबार भूत की संपति जैसे ॥ महरी नाती पूत धुआं के बादर तैसे ॥ भगवत ते नर अधम लोभ वश घर घर नाचें ॥ झूठे घडें सुनार वैन के बोलें सांचे ॥ ७४९ ॥

कवित्त ॥ देखा देखी रसिक न होई है रस मारग बंका॥ कहा सिंह की सरवर करहै गीदर फिरे जो रंका ॥ असहन निंदा करत पराई कभूं न मानी शंका ॥ बृंदाबन हित रूप रसिक जिन दियो अनन्य पथ डंका ॥ ७५० ॥ सभसों न्यारे सभके प्यारे ऐसी रहनी रहिये ॥ स्तुति निंदा छोड पराई युगल जीभ यश गैये॥ दुख सुख हान लाभ सम बर्तन आन परे सो सहिये॥ भगवत चरण शरण गह गोविंद मन बांछित सुख लहिये ॥ ७५१ ॥ कामिनी निहार्‌यो काम

यशोदा मैया तोहिं बताऊं जो हमसे झगरी ॥गोरे बदन पर नीला पट ओढे चंचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर बालक कैसे भुज पकरी ॥ गिरिधर मेरो आंसू भर रोवे तू मुसकात खरी॥ तूतो यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुत की ओर करी॥ सूरदास बन में जब पाऊं तो बातें हमरी ७४५॥

राग रामकली ॥ श्री यमुना तिहारो दरश मोहिं भावै॥ श्री गोकुल के निकट बहत है लहरन की छबि आवै॥सुख करनी दुख हरनी यमुना जो जन प्रात नहावै॥ मदनमोहन को अतिही प्यारी पटरानी जो कहावै ॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै ॥ सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को वेद विमल यश गावै ॥ ७४६ ॥

राग कालिंगडा ॥ सखी स्वप्न में घबरानी तुझ पर जादू किन डारा रे॥ स्वप्ने में देख्या वाही को मिलाऊं तनु तेरे की तप्त मिटाऊं तीन लोक मूरत लिखाल्याऊं चित्ररेखा तब ना- म धराऊं॥पहले लिखों स्वर्ग की रचना तामें ना कोऊ न्यारा रे दूजे लिखों पताल के बसैया तामें ना कोऊं स्वप्न दिखैया बार बार मोहिं लेत बलैया आन मिलाओ मेरे चित को चु- रैया क्या करों कछु बश ना ना मेरे होत नाघट से न्यारारे॥ती- जेलिखे मध्य के बासी श्रीवृंदाबन लिख लई कासी द्वारा- वतीके हो तुम बासी श्रीकृष्ण ठाकुर अबिनाशी तब सकुचार रही कछु मन में घुंघट बहुरि सँवारा रे ॥ प्रद्युमन की मूरत लिख ल्याई तब वाको कछु हांसी आई अनिरुद्ध को जब लि

प शोणित सर मज्जन बेग कराऊं ॥ गीध कबंध कंध बैठाऊं काग कराल उडाऊं ॥ दे भगदत्त द्रोण दुःशासन इक इक बाण लगाऊं ॥ प्रलय करूं कौरव दल ऊपर जंबुक कुलहिं अघाऊं॥ भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शर की सेज सुलाऊं॥ इतनी न करों मोहिं सप्त कृष्णकी क्षत्रिय गति ना पाऊं ॥ सूरदास पारथ प्रतिज्ञा इक छत राज कराऊं ॥ ७५५ ॥

राग सोरठ ॥ वा पट पीत की पहिरान ॥ कर गह चक्र चरण की धावन नहीं बिसरत वह बान ॥ रथ सों उतर बेगि पग धावन कच रज की लपटान ॥ मानो सिंह शैल से उतऱ्यो महा मत्त गज जान ॥ जन गोपाल मेरो प्रण राख्यो मेट वेद की आन।सोई सूर सहायक हमरे गावत वेद पुरान ७५६

कवित्त ॥ आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो हतो जाके हित राम नरसिंह रूप धाऱ्यो है ॥ जाको यश परम पुनीत ब्यास भागवत में गायो सो भयो भक्त प्रभु को प्यारो है ॥ तैसोई सपूत भयो बैरोचन ताके आय छायो यश जग में कुल ऐसो तिहारो है॥ पूजो मन काम मेरी सुनिये हो राजा बलि याते आशीर्वाद तुमको हमारो है ॥ ७५७ ॥

राग श्यामकल्यान ॥ सुन लेहु बात हमारी लँगर तुम ॥ पढने जाओ प्रह्लाद संग सभ राम नाम उर धारी ॥ हरनाकुस के नाश करन को होंगे नरसिंह अवतारी ॥माखन चोर दास यों भाषे यह कह भवन सिधारी ॥ ७५८ ॥ सुनलेहु राजकुमार अरज मेरी ॥ याके पुत्र चढे अगनी में

संतन बिचाऱ्यो राम योगी हुए योग ध्यान सिद्ध सिद्धन बिशेषिये॥ दुर्जन को सारदूल मल्लन को बज्जर तूल शत्रुन को सूर प्रजा प्रजापत पेखिये॥ घन घट मोरन को चंद्रमा चकोरन को भ्रमरन को कंज मंजु मकरंद लेखिये॥ कंस जाने काल ग्वाल बाल सभ जानें सखा एक ही नंदलाल अनेक रूप देखिये॥ ७५२॥

राग बिहाग॥ ऊधो चलो विदुर घर जैये॥ दुर्योधन के कहा काज जहां आदर भाव न पैये॥ गुरुमुख नहीं वडो अभिमानी कापर सेवक रहिये॥ टूटी छन्न मेघ जल बरसै टूटो पलंग बिछैये॥ चरण धोय चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये॥ सकुचत बदन फिरत छिपाये भोजन काहि मँगैये॥ तुम तो तीन लोक के ठाकुर तुमसे कहा दुरैये॥ हमतो प्रेम प्रीति के गाहक भाजी साग चखैये॥ सूरदास प्रभु भक्तन के बश भक्तन प्रेम बढैये॥ ७५३॥

राग जंगला॥ जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊं॥ तो लाजों गंगा जननी को शंतनु सुत न कहाऊं॥ शर धन तोड महारथी मारूं कपि धुज सहित गिराऊं॥ पांडव सैन समेत सारथी शोणित सिंधु बहाऊं॥ जीवों तो जग यश चलेगो जीत निशान फिराऊं॥ मरों तो मंदर भेद भानु को सुर पुर जाय बसाऊं॥ इतनी न करों मोहिं सप्त कृष्ण की क्षत्रिय गति ना पाऊं॥ सूरदास रण बिजय सखा को जीवत पीठ न दिखाऊं॥ ७५४॥ जो मैं पारथ नाम कहाऊं हठ कर इंद्र चा-

रीत हमारे कठिन कठोर कुचाली जी ॥ धर्म को खंडन पाप को मंडन हत्या हृदय बसाओजी ॥ ७६४ ॥

लावनी ॥ विद्या पढने गए गुरू की चटशाला ॥ तिन भर भर पट्टी राम नाम लिख डाला ॥ प्रहलाद काज भगवान भक्त हितकारी ॥ भए संतन के हित काज आप बपु धारी ॥ निरखी प्रभुकी प्रहलाद प्रथम प्रभुताई ॥ बिल्ली ने बच्चे धरे अँवा में लाई ॥ बिन जाने आंच कुम्हारि जो दईहै लगाई ॥ कीनी प्रभु आप सहाय बचे सुखपाई ॥ जिन जान्या राम स्वभाव परम शुभकारी ॥ भए संतनके ० ॥ इतने में पांडे आय निहारी पाटी ॥ पढ रख्या राम का नाम कर कोप चलाई साटी ॥ क्या तुझे राम से काम कह्यो ललकारी॥ भए संतनके० ॥ भूपति बोला ललकार कहां हरि तेरो ॥ तू है मूरख नादान मौत ने घेरो ॥ अब छोंडंगो नाहिं गयो मैं हारी ॥ भए संतन के० ॥ ७६५ ॥

राग श्यामकल्यान ॥ राम नाम लिख देह पांडे जी मोहिं ॥ गंगाजल तज पियत कूप जल अमृत छांड बिष देह॥ और पढन से कहा काज है वृथा त्रास क्यों देह ॥ युगलदास प्रभु के चरणन में बार बार शिर देह ॥ ७६६ ॥

कडा ॥ प्यारे जी गिनती कई हजार पढे हम बिकट पहाडे ॥ पट्टी लिखी अनेक लगे हरि नाम पियारे ॥ प्यारेजी राम नाम के हरफ मैंने हिरदे में धारे ॥ और सभ झूठा ख्याल जगत में धुंद पसारे ॥ ७६७ ॥ पांडेजी मैं नहीं रखता प्यार

राम बचावन हार ॥ राम नाम है सत्य कुँवर जी झूठो सभ संसार ॥ माखनचोर दास यों भाषे जाके हरि आधार७५९।

कबित्त ॥ मतले तू राम को नाम झूठ मत बोले वृथा कुम्हारी ॥ मेरो जो सुन पावेगो पिता खाल कढा लेगा भुस भरवारी ॥ अरी यह तो अगनि चढे बच नाहीं इनको अपराध महाहीं॥यह तो बिल्ली करत विलाप दोषभयो भारी ७६०

राग श्यामकल्यान ॥ मतले राम को नाम मौत जिन घेरी कुम्हारी ॥ काल जो तेरे शिर पर आयो आगई दिशा तिहारी॥ राम नाम को बाद नकीजे लीजे शोचँ बिचारी ॥ माखन चोर दास यूं भाषे मेरो पिता बलधारी ॥ ७६१ ॥

कबित्त ॥ कुम्हरी मन में अति शोच चली प्रहलाद बुलावन आइ ॥ डेउढी पर ठाढी भई अरज दासी ने जाय सनाई ॥ तुम सुनहो राजकुमार मेरो आँवा उतरयो आज ॥ तुम चलो बेग महाराज बेर भई भारी ॥ ७६२ ॥ माताजी दूंगा द्रव्य अघाय कहूं मैं सत्य की बानी ॥ गुण भूलोंगो नाहिं पढाई तैंने राम कहानी ॥ माताजी भले दिये उपदेश मेरे हिरदे में जानी ॥ बिष प्याले छुडवाय प्याय दियो अमृत पानी ॥ ७६३ ॥

छंद ॥ पांच बरस के भए कुमर जी राजा निकट बुलाएजी ॥ ले प्रहलाद गोद बैठाए मनमें मोद बढाएजी ॥ संडामर्का ब्राह्मण दोनों राजा निकट बुलाएजी ॥ लेजाओ चटसार कुमर को अस कछु रीति पढाओजी ॥ यह है कुल की

निकसे हो बिस्तार॥ हरनाकुस छेद्यो नख बिदार॥ श्रीपरम पुरुष देवादि देव॥ भक्त हेतु नरसिंह भेव॥ कह कबीर कोउ लखे न पार॥ प्रह्लाद उधारे अनेक बार॥ ७७१॥

राग भैरव॥ मंगल रूप यशोदा नंद॥ मंगल मुकुट कान मध कुंडल मंगल तिलक बिराजत चंद॥ मंगल भूषण सभ अंग सोहत मंगल मूरत आनंद कंद॥ मंगल लकट कांख में चांप मंगल मुरली बजावत मंद॥मंगल चाल मनोहर मंगल दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद॥ मंगल ब्रजपति मंगल मधुबन मंगल यश गावत श्रुति छंद॥ ७७२॥

राग भूपाली कल्यान॥ मुकुट पर वारी जाऊं नागर नंदा॥ सभ देवन में कृष्ण बडे हैं ज्यों तारों में चंदा॥ सभ सखियन में राधे बडी हैं ज्यों नदियों में गंगा॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि काटो जम के फंदा॥ ७७३॥

राग देस॥ आदि मणि ब्रह्म अवतार मणि कृष्णयुग मणि सतयुग दिशन पूर्व सभघट रमण रमैया॥ दिवस मणि भास्कर निशा मणि चंद्रमा उडगण मणि ध्रुव द्वीपन मणि जंबद्वीप खंडन मणि भरतखंड चतर महया॥स्वर्ग मणि वैकुंठ राजन मणि इंद्र गुरुन मणि बृहस्पति वेद मणि ब्रह्मा सम जग रचैया॥ हस्तिन मणि ऐरावत बिहंगन मणि वैनतेय पुराण मणि श्रीभागवत परमहंस मणि शुकदेव कहैया॥ ज्ञानिन मणि महादेव ध्यानिन मणि लोमस ऋषि आयुर्बल मणि मारकंडेय गिरि मणि सुमेरु थिरैया॥ तरुन मणि कल्प-

कुमर की शामत आई ॥ पूत नहीं जमदूत करे मेरी लोग हँ-
साई ॥ पांडेजी जाको ले यह नाम सोई मेरो दुखदाई ॥
मार उडाऊं खाल करैगा कौन सहाई।७६८।प्यारे जी फूलों
कीसी सेज कुमर हरिके गुण गावे ॥ धन मेरो महाराज पार
जिनका नहिं पावे ॥ प्यारे जी निश्चय करके रटे विपति के
फंद छुडावे॥दर्शन ते गति होय मुक्ति के धाम बसावे॥७६९॥

राग देस ॥ जननी बिष मोहिं देह पिलाय और कछु
अब नहीं उपाय मेरो आप हरी कर ले सहाय ॥ इकबांहि प-
कर के खैंच लाय मोहिं गिरि पर्वत से दियो गिराय तहां
आप हरी ने मोहिं लियो उठाय ॥ इक जलती अगनमें दि-
यो बिठाय तहां कूद परे हरि आप धाय मोहिं अमृत हृदयसे
लियो लगाय ॥ हरि की गति मोपै लखी नजाय मेरे रोम
रोम में रह्यो समाय कहे युगल चरण में चित लगाय ७७०

राग बसंत ॥ नहीं छोडूं रे बाबा राम नाम ॥ मेरो और
पढन सों नहीं काम ॥ प्रहलाद पढाये पढन शाल संग स-
खा बहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढावत आल जाल ॥ मेरी
पटियां पै लिखदेउ श्रीगोपाल ॥ यह संडेमर्के कह्यो जाय ॥
प्रहलाद बुलाए बेग धाय ॥ तू राम कहन की छोड बान ॥
तुझे तुरत छुडाऊं कह्यो मान ॥ मोको कहा सतावो बार
बार ॥ प्रभु जल थल नभ कीने पहार ॥ इक राम न छोडूं
गुरुहिंगार ॥ मोहिं घाल जार चाहे मार डार ॥ काढ खड्ग को-
प्यो रिसाय ॥ तुझे राखन हारो मोहिं बताय ॥ प्रभु खंभसे

हत सभ असुर संहारे गोवर्द्धन धार्‍यो कर बाम ॥ तब रघुबर अब यदुबर नागर लीला नित्त विमल वहु नाम ॥ परमा नंद प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुण ग्राम ७७६॥

दोहा ॥

भक्ति भक्त भगवंत गुरु, चतुर नाम बपु एक।
तिनके पद बंदन किये, नाशत बिघ्न अनेक॥४४॥
तिनपर भ्रमर समान नित, अटक रहै मन मोर।
भक्त राम कबहूं नहीं, चितवै काहू ओर॥ ४५॥
हर्षि देहु बर मांग हों, यशुमति जीवन मूर।
निज दासन के पगन की, भक्तराम को धूर॥४६॥
मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय।
ब्रज रज उड मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वैजाय४७
नारायण ब्रज भूमिको, सुरपति नावैं माथ।
जहां आय गोपी भए, श्री गोपेश्वर नाथ॥४८॥
धन बृंदाबन धाम है, धन बृंदाबन नाम।
धन बृंदाबन रसिक जो, सुमरें राधे श्याम॥४९॥
ब्रज चौरासी कोस में, चार गाम निजधाम॥
बृंदाबन और मधुपुरी, बर्सानो नंदगाम॥ ५०॥
नंद नंदिश्वर राजहीं, बरसाने वृषभान।
दोनों कुल दीपक भए, गावत वेद पुरान॥५१॥
ब्रज समुद्र मथुरा कमल, बृंदाबन मकरंद।
ब्रज बनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुल चंद५२

वृक्ष बीरन मणि महाबीर सागर मणि पय समुद्र सरित म-
णि बिष्णुपदी तीरथ मणि ब्रज स्थान हरी प्रगटैया ॥ भक्तन
मणि प्रहलाद यतियन मणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्बसी तुरं-
गन मणि उच्चैश्रवा इंद्रधामरहैया ॥ राग मणि भैरव ऋतुन
मणि बसंतऋतु शास्त्रमणि वेदांत रंजन मणि संगीत पार न
लहैया ॥ताननमणि तानसैन गायन मणि नारद गंधर्ब मणि
हाहाहूहू बीनन मणि सरस्वती बीन प्रात ही नाम लैया ॥
स्वरन मणि खरज स्वर सुर्तन मणि तैब्यरा मूर्छना मणि
आनंदी तिथिन मणि एकादशी उत्तम मणि गोबिंद नाम
लै कृष्णानंद भवसागर पार पैया ॥ ७७४ ॥

राग बिलावल ॥धर्म मणि मीन मर्याद मणि रामचंद्र र-
सिक मणि कृष्ण और तेज मणि नरहरी ॥ कठन मणि कम-
ठ बल बिपुल मणि बाराह छलन मणि बामन देह बिक्रम
धरी ॥ गिरिन मणि कनकगिरि उदधिन मणि क्षीरनिधि
सरन मणि मानसर नदिनमणि सुरसरी ॥ खगनमणि गरुड
द्रुमन मणि कल्पतरु कपिन मणि हनूमान पुरिन मणि अवध
पुरी ॥ सुभट मणि परशुधर क्रांत मणि चक्र वर शक्ति मणि
पार्वती जान शंकर बरी ॥ भक्त मणि प्रहलाद प्रेम मणि रा-
धिके मणिनकी माल गुह कंठ कान्हर धरी ॥ ७७५ ॥

राग भैरव ॥ मदन गुपाल हमारे राम ॥ धनुष बाण धर
बिमल बेणु कर पीत बसन अरु तन घनश्याम ॥अपनी भुज
जिन जलनिधि बांध्यो रास नचाए कोटिक काम ॥ दशशिर

बाजत ताल मृदंग यंत्र गति चरचि अरगजा अंग चढाई ॥ अक्षत दूब लिए शिर बंदत घर घर बंदनवार बँधाई॥छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भर लेत उठाई ॥ सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई॥ ७७८ ॥

राग जैतश्री ॥ नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्द्धन ते आयो॥ तुमरे पुत्र भयो हौं सुनके अति आतुर ह्वै धायो ॥ बंदीजन अरु भिक्षुक सुन सुन जहां तहां ते आए॥ एक पहले ही आशा लागी बहुत दिनन के छाए ॥ ते पहरे कंचन मणि भूषण नाना बसन अनूप॥ मोहिं मिले मारग में मानो जात कहूं के भूप॥ तुमतो परम उदार नंद जो जो मांग्यो सो दीनो॥ ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सर साटो कीनो ॥कोटि देहु तो परयो रहैं गो बिन देख नहिं जैहों॥ नंदराय सुन बिनती मोरी तबहिं बिदा भले ह्वैहों॥ दीजै बेग कृपा कर मोको जो हौं आयों मांगन॥ यशुमति सुत अपने पांयन चल खेलत आवै आंगन॥ मदन मोहन मैया कह टेरै यह सुनके घर जांउ॥ हौं तो तुमरे घर को ढाडी सूरदास मोहिं नांउ॥ ७७९ ॥

राग कान्हरा॥ अनोखा लाडला खेलन मांगत चांद॥ हँसन खेलन को रारि करत है मनमें भयोरी आनंद॥७८०॥

राग जैतश्री॥ दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे हाऊ आएहैं ॥ तब हँस बोले कान्हर मैया इनको किन्हें पठाएहैं॥ यमुना के तट धेनु चरावत जहां सघन बन झाऊ॥ पैठ प-

उत उरझी कुंडल अलक, इत बेसर वनमाल।
गौर श्याम उरझे दोऊ, मंडल रास रसाल॥५३
पाग बनो पटुका बनो, बनो लाल को भेष।
श्री राधा वल्लभ लालकी, चलदौरआरतीदेख५४
प्रेम सरोवर प्रेम को, भरचो रहै दिन रैन।
जहँ पिया प्यारी पग धरें, लाल धरें दोउ नयन५५
मोर मुकुट की निरख छबि, लाजत मदन करोर।
चंद्र बदन सुख सदन पै, भावक नयन चकोर५६
कमलन को रवि एक है, रवि को कमल अनेक।
हम से तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक॥५७॥
जल में बसै कमोदनी, चंदा बसै अकास।
जो जाके मनमें बसै, बसै सो ताके पास॥५८॥
बांहि छुडाए जातहो, निबल जान क मोहिं।
हिरदे ते जब जावगे, तब मैं जानूं तोहिं॥५९॥
जो मोसों मोसी करो, तो नहिं कहों कठोर।
तुमहो तैसी कीजिये, सुनो रसिक शिर मौर६०॥

राग सारंग॥ हरि हरि हरि सुमरन करो॥ हरि चरणाबिंद उर धरो॥ हरि की कथा होतहै जहां॥ गंगा हू चल आवैं तहां॥ यमुना सिंधु सरस्वती आवें॥गोदावरी बिलंब न लावें॥सर्व तीर्थ को बासो तहां॥सूर हरिकथा होत है जहां७७७

राग बिलावल॥ नंदराय के नव निधि आई॥ माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीत बसन भुज चारु सुहाई॥

कल सुखनिधि मुख निरख के नयन तृषा बुझाउँ ॥ द्वारे आ-रज सभा जुर रही निकसबे नाहिं पाउँ ॥ बिन गए पति-वर्त्त छूटे हँसे गोकुल गाउँ ॥ श्याम गात सरोज आनन ल-लित लेले नाउँ ॥ सूरहि लगन कठिन मन की कहों काहि सुनाउँ ॥ ७८२ ॥

राग दादरा ॥ जग में देखत हूं सब चोर ॥ प्रथमें चोर जोर इंद्रिन बश महा लुब्ध मन मोर ॥ पांच चोर सब के उर भीतर चोरी करें करावें ॥ चोर चोर सभ जग को खावें को-ऊ पार न पावें ॥ हाकम चोर चोर मुतसद्दो चोर शहर ब्या-पारी ॥ तैसेई चोर जानिये सभको कहा पुरुष कहानारी ॥ ब्रह्मा चोर वदत बृंदाबन बालक बत्स चुरायक ॥ साधु चोर हरि हृदय चुरायो जो त्रिभुवन के नायक ॥ पांच सात मिल चोरी कीनी जो जासों बन आई ॥ सूरदास गुण कहां लग बरणे माखन चोर कन्हाई ॥ ७८३ ॥

दोहा ॥

बिश्वभरन पोषण करन, कल्पतरोवर नाम।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम बिबस गुणधाम ॥ ६१ ॥

राग धनाश्री ॥ कबके बांधे ऊखल दाम ॥ कमल नयन बाहर कर राखे तू बैठी सुखधाम ॥ हो निर्दयो दया कछु ना-हीं लाग रही घर काम ॥ देख क्षुधाते मुख कुम्हलानो अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरो वेग बडी बिरियां भई बीत गए युग याम ॥ तेरी त्रास निकट नहीं आवत बोल सकत नहीं रा-

ताल ब्याल गह नाथ्यों तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुन सुन यह बातें कहत हँसत बलदाऊ ॥ सप्त रसातल शेषासन रही तबकी सुरत भुलाऊ ॥ चार वेद लै गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊ ॥ मीन रूप धर के जब माऱ्यो तबहिं रहे कहां हाऊ ॥ मथ समुद्र सुर असुरन के हित मंदर जलहिं खिसाऊ ॥ कमठ रूप धर धरणि पीठ पर सुख पायो सुरराऊ ॥ जब हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरबाऊ ॥ धरि बाराह रूप रिपु माऱ्यो लै क्षिति दंत अगाऊ ॥ बिकट रूप अवतार धऱ्यो जब जन प्रहलाद बचाऊ ॥ होय नरसिंह जब असुर बिदाऱ्यो तहां न देख्यो हाऊ ॥ वामन रूप धस्यो बलि छल कर तीन परग बसुधाऊ ॥ श्रम जल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊ ॥ माऱ्यो मुनि बिनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊ ॥ इक्कीस बेर करी निःक्षत्रो क्षिति तहां न देख्यो हाऊ ॥ राम रूप रावण जब माऱ्यो दश शिर बीस भुजाऊ ॥ लंक जराय छार जब कीनो तहांरहे कहँ हाऊ ॥ माटी के मिस बदन बिकास्यो जब जननी डरपाऊ ॥ मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबहुँ प्रतीति न आऊ ॥ नृपति भीम सों युद्ध परस्पर ताहिं कर भाव बताऊ ॥ तुर्त चीर द्वै टूक कियो धर ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ भक्त हेतु अवतार धऱ्यो सब असुरन मार बहाऊ ॥ सूरदास प्रभु की यह लीला निगम नेति नित गाऊ ॥ ७८१ ॥

राग रामकली ॥ किहिं मिस यशुमति के जाउँ ॥ स

सो तृण जासुकी रजु श्याम भुजन बँधाइयो॥ धन्य ऋषि धन शाप दीनो अति अनुग्रह सो कियो॥ जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो॥ अब कृपा कर देहु बर प्रभु चरण पंकज मति रहै॥ जहां जन्महिं कर्म बश तहँ एक तुमरी रति रहै॥ दीनबंधु कृपालु सुंदर श्याम श्री ब्रजनाथ जू॥ राखिये निज शरण अब प्रभु करीये हमहिं सनाथ जू॥७८७॥पारब्रह्म परमेश्वर अबिगत भुवन चतुर्दश नाथ हरो जब जब भीर परी संतन पै प्रगट होय प्रतिपाल करी॥ आदि अंत सभके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी॥कृष्ण नमामि नमामि नमामी दयासिंधु अंतर्यामी॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शेष जपत नित नाम नये॥सो भव तारण दुष्ट निवारण संतन कारण प्रगट भये॥ जाको नाम सुनत यम डर्पत थरहर कांपत काल हियो॥ताको पकर नंदकी रानी ऊखल सों लै बांध दियो॥जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमा जाय न कहत बनी॥ जैसुखसागर सभ गुण आगर शोभा अंग अनंग घनी॥नारद को हम अति गुण मानें शाप नहीं बरदान दियो॥ जा कारण ते प्रभु आपने दर्शन दियो सनाथ कियो॥ जो हरहूं के ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे॥ सो हरि प्रगट नंदके आंगन ऊखल संग बँधे देखे॥ जिनकी पदरज को सुर तरसें अगम अगोचर दनुजारी॥ त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन जन मन रंजन सुख कारी॥ तुमरी माया जीव भुलानो किहिं विधि नाथ तुमें जाने॥ तुमहीं कृपा करो

म॥ जन कारण भुज आप बँधाई बचन कियो ऋषि काम॥ ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर सो नाम॥ ७८४॥

राग सारंग॥ हलधर सों कह ग्वालि सुनायो॥ प्रातहिं ते तुमरो लघु भैया यशुमति ऊखल बांध लगायो॥ काहूके लरकहिं हरि मार्‌यो भोरहिं आन रोवत गुहरायो॥ तबहीं ते बांधे हरि बैठे सो हम तुमको आन जनायो॥ हम बरजी बरज्यो नहीं मानत सुनतिहि बल आतुर ह्वै धायो॥ सूरश्याम बैठे ऊखल लग माता डर तनु अतिहि त्रसायो॥७८५॥ निरख श्याम हलधर मुसकाने॥ को बांधे को छोरे इनको यह महिमा येही पै जाने॥ उत्पति प्रलय करत हैं येई शेष सहस मुख सुयश बखाने॥ यमलार्जुन तोर उधारन कारन करत आप मन माने॥ असुर संहारन भक्तहिं तारन पावन पतित कहावत बाने॥ सूरदास प्रभु भाव भक्ति के अति मति यशुमति हाथ बिकाने॥ ७८६॥

छंद॥ अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानंद मन सन्मुख खरे॥ जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धर धावत हरे॥ जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन बाणी परे॥ सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे॥ धन्य ब्रज धन्य गोप गोपी गाय दधि माखन मही॥ धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही॥ धन धन उराहनो देत नित उठ धन्य अनख बढावही॥ धन सो जननी बांध राखत जाहि वेद न पावहीं॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धन सुजन गढ लाइयो॥ धन्य

जब बाल सार आंगन धाये जब ढोटा सार देखो सूर प्रभु के यह ख्याल उठ चली है ग्वार मुखों भई है लाल ॥ ७९० ॥

राग बर्वा ॥ माई नित उठ कुंजन रोकत ब्रज बनवारी ॥ कल न परत मोरी मटकी फोरी और भीजी पचरंग सारी ॥ जाय कहूं जी मैं नंदजू के आगे कबके छैल बिहारी ॥ हम रँग प्यारा देख मुसकत है और देत रस गारी ॥ ७९१ ॥

पीलों ॥ हे प्यारी नाहिं फोरी गागरिया ॥ हेरी छबिहार नई पनिहार ॥ तू तोरी तोरी मोरी चकिया की डोरी तापै देती है गार ॥ तूं जोबन अलमस्त ग्वारन चलत न आप संभार ॥झूम झूम पग धरत भूम पर मैं तोहिं दीनां संभार ७९२

राग गौरी ॥ छबीले बंसी नेक बजावो ॥ बलि बलि जात सखा यह कह कह अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ बृंदावन दुर्लभ प्रेम तरंग ॥ ना जानिये बहुरि कब है हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ बिनती करत सुबल श्रीदामा सुनो श्याम दै कान ॥ या यश को सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप भेष ब्रज धरहो फिरहो सुरभिन साथ ॥ कब तुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुल के नाथ ॥ अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई सोंह दिवाय नंद बाबा की रहे सकल गह पाई ॥ सुनसुन दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई॥गुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धर कर वेणु अधर मनमोहन कयो म धुर धुर गान ॥ मोहे सकल जीव जल थल के सुन

जब स्वामी तबहीं तुमको पहचाने ॥ हे मुकुंद मधुसूदन श्री पति कृपानिवास कृपा कीजै ॥ इन चरणनमें सदा रहै मन यह बरदान हमें दीजै ॥ जै केशव जै अधम उधारन दया-सिंधु हरि नित्य मगन ॥ जै सुंदर ब्रजराज शशी मुख सदा बसो मम हृदय गगन ॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्र-वण कथा सुन मोद भरें ॥ कर नित करें तुम्हारी सेवा न-यन संत जन दरश करें ॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम यो-ग यज्ञ आचार करें ॥ नारायण बिन भक्ति न रीझो वेद संत सब साख भरें ॥ ७८८ ॥

राग सुघराई ॥ बजावै मुरली की तान सुनावै यहि विध कान्ह रिझावै ॥ नटवर भेष बनाय चटक सों ठाढो रहे यमुना के तीर नित बन मृग निकट बुलावै ॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवै ॥ मोर मुकुट कुंडल बनमाला पीतांबर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भर आवै ॥ सूर श्याम के अंग अंग प्रति कोटि काम छबि छावै ॥ ७८९ ॥

राग बसंत ॥ बरज यशोदे तू अपनो बाल अपनो बाल रसिया गोपाल जेढा नित उठ हमसे करत रार ॥ स्नान क-रन गई यमुना तीर लाहि भूषण बस्त्र धरे हैं तीर जल प्रवाह मोरी लागी दीठ तेरा कृष्ण कुँवर मोरी मलत पीठ॥ रहुरी ग्वा-रन मत झूठ बोल मेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ना खावे अन्न ना पीवे नीर वह कौन समय गयो यमुना तीर॥ घर आवे

चन थार भर निछावर करन मोहनलाल की ॥ सप्तसुर गावत कंठ शब्द कोकिला गत उपगत अति रसालकी ॥ साज समाज गोपाल झुंडन मिल चलत चाल अति मराळ की ॥ तानसैन के प्रभु रस बश कर लीनी टेढी मूरत चितवन गोपाल की ॥ ७९५ ॥

राग कल्यान॥अपने लाल को जमावत मैया ॥कर कर कोर मुखारविंद में मधु मेवा पकवान मिठैया॥व्यंजन खाटे मीठे खारी अतिही स्वाद बन्यो अधिकैया ॥ चतुरभुज प्रभु गिरिधरन लाल को ब्यारू करावत लेत बलैया ॥ ७९६ ॥ मोहन जानो तिहारी बात ॥ ब्यारू पर घर कर आवत यहां कछू नहीं खात ॥ यही स्वभाव तिहारो जनम को चोरो बिन न अघात॥ नंददास कहत नंदरानी प्रेमलपेटी बात॥७९७॥

राग नट ॥ हरिकी लीला कहत न आवै ॥कोटि ब्रह्मांड छिनहिं में नाशै छिनही में उपजावै।बालक बच्छ ब्रह्म हर लैगयो ताको गर्व नशावै॥ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीझत पुनि समझावै॥ शिव सनकादिक अंत नपावें भक्त बछल कहवाव॥सूरदास प्रभु गोकुल में सो घर घर गाय चरावै७९८॥

राग सोरठ ॥ फेंट छोड मोरी देहु श्रीदामा ॥ काहेको तुम रारि बढावत तनक बात के कामा ॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बाहिं गहतहो धाई ॥ छोटो बडो न जानत काहू करत बराबर आई ॥ हम काहेको तुमहिं बराबर बडे नंद के पू ॥ सूरश्याम दीनेही बनिहै बहुत कहावत धूत ॥ ७९९

वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नाशा पुट सुन सुंदर मुख बैन ॥ मानो निर्तत भाव दिखावत गतिलिये नायक मैन ॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल॥मानो कमल कोश रस चाखन उड आए अलिमाल॥कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत ॥ मानो सुधा सिंधु में क्रीडत मकर पान के हेत ॥ उपजावत गावत गति सुंदर अनाघात के ताल॥ रस सभ दियो मदन मोहन को प्रेम हर्ष सभ ग्वाल ॥ लोलित बैजंती चरणन पर श्वासा पवन झकोर ॥ मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्म कमंडलु फोर ॥ डोलत लता मारुत मंदगति सुन सुंदर मुख बैन ॥ खग मृग मीन अधीन भए सब कियो यमुन जल सेन॥झलमलात भ्रुकुटी पद रेखा शुभग सांवरे गात ॥ मनो षट बधू एक रथ बैठी उदय कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप ॥ मानो कल्प तरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अतिसुख दियो गोपाल सभन को सुखदायक जिया जान॥ सूरदास चरणन रज मांगत निरखत रूप निधान॥ ७९३ ॥

राग पूरवी ॥ धरें टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रिभंगीलाल ॥ कुंडलों की छबि देख कोटि रवि उदय होत और सोहे वनमाल ॥ सांवरो बदन पर पीत पट ओढन मुख मुरली बाजे मधुर रसाल ॥ श्रीमत् वल्लभ वन ते आए संग लिये ब्रज बाल ॥ ७९४ ॥

राग बसंत॥घर घरते बनिता जो बन निकसी आज कं-

ओ गैयां घेरी ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणन की चेरी ॥ ८०२ ॥

राग टोडी ॥ खोलोजी किवाँर कोहै एती बार हरी नाम है हमारो बसो कंदरा पहार में ॥ हौं तो आली माधव को किला के माथे भाग मोहन हों प्यारी फिरो मंत्र के विचार में॥ रागी हों रंगीले जावो क्यों ना दाता पास भोगी हों छबीले जाय धसोजी पताल में ॥ नायक हों नागरी तो टांडो क्यों न लादो जाय हौं तो घनश्याम प्यारी बरसो जी बहार में८०३

इतिरागरत्नाकरे पंचम भागः संपूर्णम्।

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ रागरत्नाकरे षष्ठं भागः ॥

श्री रघुनाथ लीला ॥

दोहा ॥

मुरली मुकुट दुराय के, नाथ भए रघुनाथ ॥
तुलसी रुचि लखि दास की, धनुषबाणलियोहाथ ६२॥
तुलसी कौशलराज भज, मत चितवे काहू ओर ॥
सीता राम मयंक मुख, तू कर नयन चकोर ॥ ६३ ॥
राम बाम दिशिजानकी, लषण दाहनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय, तुलसी सुरतरु तोर॥६४॥
सीतापति रघुनाथजू, तुमलग मेरी दौर ॥

राग कल्यान ॥ तोसों कहा धुताई करहों ॥ जहां करी तहां देखी नाहीं कहा तोसों मैं लरहों ॥ मुंह सम्हार तू बोलत नाहीं कहत बराबर बात ॥ पावोगे फल अपनो कीयो अवहीं रिसन कंपावत गात ॥ सुनो श्याम तुमहूं सर नाहीं ऐसे गए बिलाई ॥ हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई ॥ ८०० ॥

राग देवगंधार ॥ काली के नथन काज कालीनाथ आए हैं॥ऐसो रूप धार खडे मानो कोटि शशि चढे चांदना बेहद भयो तिमिर मिटाए हैं ॥ ब्रह्मा बीचार कही बलि को ना सुध रही भूल गयो सभ कछु बेग उठ धाए हैं ॥ चरगन में आय परे हो आधीन आगे खडे धन्य धन्य भए भाग दरश दिखाए हैं ॥ और, केती नर नार हर्ष बही प्रेमधार नख शिख रोम रोम आनंद बढाए हैं ॥ कोई ऐसो कौतुक कियो अहिसुत बांध लियो नाक छेद विष हर कमल लदाएहैं ॥ यमुना के मध्य काढे फण हूं के ऊपर ठाढे राग रंग निरत करत अधिक सुहाए हैं ॥ कहत यों दुनीदास वृंदावन भयो बिलास इच्छा पूरी नंदकी यशोदा कंठ लगाएहैं ॥ ८०१ ॥

राग वसंत ॥ श्रीराधे देडारोना बांसुरी मोरी ॥ जिस बंसी में मोरे प्राण बसतहैं सो बंसी गई चोरी ॥ सोने की नाहीं कान्हा रूपे की नाहीं हरेहरे बांस की पोरी ॥ काहसे गाऊं राधे काहेसे बजाऊं काहेसे लाऊं गउआं घेरी ॥ मुख से गाओ प्यारे ताल से बजाओ लकुटी से ला-

ग प्रगटी रघुनाथ चरन करन सुख विहारी॥ दीनी बिधि बूंद डार अरि अनंग शीश धार आई मृत मध्य लोक संतन को प्यारी॥ पर्वत द्रुम लता तोर स्वर्ग औ पताल फोर भागीरथ करनधार सगर तनय तारी ॥ अमित बारि अति उतंग चाहत अति रूप रंग दरश परश मज्जन कर पाप पुंज हारी ॥ माता मैं याँचों तोंहिं राम भक्ति देहु मोहिं शरण गही तुलसी दास दीन हो पुकारी ॥ ८०६ ॥

राग काफी ॥ आनंद बन गिरिजापति नगरी मन क्यों ना बास लगावत ॥ काशी समान नहीं द्वितिया पुर ब्रह्मादिक गुण गावत॥ वेद पुराण बखानत महिमा शारद पार न पावत ॥ निकट प्रवाह बहत जहां गंगा सुर नर मुनि हर्षावत ॥ जाके दरश परश अरु मज्जन कोटिक पाप नशावत ॥ कीट पतंग जीव नाना बिधि सभकी मुक्ति करावत ॥ अंतकाल सदा शिवशंकर तारक मंत्र सुनावत ॥ अगम अपार अनूपम उपमा शेष सहस मुख गावत ॥ राम सिया पद हेतु प्रेम प्रभु तुलसीदास गुण गावत ॥ ८०७ ॥

राग आसावरी ॥ आज सुदिन शुभ घरी सुहाई ॥ रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भए आई॥ अति पुन मधु मास लगन ग्रह बार योग समुदाई ॥ हर्षवंत चर अचर भूमिसुर तनुरुह पुलक जनाई ॥ वर्षहिं बिबुध निकर कुसमावलि नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौशल्यादि मात सभ हर्षंत यह सुख बरणि न जाई ॥ सुन दशरथ सुत जन्म लिये

जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर॥ ६५ ॥
नहिं विद्या नहिं बाहिंबल, नहीं गांठमें दाम ॥
तुलसी ऐसे पतित की, तुम पतिराखो राम॥ ६६ ॥
कामिहिं नारि पियारिजिमि, लोभिहिं प्रियजिमिदाम।
ऐसे हो कब लागहो, तुलसी के मन राम ॥ ६७ ॥
बार बार बर मांगहों, हर्षि देहु श्रीरंग ।
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥ ६८॥

राग भूपाली ॥ गाइये गणपति जगबंदन॥ शंकर सुव-
न भवानी नंदन ॥ सिद्ध सदन गज बदन बिनायक ॥ कृपा-
सिंधु सुंदर सब लायक॥मोदक प्रिय मुद मंगल दाता॥विद्या
बारिध बुद्धि विधाता मांगत ॥ तुलसी दास कर जोरे ॥ बसैं
राम सिया मानस मोरे ॥८०४॥

राग बिभास ॥ जै भगीरथ नंदनी मुनि जै चकोर चंद
नी नर नाग विबुध बंदनी जै जन्हु बालिका ॥ विष्णु पद स-
रोज जासि ईश शीश पर बिभासि त्रिपथगासि पुण्य राशि
पाप छालका ॥ विमल विपुल बहसि बारि शीतल त्रयताप
हारि भँवर वर बिभंग तर तरंग मालका ॥ पुर जन पूजोप-
हार शोभित शशि धौल धार भंजन भव भार भक्त कल्प था-
लका ॥ निज तट वासी विहंग जल थल चर पशु पतंग कोट
जटिल तापस सभ सर्स पालका ॥तुलसी तब तीर तीर सुम-
रत रघुवंश वीर बिचरत मति देह मोह महषिकालका ८०५

राग काफी ॥धन धन धन मात गंग चाहत मुनि जन प्रसं

राग तिलंग ॥ ढाडन चल दशरथ घर जाइये ॥ ढाडी कहै सनो मेरी प्यारी जहां सकल सिद्धि पाइये ॥ कंचन बसन रतन भूषण धन अनगिन अशन अघाइये ॥ रतन हरी प्रभु राम जनम की बिमल बधाई गाइये ॥ ८१० ॥ हौं तो रघुबंशिन को ढाढी ॥ सुन दशरथ सुत जन्म दूरते आयो आशा बाढी ॥ तुमरोई यश गाऊं जहां जाऊं पूछो दुनिया ठाढी ॥ रतन हरी मेरो नाम रामकी लेहों बलैयां गाढी ८११ कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना ॥ राज समाज सकल सुख संपति अधिक अधिक नित होना ॥ मुनि जन ध्यान धरत निशि बासर अमित जन्म धर मौना ॥ रत्न हरी प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना ॥ ८१२ ॥

कवित्त ॥ दंतकी पंगत कुंद कली अधराधर पल्लव खोलन को ॥ चपला चमके घन बिज्जु जगे छबि मोतिन माल अमोलन की ॥घुंघरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की ॥ न्योछावर प्राण करै तुलसी बलि जाऊं लला इन बोलन की ॥ ८१३ ॥

राग कान्हरो॥ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियां॥ किलकत उठ चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मात गोद लेत दशरथ जू की रनियां ॥ अंचर रज अंगझार विविध भांति सो दुलार तन मन धन वार डारों कहत मृदु बचनियां ॥ मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कंचन रुनझुनियां ॥ आनंद सज कंबु कंठ ग्री-

सभ गुरुजनविप्र बुलाई ॥ वेद बिहित कर क्रिया परम शुचि आनंद उर न समाई ॥ सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहु विधि बाज वधाई ॥ पुरबासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ मणि तोरन बहु केतु पताकन पुरी रुचिर कर छाई ॥ मागध सूत द्वार बंदीजन जहँ तहँ करत वडाई ॥ सहज सिंगार किये बनिता चलि मंगल विपुल बनाई ॥ गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजीयो तनय सुखदाई ॥ वीथिन कुमकुम कीच अरगजा अगर अबीर उडाई ॥ नाचहिं पुरनर नारि प्रेम भरि देह दशा बिसराई ॥ अमित धेनु गज तुरंग बसन मणि जात रूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई ॥ सुखी भए सुर संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई ॥ सबहिं सुमन बिकसत रवि निकसत बिपिन कुमुद बिलखाई ॥ जो सुख सिंधु सकृत सीकर ते शिव बिरंचि प्रभुताई ॥ सो सुख उमग अवध रह्यो दश दिशि कवन जतन कहों गाई ॥ जे रघुबीर चरण चिंतक तिनकी गति प्रगट दिखाई ॥ अबिरल अमल अनप भक्ति दृढ तुलसीदास तब पाई ॥ ८०८ ॥

राग भैरव ॥ सूरज बंशी नमो गुरु इष्ट हमारो दशरथ सुत राजा राम ॥ जानकी के नायक नाथ त्रिभुवन के धनुषधारी सुंदर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटि काम ॥ धीरज प्रबीन प्रभु रघुकुल तिलक बिदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ ८०९ ॥

मदन कोटि वारे ॥ अरुण उदित बिगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे ॥ मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सभ भव विलास आश त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे ॥ मनो वेद बंदी मुनि वृंद सूत मागधादि बिरद बदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ बिकसत कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्याग कंज न्यारे ॥ मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह बिहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहारे ॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुःख कदंब टारे ॥ तुलसीदास अति आनंद देखके मुखारबिंद छूटे भ्रम फंद परम मंद द्वंद्व भारे ॥ ८१७ ॥

राग विलावल ॥ आज तो निहार रामचंद्र को मुखारबिंद चंदाहू से अधिक छबि लागत सुहाई री ॥ केसर को तिलक भाल गरे सोहै मुक्त माल घूंघरवारी अलकन पर कुंडल छबि छाई री ॥ अनियारे अरुण नयन बोलत अति ललित बैन माधुरी मुसकान पर मदन हूं लजाई री ॥ ऐसे आनंद कंद निरखत मिट जात द्वंद्व छबि पर बनमाल कान्हर गई हों बिकाई री ॥ ८१८ ॥

राग बिभास ॥ बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृप भवन द्वार रूप शील गुण उदार जागो मेरे प्यारे ॥ बिलखत कु-

व्या अति रुचिर रेख कांच कुटिल कमल वदन मंद सों हँस-
नियां ॥ विद्रुम सों अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन
नाशा अति शुभगबीच लटकत लटकनियां ॥ अद्भुत छबि
अति अपार को कबि नहीं बरणे पार कह न सके शेश जि-
हिं सहस्त्र तो रसनियां ॥ तुलसीदास रूप रंग पटतरको
दिये कहा रघुवर की छबि समान रघुबरछबिबनियां।८१४।

राग बिभास ॥ भोर भयो जागो रघुनंदन ॥ गत विलोक
भक्तन उर चंदन ॥ शशि कर हीन छीन द्युति तारे ॥ तमचर
मुखर सुनो मेरे प्यारे ॥ बिकसत कंज कुमुद बिलखाने ॥
लै पराग रस मधुप उडाने ॥ अनुज सखा सभ बोलन आ-
ए ॥ वंदिन अति पुनीत गुण गाए ॥ मन भावतो कलेऊ की-
जै ॥ तुलसीदास को जूठन दीजै ॥ ८१५ ॥

राग प्रभाती ॥ प्रात समय रघुवीर जगावे कौशल्या
महतारी॥उठो लालजी भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी॥
ब्रह्मादिक इंद्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी ॥ बाणी
वेद विमल यश गावें रघुकुल यश विस्तारी ॥ बंदीजन
गंधर्व गुण गावें नाचत दे दे तारी ॥ उमा सहित शिव द्वारे
ठाढे होत कुलाहल भारी ॥ कर स्नान दान प्रभु दीनो गो
गज कंचन झारी ॥ जय जय कार करत जन माधो तन मन
धन बलिहारी॥८१६॥जागिये कृपानिधान जानराय रामचं-
द्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे ॥ राजिव लोचन
विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर

नाम पिता के ॥ ऋषि को यज्ञ संपूर्ण करके अब आए राजा के ॥अपदा सभकी हरी रामने कारज करन सिया के ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल धनुष बाण कर जाके ॥ गौतमऋषि-की नारि अहल्या तारी है चरण छुवा के॥ सभ सखियां मिल सिया के स्वयंवर पूजा करत उमा के ॥ तुलसीदास सेवक र-घुनंदन लेख लिखे बिधनाके॥ ८२२॥

राग कान्हरा ॥ ठुमक ठुमक चलत चाल जनक नंद-नी ॥ मधुर बचन तोतरे त्रयताप मोचनी ॥ सोहत नव नी-ल बसन मंद हास रुचिर दशन झलकत उर माल सकल दे-ववंदनी ॥ नूपर पग बजत मानो सामवेद करत गान क्षुद्र घंट रुचिर नाद उर आनंदनी ॥ जगत मात सखिन संग बिहरत बहु करत रंग अग्रदास निरखत छबि भव निकंदनी॥ ८२३॥

राग मलहार॥ बिहरत बागवा में देखे कुल भानवा॥ क्रीट मुकुट कंचन को झलकें मकर मनोहर कुंडल अल-कें भाल तिलक केसर को राजे उर बैजंती माल विराजे मधुर बचन करलीने धनुष बानवा ॥ पीतांबर कटि पर कस काछे मन मुसकात फिरत बन आछे काक पक्ष शिर सुंदर सोहें देखत राम लषण मन मोहें बिधि शंकर इनहीं को धरें ध्यानवा ॥ कही सखी जब ऐसी बानी अखिल लोक पति जीवन जानी शोभा सकल लोक की जग में तारी शिला चर-ण की रजने दरशन लीजो तजो गृह मानवा ॥ कुसुम स-मेत बाम कर दोना छोटा कुँवर सखी अति लोना या देखत

मुदित चकोर चक्रबाक हर्ष मोर करत शोर तमचर खग गूंजत अलिन्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन कर भूषण सज सकल अंग संग अनुज बालक सभ बिबिध बिधि सँवारे॥ करतल गह ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पट पीत तूण सायक अनियारे ॥ उपबन मृगया बिहार कारन गवने कृपाल जननी मुख निरख पुण्य पुंज निज बिचारे ॥तुलसीदास संग लीजै जान दीन अभय कीजै दीजै मति बिमल गावै चरित बर तिहारे॥ ८१९ ॥

राग ललित ॥ छोटीसो धुनैया पन्हैया पगन छोटी छोटी सी कछोटी कटि छोटी सी तरकसी ॥ लसत झगली झीनी दामिनीकी छबि छीनी सुंदर बदन शिर पगिया जरकसी ॥ बय अनुहरत बिभूषण विचित्र अंग जोहे जीया आवत सनेहकी सरकसी ॥ मूरत को सूरत कही न परै तुलसी पे जाने सोई जाके उर कसकै करकसी ॥ ८२० ॥

राग खमाची जंगला ॥ पगिया शिर लाल हरी कँलगी उर चंदन केसर खौर दिये ॥ मनमोहन राम कुमार सखी अनुहार नहीं जगजन्मलिये ॥ पग नूपर पीत कसे कछनी बलमालती को बनमाल हिये ॥ बिहरैं सरयू तट कुंजन में तहां राम सखे चित चोर लिये ॥ ८२१॥

राग आसावरी ॥ सखीरी मुनि संग बालक काके॥ मतवारे नयना जाके॥ रवि शशि कोटि बदन जाको शोभा श्याम गौर तनु जाके ॥ राम लषण कौशल्या के जाये दशरथ

मन बर बदन शोभा उदित अधिक उछाहु ॥ मनो दूर कलंक कर शशि समर सूध्यो राहु ॥ नयन सुखमा अयन हाथ सरोज सुंदर ताहु ॥ बसत तुलसीदास उर पुर जानकीको नाहु ॥ ८२७ ॥ मनमें मंजु मनोरथ होरी ॥ सो हर गौर प्रसाद एक ते कौशिक कृपा चौगनी भोरी ॥ प्रण परिताप चाप चिंता निशि शोच संकोच तिमिर नहीं थोरी ॥ रवि कुल रवि अवलोकि सभा सर हित चित बारिज बन बिकस्योरी ॥ कुँवर कुँवरि सभ मंगल मूरत नृप दोऊ धरम धुरंधर धोरी ॥ राज समाज भूर भागी जिन लोचन लाहु लह्यो इक ठौरी ॥ ब्याह उछाह राम सीता को सुकृत सकेल बिरंचि रच्योरी ॥ तुलसीदास जाने सोई यह सुख जा उर बसत मनोहर जोरी ॥

राग भूपाली ॥ बन्यो सिया प्यारी को बनरा॥किबरबश मोहलेत मनरा ॥ मौर शिर सोने को धारी ॥ बिबिध मणिचित्र चमतकारी ॥ करन छबि मेंहिंदी की भारी ॥ सुहावर पगन चित्रकारी ॥ कंकन की कमनीयता, कही कवन पै जाय॥ अलक झलक लख खलक ललक आली पलक न परत सुहाय॥ गले गज मोतियन को गजरा॥ चलन चितवन गति चित चोरी ॥ बचन की रचन लाजतोरी ॥ गरब तज बिवस भई गोरी ॥ धाम के काम दाम छोरी ॥ हँसन असी मुख मयन ते, सुधा मुखी सित धाय ॥ काढ कामनी कतल करी, इस दशरथ राजकुमार ॥ रंगीलो अँखियन में कजरा ८२९

राग परज ॥ बन्यो सखी दूलह अजब रंगीलो ॥ दशरथ

सभ भई सुखारी तुलसी मुदित विदेहकुमारी बहुरि चली गिरिजा के भवनवा ॥ ८२४ ॥

राग देस ॥ मैया मोको बैरन धनुष भयो री ॥ जन्म जन्म को परा शरासन सड घुन क्यों न गयो री ॥ देश देश के भूपति आए तिल भर कछु न टरयो री ॥ कहा कहों मैं माइ बाप को हो तैंने बिष क्यों न दियो री ॥ उठे राम गुरु आज्ञा पाई सुमन समान लियोरी ॥ तुलसीदास प्रभु के कर परसे खंडो खंड भयो री ॥ ८२५ ॥

राग परज ॥ सखी रंग भीने दोऊ राजकुमार ॥ निरख सखी नयनन भर नीके शोभा अमित अपार ॥ भुज दंडन चंदन मंडन पर चमक चांदनी चार॥ललित कंठ रेखा विचित्र सखि उर कमलन के हार ॥ रंगभूमि मणि जडित मंच पर बैठे सभा मँझार ॥ मानो रवि उदयाचल गिरि ते निकस्यो तिमिर विदार ॥ खंड खंड ब्रह्मंड खंड के भूपतिजुरे अपार ॥ कैसे धनुष उठायो तोरयो किनहूं न पायो पार ॥ कटि निखंग कर धनुष बाण लिये हरन चले महिभार॥लाहा रामचंद्र छवि ऊपर दास कान्हर बलिहार ॥ ८२६ ॥

राग केदारो ॥ लेहुरी लोचनन को लाहु ॥ कुँवर सुंदर सांवरा सखि सुमुखि सुंदर चाहु ॥ खंड हरकोदंड ठाढे जानु लंबत बाहु ॥ रुचिर उर जयमाल राजत देत सुखसभ काहु ॥ चितै चित हित सहित नख सिख अंग अंग निबाहु ॥ सुकृत निज सीया राम रूप बिरंचि मतिहिं सराहु ॥ मुदित

जाने ॥ सुन दशरथ के कुंवर लाडले कासों कहूं को माने ॥ चितवत ही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने ॥ राम ल-ला यह प्रीति अलौकिक राम सखे पहचाने ॥ ८३४ ॥

राग परज ॥ तेरे रतनारे नयन लगे कोशल राज कि-शोर ॥ मिथिलापुर में आए सुवनके बरबस प्राण ठगे॥ कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृँगार पगे ॥ राम सखे लख जनु रतिपति के साइर से उर गडे ॥ ८३५ ॥

राग कालिंगडा ॥ पिया तोरी नजरिया जादू भरी ॥ जिहिं चितवत तिहिं बश कर राखत सुंदर श्याम राम धनु धरिया ॥ जुलफन युत मुख चंद्र प्रकाशे नाशा मणि लटकत मन हरिया ॥ युगल प्रिया मिथिलापुर बासिन फँसी जाल मानो रूप मछरिया ॥ ८३६ ॥ तेरी नजरों की सैफ की धार सुनिये हो अवध छैल दशरथ के घायल किये तैं हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन बस्यो है मिथिलापुर के बजार ॥ मधुर अली पिया सांची कहदेउ कब आओगे दिलदार ८३७

राग भैरवी ॥ जालम नयन मेरे नहीं रहिंदे ॥ लालच लगे रूप रघुबर के कर अराम नहीं बहिंदे ॥ बरज बरज रही अरज न मनदे हरज मरज सभ सहिंदे ॥ कर कर यत्न रत्न हरि हारे जाय जोरावरी खहिंदे ॥ ८३८ ॥

राग श्याम कल्यान ॥ कुँवर दशरथ के रंग भरे॥ कोटि काम सुंदर सुख मंदर अंदर आन अरे ॥ रंगीली पगिया पेच धरे ॥ रत्न जटित शिर पेच पेच मोरे मन के बीच परे ॥ श्रवण

कुँवर सांवरो अद्भुत सोहत परम छबीलो ॥ अन ब्याही ब्याही सभ ब्याही देखत रूप ठगीलो ॥राम सखे अब लगत प्राण सम पियरो अवध नवीलो ॥ ८३० ॥

राग दादरा॥ आली सियावर कैसा सलोना ॥ चितवन में चित आन फँस्यो है देख सखी चल राज ढटोना ॥ जनकनगर में शोर मच्यो है भूल्यो खान पान सभसोना ॥ श्री रघुराज मौर वारे पर अब तो मोहिं फकीरिनहोना ८३१

राग भूपाली कल्यान ॥ देख सखी शिर पाग राम को कैसी सोही है ॥ मर्कत गिरिपै चंद्र चाह चपला जनु मोही है ॥ बडी बडी भुजा बिशाल विभूषण लख तृण तोरी है ॥ सुंदर नयन विशाल बदन पर हांसी थोरी है ॥ उर मोतियन की माल कान कल कुंडल जोरीहै ॥ नाभि गंभीर उदर त्रिबली लख शारद बौरी है ॥ पीतांबर की कछनी काछे पीत पिछौरी है ॥ रामगुलाम अनूप रूप लख मति मेरी थोरी है॥ ८३२ ॥

राग कान्हरा ॥ देखोरी छबि राम बदन की ॥ कोटि कोटि दामिन दर्पण द्युति निंदत क्रांति कपोल रदनकी ॥ नाशा मृदु मुसकान माधुरी मंद करी अति घुमंड मदन की ॥ फब रह्यो क्रीट मुकुट अलकन पर मनो फांस दृग मीन फसनकी ॥ चोरत चित्त भ्रुकुटी दृग शोभा कुंडल झलक खौर चंदनकी ॥ राम सखे छबि कही न जात जब सुध न रहत लख वदन वसन की ॥ ८३३ ॥

राग खमाच ॥ चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोइ

रो ॥ हँस हेर हरत हमरो हियरो ॥ गल साजत है मोतियन गजरो ॥ अनियारी अँखियन शोभत कजरो ॥ चित चाहत है उड जाय मिलूं ॥ रघुराज छांड सगरो झगरो ॥ ८४२ ॥

राग देस ॥ नाथ कैसे गज के फंद छुडाए ॥ हँस पूँछैं जनकपुर की नारी ॥ तिहारो यही अचरज मन भाए ॥ गज और ग्राह लरें जल भीतर दारुण द्वंद्व मचाए ॥ गजकी टेर सुनी रघुनंदन गरुड छोड उठ धाए ॥ भिलनी के बेर सुदामा के तंदुल रुचि रुचि भोग लगाए। दुर्योधन को मेवा त्याग्यो साग बिदुर घर पाए ॥ इंद्रने कोप कियो ब्रज ऊपर छिन में बारि बहाए ॥ गोबर्द्धन स्वामी नख पर लीनो इंद्रको मान घटाए ॥ अर्जुन के स्वारथ रथ हांक्यो महाभारत में गाए ॥ भारत में भँवरी के अंडा घंटा तोर बचाए ॥ ले प्रहलाद खंभ से बांध्यो राजन त्रास दिखाए ॥ जन अपने की प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाए ॥ छोरे न छटे सिया जी को कंगना कैसे चाप चढाए ॥ कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाए जहिं जहिं भीर परी संतन पर तहिं तहिं होत सहाए ॥ तुलसी दास सेवक रघुनंदन आनंद मंगल गाए ॥ ८४३ ॥

राग जंगला ॥ लेलेहु री भर लोचन लाहू ॥ पुष्पन बर्षत मुनि जन हर्षत सिया रामको अजब विवाहू ॥ मिथिलापुर की सखी सयानी समझ समझ सिखदे सभ काहू ॥ फिर कब राम जनकपुर ऐहैं हम नहीं नगर अयोध्या जाहू ॥ तुलसीदास परस्पर दोऊ मिले राजा दशरथ

शुभ कुंडल सुघर धरे॥ अलकां झलक कपोल लोल मन माह लिये हमरे॥ बनी मोतियन की माल गरे॥कमल नयन सुख दैन रैन दिन मन ते नाहिं टरे ॥करन कल कंकन रत्न जरे॥श्याम बरण मन हरन रत्न हरि चरण शरण उबरे८३९॥

राग विलावल॥क्रीट मुकुट शीश धरे मोतियन की माल रगे कानन कुंडल कर धनुष बाण सोहै री ॥ अरुण नयन अनियारे अतिही लगत प्यारे दशरथ दुलारे सभही को मन मोहै री ॥ सुंदर नाशा कपोल अलक झलक मधुर बोल भाल तिलक राजत बांकी भोंयाई री॥लंबित भुज अति बिशाल भूषण जडित जाल अंग अंग छबि तरंग कोटि मदन मोहै री॥ पीतांबर सोहै गात मंद मंद मुसकरात जनक भवन चले जात गति गयंद को है री ॥कान्हर करुणानिधान मर सखी जीवन प्रान जानकी झरोखे बैठी रामको मुख जोहै री८४०।

राग खमाच ॥ रामकुमार लाल दशरथ के यागलियन अबहीं जो गयोरी॥ पहरे तनु भूषण फूलनके अंग अंग अद्भुत रूप छयोरी ॥ ठाढी देख अटा पर मोको खेलन मिसि छिन एक ठयो री॥ गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूंघट पट तव खोल दयो री॥तब अपनाय लई मैं वापिया हिय में प्रेम अंकूर भयोरी ॥ राम सखे भूली सुध बुध सभ अँखियन में अब राम रह्योरी ॥ ८४१ ॥

राग दादरा॥ सखी लखन चलो नृप कुँवर भलो ॥ मिथिलापति सदन सिया वनरो ॥ शिर क्रीट मुकुट कटिमें पिय-

नहीं जात बखानी ॥ आरती करत कौशल्या रानी ॥ कनक थार गज माणिक मुक्ता भर्यो वेद बिधानी ॥ मार्यो मान सकल भूपन को महिमा वेद बखानी ॥ तोरन धनुष जनक गुण पूरन तीन लोक में जानी ॥ जनकराय की लज्या राखी परशुराम हित मानी ॥ सुर पुर नार अवध पुरबासी करत विमल यश गानी ॥ नचत नवल अपसरा मुदित मन वरष सुमन हर्षानी ॥ रत्न मंदिर में रत्न सिंहासन बैठे सारंगपानी ॥ मात कौशल्या करत आरती हर्ष निर्ख मुसकानी ॥ दशरथ सहित अवधपुर बासी उचरत जै जै बानी ॥ तुलसीदास यह अबिचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ ८४७॥

राग ललित ॥ रघुबर आज रहो मेरे प्यारे ॥ जे तुमको बनबास दियो है करियो गमन सकारे ॥ रघुबर कहें सुनो राजी जननी यह व्रत नेम हमारे ॥ अब न रहूं घर मात कौशरूप दशरथ बाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भए चढाए ते न्यारे ॥ तुलसीदास प्रभु दूर गमन कियो चलत जहिं जजल डारे ॥ ८४८ ॥

राग पीलू ॥ मेरी सुध आन लियो रघुराया ॥ चौदा बरस मोहिं कब लग बीतें मोहिं पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन प्रजा के बासी रो रो हाल बजाया ॥ राम लषण सिया बन को सिधारे भरत फिरे बौराया ॥ तुलसीदास जिन हरि नहिं सुमरे विरथा जन्म गँवाया ॥ ८४९ ॥

राग देस ॥ बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी

मिथिलापुर राऊ॥ ८४४ ॥ देखो री याहू नयनन भर भर होत बरात विदा दशरथकी॥ गलिन गलिन गृह महल अटा पर अरुण भाल कामिनि गावें री॥ या बिधि सीयाजी को ब्याहन आए कब रघुनाथ बहुरि आवें री॥ धन्य अयोध्या धन मिथिलापुर धन्य सिया जिन राम बऱ्यो री ॥ धन्य धन्य वालक दोऊ बांके धन रानी दशरथ पतनी री ॥ खान पान विसराय सभी मिल बार बार सिया रामहिं देखैं ॥ इत लछमन उत भरत शत्रुहन भाग भले राजा दशरथ के॥ मणि विन सर्प चकोर चंद्र बिन जल बिन मीन कहु कैसे जिये री॥ तुलसीदास छबि बरण कहत है यह मूरत मेरे मन में बसी री ॥ ८४५ ॥

राग कान्हरो॥ भुजन पर जननी बार फेर डारी ॥ क्यों तोऱ्यो कोमल कर कमलन शंभु शरासन भारी ॥ क्यों म०। रीच सुबाहु महाबल प्रबल ताडका मारी ॥ मुनि प्रसाद [illegible]यन रे राम लखन की बिधि सभ करबर टारी ॥ चरण रे[illegible] अनयनन लावत क्यों मुनि वधू उधारी ॥ कहो धों तात [illegible]सि जीत सकल नृप बरी बिदेहकुमारी ॥ दुसह रोष मूरत [illegible] गुपति अति नृपति निकर खै कारी ॥ क्यों सौंप्यो सारंगहार हिये करत बहुत मनुहारी ॥ उमग उमग आनंद बिलोकत वधुन सहित सुतचारी ॥ तुलसीदास आरती उतारत प्रेम मगन महतारी॥ ८४६ ॥

राग कालिंगडा॥ निरखत रूप सिया रघुबर को छबि

दर बदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात ॥ अंसन चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट बिच नूतन पात। फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत चितहिं सहज मुसकात ॥ संग नारि सुकमारि शुभग सुठि राजत बिन भूषण नव सात ॥ सुखमा निरख ग्राम बनितन के नलिन नयन बिकसत मानो प्रात ॥ अंग अंग अगणित अनंग छबि उपमा कहत सुकबि सकुचात ॥ सिया समेत नित तुलसीदास चित बसत किशोर पथिक दोऊ भ्रात ॥ ८५३ ॥

राग कल्यान ॥ पूछत ग्राम वधू मृदु बानी ॥ गौर श्याम शुभग तनु सुंदर यह तुमरे को लगत सयानी ॥ शीलस्वभाव लषण लघु देवर कर शर धनुष समंजल पानी ॥ पिया तन चितहि दृष्टि नीचेकर सखिन बिलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कौन देश ते आए जिहिं पुर बसो सो मंगल खानी ॥ चलत पियादे पाहिं त्रान बिन राजकुँवरि किन करो बखानी ॥ यह दोऊ कुँवर अवधपति के सुत मैं विदेह तनया जग जानी ॥ ठान कुमति उर बसी सजोती पन राज समय बन दीनो रानी ॥ सिया के वचन सुन सखी दुखितभईं पल छिन मानो बिरहों गलानी ॥ एक कहैं भल भूप ीनो बन नहिं दीनो कीनो हानी ॥ राम लषण सिया पंथ कथा सुन जाके हृदय बसी छिन आनी ॥ सो भवसिंधु तरै गोपद जिमि जन तुलसी यह करत बखानी ॥ ८५४ ॥

राग बिलावल ॥ फिर फिर राम सिया तन हेरत ॥ तृषित

है॥ हमारी मात की करनी सकल दुनिया सों न्यारी है॥ विमुख जिन राम सों कीना ऐसी जननी हमारी है॥ लगी रघुबंश में अगनी अवध सगरी उजारी है॥ भरत शिर लोट धरणी पै यही करता पुकारी है॥ सुना जब तात का मरना मनो बरछी सी मारी है॥ परा ब्याकुल हुआ बेसुध दृगन से नीर जारी है॥ धरूं मैं ध्यान सूरत का मुझे तृष्णा जो भारी है॥ परूं रघुनाथ के पाऊं यही तुलसी विचारी है॥ ८५०॥

राग बिहाग॥ मिल जाना राम प्यारे नयना तरसे तेरे देखन को॥ बन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन मो नयनन के तारे॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तडफत प्राण हमारे।८५१।

राग कालिंगडा॥ मैं कौन बन ढूंडां री माई॥ मेरे दोनों बालकवा॥ आगे आगे राम चलतहैं पाछे लक्ष्मण भाई॥ वीच जानकी अधिक विराजे राजा जनक की जाई॥ अंतर रोवें मात कौशल्या बाहर भारत भाई॥ राजा दशरथ ने प्राण तजेहैं कैकेयी मन पछताई॥ इंद्र गरजे भादों वरसे पवन चले पुरवाई॥ कौन वृक्ष तले भीगत होंगे सिया लखन रघुराई॥ रावण मार राम घर आए घर घर बजत वधाई॥ मात कौशल्या करत आरती तुलसीदास बलि जाई॥८५२॥

राग बिलावल॥ नृपति कुंवर राजत मग जात॥ सुं-

स्वभाव नाथ को मैं चरणन चित लायो ॥ जानत प्रभु दुख सुख दासन के ताते कह न सुनायो ॥ करकरुणा भर नयन बिलोको तब जानो अपनायो ॥ बचन बिनीत सुनत रघुनायक हँस कर निकट बुलायो ॥ भेट्यो हरि भर अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परस अभय कियो जन पर हेतु दिखायो ॥तुलसीदास रघुवीर भजन कर कोन अभय पद पायो ॥ ८५८ ॥

राग धनाश्री ॥ सत्य कहों मेरो सहज स्वभाउ ॥ सुना सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ ॥ सभ बिधि दीन हीन अति जड मति जाको कतुहिं न ठाउँ ॥ आए शरन भजों न तजों तिहिं यह जानत ऋषिराउ ॥ जिनको हौं हित सभ प्रकार चित नाहिन और उपाउ ॥ तिन हित लाग धर देह करों सभ डरों न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय कहत हों सकल सभा पतियाउ ॥ नाहिंन कोऊ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहजाउ ॥ सुन रघुपति के वचन बिभीषण प्रेम मगन मन चाउ ॥ तुलसीदास तज आश त्रास सभ ऐसे प्रभु को गाउ ॥ ८५९ ॥

राग काफी जंगला ॥ तात को शोच न मात को शोचरु शोच नहीं मोहिं अवध तजी को ॥ शोच नहीं बनबास लिये को शोच नहीं मोहिं सीय हरी को ॥ बालीहतेको शोच नहींरे शोच नहीं मोहिं बिपति परीको ॥ लछमन धरणि परे को शोच नहीं शोच नहीं मोहिं लंक जरी को ॥ तुलसी शोच

जान जल लेन लषण गए भुज उठाय ऊंचे चढ टेरत ॥ अ-
वनी कुरंग विहंग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत॥
मगन न डरत निरख कर कमलन शुभग शरासन सा-
यक फेरत ॥ अवलोकत मग लोक चहूं दिशि मनो चकोर
चंद्रमहिं घेरत ॥ ते जन भूरि भाग्य भूतल पर तुलसी राम
पथिक पद जे रत ॥ ८५५ ॥

राग पीलू ॥ मेरी सुध आन लियो सिया प्यारी ॥ मात
कैकयी बनवास दियोहै प्राणों सों अधिक प्यारी ॥ कपटी
मृग के पाछे धायो लछमन कियो रखवारी ॥ मैं तोहिं सिया
बहुत समुझायो तैं एक न मानी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे
धरणि पर लछमन रोय पुकारी ॥ तुलसीदास प्रभु बन बन
ढूंढत बिधना की गति न्यारी ॥८५६॥

राग गौरी ॥ कुटुंब तज शरण राम तेरी आयो ॥ तज
गढ लंक महल और मंदिर नाम सुनत उठ धायो ॥भरी स-
भामें रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो ॥मूरख अंध कह्यो
नहीं माने वार वार समुझायो ॥ आवत ही लंकापति कीनो
हरि हँस कंठ लगायो॥जन्म जन्म के मिटे पराभव राम दरश
जब पायो ॥ हे रघुनाथ अनाथ के बंधू दीन जान अपनायो॥
तुलसीदास रघुवर की शरणा भक्ति अभय पद पायो८५७

राग केदारो ॥ दीन हित बिरद पुराणन गायो ॥आ-
रत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौं आयो॥ तुमरे रि-
पु को अनुज बिभीषण बंश निशाचर जायो॥ सुन गण शील

राग कालिंगडा ॥ जै जै जै रघुबंशदुलारे ॥ सुखसागर रविबंश उजागर लीला ललित मनोहर प्यारे ॥ यज्ञ सुधारन असुर संहारन गौतम नारि उधारन हारे ॥ जनक स्वयंब गावन कीनो भृगुपति गर्व निवारन हारे ॥ पिता बचन सुन राज काज तज अनुज सहित बन को पगधारे ॥ बालि बधन वैदेही सोधन लंकापति भुज भंजन हारे ॥ जग नायक प्रभु संत सहायक गावत वेद पुराण पुकारे ॥ राम सखे रघुनाथ रूप लख युग युग येही बिरद तिहारे ॥ ८६३ ॥

राग श्यामकल्यान ॥ सखी वह देखो रघुराई ॥ गगन मगन पुष्पक बिमान पर बैठे सुखदाई ॥ संग में फबी जनक जाई ॥ ज्यों सामन घन माहिं दामनी दमकत छबि छाई ॥ कपिन की भीर संग भारी ॥ हनूमान सुग्रीव बिभीषण अं- गद युवराई ॥ मात कौशल्या हरषाई ॥ कंचन थार सुधार आरती करै सुमनभाई ॥ देव गण फूलन झर लाई ॥ अटल राज संपति रघुबर की सुर नर मुनि गाई ॥ याचकन मन मांगी पाई ॥ देत अशीश अघाय रतन हरि बलि बलि बलि जाई ॥ ८६४ ॥

राग गौरी ॥ अवध आनंद भए घर आएहैं लछमन राम ॥ पहले मिले भरतजी भैया पाछे कैकयी मात ॥ घर घर मिले अयोध्या बासी पाछे कौशल्या हरि की माय ॥ जबहीं राम सिंहासन बैठे कही लंक की बात ॥ मात कौशल्या पूछन लगी कैसे तोडे गढलंक ॥ बाट घाट लछमनने रोक्यो

भयो इक मोको भक्त बिभीषण बाहिं गही को ॥ ८६० ॥

राग बिहाग ॥ शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बंध रघुबीर आए॥ अष्ट दश पदम योधा जुरे अति बली उडत पग धूर रवि गगन छाए॥ कोटि योधा जुरे जनक के नगर में धनुष ना सक्यो उठाय कोई ॥ तोरयो धनुष गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा राम सोई ॥ बाली सों शूरमां योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ ना जगत माहीं ॥ लग्यो जब बाण रघुनाथ के हाथ को गिरि परयो धरणि फिर उठ्यो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की वेग धावो नहीं बिमल कीजै ॥ सूर स्वामी रंग लाय लव लाय लै आयो है काल बचाय लीजै ॥ ८६१ ॥

राग गौरी ॥ अब देखो राम धुजा फहरानी॥हलकत ढाल फरकत नेजा गरद उठी असमानी ॥ लछमन बीर बालि सुत अंगद हनूमान अगवाना ॥ कहत मंदोदरी सुन पीया रावण कौन कुमति सिया आनी॥जिस सागर का मान करत हैं तापर शिला तरानी ॥ त्रीया जाति बुद्धि की होछी उनकी करत बडाई ॥ ध्रुव मंडल से पकर मँगाऊं वह तपसी दोउ भाई ॥ हनूमान जेहैं पायक उनके लछमन जेहैं बल भाई।जलती अगन में कूद परैंगे शोच कभूं नाहिं पाई॥मेघनाद जेहैं पुत्र हमारे कुंभकर्ण से भाई॥एक बेर सन्मुख होय लडैंगे युग युग होत बडाई॥इक लख पूत सवालख नाती मौत आपनीआई॥ अग्र के स्वामी गढ लंका घेरी अजहुँ समुझअभिमानी८६२

चिक्कन कुटिल चिकुर बिलुलित मृदुल करन बिबरत चतुर सरस सुषमा जनी ॥ ललित अहि शिशु निकर मनो शशि सन समर लरत धर हर करत रुचिर जनु युग फनी ॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भरु नाशिका शुभग शुक आननी ॥ चिबुक सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सुधर वचन गंभीर मृदु हास भव भाननी ॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडत चपल कलित कल कांति अति भांति कछु तिन तनी ॥ युगल कंचन मकर मनो बिधु कर मधुर पियत पहचान कर सिंधु कीरति भनी ॥ उरसी राजत पदक ज्योति रचना अधिक भाल सु बिशाल चहूं पास बनी गज मनी ॥ श्याम नव जलद पर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उडगन अनी ॥ मंदरन पर खरी नारी आनंद भरी निरख वरषहिं विपुल कुसम कुंकुम कनी ॥ दास तुलसी राम परम करुणा धाम काम शत कोटि मद हरत छबि आपनी ॥ ८६८ ॥

राग पहाड ॥ छबि रघुवीर की चित चोरन ॥ जरकसी पाग तिलक मृगमद को तापर कँलगी हीर ॥ उर मणि माल पीत पट राजत चलत मत्त गज धीर ॥ कृपा निवासी के प्राण जीवन धन सुध हूं न भूषण चीर ॥ ८६९ ॥ दृगन वसी रघुवीर की छबि हो ॥ शोभा सरस रही मोरी आली बिहरत सरयू के तीर ॥ शीतल मंद सुगंध झकोरा बहती है त्रिबिध समीर ॥ जानकीदास छबि देख मगन भए शो-

औघट रोक्यो राम ॥ दरवाजा अंगद ने रोक्यो कूद पडे हनु-
मान ॥ रावण मार अहिरावण मार्‍यो दियो बिभीषण राज ॥
गाय बजाय जानकी ल्याये गावत तुलसी दास ॥ ८६५ ॥

राग पीलू ॥ भरत कपि से उऋण हम नाहीं ॥ सौ योजन
मर्याद सिंधु की कूद गयो छिन माहीं ॥ लंकाजार सिया
सुध लाए गरब नहीं मन माहीं ॥ शक्ती बाण लग्यो लछमन
के शोर भयो दल माहीं॥ द्रोणागिरि पर्बत लै आए भोर होन
नाहिंपाई॥ अहिरावण की भुजा उखारी बैठ रह्यो मठ माहीं॥
जो पै भरत हनुमत नहीं होते को लावेजग माहीं ॥ आज्ञा
भंग कभूं नहिं कीनी जहिं पठयो तहिं जाई ॥ तुलसीदास
मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई ॥ ८६६ ॥

राग प्रभाती ॥ प्रात समय उठ जनकनंदनी त्रिभुवन
नाथ जगावे ॥ उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन
बुलावे ॥ उरझी माल गले मोतियन की कर कंकण सुर-
झावे ॥ घूंघर वारी अलकें झलके पाग के पेच सँवारे ॥
कमल नयन मुख निरख राम को आनँद उर न समावे ॥
कान्हर दास आश रघुवर की हरष निरख गुण गावे ८६७॥

राग कल्यान॥ देख सखी आज रघुनाथ शोभा बनी ॥
नील नीरद वरण वपुप भुवना भरन पीत अंबर धरन हरन
द्युति दामनी ॥ सरयू मज्जन किये संग सज्जन लिये हेतु जन
पर हिये कृपा कोमल घनी ॥ सजनी आवत भवन मत्त गज
वर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कोशल धनी ॥ सघन

सखे को घायल कीनो बन आवे लै जाउ घर कनियां॥८७६॥ क्या बुलाक अधरन पर हलकें॥ जबते दृष्टि परी है मरी तब ते छिन पल परत ना पलकें॥ किधों असमसर शर संधाने क्या सुषमा पर सरवर झलकें॥ सिया राम पिया मुख मयंक पर मनों अमी की मूरत झलकें॥८७७॥ यह दोऊ चंद्र बसैं उर मेरें॥ दशरथ सुत और जनकनंदनी अरुण कमल कर कमलन फेरैं॥ चंद्रवती शिर चमर ढुरावत आस पास ललना गण घेरैं॥बैठे सघन कुंज सरयू तट चन्द्र कला तन हँस हँस हेरैं॥ ललित भुजा दिये अंश परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरैं॥ राम सखे छबि कही न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरैं॥८७८॥ जै श्री जानकी बल्लभ लालहिं॥ मणि मंदिर श्री कनक महल में बिपुल रंगीली बालहिं॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ मृदंग डफ तालहिं॥ युगल बिहारी भावत दोऊ लालन लखि छबि भई निहालहिं॥८७९॥

राग वडहंस मल्हार॥ तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे॥ नवल दुलैया अति सुकुमारी तुम जोबन मतवारे॥ झूले देत डरत अति सुंदर चोरत चित्त हमारे॥ सुन सखी बचन मधुर मुसकाने प्रिया रूप मतवारे॥ मधुर प्रियाके गरे लाग अब मिलो जानकी प्यारे॥८८०॥

राग पीलों॥ झूलत सीताराम अवधपुर रंग महिल में॥ मणि कंचन को रच्याहै हिंडोरा झूलत पिया प्यारो परम स-

भा श्याम शरीर ॥ ८७० ॥ अँखियां लगीं थारे रूप रंगी-ले रामा ॥ क्यारी करूं कछु वश ना मेरो बूड गैयां रस कूप ॥ चेटक लाय लुभाय लियो मन चतुराइ में अनूप ॥ कृपा निवासी लगन ना छूटे सुनियो अवध के भूप ॥८७१॥

राग सोरठ ॥ अँखियां राम रूप अनुरागी ॥ श्याम वरन मन हरन माधुरी, मूरत अति प्रिय लागी ॥ सुंदर बदन मदन शत शोभा निरख निरख रस पागी ॥ रत्न हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रँग रागी ॥८७२॥ अँखियां राम रूप रस भीनी॥कोटि काम अभिराम श्याम घन निरख भई लय लीनी॥ लोकलाज कुलकान नमानत नूतन नेह रंगीनी ॥रत्नहरी कैसे अब निकसे होगई ज्यों जल मीनी ८७३॥

राग खट॥ मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो ॥ वन प्रमोद की कुंज गली में चोर्यो चित्त हमारो॥मृदु मुसक्यान विलोकन से कछु टोना मोपै डारो ॥ राम सखे अब विन पिया देखे सब सुख लागत खारो ॥ ८७४ ॥

राग कालिंगडा ॥ बांके हमारे यार सामलिया॥बांकी लटपटी पात लपेटे बांकी बँधे तलवार सामलिया ॥ बांके शीश जरत की पगिया बांके घोडे असवार सामलिया ॥ रामसखे बांके हाथ विकाने दशरथ सुत सरदार सामलिया ॥

राग जंगला॥काहेको बांधे तीर कमनियां॥भवां कमान बनी जो तिहारी नयन पलक दोऊ शर की अनियां ॥ संत हृदय वन मन मृग ढूंढत चुन चुन मारत शब्द रसनियां ॥ राम

लाल लाल भई खोरी ॥ रतनहरी श्री अवध बिहारी चि-
रजीवो सुंदर दोउ जोरी ॥ ८८५ ॥

राग होरी दादरा ॥ खेलत रघुराज आज रंग भरी
होरी ॥ राम लषण भरत शत्रुहन सुंदर बर जोरी ॥ कंचन
पिचकारी करन केसर रंग बोरी ॥ गह गह भर रंग भरत
कह कह हो होरी ॥ उडत रंग बर गुलाल भर भर भर झोरी ॥
गारी देदे अबीर डारत बरजोरी ॥ रंगसों मृदंग बाजत
डफ की घनघोरी ॥ गाय गाय धाय धाय मींडत मुख मोरी॥
अवध नगर रंग बढ्यो सजनी निरखोरी॥रतनहरी रामराज
युग युग न टरोरी ॥ ८८६ ॥

राग होरी ॥ दशरथ राज छबीलो छैल होरी खेलत
आवै री ॥ राजकुमार हजार संग लिये रंग मचावै री ॥
कंचनकी पिचकारी करन लिये अति छबि पावै री ॥ उडत
गुलाल लाल रँग भीने मन सों भावै री ॥ डफ मृदंग
की धुन मिल अद्भुत राग सुहावै री ॥ रतन हरी श्री अवध
बिहारी पै बलि बलि जावै री ॥ ८८७ ॥

राग परज ॥ लाल गुलाल जिन डारो ॥ बरजोरी न
करो रघुनंदन छोडोजी हाथ हमारो ॥ झकझोरो न मुरक
जाय बैयां छूट जाए कचवारो ॥ राम सखे थारे पैयां परत
मेरो घूंघट पट न उघारो ॥ ८८८ ॥

राग होरी ॥ तेरी होरी की झलक दशरथ के लाल मेरे
मनमें बसी निकसे न पलक ॥ गाल गुलाल लाल रंग भी-

हिल में ॥ विमलादिक सखा रसिक झुलावें अतर लगावें पर मचहिल में ॥ सरजू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढी परम टहिल में ॥ ८८१ ॥

राग वसंत॥ गावो बसंत बसंत पंचमी मंगल दिन रघुराज कुँवर को॥आवो सब मिल गंधर्व गुणी जन तान तरंग उमंग रंग भर को ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ प्रेम रंगी सारंगी करको ॥ गाय गाय रघुनायक गुण गण रतनहरी हिये राम-ही हरषो ॥ ८८२ ॥ नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कंत बसंत आई ॥ नवल कुसुमावली फूल चहुँ-दिशि रही नवल मारुत नव सुगंधछाई ॥ नवल भूषण बसन पहन दोऊ रंग मगे नवल पीया सखी निरखें सुहाई ॥ नव-लगुण रूप जोवन जडत नित नयो रतन हरी देत आशिष बधाई ॥ ८८३ ॥

राग वसंत ॥ खेलत बसंत राजाधिराज ॥ देखत नभ कौतुक सुर समाज ॥ सोहैं अनुज सखा रघुनाथ साथ ॥ झोरिन अवार पिचकारी हाथ ॥ बाजें मृदंग डफ ताल बेनु ॥ छिरकें सुगंध भरे मलै रेनु ॥ बरषत प्रसून वर बिबुध वृंद ॥ जैजै दिनकर कुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास ॥ गावत कल कीरति तुलसीदास ॥ ८८४ ॥

राग टोडी ॥ अवध नगर सुंदर समाज लिये खेलत राम लषण होरी ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ केशर रंग करी घनघोरी ॥ इत ते भरत शत्रुहन आए उडत गु-

गने॥ जान नाम अजान लीने जाने यमपुर मने॥ दास तु-
लसी शरण आयो राखिये अपने॥ ८९२॥

राग जंगला॥ चितहिं राम दीन ओर कोर की कटाक्षहिं॥
चितहिं दीन ओर कोर बार बार करि निहोर जान दीन बिपति
छीन साहिबी बिचार लीन लाय लीन पाछहिं॥ लुगा रोटि
महीन मोटि खरा खोटि बडा छोटि तुमसे नहीं कछू ओट
हाथ है तिहारे॥ ना तिहाई रोजगार पेट हीसे एहै काज
सुनिये गरीबनिवाज राम ररन उदर भरन मेरे राम
राखो शरण यथा धेनु बाछहिं॥ दासो दास खाय
पांय स्वान औ मंजार जांय बारिउ कहार जहां आसन कर-
डासहिं॥ बचै जूठन को प्रसाद तोरा कुवर सरा कुरा तो फि-
र सुध लीजो मोरी इनके सभ पाछहिं॥ कौल ते बे कौल हों
तो सुनिये रघुवंश केतु तो निकेत ते निकार तुमको नहीं खोर
राम खेद देव आछहिं॥ मांगो बलि चरण सेई बार बार हेई
हेई नाहिं कछु लेहों देहों राखिये किनारे॥ ताते कर चरण
जोर मोको नाहिं और ठौर तुम तज और जाऊं कहां अवध के
दुलारे॥ दास तुलसी टुकर खोर लाग रहों तुमरी ओर
चौकट नहीं छूटे नाथ जोकोई झिझकोरे॥ शीश झकर
नाक रगर कल न परे तुमरी बिगर छूटे नहीं नाम नगर
डगर श्याम प्यारे॥ ८९३॥

राग देस॥ करुणानिधान सुनियाजी कछु मेरो काज
है भारी॥ प्रहलाद के हितकारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह

नी तेरी प्रेम भरी अँखियन की पलक॥नयन विशाल ललित मतवारे लेरी अजब फँसी कुंडल में अलक ॥ रतन हरी जो सुनो तो कहूं इक अरज हमारी है तुमरे तलक ॥८८९॥

राग देस ॥ रघुबर तुमको मेरी लाज ॥ सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम बडे गरीब निवाज ॥ पतित उधारन बिरद तिहारो श्रवणन सुनी अवाज ॥ हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अघ खंडन दुख भंजन जन के यही तिहारो काज ॥ तुलसीदास पर किरपा करिये भक्ति दान देहु आज ॥ ८९० ॥

राग बसंत ॥ बंदों रघुपति करुणानिधान ॥ जाते छूटे भव भेद ज्ञान ॥ रघुबंश कुमुद सुखप्रद निशेश ॥ सेवत पद पंकज अज महेश ॥ निज भक्त हृदय पाथोज भृंग॥लावण्य वपुष अगणित अनंग ॥ अति प्रबल मोह तम मारतंड ॥ अज्ञान गहन पावक प्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार ॥ सुर रंजन भंजन भूमि भार ॥ रागादि सर्प गण पन्नगार ॥ कंदर्प नाग मृगपति मुरार ॥ भव जलधि पोत चरण॥विंद ॥ जानकी रमण आनंद कंद॥हनुमंत प्रेम बापी मराल ॥ निष्काम कामधुक गो दयाल ॥ त्रैलोकतिलक गुण गहन राम ॥ कह तुलसीदास बिश्राम धाम ॥ ८९१ ॥

राग नट ॥हौं हरी पतित पावन सुने॥हौं पतित तुम पतित पावन दोऊ बानक बने ॥ ब्याध गणिका गज अजामिल साख निगमन भने ॥ और पतित अनेक तारे जात कापै

महाराज दशरथ के रंक राव कीने ॥ तू गरीब को निवाज मैं गरीब तेरो ॥ बारिक कहिये कृपालु तुलसीदास मेरो ॥ ॥८९६॥ तू दयालु दीन हौं तू दानी हौं भिषारी ॥ हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी ॥ नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसों ॥ मो समान आरत नहीं आरत हर तोसों ॥ ब्रह्म तू हौं जीव हों तू ठाकुर हौं चेरो ॥ तात मात गुरु सखा तूसभ बिधि हित मेरो॥तोहिं मोहिं नातो अनेक मानिये जो भावै ॥ ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै॥ ८९७॥

राग झंझोटी ॥ मैं किहि कहौं विपति अति भारी ॥ श्रीरघुवीर दीन हितकारी॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा॥ ताहीं बसे आय बहु चोरा ॥ अति कठिन करैं बर जोरा ॥ मानें नहीं विनय निहोरा ॥ तम मोह लोभ हंकारा ॥ मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥अति करैं उपद्रव नाथा॥ मरदैं मोहिं जानि अनाथा ॥मैं एक अमित बटपारा॥ कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागेहू नाहिं उबारा॥ रघुनायक करो सँभारा ॥ कह तुलसीदास सुन रामा ॥ लूटैं तस्कर तव धामा॥ चिंता यह मोहिं अपारा॥ अपयश ना होय तिहारा ॥ ८९८ ॥

राग आसावरी ॥ लाज न लागत दास कहावत ॥ सो आचरण बिसार शोच तज जो हरि तुमको भावत॥ सकल संग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनाव त॥ मोसम मंद महा खल पामर कौन जतन तिहिं पाव- त॥ हरि निर्मल मल ग्रसत हृदय असमंजस मोहिं जना-

नाम पाए सभ संतन के मन भाए॥ द्रौपदी जो भक्त तेरी जो आन सभा में घेरी चीरों को लाई ढेरी अब आई बार मेरी॥ तुमहो विपति के साथी जल डूबत राखे हाथी अब मेरी बेर माधो कहीं सोए हो तो जागो॥ गज की जो अरज मानी यह विदित वेद बानी अब मेरी ओर देखो मोहिं आपनो कर लेखो॥ भक्तन के फंद काटे अघ कोट कोट नाठे जी मैं बार-बार टेरूं टुक बाट तेरी हेरूं॥ कई कोटि पतित तारे जी मैं गिनत गिनत हारे महाराज अवध बिहारी भज रामसखे बलिहारी॥ ८९४॥

राग भैरव॥ जाऊं कहां तज चरण तिहारे॥ काको नाम पतित पावन जग किहिं अति दीन पियारे॥ कौने देव बराय बिरदहित हठ हठ अधम उधारे॥ खग मृग ब्याध पषाण विटप जड यमन कवन सुर तारे॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया बिवस बिचारे॥ तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे॥ ८९५॥

राग टोडी॥ दीनको दयालु दानी दूसरो न कोई॥ जाहि दीनता कहों हौं दीन देखों सोई॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहिब तो घनेरे॥ पै तौलौं जौलौं रावरे न नेक नयन फेरे॥ त्रिभुवन तिहुँ काल विदित वदत वेद चारी॥ आदि अंत मध्य राम साहिबी तिहारी॥ तोहिं माँग माँगनो न मांगनो कहायो॥ सुन स्वभाव शील सुयश याचक जन आयो॥ पाहन पशु बिटप बिहंग अपने करलीने॥

हरि द्रवो जान जन सो हठ परहरिये ॥ जाते बिपति जाल निशि दिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये ॥ जानत हूं मन कर्म बचन परहित कीने तरिये ॥ सो बिपरीत देख पर सुख बिन कारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सभको मत एह सतसंग सुदृढ धरिये ॥ निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिसे न आद-रिये ॥ संतत सो प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये ॥ कहो अब नाथ कौन बल ते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभाव ते द्रवो तो निस्तरिये ॥ तुलसीदास विश्वास आन नहीं कत पच पच मरिये ॥ १०२ ॥

कवित्त ॥ आगम वेद पुराण बखानत कोटिक मारग जांय न जाने ॥ जे मुनि ते पुनि आपुही आप को ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने ॥ को कर शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथ के हाथ बिकाने ॥ १०३ ॥ जाही हाथ धनुष चढायो है सीतापति जाही हाथ रावण संहार लंक जारी है ॥ जाही हाथ तार्‍यो औ उबार्‍यो हाथ हाथी गह जाही हाथ सिंधु मथि लक्ष्मी निकारी है ॥ जाही हाथ गिरिवर उ-ठाय गिरिधारी भयो जाही हाथ नंद काज नाथ्यो नाग का-री है ॥ हौं तो अनाथ हाथ जोर कहों दीनानाथ वाही हाथ मेरो हाथ गहबे की बारी है ॥ १०४ ॥

राग धनाश्री ॥ हरिजू मेरो मन हठ न तजै ॥ निशि दिन नाथ देउँ सिख बहुबिधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों यु-

वत ॥ जिहिं सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहिं आवत ॥ जाकी शरण जाय कोबिद दारुण त्रैताप बुझावत ॥ तिहूं गए मद मोह लोभ अति स्वर्गहिं मिटत नशावत ॥ भव सरिता को नाव संत यह कह औरन समुझावत ॥ हौं तिन सों हरि परम बैर कर तुमसों भलो मनावत ॥ नाहिंन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत ॥ राख शरण उदार चूडामणि तुलसी दास गुणगावत ॥ ८९९ ॥

राग कालिंगडा ॥ हम रघुनाथ गुणन के गवैया ॥ ताना रीरी ताना रीरी तानुम तन नाना नाना नहीं जाने ताता थैया ॥ धौरू द्रुपद कवित्त तलानो नाहिन ख्याल खिलैया ॥ गीत संगीत प्रबंध त्रिवत जित इनके नाहिं घढैया ॥ डूम अताई काल कलांउत नाहिंन भांड भवैया ॥ रतनहरी रघुनाथ भजन बिन काहू सों न राम रमैया९०० मैं तो पतित उधारो श्री रामा ॥मेरे दुःख निवारो श्री रामा मैं तो वावल देघर नंढडी ॥ गल हार हमेल सोहे कंढडी ॥ प्यारे वाझों नहीं जीया मैं ठंढडी ॥ हत्थीं छल्ले छापां बाहीं हो चूडीयां॥ प्यारे वाझों सभी गल्लां हो कूडीयां॥लालन मिले तां सभी गल्लां पूरीयां ॥ शाहहुसैन फिरै जो उतावला पहली चोट न थींदे चिट्टे हो चावला ॥ कोई ढंग मिले साईं हो रावला ॥ ९०१ ॥

राग आसावरी ॥ कौन जतन बिनती करिये ॥ निज आचरण विचार हार हिय मान जान डरिये ॥ जिहिं साधन

राग जैजैवंती ॥ प्रीति की रीति रघुनाथ जाने ॥ जात कुल बरण को नाहिं माने ॥ प्रीति प्रहलाद की जान करुणानिधि खंभ सों प्रगट नख उदर भाने ॥ दौड गजराज के फंद को काटने गरुड को छोड आए उलाने॥ अधम कुल भीलनी बेर दिये राम को पाय मन मगन अतिही सराहने ॥ गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुरपुर पठाने ॥ जानकी कारणे जोड कपि भालु दल कोट सो लंक गढ को टहाने ॥ बैर को भाव उत्साह हरि मिलन को अंत की बेर अंग में समाने ॥ भक्त भगवंत अंतर निरंतर नहीं याहो तो निगम आगम बखाने ॥ दास कान्हर यही रीति रघुनाथ की आपसे भक्त को सरस माने ॥ १०८ ॥

राग सोरठ ॥ जानत प्रीति रीति रघुराई ॥ नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निबाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई ॥ ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई ॥ तियबिरही सुग्रीव सखा लख प्राणप्रिया बिसराई ॥ रण पऱ्यो बंधु बिभीषण ही को शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहिं पहुनाई ॥ तब तहीं कहो शबरी के फलन की रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई ॥ केवट मीत कहत सुख मानत बानर बंधु बडाई प्रेम कनौडो राम सो प्रभु त्रिभुवन तिहुँ कला न भाई ॥ तेरो ऋणी हौं कह्यो कपि सों ऐसी मानहै को सेवकाई ॥ तु-

वती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजे ॥ होय अ-नुकूल बिसार शूल सभ पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलपभ्र-मत श्रमित निशि बासर शिर पद त्रान बजै ॥ तदपि अधम बिचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ लजै ॥ हौंहारयो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै ॥ तुलसीदास बश होत तवै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ १०५ ॥

राग सोरठ ॥ ऐसी मूढता या मन की ॥ परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसकन की ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृषित जान मति घन की ॥ नहिं तहिं शीतलता न बारि पुनि हानि होत लोचन को ॥ ज्यों गच कांच बिलोकि सेन जड छांहि आपने तन की ॥ टूटत अति आतुर अहार बश छित बिसार आनन की ॥ कहँ लग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जन को ॥ तुलसीदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ १०६ ॥

राग टोडी ॥ और कौन मांगिये को मांगवो निवार है ॥ तुम बिना दातार कौन दुख दरिद्र टार है ॥ धर्म धाम राम काम कोटि रूपरो ॥ साहिब सभ बिधि सुजान दान खड्ग शूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सभ के द्वार बाजै ॥ कुसमय दशरथ के दानी तू गरीब निवाजै ॥ सेवा बिन गुण विहीन दीनता सुनाए ॥ जे जे तैं निहाल किये फूले फिरत पाए ॥ तुलसीदास याचिक रुचि जान दान दीजिये ॥ राम-चंद्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजिये ॥१०७॥

राग सोरठ॥ऐसे राम दीन हितकारी॥अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी॥ साधन हीन दीन निज अघ बश शिला भई मुनि नारी॥ गृह ते गवन परश पद पावन घोर शाप ते तारी॥ हिंसारत निषाद तामस बपु पशु समान बनचारी॥ भेट्यो हृदय लगाय प्रेम बश नहिं कुल जात बिचारी॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कही न जाय अति भारी॥ सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गए भय टारी॥ बिहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन ब्रत धारी॥ जनक समान क्रिया ताकी निज कर सभ बात सँवारी॥अधम जात शवरी जोखित शठ लोक वेद ते न्यारी॥ जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥ कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी॥सह न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सह गारी॥ रिपु को बंधु बिभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी॥ शरण गए आगे होय लीनो भेट्यो भुजा पसारी॥ अशुभ होय जिनके सुमरन ते बानर रीछ बिकारी॥ वेद विदित पावन कीये ते सभ महिमा नाथ तुम्हारी॥ कहँ लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम बिपति निवारी॥ कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी॥ ११२॥

राग भैरव॥ ऐसी हरि करत दास पर प्रीति॥ निज प्रभुता बिसार जनके बश होत सदा यह रीति॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्म की डोरी॥ सो परब्रह्म य-

लसी राम सनेह शील लख जोन भक्ति उर आई॥ तौ तोहि जन्म जाय जननी जड तन तरुणता गँवाई॥ १०९॥

राग जैतश्री॥ श्री रघुबीरकी यह बान॥ नीच हू सों करत नेह सो प्रीति मन अनुमान॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कान॥ लियो सो उर लाय सुत ज्यों प्रेम को पहचान॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सान॥ जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निज पान॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण खान॥ खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखान॥ रजनीचर अरु रिपु विभीषण शरण आयो जान॥ भरत ज्यों उठ ताहि भेटत देह दशा भुलान॥ कौन सौम्य सुशील बानर जिनहिं सुमरत हान॥ किये ते सभ सखा पूजे भवन अपने आन॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दान॥ भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न ठान॥ ११०॥

राग प्रभाती॥ सांचे मन के मीता रघुवर सांचे मन के मीता॥ कब शबरी काशी को धाई कब पढ आई गीता॥ जूंठे फल ताके प्रभु खाए नेक लाज नहिं कीता। लंकापति को गर्व हर्यो है राज्य विभीषण दीता॥ सुग्रीव सखा कियो रघुनंदन वानर किये पुनीता॥ सफल यज्ञ मुनि जनके कीने सभ भूपन बल जीता॥ भसम रमाई कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता॥ तुलसीदास प्रभु शुद्ध चित्त लख सभहिं मोक्ष पद दीता॥ १११॥

जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावत मुनि ज्ञानी ॥ सो गति देत गीध शबरी को प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो संपति दशशीश अरप कर रावण शिव पै लीनी ॥ सो संपदा बिभीषण को अति सकुच सहित हरि दीनी ॥ तुलसी दास सभ भांति सकल सुख जो चाहत मन मेरो ॥ तो भज राम काम सब पूरण करै कृपानिधि तेरो ॥९१५॥

राग जंगला ॥ ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो ॥ बारि न बोर सको प्रहलादहिं पावक नाहिं जरोसो॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहुभांति सतायो हठकर वैर करोसो ॥ मार्यो चहै दास नरहरि को आपै दुष्ट मरोसो ॥ ऐसो० ॥ मीरा के मारन के कारण पठयो जहर खरोसो ॥ राम नाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोसो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपदसुता के चीर उतारन राज समाज गयो सो ॥ ऐंचत खैंचत भुज बल हारे नेक न अँग उघरो सो ॥ ऐसो० ॥ भारत में भँवरी के अंडा कोटिन दल बिखरो सो ॥ राम नाम जब पक्षी टेर्यो घंटा टूट परो सो ॥ ऐसो० ॥ जार्यो लंक अंजनीनंदन देखत पुर सगरो सो ॥ ताके मध्य बिभीषण को गृह राम कृपा उबरो सो ॥ ऐसो० ॥ रावण सभा कठन भए अंगद हठ कर हरिसुमरो सो ॥ मेघनाद सम कोटिन योधा पग नहिं टारटरो सो ॥ ऐसो० ॥ तुलसीदास विश्वास राम को को नर नार करो सो ॥ और प्रभाव कहां लग

शोमति बांध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥ जाकी माया बश विरंचि शिव नाचत पार न पायो ॥ करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिन सो नाच नचायो ॥ बिश्वंभर श्रीपति त्रिभुवन पति वेद विदित यह लीख ॥ बलि सों कछु न चली प्रभुता बर हो द्विज मांगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार ॥ अंबरीष हित लाग कृपानिधि सो जनम्यो दश ब.र ॥ योग बिराग ध्यान जप तप कर जिहिं खोजत मुनि ज्ञानी ॥ बानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपाल जम काल पवन रवि शशि सब आज्ञा कारी ॥ तुलसीदास प्रभु उग्रसेन के द्वार बेंत करधारी ॥ ११३ ॥

राग जैतश्री ॥ ऐसी कौन प्रभु की रीति ॥ बिरद हेतु पुनीत परिहर पामरन पर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय ॥ मात की गति दियो ताहि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहित गोपिकन पर कृपा अतुलित कोन ॥ जगत पिता विरंचि जिनके चरण की रज लीन ॥ नेम ते शिशुपाल दिन प्रति देत गिन गिन गार ॥ कियो लीन सो आप में हरि राजसभा मझार ॥ ब्याध चरणहिं बाण मारचो मूढ मति मृग जान ॥ सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निज बान ॥ कौन तिनकी कहे जिनके सुकृत औ अघ दोय ॥ प्रगट पातक रूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ११४ ॥

राग सोरठ ॥ ऐसो को उदार जग माहीं ॥ बिन सेवा

परे हो ॥ अब देख प्यारे लंकमें संकट विभीषण को परे ॥ तुलसी सराहत राम को जिन अवध मंगल भरे हो॥ ९१९॥

राग झंझोटी ॥ अस कछु समझ परै रघुराया ॥ बिन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटे माया ॥ वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुण भव पारन पावे कोई ॥ निशि गृह मध्य दीप की बातन तम निविरत नहीं होई ॥जैसे कोऊ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावे ॥ चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न बिपति नशावे ॥ खट रस बहु प्रकार भोजन कोऊ दिन अरु रैन बखानै॥ बिन बोले संतोष जनित सुख खाय सोई पै जानै॥जब लग नहीं निज हृदय प्रकाश अरु विषय आश मन माहीं ॥ तुलसीदास तब लग जग योनि भ्रमत सुपनेहूं सुख नाहीं ॥ ९२० ॥ हे हरि कस न हरो भ्रम भारी ॥ यद्यपि मृषा सत्य भासे जब लग नहीं कृपा तुम्हारी ॥ अरथ अविद्यमान जानीये संशृत नहीं जाय गुसाईं ॥ बिन बांधे निज हठ शठ परबश पऱ्यो कीर की नाईं ॥ सुपने व्याध बिबिध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई ॥ वैद्य अनेक उपाय करें जागे बिन पीर न जाई ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृति सम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी ॥ तिहिं बिन तजे भजे बिन रघुपति विपति सकै को टारी ॥ बहु उपाय संसार तरन को विमल गिरा श्रुति गावै ॥ तुलसीदास मैं मोर गई बिन जिया सुख कभूं न पावै॥ ९२१ ॥

राग बिलावल ॥ केशव कही न जाय क्या कहिये ॥

वरणों जो जमराज डरो सो ॥ ऐसो० ॥ ११६ ॥ राम भरोसो भारी रे मन ॥ पानीपर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ जम के बांधे पतित छुडाए ऐसे पर उपकारी ॥ सब की खबर लेत दुख सुख की अर्जुन के हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारें महिमा सुनी तिहारी ॥ मिहरदास प्रभु शरण गहे की राखो लाज हमारी ॥ ११७ ॥

राग काफी ॥ जानकी नाथ सहाय करैं जब कौन बिगार करै नर तेरो ॥ सूरज मंगल सोम भृगु सुत बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ॥ राहु केतु की नाहिं गम्यता संग शनीचर होत उचेरो ॥ दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदी चीर उतार कुमंत्र प्रेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ गए चीर के भार घनेरो ॥ गभ में राख्यो परीक्षित् राजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारत में भवरी के अंडा तापर गज का घंटा घेरो ॥ जाकी सहायकरी करुणानिधि ताके जगत में भाग बडेरो ॥ रघुवंशी संतन सुखदाई तुलसीदास चरणनको चेरो ॥ ११८ ॥

राग वडहंस ॥ जग के रुसे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवारेहो ॥ अब देख प्यारे खंभ में नरसिंह हो अवतरे ॥ हरणाक्ष को मारक प्रहलाद रक्षा करे हो ॥ अब देख प्यारे सभा में कपट के पाँसे परे ॥ द्रौपदी को चीर बढाय के खैंचत दुशासन हरे हो ॥ अब देख प्यारे समर में तैयार दोदल खडे ॥ चिगना बचे भरदूल के गज घंट वापर

राग जैजैवंती॥ राम सुमर राम सुमर यही तेरो काज है॥ माया को संग त्याग हरिजू की शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूठो सभ साज है॥ सुपने ज्यों धन पछान काहे पर करत मान बारूकी भीत तैसे बसुधा को राज है॥ नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आज है॥ १२५॥

राग भैरव॥ सुमर सनेह सों तू नाम राम राय को॥ संबर निसंबर को सखा असहाय को॥ भाग है अभागे हूं को गुण गुण हीन को॥ गाहक गरीब को दयालु दानी दीन को॥ कुल अकलीन को सुन्यो जो वेद साख है॥ पांगुरे को हाथ पांव आंधरे को आंख है॥ माई बाप भूखे को अधार निराधार को॥ सेतु भवसागर को हेतु सुख सार को॥ पतित पावन राम नाम सों न दूसरो॥ सुमिर सुभमी भयो तुलसी सों ऊसरो॥ १२६॥

राग पहाड॥ सभ मत को मत यह उपदेशू॥ मूल मंत्र यह उचित सिखावन भज मन सुत अवधेशू॥ अहि पुर नरपुर देव लोक पुर रंक फकीर नरेशू॥ जो जापक सिया रामनाम को सो भवसिंधु तरेसू॥ जप तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू॥ तुलहिं न सीया राम नाम सम वेद पुराण कहेसू॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि व्यास विरंचि गणेशू॥ यह सब गावत नाम महातम काग भुशुंड खगेशू॥ नाम प्रतीत राख हिरदे में उमा सों कह्यो महेशू॥

देखत तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये॥ शून्य भीत पर चित्र रंग नहीं बिन तन लिखा चितेरे॥ धोए मिटे न मरीये भीत दुख पाइये एह तन हेरे॥ रवि कर नीर बसे अति दारुण मकर रूप तिहिं माहीं॥ बदन हीन सों ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं॥ कोऊ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रबल कर मानै॥ तुलसीदास पर हरै तीन भ्रम सो आपन पहचानै॥ १२२॥

राग भैरव॥ राम जप राम जप राम जप बावरे॥ घोर भव नीर निधि नाम निज नाव रे॥ एकही साधन सभ ऋद्धि सिद्धि साध रे॥ ग्रसे कलि रोग योग संयम समाध रे॥ भलो जो है पोच जो है दाहिने जो बाम रे॥ राम नाम हीसे अंत सभ ही को काम रे॥ जग नभ बाटिका रही है फैल फूल रे॥ धूआं कैसे धौल हैं तू देख मत भूल रे॥ राम नाम छाँड जो भरोसो करै और रे॥ तुलसी परोसो त्याग मांगे कूर कौर रे॥ १२३॥ राम नाम जप जिया सदा सानुरागरे॥ कलि न विराग योग याग तप त्याग रे॥ राम नाम सुमरन सब विधि ही को राज रे॥ राम को बिसारबो निखेद शिरताज रे॥ राम नाम महामणि फणि जग जाल रे॥ मणि लिये फणि जीये व्याकुल बिहाल रे॥ राम नाम कामतरु देत फल चार रे॥ कहत पुराण वेद पंडित पुरार रे॥ राम नाम प्रेम परमारथ को सार रे॥ राम नाम तुलसी को जीवन आधार रे॥ १२४॥

बिलासा॥ मज्जहिं सुर सज्जन मुनि जन मन मुदित मनोहर बासा॥बिन बिराग जप याग योग व्रत बिन तीरथ तनुत्यागे। सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे१३०

राग बिभास ॥ भज मन राम चरण सुख दाई॥ जिहि चरणन से निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई॥ जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई॥ जिहिं चरणन की चरण पादुका भरत रह्यो लव लाई॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई॥ सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई॥सोई चरण गोतम ऋषिनारी परश परम पद पाई॥दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई॥सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा सँग धाई॥ कपि सुग्रीव बंधु भय ब्याकुल तिन जाय छत्र फिराइ ॥ रिपु को अनुज बिभीषण निशिचर परशत लंका पाई॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेश सहस मुख गाई॥ तुलसी दास मारुतसुत की प्रभु निज मुख करत बडाइ॥१३१॥

राग परज॥ भज मन राम चरण दिन राती ॥ काहेको भ्रमत फिरत हो निशि दिन भजन करत अलसाती॥ बिरथा जन्म गँवायो मूरुख सोवत रह्यो दिन राती ॥ राम सिया को नाम अमीरस सो काहे नहिं खाती ॥ संवत सोरासै इकतीसा जेठ मास खट स्वाती ॥ तुलसीदास इक विनय करत है प्रथम अरज की पाती॥१३२॥ रे मन क्यों न भजो रघुवीर ॥ जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर

तुलसीदास यह नाम की महिमा कलिमल सकलहरेसू१२७

राग कालिंगडा॥ राम सुमिरले सुमिरन करले कोजाने कल की॥ रैनि अँधेरी निर्मल चंदा ज्योति जगे झलकी ॥ धीरे धीरे पाप कटत हैं होत मुकति तन की ॥ कौडो कौडी माया जोडी कर बातां छल की॥ शिर पर गठरी धरी पाप की कौन करे हलकी॥ भवसागर के त्रास कठिन हैं थाहि नहीं जल की॥ धर्मी धर्मी पार उतर गए डूबे अधम जनकी॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मंडल की ॥ भज भगवान आन नाहिं कोई आशा रघुबरकी॥१२८॥

राग धनाश्री॥ राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई॥ राम नाम सुमरन बिन बूडत अधिकाई ॥ बनिता सुत देह गेह संपति सुखदाई ॥ इन में कछु नाहिं तेरो काल अवधि आई॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने ॥ तेऊ उतर पार परे राम नाम लीने॥ शूकर कूकर योनि भ्रम्यो तौऊ लाज न आई॥ राम नाम छाँड अमृत काहे विष खाई॥ तज भर्म कर्म विधि निषेद राम नाम लेही॥ गुरु प्रसाद जन कबीर राम कर सनेही॥ १२९ ॥

राग भैरव ॥ रामचरण अभिराम काम प्रद तीरथ राज विराजै ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षैबट छाजै॥ श्याम चरण पद पीठ अरुण तल लसत बिशद नखश्रेनी॥ जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चली ललित त्रिवेनी ॥ अंकुश कुलिश कमल धुज सुंदर भँवर तरंग

प्रगट कियो नयन नाशिका मुख रसना रे॥ ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिर्‍यो एक छिना रे॥ बाल अवस्था खेल गँवाई अर ज्वानी बहु रूप बना रे॥ वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोह के फंद घना रे॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आए हरि शरणा रे॥ ना माने तो साख बताऊं अजामील गणिका सधना रे॥ धन जोबन अंजली के जल ज्यों घटत जात है छिना छिना रे॥ जे सुख चाहैं भजें रघुनंदन नामदेव आयो हरि शरणा रे॥ १३६॥

राग भैरव॥ जाग जाग जीव जड जोहै जग यामिनी॥ देह गेह नेह जान जैसे घन दामनी॥ सोवत सुपने सहे संशृत संताप रे॥ बूडयो मृग बारि खायो जेवरी के सांप रे॥ कहै वेद बुध तूतो बूझ मन माहिं रे॥ दोष दुख सुपने के जागे ही पै जाहिं रे॥ तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूं ताप रे॥ राम नाम शुच रुच सहज स्वभाव रे॥ १३७॥

राग प्रभाती॥ क्यों सोया गफलत का माता जागो रे नर जाग रे॥ या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे॥ या जागे कोई संत पियारा लगी राम सों डोर रे॥ ऐसी जागन जाग पियारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे॥ ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलाद को राज रे॥ हरि सुमरे सोई हंस कहावे कामी क्रोधी काग रे॥ तनु का चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे॥ मन है मुसाफर तन की सरां बिच तू कीता अनुराग रे॥ रैनि बसेरा

ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम बरण मृदु गात मनोहर भंजन जन को पीर ॥ लछमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयू तीर ॥ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चंचल चित हो वीर ॥मंद मंद मुसकात सखन सों बोलत वचन गँभीर॥पीत वसन दामिनि द्युति निंदत कर कमलन धनु तीर॥ रामदास रघुनाथ भजन विन धृग धृग जन्म शरीर१३३॥

राग सोरठ ॥ रे मन राम सों कर प्रीत ॥ श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होंय पतित पुनीत ॥ काल ब्याल ज्यों परयो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज काल पुनि तोहिं ग्रस है समझ राखो चीत ॥ कहै नानक राम भजले जात औसर बीत ॥ १३४ ॥

राग धनाश्री ॥ सुन मन मूढ सिखावन मेरो ॥ हरि पद विमुख काहू न लह्यो सुख शठ यह समझ सबेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयनन ते पावत दुख बहु तेरो ॥ भ्रमत भ्रमत निशि दिवस गगन में तहिं रिपु राहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँ पुर सुयश घनेरो ॥ तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहवो ताहू केरो ॥ छुटे न विपति भजे विन रघुपति श्रुति संदेह निवेरो ॥ तुलसीदास सभ आश छांड कर होउ राम को चेरो ॥ १३५ ॥

राग ललित ॥ गाले रे गोविंद गुणा रे ऐसो समय बहुरि नहिं पावे फिर पछतावेगा मूढ मना रे ॥ पानी की बूंद से पिंड

सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई ॥ बिन हरि भजन इंद्रायन के फल तजत नहीं करुवाई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने ॥ तुलसी प्रभु अनुराग रहत जिमि सालन साग अलोने ॥ १४२ ॥

राग केदारो ॥ ऐसे जन्म समूह सिराने ॥ प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तज सेवत चरण बिराने ॥ जे जड जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने ॥ सूखत बदन प्रशंसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर करत न पाँय पिराने ॥ सदा मलीन पंथके जल ज्यों कभूं न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवे को अमित जतन उर आने ॥ तुलसी चित चिंता न मिटै बिन चिंतामणि पहचाने ॥ १४३ ॥

राग भैरव ॥ मोह जनित मल लाग विविध बिध कोटों जतन न जाई ॥ जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥ नयन मलिन परनार निरख मन मलिन विषय संग लागे ॥ हृदय मलिन बासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिंदा सुन श्रवण मलिन भए वचन दोष पर गाए ॥ सभ प्रकार मल भार लाग निज नाथ चरण बिसराए ॥ तुलसीदास ब्रत दान ज्ञान तप शुद्धि हेतु श्रुति गावै ॥ राम चरण अनुराग नीर बिन मल अति नाश न पावै ॥ १४४ ॥

राग धनाश्री ॥ मेरी प्रीति गोविंद सों ना घटे ॥ मैं

करले डेरा उठ चलना परभात रे॥ साधु संगत सतगुरुकी सेवा पावे अचल सुहाग रे॥ नितानंद भज राम गुमानी जागतु पूरन भागरे॥ १३८ ॥

राग देस ॥ राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ जो प्रभु करे भलो कर मानो मुख ते वुरो न कहिये ॥ हर होनी अन हो-नी करदे सो सभ शिर पर सहिये ॥ करै कृपा हरि नाम जपावे सो अंतर ले गहिये ॥ मिहरदास हरि हुकुम मानिये यह सेवक को चहिये ॥ १३९ ॥

राग पूरबी ॥ अपनी ओर निबाहिये वाको वाहू जाने॥ भली वुरी कछु जानत नाहीं करम लिख्यो सो पाइये।१४०।

राग सोरठ ॥ जाको प्रिय न राम बैदेही ॥ सो छाँडिये कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रह-लाद बिभीषण बंधु भरत महतारी ॥ बलि गुरु व्रजवनितन पति त्यागे भई जग मंगलकारी ॥ नाते नेह राम के मनि-यत सुहृद सुसेव्य जहांलौ ॥ आंजन कहा आंख जिहिं फूटे वहुतो कहों कहांलौ ॥ तुलसी सो सभ भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो ॥ जासों होय सनेह राम पद सोई है हितू हमारो ॥ १४१ ॥

राग मल्हार ॥ जाको लगन राम की नाहीं ॥ सो नरखर कूकर शूकर सम वृथा जियत जग माहीं॥काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सब ही के॥ मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ शूर सुजान सुपूत

दरं॥ पट पीत मानो तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुता वरं॥ भज दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य बंश निकंदनं॥ रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नंदनं॥ शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं॥ आजान भुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं॥ इम्र बदत तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं॥ मम हृदय कंज निवास कर कामादि खल दल गंजनं॥ १४८॥

इति षष्ठम भाग संपूर्णम्॥

अथ सप्तम भागः॥

चेतावनी॥

दोहा॥

बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत॥
काल चिरैया चुग रही, निशिदिन आयू खेत७०॥
रे मन क्यों भटकत फिरै, भज श्रीनंदकुमार॥
नारायण अजहूं समझ, भयो न कछूबिगार ७१॥
तेरे भावे कछु करो, भलो बुरो संसार॥
नारायण तू बैठके, अपनो भवन बुहार॥ ७२॥
तनक बडाई पायके, मनमें अधिक गरूर॥
नारायण जिन बैठ मग, साहिब को घर दूर७३॥
नारायण हरिभजन में, तू जिन देर लगाय॥

तो मोल महिंगे लीया जी सटे ॥ चित्त सुमरन करूं नयन अवलोकनो श्रवण बाणी सुयश पूर राखूं ॥ मन सुमधुकर करूं चरण हिरदे धरूं रसन अमृत राम नाम भाखूं ॥ साधु संगति बिना भाव नहिं ऊपजे भाव बिन भक्ति नहिं होय तेरी ॥ कहत रामदास इक वीनती प्रभु सों पैज राखो राजा राम मेरी ॥ १४५ ॥

राग पीलो ॥ सिया राम बिना बीते जात दिना ॥ धन जोवन और सुख संपदा रैनि का सुपना ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरे कोउ नहीं अपना ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो झूठे मित्र घना ॥ १४६ ॥

राग भैरव ॥ राम कृष्ण उठ कहिये भोर ॥ यह अवधेश वही ब्रज जीवन यह धनुष धरन वह माखन चोर ॥ इनके चमर छत्र शिर सोहै उनके लकुट मुकुट कर जोर ॥ इन सँग भरत शत्रुहन लछमन बलदाऊ संग नंद किशोर ॥ इन संग जनक लली अति सोहै उत राधा संग करत कलोर ॥ इन सागर में शिला तरायो उन गोवर्द्धन नख की कोर ॥ इन मार्‍यो लंकापति रावण उन मार्‍यो कंसा बरजोर ॥ तुलसी के यह दोऊ जीवन दशरथ सुत और नंद किशोर ॥ १४७ ॥

राग गौरी ॥ श्री रामचंद्र कृपालु भज मन हरन भव भय दारुणं ॥ नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं ॥ कंदर्प अगनित अमित छवि नव नील नीरज सुं-

नारायण बिन स्वारथी, हितू नंदको लाल ॥ ८५॥
पुण्य पाठ पूजा प्रगट, करत सहित हंकार॥
नारायण रीझै नहीं, चतुरन को सरदार ॥८६ ॥
नारायण निज हीय में, अपने दोष निहार ॥
ता पीछे तू और के, औगुण भले बिचार॥ ८७ ॥
नारायण या जगत में, यह दो वस्तू सार ॥
सभसों मीठो बोलबो, करबो पर उपकार ११० ॥
दो बातनको भूल मत, जो चाहत्यन हैं शून्य ॥
नारायण इक मौत को, दूजे श्री भगवान गून १११॥
नारायण दो बात को, दीजे सकल दे कान ॥
करी बुराई और ने, आप किन सन्मान ॥ ११२ ॥
तज पर औगुण नीर को, ज्यु भाजी बिन लौन ॥
हंस संत की सर्वदा, नारायण बापुरो कौन ॥ ११३ ॥
नर संसारी लगन में, जबलग घट में प्रान ॥
नारायण हरि प्रीति के, धुनक परेगी कान ११४ ॥
नारायण हरि लगनमी, पाछे बना शरीर ॥
विषय भोग निद्रा हँसी है, मन नहिं बांधे धीर॥ ११५
ब्रह्मादिक के भोग सरमें, सोउ भये समरत्थ ॥
नारायन इक कुचन को, जिन न पसार्‍यो हत्थ ११६
कर कुसंग चाहै कुशल, तुलसी यह अफसोस ॥
महिमा घटी समुद्र की, रावन बसत पडोस ११७॥
दीप शिखा सम युवति रस, मन जिन होसि पतंग॥

का जाने या देर में, श्वास रहैं के जाय॥ ७४॥
नारायण मैं सच कहूं, भुज उठाय के आज॥
जो जियबने गरीब तू, मिलैं गरीबनिवाज॥ ७५॥
अपनो साखी आप तू, निज मन माहिं विचार॥
नारायण जो खोटहै, ताको तुरत निकार॥ ७६॥
जो शिर साटे हरि मिलैं, तो पुनि लीजे दौर॥
नारायण ऐसी नहो, गाहक आवै और॥ ७७॥
प्रेम सहित अँसुअन टरे, धरे युगल को ध्यान॥
नारायण ता भक्त को, जग में दुर्लभ जा[illegible] ७८॥
जिनको पूरण भक्ति है, ते सबसों [illegible]धीन॥
नारायण तज मान मद, ध्यान सलिल के [illegible]॥ ७९॥
नारायण दो बात से, अधिक और न[illegible] बात॥
रसिकनकोसतसंगनित, युगलध्यानदि[illegible]रात ८०॥
नारायण दुख सुख उभय, भ्रमत यथादिनरात॥
बिन बुलाए ज्यों आरहे, बिना कहे त्यों जात ८१॥
नारायण सुख भोगमें, मस्त सभी संसार॥
कोउ मस्त वा मौज में, देखो आंख पसार॥ ८२॥
धन जोबन यों जायगो, जा बिधि उडत कपूर॥
नारायण गोपाल भज, क्यों चाटे जग धूर॥ ८३॥
नारायण तू भजन कर, कहा करैंगे कूर॥
अस्तुतिनिंदा जगत की, दोउअनके शिर धूर ८४॥
निज स्वारथ के मित्र सब, यही जगत की चाल॥

तुलसी पातक झरत हैं, देखत उनको मुःख॥१२९॥
तुलसी जो जन हेत सों, सेवा जाने कोय॥
नर को बश करबो कहा, नारायण बश होय १३०॥
बहुत गई आनंद सों, रही तनक सी आय॥
तुलसी चिंता मत करो, श्री रघुवीर सहाय॥१३१॥
तुलसी जनमत ही लिख्यो, दुख सुख जियके साथ॥
ब्याधिमिटै जो बैद सों, कलमगही क्यों हाथ॥१३२॥
परारब्ध न्योतो दियो, जबलग रहै शरीर॥
तुलसी चिंता मत करो, भजलो श्रीरघुबीर॥१३३॥
तुलसी बिलम न कीजिये, भजिये राम सुजान॥
जगत मजूरी देत है, क्यों राखें भगवान॥१३४॥
चतुराई चूल्हे परी, भट्ठ परे आचार॥
तुलसी हरि की भक्तिबिन, चारोंबरणचमार॥१३५॥
एक भरोसा एक बल, एक आश विश्वास॥
स्वाति सलिल हरि नाम है, चातकतुलसीदास॥१३६॥
तुलसी ऐसी प्रीति कर, जैसे चंद्र चकोर॥
चोंच झुकी गरदनगली, चितवत वाही ओर॥१३७॥
उत्तम अरु चंडाल घर, जहँ दीपक उजियार॥
तुलसी मते पतंग के, सभी जोत इक सार॥१३८॥
मकरी उतरे तार से, पुनि गह चढत जो तार॥
जाका जासों मन रम्यों, पहुँचत लगै न बार॥१३९॥
नीच नीच सभ तर गए, संत चरण लवलीन॥

भजहिं राम तजकाम मद, करहिं सदासतसंग ११८
काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह की धार॥
तिनमें अति दारुण दुखद, मायारूपी नार११९॥
मिटे न मनकी कल्पना, गए कल्पतरु छांह॥
जब लग ह्वैं न कृपाकर,जनकसुताकोनाह॥१२०
राम भरोसो राखले, अपने मन माहीं॥
कारज सबै सँवारहीं, बिगरे कछु नाहीं॥१२१॥
राम भरोसो छांडके, करैं भरोसो और॥
सुख संपति की कथा कहूं, नरक न पावैं ठौर॥१२२
राम चराचर विश्व मय, तुलसी यह गति देख॥
नाम चतुर गुण पंच युत, दुगुण बसुन करलेख॥१२३
सो अनन्य जाके अस, मति न टरै हनुमंत॥
म सेवक सचराचर, रूप राशि भगवंत॥१२४॥
उमा जे राम चरण रत, विगत काम मद क्रोध॥
निज प्रभु मय देखैं जगत,किहिंसनकरैंबिरोध१२५
यथा लाभ संतोष सुख, रघुपति चरण सनेह॥
तुलसी जो मन बश रहै, जस कानन तसग्रेह १२६
लग्न मुहूरत शुभ घरी, तुलसी गिनत न जाहिं॥
जाको रघुवर दाहिने, सभी दाहिने ताहिं १२७॥
खेलत बालक ब्याल सँग, पावक मेलत हाथ॥
तुलसी शिशु पितु मात सम, राखतहैं रघुनाथ१२८॥
तन कर मन कर बचन कर, देत न काहू दुःख॥

प्रेम भक्ति बिन साधवा, सबही थोथा ज्ञान १५१॥
गद्गद बाणी कंठ में, आंसू टपकैं नयन॥
वह तो बिरहन पीव की, तडफत है दिन रैन १५२॥
पिया चहो के मत चहो, मैं तो पिया की दास॥
पिया के रंग राती रहूं, जग से रहत उदास १५३॥
हाथी घोडे धन घना, चंद्रमुखी बहु नार॥
नाम बिना जमलोक में, पावत दुःख अपार १५४॥
मोह महा दुख रूपहै, ताको मार निकार॥
प्रीति जगत की छोड दे, तब होवे निस्तार १५५॥
धनवंते दुखिये सभी, निर्धन दुख का रूप॥
साधु सुखी तुलसी कहे, पायो भेद अनूप १५६॥
ना सुख विद्याके पढे, ना सुख वाद विवाद॥
साधसुखी तुलसी कहे, लागी जबहिं समाध १५७॥
जैसे संडसी लोह की, छिन पानी छिन आग॥
तैसे दुख सुख जगत के, तुलसी तू तज भाग १५८॥
तुलसी जग में यों रहे, ज्यों जिह्वा मुख माहिं॥
घीव घना भक्षण करै, तौभी चिकनी नाहिं १५९॥
तुलसी गुरू प्रताप से, ऐसी जान पडी॥
नहीं भरोसा श्वास का, आगे मौत खडी १६०॥
ज्यों तीया पीहर बसे, सुरत रहे पिउ माहिं॥
ऐसे जन जग में रहें, प्रभु को भूलें नाहिं॥१६१॥
निराकार निर्गुण प्रभू, तदपि सगुण धरे देह॥

जातहिं के अभिमान से, डूबे बहुत कुलीन॥ १४० ॥
सोना काई नहिं लगे, लोहा घुन नहिं खाय॥
बुरा भला जो गुरु भगत, कबहूं नरक न जाय॥ १४१॥
कोई तो तन मन दुखी, कोई चित्त उदास ॥
एक एक दुख सभन को, सुखी संतका दास॥ १४२॥
काम क्रोध मद लोभ की, जबलग मन में खान॥
तुलसी पंडित मूरखो, दोनों एक समान॥ १४३ ॥
तुलसी सोई चतुरता, संत चरण लवलीन ॥
परधन परमन हरन को, बेश्याबडीप्रबीन॥ १४४॥
पानी बाढो नाव में, घर में बाढो दाम ॥
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥ १४५॥
पढ पढ के सब जग मुवा, पंडित भया न कोय ॥
ढाई अक्षर प्रेम का, पढै सो पंडित होय॥ १४६ ॥
लिख लिख के सब जग लिख्या,पढपढकेकहा कीन॥
बढ बढ के घट घट गये, तुलसी राम न चीन१४७॥
तुलसी संपति के सखा, परत विपति में चीन॥
सज्जनकंचन कसन को,विपतिकसौटोकीन१४८॥
क्या मुख ले हँस बोलिये, तुलसी दीजै रोय॥
जन्म अमोलक आपना, चले अकारथ खोय१४९॥
सद्गुरु शब्दी बाण है, अँग अँग डाला तोड ॥
प्रेम खेत घायल गिरे, टांका लगै न जोड॥ १५० ॥
प्रेम बराबर योग नहिँ, प्रेम बराबर ध्यान॥

हौं मैलो पिउ ऊजला, लाग न साकूं पाय ॥१७३॥
जो कछु आवे सहज में, सोई मीठा जान ॥
कडुवा लागे नीम सा, जामें ऐंचा तान ॥ १७४॥
राजदुवारे साध जन, तीन वस्तु को जाय ॥
कै मीठा कै मान को, कै माया को चाय ॥ १७५॥
पंडित केरी पोथियाँ, ज्यों तीतर का ज्ञान ॥
औरन सगुण बतावई, आपा फंद न जान॥१७६॥
अहरिन की चोरी करैं, पुनि सोई को दान ॥
ऊंचे चढ चढ देखहीं, आवत कहां विमान॥१७७॥
संस्कृत है कूप जल, भाषा बहता नीर ॥
भाषा सद्गुरु सहत जो, सद्गुरु गहरगँभीर॥१७८॥
ब्रह्म रूप है ब्रह्मवित, ताकी वाणी वेद ॥
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद॥१७९॥
गिरिये पर्वत शिखर से, पडिये धरणि मँझार ॥
दुष्ट संग नहिं कीजिये, बूडें काली धार ॥१८०॥
प्रेम प्रीति सों जो मिले, तासों मिलिये धाय ॥
अंतर राखे जो मिले, तासों मिले बलाय॥१८१॥
भूप दुखी अवधू दुखी, दुखी रंक बिपरीत ॥
कहै कबीर यह सब दुखी, सुखी संत मन जीत॥१८२॥
नवन नवन बहु अंतरा, नवन नवन बहु बान॥
यह तीनो बहुते नवें, चोता चोर कमान॥१८३॥
एक अचंभा देख्या, हीरा हाट बिकाय ॥

करत रहत नाना चरित, केवल भक्त सनेह १६२॥
गिरा ज्ञान हूं अगम गति, अंत न लह गौरीश ॥
नित नूतन गुण गावई, रसना सहसअहीश १६३॥
निज मुख ते भाष्यो यही, भक्त अतिहिं प्रिय मोहिं ॥
भक्तवचनउलघोंनहीं, अबिहितबिहितजोहोहिं १६४॥
भक्तन की महिमा अमित, पार न पावै कोय॥
जहां भक्तजन पग धरैं, असदृश तीरथ सोय १६५॥
भक्त संग छाडों नहीं, सदा रहत तिन पास ॥
जहां न आदर भक्त को, तहां न मेरो बास॥१६६॥
फिरत धाम वैकुंठ तज, भक्त जनन के काज ॥
जोइजोइजनमनभावहीं, धारत सोइतनसाज१६७॥
ज्यों विहंग बश पींजरे, रहत सदा आधीन ॥
त्योंहीं भक्ताधीनप्रभु, निज जनहित तन लीन १६८
हरि सम जग कछु वस्तु नाहिं, प्रेम पंथ सम पंथ॥
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीतासमनाहिंग्रंथ१६९॥
चलती चाकी देखके, दिया कबीरा रोय ॥
दो पाटन के वीच में, साबित रहा न कोय॥ १७०
जाके मन विश्वास है, सदा प्रभू हैं संग ॥
कोटि काल झकझोलई, तऊ न हो चित भंग॥ १७१
जाको राखे साइयां, मार न सक्के कोय ॥
वाल न वांका करसके, जो जग वैरी होय॥ १७२॥
यार वुलावे भाव से, मोपै गया न जाय ॥

उत्तम प्रीति सो जानिये, जो सद्गुरु सों होय॥१९५॥
सोऊं तो स्वप्ने मिलूं, जागूं तो मन माहिं॥
लोचन राते शुभ घडी, बिसरत कबहूं नाहिं॥१९६॥
सम दृष्टी सद्गुरु किया, मेटा भरम बिकार॥
जहँ देखूं तहँ एकही, साहिब का दीदार॥१९७॥
खुल खेलो संसार में, बांध न साके कोय॥
घाट जगाती क्या करै, जोशिर पर बोझनहोय॥१९८॥
मोमें इतनो बल कहां, गाऊं गला पसार॥
बंदे को इतनी घनी, पडा रहे दरबार॥१९९॥
स्वामी हो संग्रह करे, दूजे दिन को नीर॥
तरे न तारे और को, यों कथ कहैं कबीर॥२००॥
कथा कीर्त्तन कलि विषे, भवसागर की नाव॥
कहैं कबीर जगतरन को, नाहीं और उपाव॥२०१॥
कथा कीर्त्तन करन की, जाके निशिदिन रीत॥
कहै कबीर वा दास से, निश्चय कीजै प्रीत॥२०२॥
कथा कीर्त्तन रातदिन, जाके उद्यम येह॥
कहैं कबीर ता साध की, हम चरणन की खेह॥२०३॥
नाम रत्न धन पाय कर, गाठी बांध नखोल॥
नहिं पन नाहीं पारखू, नहिँ गाहक नहिं मोल॥२०४॥
नाम रत्न धन मुज्झ में, खानि खुली घट माहिं॥
सैंत मैंत ही देत हूं, गाहक कोई नाहिं॥२०५॥
जब गुण का गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाय॥

परखन हारे बाहरा, कौडी बदले जाय॥ १८४॥
आंखों देखा घी भला, मुख मेला नहिं तेल ॥
साधू सों झगडा भला, नहिं साकत से मेल॥१८५॥
कबीर सोई पीर है, जो जाने पर पीर ॥
जो पर पीर न जानही, सो काफर बे पीर॥१८६॥
तरवर सरवर संत जन, चौथे बरसे मेह ॥
परमारथ के कारणे, चारों धारें देह ॥१८७ ॥
कबीर कलियुग कठिण है, साध न मानै कोय॥
कामी क्रोधी मसखरा, तिनका आदर होय॥१८८॥
सद्गुरु संग सांची कथा, कोइ न सुनई कान ॥
कलियुग पूजा दंभ की, बाजारी को मान॥१८९॥
जाके हिरदे गुरु नहीं, सिख साषा की भूख ॥
सो नर ऐसा सूखसी, ज्यों बन दाझा रूख॥१९० ॥
रचन हार को चीन्ह ले, खाने को क्या रोय ॥
दिल मंदर में पैठ कर, तान पिछौरा सोय॥१९१॥
सभसे भली मधूकरी, भांति भांति का नाज ॥
दावा काहूका नहीं, बिना विलायत राज ॥१९२॥
सुपने में साईं मिले, सोवत लियो जगाय॥
आंख न खोलूं डरपता, मत सुपना हो जाय॥१९३॥
हंसा बकुला एक रंग, मान सरोवर माहिं ॥
बकुला ढूढे माछली, हंसा मोती खाहिं॥ १९४ ॥
प्रीति बहुल संसार में, नाना विधिकी सोय ॥

नाक तलक पूरण भरे, को कहिये परसाद २१७ ॥
रूखा सूखा पाय कर, ठंढा पानी पीय ॥
देख पराई चोपडी, क्योंललचावे जीय ॥ २१८ ॥
आधी अरु रूखी भली, सारी सो संताप ॥
जो चाहेगा चोपडी, तो बहुत करेगा पाप २१९ ॥
कबीर साईं मुज्झ को, रूखी रोटी देह ॥
चोपडी मांगत मैं डरूं, मत रूखी छिनलेह २२० ॥
खुश खाना है खीचडो, माहिं पडे टुक नोन ॥
माँस पराया खाय कर, गला कटावे कोन २२१ ॥
कहताहूं कहजात हूं, कहा जो माने हमार ॥
जाका गल तुम काट हो, सो काट है तुम्हार २२२ ॥
कबीर सोता क्या करै, सोये होय अकाज ॥
ब्रह्मा का आसन गिरा, सुनी काल की गाज २२३ ॥
कबीर सोता क्या करे, उट्ठ न रोवे दुक्ख ॥
जाका बासा गोर में, सो क्यों सोवे सुक्ख ॥ २२४ ॥
कबीर सोता क्या करै, जागन की कर चौंप ॥
यह दम हीरा लालहै, गिन गिन गुरुकोसौंप ॥ २२५ ॥
सोता साध जगाइये, करै नाम का जाप ॥
यह तीनों सोते भले, साकित सिंह और सांप ॥ २२६ ॥
जागन से सोवन भला, जो कोइ जाने सोय ॥
अंतर लव लागी रहै, सहजे सुमरन होय ॥ २२७ ॥
जागन में सोवन करे, सोवन में लव लाय ॥

जब गुणका गाहकनहीं, तबकौडीबदलेजाय॥२०६॥
हीरा परखै जौहरी, शब्द को परखै साध॥
जो कोइ परखे साधको,ताका मता अगाध॥२०७॥
सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय॥
रंचक घटमें संचरे, सब तन कंचन होय॥२०८॥
गावनियां के मुख बसूं अरु श्रोता के कान॥
ज्ञानी के हिरदे बसूं, भेदी कामें प्रान॥२०९॥
जबहीं नाम हृदय धरा, भयो पाप का नाश॥
मानो चिनगी आग की, पडी पुरानी घास॥२१०॥
फूटी आंख विवेक की, लखे न संत असंत॥
जाके संग दश बीस हैं, ताकानाम महंत॥२११॥
साधू मेरे सब बडे, अपनी अपनी ठौर॥
शब्द विवेकी पारखी,वह माथे की मौर॥२१२॥
गुरुपशु नरपशु तियापशु, वेद पशू संसार॥
मानुष सोई जानिये, जाहि विवेकविचार॥२१३॥
पुष्प मध्य ज्यों बास है, व्याप रहा सब माहिं॥
संतन माहीं पाइये, और कहूं कछु नाहिं॥२१४॥
कोटि कोटि तीरथ करै, कोटि कोटि करै धाम॥
जब लग साधन सेइये,तबलगकाचा काम॥२१५॥
खट्टा मीठा चरपरा, जिह्वा सब रस लेय॥
चोर ओरकुतियामिलगई,पहराकिसकादेय॥२१६॥
अहार करै मन भावता, जिह्वा करै सवाद॥

कबहूँ उड आँखों पडै, पीर घनेरी होय ॥ २३९ ॥
निंदक से कुत्ता भला, जो हठ कर मांडे रार ॥
कुत्तासे क्रोधी बुरा, जो गुरू दिवावे गार ॥ २४० ॥
निंदक नेरे राखिये, आंगन कुटी छवाय ॥
बिन पानी साबन बिना, निर्मल करे सुभाय ॥ २४१ ॥
कबीर निंदक मत मरो, जीवो आद जुगाद ॥
हम तो सद्गुरु पाइया, निंदक के परसाद ॥ २४२ ॥
साकित शूकर कूकरा, इनकी मति है एक ॥
कोटि जतन परबोधिये, तऊ न छांडें टेक ॥ २४३ ॥
कबीर मेरे साध की, निंदा करो मत कोय ॥
जोपै चंद्र कलंक है, तऊ उजियारा होय ॥ २४४ ॥
सातों सागर मैं फिरा, जंबूद्वीप दे पीठ ॥
निंद्या पराई ना करे, सो कोई बिरला डीठ ॥ २४५ ॥
साईं आगे सांच हो, साईं साँच सुहाय ॥
भावे लंबे केश कर, भावे घोंट मुंडाय ॥ २४६ ॥
सांचे कोइ न पतीजई, झूंठे जग पतियाय ॥
गली गली गोरस फिरे, मदिरा बैठ बिकाय ॥ २४७ ॥
साधू ऐसा चाहिये, साँची कहै बनाय ॥
कै टूटै कै फिर जुडे, बिन कहे भरम न जाय ॥ २४८ ॥
साँचे शाप न लागई, साँचे काल न खाय ॥
सांचे को सांचा मिले, सांचे माहिं समाय ॥ २४९ ॥
प्रेम प्रीति का चोलना, पहिर कबीरा नाँच ॥

सुरत डोर लागी रहै, तार टूट नहिं जाय ॥ २२८॥
तुम तो समरथ साइयां, दृढ कर पकडो बाहिं ॥
धुरही लौं पहुँचाइयो, जिन छांडो मग माहिं ॥२२९॥
सब धरती कागज करूं, लेखन सब बनराय ॥
सात सिंधुकीमसकरूं, हरिगुणलिखानजाय ॥२३०॥
जो मैं भूल बिगाडिया, ना कर मैला चित्त ॥
साहिब गुरुवा लोडिये, नफर बिगाडे नित्त २३१॥
औगुण किये तो बहु किये, करत न मानी हार ॥
भावे बंदा बख्शिये, भावे गर्दन मार ॥ २३२ ॥
मैं अपराधी जन्म का, नख शिख भराबिकार ॥
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करौ सम्हार ॥२३३॥
मन परतीत न प्रेम रस, ना कछु तन में ढंग ॥
ना जानूं उस पीव सों, क्यों कर रहसी रंग ॥ २३४॥
क्या मुखले विनती करूं, लाज आवतहै मोहिं ॥
तुम देखत औगुण करूं, कैसे भाऊं तोहिं ॥ २३५॥
भक्ति दान मोहिं दीजिये, गुरु देवन के देव ॥
और नहीं कछु चाहिये, निशिदिन तुमरी सेव॥२३६॥
जो अबके स्वामीमिलें, सब दुख आखूं रोय ॥
चरणों ऊपर शीश धर, कहूं जो कहना होय ॥२३७॥
दोष पराया देख कर, चले हसंत हसंत ॥
अपना याद न आवई, जाका आदि न अंत ॥२३८॥
तिनका कबहूं न निंदिये, जो पाँवन तल होय ॥

साध वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार२६१॥
चोट सुहेली सेल की, पडते लेय उसास॥
चोट सहारे शब्द की, तास गुरू मैं दास॥२६२॥
खोद खाद धरती सहै, काट कूट वनराय॥
कुटिलवचन साधू सहै, और से सहा न जाय२६३
सहज तराजू आन कर, सब रस देखा तोल॥
सभ रसमाहीं जीभ रस, जो कोइ जानेबोल२६४
शब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जाने बोल॥
हीरा तो दामों मिले, शब्द का मोल न तोल२६५॥
शीतल शब्द उचारिये, अहं आनिये नाहिं॥
तेरा प्रीतम तुजुझ में, दुशमन भी तुझ माहिं२६६
वाद विवादे विष घना, बोले बहुत उपाध॥
मौन गहै स ब की सहै, सुमिरै नाम अगाध२६७॥
जहां दया तहँ धर्म है, जहां लोभ तहँ पाप॥
जहां क्रोध तहँ काल है, जहां क्षमा तहँ आप२६८।
माया तो ठगनी भई, ठगत फिरै सब देस॥
जा ठग ने ठगनी ठगी, ता ठग को आदेस॥२६९
माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय॥
भगता के पाछे लगै, सन्मुख भागै सोय॥२७०॥
कबीर माया पापिनी, मांगे मिले न हाथ॥
मनो उतारी जूंठ कर, लागी डोले साथ॥२७१॥
आसन मारे क्या हुआ, मरी न मन की आस॥

तन मन तापर वारहों,जोकोइ बोले साँच२५० ॥
सांच विना सुमिरन नहीं,भय विन भक्ति न होय॥
पारस में परदा रहै,कंचन किसबिधि होय २५१ ॥
कवीर लज्या लोक की, बोले नाहीं सांच ॥
जान वूझ कंचन तजे, क्यों तू पकडे काँच२५२॥
यह जग कोठी काठ की, चहुँ दिशि लागी आग॥
भीतर रहे सो जल मुये, साधू उबरे भाग २५३ ॥
कोटि करम लागे रहैं, एक क्रोध की लार ॥
किया कराया सब गया,जब आवा अहंकार२५४॥
गार अँगारा क्रोध झल, निंद्या धूवां होय॥
इन तीनों को परिहरै,साध कहावे सोय२५५ ॥
आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक ॥
कहै कवीर न उलटिये, वाही एक की एक॥ २५६॥
गाली सों सब ऊपजे, कलह कष्ट और मीच ॥
हार चलो सो संतहै, लाग मरे सो नीच॥ २५७॥
ऐसी बाणी बोलिये, मन का आपा खोय ॥
औरन को शीतल करै,आपा शीतल होय॥ २५८॥
वोली तो अनमोल है, जो कोइ जाने बोल ॥
हिये तराजू तोल कर, तब मुख बाहर खोल २५९ ॥
कुवुधि कमानी चढ रही, कुटिलबचन का तीर ॥
भर भर मारे कान में,शाले सकल शरीर॥ २६० ॥
कुटिल वचन सब से बुरा, जारि करै तनु छार ॥

हाथों मोहिंदी लायकर, बाघिन खाया देश २८३ ॥
नारी की झाईं परत, अंधे होत भुजंग ॥
कबीर तिनकी कौनगति, जोनितनारिकेसंग २८४॥
कामी कुत्ता तीस दिन, अंतर होय उदास ॥
कामी नर कुत्ता सदा, छः ऋतु बारह मास॥२८५॥
कामी क्रोधी लालची, इन से भक्ति न होय ॥
भक्ति करै कोइ शूरमा, जात बरण कुलखोय॥२८६॥
नारि पराई आपनी, भोगे नरके जाय॥
आग आग सबएक सी, हाथ दिये जर जाय२८७॥
जहर पराया आपना, खाये से मर जाय॥
अपनी रक्षा ना करे, कह कबीर समझाय॥२८८॥
कूप पराया आपना, गिरे डूब जो जाय॥
ऐसा भेद बिचार कर, तू मत गोता खाय॥ २८९॥
छुरी पराई आपनी, मारे दर्द जो होय ॥
बहु विधि कहूं पुकार कर, कर छूवोमत कोय२९०॥
कामी कबहुं न गुरु भजै, मिटै न संशय शूल॥
और गुनह सब बखशिये, कामी डाल नमूल२९१॥
जहां काम तहँ नाम नहिं, जहां नाम नहिं काम॥
दोनों कबहूं ना मिलें, रवि रजनी इक ठाम॥२९२॥
सर्व सोने की सुंदरी, आवे बास सुबास॥
जो जननी होय आपनी, तऊ न बैठे पास॥२९३॥
नारि नशावे तीनि गुण, जो नर पासे होय॥

तेली केरा बैल ज्यों,घर ही कोस पचास ॥ २७२॥
जो तू चाहै मुज्झ को, मति कछु राखै आस ॥
मुज्झ सरीखा होरहै, सब कछु तेरे पास ॥२७३॥
बहुत पसारा जिन करो, कर थोडे की आस ॥
बहुत पसारा जिन किया, तेभी गये निरास२७४
कबीर योगी जगत गुरु, तजे जगत की आस ॥
जोवह चाहे जगत को, जगत गुरू वहदास २७५
कबीर माया पापिनी, लाले लाया लोग ॥
पूरी किनहुँ न भोगवी, इसका यही बियोग २७६
कबीर माया मोहनी, मोहे जान सुजान ॥
भागे हूं छोडे नहीं, भर भर मारे बान ॥ २७७ ॥
मीठा सब कोइ खात है, विष हो लागे धाय ॥
नोब न कोई पीवसी, सर्ब रोग मिट जाय २७८॥
गुरु को छोटा जान कर, दुनिया आगे दोन॥
जीवन को राजा कहैं, माया के आधीन॥२७९॥
माया दीपक नर पतंग, भ्रम भ्रम माहिं परंत ॥
कोई इक गुरु ज्ञान ते, उबरे साधू संत ॥२८०॥
चलो चलो सब कोइ कहै, पहुँचै बिरला कोय॥
एक कनक और कामिनी, दुर्गम घाटी दोय २८१
पर नारी के राचने, सीधा नरके जाय ॥
तिन को जम छाडें नहीं, कोटिन करै उपाय२८२
नयनों काजल देय कर, गाढे बांधे केश ॥

दीन लकुटिया बाहरा, सब जग खायो फाड़॥ ३०५॥
बडा हुआ तो क्या हुआ जैसे बडी खजूर॥
पंथी को छाया नहीं फल लागें अति दूर॥ ३०६॥
ऊंचे पानी ना टिके नीचे ही ठहराय॥
नीचा होय सो भर पिये, ऊंच पियासा जाय॥ ३०७॥
लेने को हरि नाम है देनेको अन्न दान॥
तरने को आधीनता, डूबन को अभिमान॥ ३०८॥
ज्ञानी ध्यानी संयमी, दाता शूर अनेक॥
जपिया तपिया बहुत हैं, शीलवंत कोइ एक॥ ३०९॥
सुख का सागर शील है, कोइ न पावे थाह॥
शब्द बिना साधू नहीं, द्रव्य विना नहिं शाह॥ ३१०॥
चाह मिटी चिंता गई, मनुवां बे परवाह॥
जिन को कछू न चाहिये, सोई शाहन्शाह॥ ३११॥
आब गई आदर गया, नयनन गया सनेह॥
यह तीनों तबही गये, जबहिं कहा कछु देह॥ ३१२॥
मांगन गए सो मर रहे, मरें सो मांगन जाहिं॥
तिन से पहले वे मरे, जो होत करत हैं नाहिं॥ ३१३॥
मांगन मरन समान है, मत कोइ मांगे भीख॥
मांगन से मरना भला, यह सद्गुरु की सीख॥ ३१४॥
अनमांगा तो अति भला, मांग लिया नहिं दोष॥
उदर समाना मांग ले, निश्चय पावे मोष॥ ३१५॥
उत्तम भीख है अजगरी, सुन लीजै निज बैन॥

भक्ति मुक्ति निज ध्यान में, बैठ न सके कोय २९४॥
गाय रोय हँस खेल के, हरत सबन के प्रान॥
कहैं कबीर या बात को, समझें संत सुजान २९५॥
नारी नदी अथाह जल, बूड मुआ संसार॥
ऐसा साधू कब मिले, जासंग उतरूं पार॥ २९६॥
एक कनक और कामिनी, बिष फल किये उपाय॥
देखेही ते बिष चढे, चाखत ही मरजाय॥ २९७॥
एक कनक और कामिनी, तजिये भजिये दूर॥
गुरु बिच डारें अंतरा, जम देसी मुख धूर॥२९८॥
रज बीरज की कोठरी, तापर साजो रूप॥
सत्त नाम बिन बूडसी, कनक कामिनी कूप॥२९९॥
कामी तो निर्भय भया, करै न कबहूं शंक॥
इद्रिन केरे बश पडा, भोगे नरक निशंक॥३००॥
कहताहूं कह जात हूं, समझे नहीं गँवार॥
बैरागी गिरही कहा, कामी वार न पार॥३०१॥
नारी तो हम भी करी, जाना नहीं विचार॥
जब जाना तब परिहरी, नारी बडी विकार॥३०२॥
छोटी मोटी कामिनी, सबही विष की बेल॥
बैरी मारे दांव से, यह मारे हँस खेल॥ ३०३॥
कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह॥
मान वडाई ईर्षा, दुर्लभ तजनी येह॥ ३०४॥
मान वडाई कूकरी, धर्मराय दरबार॥

टांकीलागी प्रेमकी, निकसी कंचन खान॥ ३२७॥
मन ही को परबोधिये, मन ही को उपदेश॥
जो यह मन बश आवई, तोशिष्यहोय सब देश ३२८॥
शिष शाखा बहुते किये, सद्गुरु किया न मित्त॥
चाले थे सतलोक को, बीचहिं अटकाचित्त॥ ३२९॥
बात बनाई जग ठग्यो, मन परबोध्यो नाहिं॥
कबीर यह मन लेगया, लख चौराशी माहिं॥ ३३०॥
चतुराई क्या कीजिये, नहिं जो शब्द समाय॥
कोटिक गुण सूवा पढे, अंत बिलाई खाय॥ ३३१॥
'बंदे खोज दिल हर रोज ना फिर परेशानी माहिं॥
यह जो दुनिया सिहर मेला दस्तगीरी नाहिं ३३२॥'
पढना गुणना चातुरी, यह तो बात सहल॥
कामदहनमनबशकरन, गगनचढनमुशकल॥ ३३३॥
पढ पढ के पत्थर भये, लिख लिख भये जो ईंट॥
कबीर अंतर प्रेमकी, लागी नेक न छींट॥ ३३४॥
नाम भजो मन वश करो, यही बात है तंत॥
काहेको पढ पच मरो, कोटिन ज्ञान ग्रंथ ३३५॥
अपने उरझे उरझिया, दीखे सब संसार॥
अपने सुरझे सुरझिया, यहगुरुज्ञान बिचार॥ ३३६॥
कबीर मन मैला भया, यामें बहुत बिकार॥
यह मन कैसे धोइये, साधो करो बिचार॥ ३३७॥
गुरु धोबी शिष कापडा, साबुन सिरजन हार॥

कहै कबीर ताके गहे, महा परम सुख चैन॥३१६॥
मन को मारूं पटक के, टूक टूक होजाय॥
विष की क्यारी बोय कर,लुन्ता क्यों पछिताय॥३१७॥
मन पाँचों के वश पडा, मन के बश नहिं पांच॥
जित देखूं तित दौं लगी, जितभागूं तितआंच॥३१८॥
कबीर बैरी सबल हैं, एक जीव रिपु पांच॥
अपने अपने स्वाद को,बहुत नचावें नांच॥३१९॥
कबीर मन तो एक है, भावै तहां लगाय॥
भावे हरि की भक्ति कर, भावे विषय कमाय॥३२०॥
मन के मारे वन गये, बन तज बस्ती माहिं॥
कहै कबीर क्या कीजिये, यह मन ठहरै नाहिं॥३२१॥
तीन लोक चोरी भई, सब का धन हर लीन॥
बिना शीश का चोरुवा, पडा न काहू चीन॥३२२॥
कबीर यह मन मसखरा, कहूं तो माने रोस॥
जा मारग साहिब मिलें,ताहि न चाले कोस॥३२३॥
जेती लहर समुद्रकी, तेती मन की दौर॥
सहजे हीरा नीपजे, जो मन आवे ठौर॥३२४॥
दौरत दौरत दौरयो, जहँलग मन की दौर॥
दौर थकी मन थिर भया,वस्तु ठौर की ठौर ३२५॥
पहिले यह मन काग था, करता जीवन घात॥
अबतो मन हंसा भया,मोती चुन चुन खात॥३२६॥
कबीर मन पर्वत हता, अब मैं पाया जान॥

कहैं कबीर कोरी गजी, कैसे लागै रंग ॥ ३४९ ॥
देखा देखी भक्ति को, कबहुँ न चढसी रंग॥
विपति पडे पर छांडसी, ज्यों केंचुरी भुजंग॥३५०॥
संगति भई तो क्या हुआ, जो हिरदा भया कठोर॥
नौ नेजे पानी चढा, तऊ न भोजी कोर ॥ ३५१ ॥
साधू भया तो क्या हुआ, माला पहरी चार॥
बाहर भेष बनाइया, भीतर भरी भँगार॥ ३५२ ॥
डाढी मूंछ मुँडाय कर, हूआ घोटम घोट ॥
मन को क्यों नहिँ मुंडिये, जामें भरि हैं खोट ३५३॥
बांबी कूटें बावरे, साँप न मारा जाय ॥
मूरख बांबी ना डसे, सर्प सबन को खाय ॥३५४॥
मूरख के समझावने, ज्ञान गांठ का जाय ॥
कोला होय न ऊजला, सौ मन साबुन लाय॥३५५॥
कबीर कहा गरभिया, काल गहे कर केश॥
ना जानूं कित मारसी, क्या घर क्या परदेश ३५६॥
आज काल के बीच में, जंगल होयगा बास ॥
ऊपर ऊपर हल फिरें, ढोर चरैंगे घास॥ ३५७॥
हाड जलैं ज्यों लाकडी, केश जलैं ज्यों घास ॥
सब जग जलता देख कर, भये कबीर उदास ३५८॥
झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद ॥
जगत चबीना काल का, कछु मुख में कछु गोद ३५९ ॥
कुशल कुशल ही पूछते, जग में रहा न कोय॥

सुरत शिला पर धोइये,निकसै रंग अपार॥३३८॥
पय पानी की प्रीतिडी, पडा जो कपटी नोन ॥
खंड खंड न्यारे भए,ताहि मिलावे कौन ॥३३९ ॥
मन के बहुते रंग हैं, छिन छिन बदले सोय ॥
एक रंग में जो रहे ऐसा बिरला कोय ॥ ३४० ॥
कबीर मन गाफिल भया, सुमरन लागे नाहिं ॥
घनी सहेगा त्रासना,जम की दरगह माहिं॥३४१॥
मन पक्षी जबलग उडे, विषय वासना माहिं॥
प्रेम बाज की झपट में, तबलग आयो नाहिं॥३४२॥
जहां बाज बासा करै, पक्षी रहै न और ॥
जिस घट प्रेम प्रगट भया,नहीं कर्म को ठौर ॥ ३४३॥
मन कुंजर महँ मत्त था, फिरता गहर गंभीर ॥
दुहरी तिहरी चौहरी, पड गई प्रेम जँजीर॥३४४॥
अपने अपने चोर को, सबही डालैं मार ॥
मेरा चोर मुझे मिले, तो सर्बस्व डारूं वार॥ ३४५॥
कबीर यह मन लालची, समझे नहीं गँवार ॥
भजन करन को आलसी,खाने को हुशियार ॥३४६
यह तो गति है अटपटी, झटपट लखे न कोय ॥
जो मन की खटपट मिटे, चटपट दर्शन होय॥३४७॥
मुख सों नाम रटा करे, निशि दिन साधू संग ॥
कहो धौं कौन कुफेर से, नाहिंन लागत रंग ॥३४८॥
मन दीया कहिं और ही, तन साधों के संग ॥

कहै कबीर कबलग रहै, रुई लपेटी आग॥३७१॥
कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय॥
आप ठगे सुख ऊपजे, और ठगे दुख होय ३७२॥
कबीर नौबत आपनी, दिन दश लेहु बजाय॥
यह पुर पटन यह गली, बहुरि न देखो आय ३७३॥
सातों शब्द जो बाजते, घर घर होते राग॥
ते मंदिर खाली पडे, बैठन लागे काग॥ ३७४॥
पांच तत्त्व का पूतला, मानस रक्ख्यो नाम॥
दिना चार के कारणे, फिर फिर रोंके ठाम॥३७५॥
कबीर मरैंगे मर जायँगे, कोइ न लेगा नाम॥
ऊजड जाय बसायँगे, छोड बसंता गाम॥३७६॥
जन्म मरण दुख याद कर, कूडे काम निवार॥
जिन जिन पंथों चालना, सोई पंथ सँवार॥३७७॥
कबीर खेत किसान का, मिरगों खाया झाड॥
खेत बिचारा क्या करै, जो धनी करे नाहिं बाड॥३७८॥
सत्त नाम जाना नहीं, लागी मोटी खोर॥
काया हांडी काठ की, ना वह चढै बहोर॥ ३७९॥
कबीर गुरु की भक्ति बिन, राजा गदहा होय॥
माटी लदे कुम्हार की, घास न डारे कोय॥३८०॥
कबीर यह तनु जात है, सके तो ठौर लगाय॥
कै सेवा कर साध की, कै हरिके गुण गाय॥३८१॥
उज्ज्वल पहिने कापडा, पान सुपारी खाय॥

जरा मुई ना भय मुवा, कुशल कहां से होय ३६०॥
पानी केरा बुलबुला, इस मानुष की जात॥
देखत ही छिप जाँयगे, ज्यों तारा परभात॥३६१॥
रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवायो खाय॥
हीरा जन्म अमोल था, कौडी बदले जाय॥३६२॥
आज कहै मैं कल भजूं, काल कहै फिर काल॥
आज काल ही करत ही, औसर जासी चाल ३६३॥
पाव पलक तो दूर है, मो पै कहा न जाय॥
नाजानूं क्या होयगा, पल के चौथे भाय॥३६४॥
कबीर यह तन जात है, सके तो राख बहोर॥
खाली हाथों वे गये, जिनके लाख करोर॥३६५॥
देह धरे का गुण यही, देह देह कछु देह॥
देह खेह हो जायगी, फिर कौन कहैगा देह ३६६॥
हाकों पर्वत फाटते समुद्र घूंट भराय॥
ते मुनिवर धरती गले, क्या कोइ गर्भ कराय ३६७॥
इस दुनिया में आय कर, छांड देय त ऐंठ॥
लेना होय सो जलद ले, उठी जात है पैंठ॥३६८॥
तू मत जानै बावरे, मेरा है सब कोय॥
पिंड प्राण सों बंध रहा, यह नहिं अपना होय ३६९॥
ऐसा संगी कोइ नहीं, जैसे जिवरा देह॥
चलती बिरियां रे नरा, डार चला कर खेह॥ ३७०॥
मैंमैं बडी बलाय है, सको तो निकसो भाग॥

आपन मन निश्चल नहीं,और बँधावत धीर३९३॥
बानी तो पानी भरे, चारों वेद मजूर ॥
करनी तो गारा करै, रहनी का घर दूर ॥ ३९४ ॥
करनी करै सो पुत्र हमारा, कथनी कथे सो नाती ॥
रहनी रहै सो गुरू हमारा,हमरहनीकेसाथी ३९५॥
पद जोडें साखी कहैं, साधन पड गईं रोस ॥
काढा जल पीवें नहीं, काढ पियन की हौस ॥ ३९६ ॥
जैसी मुख सों नीकसे, तैसी चाले नाहिं ॥
मनुष नहीं वह स्वानगति, बांधे जमपुर जाहिं ॥३९७॥
शब्द गुरू को कीजिये, बहुतक गुरू लवार ॥
अपने अपने लोभ को,ठौर ठौर बटमार ॥ ३९८॥
दुख में सुमरन सब करैं, सुख में करै न कोय ॥
जो सुख में सुमरन करै,तो दुख काहे होय॥३९९॥
सुख के माथे शिल पडे, जो नाम हृदय से जाय ॥
बलिहारीवादुःखकी,जोपलपलनाम जपाय॥४००॥
सुमरन की सुध यों करो,जैसे कामी काम ॥
एक पलक बिसरेनहीं, निशिदिनआठों याम॥४०१॥
सुमरन की सुधि यों करो, ज्यों गागर पनिहार ॥
हाले डोले सुरत में, कहैं कबीर विचार ॥४०२॥
सुमरन की सुधि यों करो, ज्यों सुरभी सुतमाहिं ॥
कहैं कबीर चारो चरत , बिसरत कबहूं नाहिं४०३॥
सुमरन की सुधि यों करो , जैसे दाम कंगाल ॥

कबीर हरि की भक्ति बिन, बाँधा यमपुर जाय॥३८२॥
मानुष जन्म दुर्लभ है, देह न बारंबार॥
तरुवर सों पत्ता झडें, बहुरि न लागें डार॥३८३॥
आये हैं सो जायँगे, राजा रंक फकीर॥
एक सिंहासन चढ चले, इक बांधे जात जंजीर॥३८४॥
कबीर सब जग निरधना, धनवंता नहिं कोय॥
धनवंता सो जानिये, जाके राम नाम धन होय॥३८५
खाय पकाय लुटाय दे, करले अपना काम॥
चलती बिरियां रे नरा, संग न चले छिदाम॥३८६॥
सौ पापन का मूल है, एक रुपैया रोक॥
साधू होय संग्रह करै, मिटै न संशय शोक॥३८७॥
मरजाऊं मांगूं नहीं, अपने तनु के काज॥
परमारथ के कारणे, मोहिं न आवे लाज॥३८८॥
जान बूझ जड होरहे, बल तज निर्बल होय॥
कहै कबीर ता दास को, गंज न सके कोय॥३८९॥
कथनी के सूरे घने, थोथे बांधे तीर॥
प्रेम चोट जिनके लगी, तिनके बिकल शरीर ३९०॥
करनी बिन कथनी कथे, अज्ञानी दिन रात॥
कूकर जिमि भूसत फिरे, सुनी सुनाई बात॥३९१॥
पढ सुन के समझावई, मन नहिं बांधे धीर॥
रोटी का संशय पडा, यों कहै दास कबीर॥३९२॥
पानी मिलै न आप को, औरन बखशत क्षीर॥

कहै कबीर ता दास का, पडै न पूरा दाव॥४१५॥
कबीर ते नर अंध हैं, गुरुको कहते और॥
हरि रूठे गुरु मेलसी, गुरु रूठे नहिं ठौर॥४१६॥
गूंगा हूआ बावरा, बहरा हूआ कान॥
पावन ते पिंगल हुआ, सद्गुरु मारा बान॥४१७॥
भेदी लीया साथ कर, दीनी वस्तु लखाय॥
कोटि जनम का पंथ था, पल में पहुँचा जाय॥४१८॥
सेवक सेवा में रहै, अंत कहूं ना जाय॥
दुख सुख शिर ऊपर सहै, कहैं कबीर समुझाय॥४१९॥
कबीर शिष को ऐसा चाहिये, गुरु को सब रस देय॥
गुरु को ऐसा चाहिये, शिषका कछू न लेय॥४२०॥
द्वारे धनी के पड रहै, धक्का धनी का खाय॥
कबहूं तो धनी निवाजई, जो दर छांड न जाय॥४२१॥
फल कारन सेवा करै, तजै न मन से काम॥
कहैं कबीर सेवक नहीं, चहै चौगुना दाम॥४२२॥
मेरा तुझ में कछु नहीं, जो कछु है सो तोर॥
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागत है मोर॥४२३॥
दास दुखी तो मैं दुखी, आदि अंत तिहुँ काल॥
पलक एक में प्रगट हो, छिन में करूं निहाल॥४२४॥
भक्ति बीज बिनशे नहीं, आय पडै जो झोल॥
कंचन जो बिष्ठा पडै, घटै न ताको मोल॥४२५॥
प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परगट होय॥

कहैं कबीर बिसरे नहीं, पल पल लेय सम्हाल॥४०४॥
सुमरन सों मन लाइये, जैसे कीट भिरंग॥
कबीर बिसारे आपको, होय जाय तेहि रंग४०५॥
सुमरन सुरत लगाय कर, मुख ते कछू न बोल॥
बाहर के पट देय कर, अंतर का पट खोल४०६॥
माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं॥
मनुवाँ तोदहदिशिफिरे, यहतोसुमिरननाहिं॥४०७॥
कहता हूं कहजात हूं, कहा बजाऊं ढोल॥
श्वासा खाली जाइहै, तीन लोक का मोल॥४०८॥
ऐसे महँगे मोल, का एक श्वास जो जाय॥
चौदह लोक पटतर नहीं, काहे धूर मिलाय॥४०९॥
कबीर क्षुद्ध्या कूकरी, करत भजन में भंग॥
याको टुकडा डार कर, सुमरन करो निशंक॥४१०॥
नाम जपत कन्या भली, साकित भला न पूत॥
छेरी के गल गलथना, जामें दूध न मूत॥४११॥
नाम जपत कुष्ठी भला, चोय चोय पड जो चाम॥
कंचन देही काम किस, जा मुख नाहीं नाम॥४१२॥
मारग चलते जो गिरे, ताको नाहीं दोष॥
कहै कबीर बैठा रहै, ता शिर करडे कोस॥४१३॥
तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूं॥
वारी तेरे नाम पर, जित देखूं तित तूं॥४१४॥
गुरु बिन अहनिशि नाम ले, नहीं संत परभाव॥

फिर पाछे पछतायगा, जब प्राण जायँगे छूट॥४३७॥
कबीर सो मुख धन्य है, जिहिं मुख निकसे राम॥
देही किसकी बापुरी, पवित्र हो है ग्राम॥४३८॥
कबीर सोई कुल भलो, जामें हरि को दास॥
जिहिंकुलदासनऊपजे, सोकुल ढाकपलास॥४३९॥
सुपेने हूं बरराय के, जिहिं मुख निकसे राम॥
ताके पग की पाहनी, मेरे तनु को चाम॥४४०॥
कबीर काल्ह करंता आज कर, आज करंता हाल॥
पाछे कछू न होयगो, जो शिर आवे काल॥४४१॥
कबीर गरब न कीजिये, रंक न हँसिये कोय॥
अभी तो नाव समुद्र में, ना जाने क्या होय॥४४२॥
चंदन का बिरवा भला, बेढे ढाक पलास॥
सोभी चंदन हो रहे, बसे जो चंदन पास॥४४३॥
बांस बडाई बूड्यो, ज्यों मत बूडो कोय॥
चंदनके निकटहिं बसे, बांस सुगंध न होय॥४४४॥
कबीर दुर्बल नाहिं सताय, जाकी मोटी हाय॥
बिना जीव की खाल से, सार भसम होजाय॥४४५॥
तीरथ न्हाये एक फल, संत मिले फल चार॥
सद्गुरु मिले अनेक फल, कहै कबीर विचार॥४४६॥
जात न पूछो साध की, पूछ लीजिये ज्ञान॥
मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान॥४४७॥
कबार जग में बैरी कोउ नहीं, जो मन शीतलहोय॥

जो पै मुख बोलै नहीं, तो नयन देतहैं रोय४२६॥
पीया चाहे प्रेम रस, राखा चाहै मान॥
एक म्यान में दो खडग, देखा सुना न कान४२७॥
जैसी लव पहिले लगी, तैसी निबहै ओर॥
अपनी देह की को गिने, तारै पुरुष करोर ४२८॥
पपिहा का प्रण देख कर, धीरज रहै न रंच॥
मरते दम जल में पडा, तऊ न बोरी चंच॥४२९॥
पतिव्रता पति को भजै, ताहि न और सुहाय॥
सिंह बचा जो लंघना, तौभी घास न खाय४३०॥
शिर राखे शिर जात है, शिर काटे शिर सोय॥
जैसे बाती दीप की, कटे उज्यारा होय॥ ४३१॥
तीर तुपक से जो लडै, सो तो शूर न होय॥
विषय जीत भक्ती करै, शूर कहावे सोय॥४३२॥
कबीर मन मिरतक हुआ, दुर्बल भया शरीर॥
पीछे लागे हरि फिरैं, कहैं कबीर कबीर॥४३३॥
बिरह कमंडलु कर लिये, बैरागी दो नयन॥
मांगें दरश मधूकरी, छके रहैं दिन रैन॥ ४३४॥
सिंहों के लहँडे नहीं, हंसों की नहिं पांत॥
लालों की नाहिं बोरियां, साध न चलैं जमात॥४३५॥
संतन के मैं संग हूं, अंत कहूं नहिं जाउँ॥
जो मोहिंअरपेप्रीतिसों, संतनमुखहोयखाउँ॥४३६॥
कबीर लुटना है तो लूटले, राम नाम की लूट॥

पांच दोष असाध्य जामें, ताकी केतिक आस ४५९॥
त्रीया है दुर्गंध अरु, रुधिर मूत्र का ग्रेह ॥
सुख स्वप्ने रंचक नहीं, समझो हृद में एह ॥४६०॥
एक निमिष कूसंग को, करै सिद्ध को नाश ॥
मच्छर क्रीडा देखके, शोभरी बरी पचाश ॥ ४६१॥
अहि विष तो काटे चढै, यह चितवत चढ जाय ॥
ज्ञान ध्यान और धर्म को, ज़रा मूल से खाय ४६२॥
चिंता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय ॥
एक मार्ग संसार को, नानक थिर नाहिं कोय ४६३॥
नानक नन्ना होरहो, जैसे नन्नो दूब ॥
बडी घास जल जायगी, दूब खूब की खूब ४६४ ॥
आयो प्रभु शरणागती, किरपासिंधु दयाल ॥
एक अक्षर हरि मन बसै, नानक होत निहाल ४६५॥
माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार ॥
परशुराम या जीवको, सगा सो सिरजन हार ४६६॥
करते नाल बिगारके, किसदा रहिये होय ॥
कह दुनीदास कित जाइये, ढोई देय नकोय ४६७॥
दरदर फिरता स्वान ज्यों, टूक नपावे कोय ॥
निरंकार ते भुल्यां, कह दुनीदास अस होय॥४६८॥
जाको प्रेम पियास है, ताको नींद न भूख॥
कह दुनीदास अमृत किये, जो जो सगले दूख ४६९॥
जौंकी जगत पसारा देखके, मनको नाहिं डुलाय ॥

यह आपा तू डारदे, दया करै सभ कोय॥४४८॥

हरि जन तो हारा भला, जीतन दे संसार॥

हारा तू हरिसे मिले, जीता जम के द्वार॥४४९॥

'हरि है खांड रेत में बिखरी, हाथों चुनी न जाय॥

कह कबीर गुरु भली बुझाई, चीटीहो के खाय॥४५०॥'

कबिरा तेरी झोंपरी, गल कटियनके पास॥

करैंगे सो भरैंगे, तुम क्यों भए उदास॥४५१॥

मन फुरना से रहित कर, जौनोंबिधिसे होय॥

चहे भक्ति चहे ध्यान कर, चहे ज्ञान से खोय ४५२॥

पारस में और संत में, बडो अंतरो जान॥

वह लोहा कंचनकरै, वह करै आप समान॥४५३॥

नीलकंठ कीडा चुगे, मुखहिं बिराजें राम॥

हमको अवगुण से कहा, गुण हीसेती काम॥४५४॥

मनके हारे हार है, मनके जीते जीत॥

पारब्रह्मको पाइये, मनही की परतीत॥४५५॥

सो०-मन जाने सभ बात, जानतही अवगुण करे॥

काहेकी कुशलात, हाथ दीप कूयें परे॥४५६॥

दो० सम संतोष बिचार जो, पुनि संतन को संग॥

मुक्ति पँवरिया चार यह, इन रति गहो अभंग॥४५७॥

विषयन को विष जान्यो, इन सम बिष नहिं और॥

जिहिं विषयन सों रति बढो, चौराशो तिहिं ठौर ४५८॥

'मृग मीन भृंग पतंग कुंजर, एक दोष बिनास॥

तोको फूल के फूल हैं, वाहीको त्रिशूल॥ ४८१॥
मूरख का मुख बांबिया, निकसत बचन भुवंग॥
ताकी औषध मौन है, जहर न ब्यापै अंग॥४८२॥
कहा करै वैरी प्रबल, जो सहाय बलबीर॥
दशहजारगजबल घट्यो, घट्योन दश गजचीर४८३॥
जो गृहकरै तो धर्म कर, नहिं तो कर बैराग॥
बैरागी बंधन करै, ताको बडो अभाग॥४८४॥
गूढी लाली देखके, फूल गुमान भए॥
केते बाग जहान में, लग लग सूख गए॥४८५॥
एन्हीं नयनीं देखदयां, केती चल्ल गई॥
लोकां आपो आपनी, मैं आपनी पई॥ ४८६॥
गोधन गजधन बाजिधन, और रत्न धन खान॥
जब आवे संतोषधन, सभ धन धूलि समान ४८७॥
एक घडी आधी घडी, आधी ते पुनि आध॥
भीषा संगत साधु की, कटैं कोटि अपराध॥ ४८८॥
करत करत अभ्यास के, दुर्मति होत सुजान॥
रसडी आवत जात ही, शिल पर करत निशान॥४८९
जननी जने तो भक्त जन, कै दाता कै शूर॥
नाहीं तो तू बांझ रहु, काहे गँवावे नूर॥ ४९०॥
संत न छांडे संतई, कोटिक मिलैं असंत॥
मलयागिरिभुवंगम बैठ्यो, शीतलतानतजंत॥ ४९१॥
अजगर करैं न चाकरी, पक्षी करैं न काम॥

माया मोह का जाल यह,प्रभुजीसों चितलाय४७०॥
जौंकी जीवन झूठ है, मन में देख बिचार॥
मेरी मेरी क्या करें, शिर पर चल्लन हार४७१॥
जौंकी जबलग घट में प्राणहैं,तबलग प्रभु न बिसार॥
नारायण को ध्यान धर, पलपल नाम चितार४७२॥
जौंकी जो प्रभु भावे सो करे, तू काहे बिसमाद ॥
डोरी उसके हाथ है, जो रमया आदि युगाद४७३॥
जौंकी जोरावर सों दोस्ती, किसबिधि राजी होय॥
जो चाहे सो करलिवे, उजर न करिये कोय॥४७४॥
जिन खोज्या तिन पाइया, पारब्रह्म घट माहिं॥
यह जग बौरा हो रह्या,जो इत उत ढूंढन जाहिं४७५॥
'दिल के आईने में है तस्वीर यार ॥
यूं जरा गर्दन झुकाई देखली ॥ ४७६ ॥,
राम भजनका शोच क्या, करत्यां होयसो होय॥
दादू राम सम्हालिये, फिर पुछिये ना कोय॥ ४७७॥
दादू नीका नाम है, आपकहे समझाय ॥
और आरंभ सब छोडके,हरिजी सों चितलाय४७८॥
श्वासे श्वास सम्हालतो, इक दिन मिल है आय॥
सुमरन रस्ता सहज का,सद्गुरु दिया बताय॥४७९॥
जीवत माटी हो रहो, साईं सन्मुख होय ॥
दादू पहले मर रहो, पाछे मरै सभ कोय ॥ ४८० ॥
जो तोको कांटे बोवे, वाको बो तू फूल ॥

नित्त रोज खबर लेत पाहन में कीडाकी ॥ कहै कबि थारा मल सुमरनका यही फल एक एक घडो जात लाख लाख हीराकी ॥ १५१ ॥ परिपूरण पाप के कारण ते भगवंत कथा न रुचे जिनको ॥ तिन एकक नारि बुलाय लई नचवावतहैं दिन को रिन को ॥ मृदंग कहै धिग है धिग है मंजीर कहै किनको किनको ॥ तब हाथ उठायके नारि कहै इनको इनको इनको इनको ॥ १५२ ॥ संतन की गहो रीत त्यागो जग की प्रतीत औसर है यही मीत बिलम को चुकाइये। निशिदिन कर संत संग जगत प्रीति करो भंग रामजू सों लाय रंग आन नहीं जाइये ॥ आनगियां सुख नाहिं समझ देख हृदय माहिं भला दाँव बन्यो आय बादना गँवाइये ॥ प्रभुध्यान हिये धार सकल आश को बिसार संतन मिल गहो सार बेग मुक्ति पाइये ॥ १५३ ॥

सवैया ॥ यह मन भूल रह्योहै कहा विषया रस में निशि दिवस बहै ॥ है जगझूठ धुवांको सो धाम मृगाजल सोहत प्यास चहै ॥ धावत धावत धाय मरो श्रमही इक केवल हाथ रहै ॥ चेत अजों ममता तजके समता सुख आनंद सिंधु लहै ॥ १५४ ॥ माता पिता हित बंधु सगे सुत नारि सबै अरु चाकर चेरे ॥ त हित मान रह्यो इनसों निशि द्योस भ्रमै जिमि भौंरके बेरे॥ इनके दुखते दुखपावतहै सो तो हैं सभयों हित स्वारथ केरे ॥ जोवत जारतहैं तोहि तात मुये पुनि जारन हार हैं तेरे॥ १५५ ॥ छोडके आश सभी

दास मलूका यों कहैं, सभके दाता राम ॥४९२॥
भोजन छादन की नहीं, शोच करैं हरिदास ॥
विश्व भरण प्रभु करत हैं, सोक्यों रहैं निरास ॥४९३
पुनि श्रीमुख गीताविषे, भाष्यो अर्जुन पास ॥
योग क्षेम सभ हौं करों, जिनको मेरी आश ॥ ४९४॥
गिरह गांठ नाहिं बांधते, जब देवे तब खाहिं ॥
गोबिंद तिनके पाछे फिरें, मत भूखे रहजाहिं ॥४९५॥

कवित्त ॥ दाताऊ महीप मांधाताऊ दिलीप जैसे जाके यश अजहूं लौं द्वीप द्वीप छाए हैं ॥ बलि जैसो बलवानको भयो जहान बीच रावण समानको प्रतापी जग जाए हैं ॥ बानकी कलान में सुजान द्रोण पारथसे जाके गुण दीनदयालु भारतमें गाए हैं ॥ कैसे कैसे शूर रचे चातुरी बिरंचि जूने फेर चकचूर कर धूरमें मिलाए हैं ॥ ९४९ ॥ चले गए छांड हरणाक्ष हिरण्यकशिपु जैसे बली जैसे बांधे पातालमें चले गये ॥ चलेगये रावण कुंभकर्ण महायोधा केते नरेश मारे धूर में रले गए ॥ रले गये जरासन्ध शिशुपाल जैसे दुर्योधन बीच गर्वके गले गए ॥ गले गए केते एते असुर केते जमीन पर हो हो कर चले गए॥ ९५० । श्वास के भरोसे गढ मासमें निवास लीयो आश मन माहिं राखी मानन शरीराकी ॥ बडे बडे शूर वीर देख छोड गए मूरख रहीना निशानी शाह अरु वजीरां की ॥ भजरे निरंजन दुखभंजन कुल आलमः

रसोंहँदे चीरे ॥ चबावें पान के बीडे॥तिन्हां को खा गए कीडे॥ जिन्हां घर रेशमी बसते ॥ तिन्हां पर बैठ कर हँसते ॥ सो देखे खाक में रलते ॥ जिन्हां घर पालकी घोडे ॥ सोहैं तन मखमली जोडे ॥ सोई मुख मौत ने तोडे ॥ जिन्हांघर झूलते हाथी ॥ हजारों लोग थे साथी ॥ तिन्हां को खा गई माटी ॥ जो इतना गर्व नहिं करना ॥ कि एह जीउ तेल में तलना ॥ वलीकहे फिर नहीं मिलना ॥ ९६० ॥

राग जंगला ॥ इस दुनिया पररोज मुसाफर नित उठ बाग बहार नहीं ॥ काची कंध बालू का गारा तिस पर महल उसार नहीं ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा भीर परी कोइ यार नहीं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवन दूसरी बार नहीं ॥ ९६१ ॥

राग भैरवी ॥ याद करेगा इस जीवन नूं भला मुसाफर बंदे ॥ आयासी कछु लाहे कारण रुँझगिया केहडे धंधे॥ भवसागर तैनूं तरना पौसी पाप पुण्य घर कंधे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा जन्म जन्म के अंधे ॥ कहत कबीर सोई पार उतर गए हरि हर नाम जपंदे ॥ ९६२ ॥

राग परज ॥ बात चलन दी करहो जग रहना नाहीं॥ खाय खुराकां पहिन पुशाकां जमदा बकरा पलहो ॥ गंगा जावें गोदावरी न्हावें अजे न समझें खलहो ॥ उमर तेरी ऐवें पई जांदी घडी घडी पल पल हो ॥ कहै हुसैन फकीर साईंदा भय साहिब दा कर हो ॥ ९६३ ॥

जग की हिय में सुख शांति को बास करो ॥ यह जीवनहूं की तजो सरधा जग जीवत ही बिन मीच मरो ॥ अबलों जु भई सु भई अबहूँ चित चेत विवेक की ओर ढरो ॥ तुम काके हो कोहो कहां हो कछू अपनी सुधि आपन आप धरो ॥ १५६ ॥ काल निहारत काल सदा सभ लोग बिचारत ही पचहारैं ॥ कोऊ बच्यो न कहूं कितहूं जलहूं थल व्योम पताल बिचारैं ॥ है छिन एक को पेखनो सोतू तहां कहँ कौन की आश निहारैं ॥ यामें कहा तोहिं अर्थ मिलै यों बिनर्थहिं मानुष जन्म निवारैं ॥ १५७ ॥ तू ममता मद माहिं पग्यो रचके पचके बहु धाम सँवारैं ॥ लोभ अधीन जो पाप को मूल रत्यो चित भूल न आप सँभारैं ॥ काल रत्यो ढिग श्वास गिनै छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारैं ॥ नंद के नंदहिं क्यों नभजै जो सदा अपने जन को प्रतिपारैं १५८ ॥ संत सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर स्वेत भये हैं ॥ तू ममता अजहूं नहिं छांडत मौत ने आय सँदेश दिये हैं ॥ आज कै काल्ह चलें उठ मूरख तेरही देखतकेते गये हैं ॥ सुंदर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहेहैं १५९ ॥

राग प्रभाती ॥ तु खुश भर नींद क्यों सोया ॥ नगारा कूच का होया ॥ नगारा मौत का बाजे ॥ ज्यों सामन में घुला गाजे ॥ जिन्हां संग नेह सी तेरा ॥ तिन्हां किया खाक में डेरा ॥ न आए फेर कर फेरा ॥ कहां गए मुल्क के वाली ॥ जो चलते हंस की चाली ॥ गए दरबार कर खाली ॥ जिन्हां शि-

डफदी सुनलै हाल नमानीदा॥ शाहहुसैन खडा नित गाजे काल नगारा तेरे शिरपर बाजे चार दिहाडे गोरीं बासा आखर कूच बपारीदा॥ १६७॥

राग प्रभाती॥ रहुवे बीबा रहुवे अडया बोलनदी नहीं जावे अडया॥ जे शिर कट्ट लवे धड नालों पाछे कदम नदेवीं हालों तदभी कुझ न कहु वे अडया॥ जे तैं हक दा राह पछाता दम नामा रीं रहीं चुपाता गरदन कट्ठ ना बहु वे अडया॥ गोर नमानी दियां छमकां केहीयां हू हवा बिच रह गेयां सैयां कहिंदा शाहहुसैन वे अडया॥१६८॥

राग जंगला॥ हँसके गुजार दम साईं नाल लावीं नेह देवीं ते हँढावीं खावीं कित कारण संचना॥ जोडे सीबथेरे दंम आए भी न किसे कंम लाखां ते हजारां वालेनंगी पैरीं चल्लना सीधे मारग पाउँ राखचुभे नहीं कंडाकाखविंगे मारग पाउँ न धरियेहोवे अंग भंगना॥ शाह बादशाहझूरे किसेदे न कंम पूरे बुल्हेदी बलाय झूरे आखिर मर वंजना॥१६९॥ लाज मूल न आइया नाम धरायो फकीर॥ रातीं रातीं बदीयां करेंदा दिन नूसदावें पीर॥ अपना भारा चाय न सकदा लोकां बंधावें धीर॥ कुडम कुटंब दी फाही फस्या गल बिच पाउईया लीर॥ दर गह लेखा मंगीये हुसैना रोवेंगा नीरोनोर॥१७०॥

राग धनाश्री॥ मेरी आख दिया हो लाज मूल न आइया यार॥ मेरो मेरो रावण कर गए शाह सिकंदर दारा॥ बा-

राग प्रभाती ॥ अबतो जाग मुसाफर प्यारे रैनि घटी लटके सभ तारे ॥ आवागौन सराईं डेरे साथ तयार मुसाफर तेरे अजे न सुनदा कूच नगारे ॥ करलै आज करनदी वेला ॥ बहुरि नहोसी आवन तेरा साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥ आपो आपने लाहे दौडी क्या सरधन क्या निरधन बौरी लाहा नाम तूं लेहु संभारे ॥ दुल्ला शौह दी पैरीं परिये गफलत छोड हीला कछु करिये मिर्ग जतन बिन खेत उजारे ॥ १६४ ॥ किन्हीं राहीं जानगे मुसाफर कल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदे दूर ठिकाने खरच न बन्हदे पल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदी की अशनाई अज आए कल्हचल्ले ॥ १६५ ॥ बैठरे मन सबर के हुजरे ॥ जैसी जैसी आवै तैसी तैसी गुजरे ॥ शांत बहारी हत्थ गह लीजे धूर खुदी दी दूर करीजे तब अंधेरे को सभ कछु सुझरे ॥ वृथा जन्म गँवायो रे प्रानी कभूं न सुमरयो अंतर्यामी उमर तेरी ऐवें पैया उजरे ॥ शिर पर मन्न लईं सभ रजाईं हर दम आखीं साईं साईं सभही मुशक्कतां पावेंगा मुजरे ॥ जे मन जांदा मोड ल्यावें तां रजादाशाह कहावें अपना मरम तू आपही बुझरे ॥ १६६ ॥

राग बडहंस॥अरी अरी एरी माई डरदी तेरयां नकीबांढेकोलों रव्वा ओल्हे छिपके मैं खलोनीहां ॥मैली टोपी साबुन थोडा मल मल धोंदीयां पीया तेरा जोडा दागांदा कोई ओडक नाहीं नाली धोंदीयां नाले मैं रौनीहां ॥ दुःखांसूलां ने कीता एका नाकोई साहुरा नाकोई पेका दर तेरे ते पई त-

पीपी जो करते जी दिया ॥ मतलूब हासिल ना हुआ रं
रो मुआ तो क्या हुआ ॥ १७३॥

राग जंगला ॥ क्यों वे बीबा मान भरया रमता जोगी
गुल चमन दुनिया के पर इक लहिजे का मुकाम है ॥ करता
है मेरी मेरी रे यां तेरा कौन है ॥ टुक दम का है बसेरा दु-
निया आवागौन है ॥ भाई बंधु बरादरी फरजिंद यार मन ॥
सभ सुखके हैं समीपी रे तूं समझ यार मन ॥ रावण सरीखे
होगए जिनके गाढे निशान ॥ इक पल में मार डारे तेरा
क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तू समझ
यार मन ॥ इक राम नाम सांचा है और झूठा सभ जत-
न ॥ १७४ ॥ राम रंग लागा हरी रंग लागा ॥ मेरे मन का
संसा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पीया
मुखों न बोले ॥ जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर
खोले ॥ साहब बोले तो अंतर खोले सेजडियां सुख दीजे ॥
रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके ॥ साँचे मन
ते साहब नेडे झूठे मन ते भागा ॥ हरि जन हरिजी को
ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुल की
मिरजादा तोड दियो जैसे धागा ॥ कहत कबीर सुनो भाई
साधो भाग हमारा जागा ॥ १७५ ॥

राग काफी ॥ नाजानूं मेरा राम कैसा है ॥ मुल्लां हो के
बांग जो देवें क्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडी के पग नेवर
बाजे सोभी साहिब सुनता है ॥ माला पहरी तिलक लगाया

जीगर दी बाजी वांगूं रच्या कूड पसारा॥ मेरी मेरी कैरो कर गए दुर्योधन के भाई॥ सोलां जोजन छत्र झुलत सी देहो गिर्झन खाई॥ मेरे पुत्र मेरी यां धीयां मेरा कुटुंब मेरे भाई॥ जिन्हां दी खातर पाप कमावें तिन्हां ठौर न काई॥ एह दुनिया है चार दिहाडे नाकर मन दा भाणा॥ कहै हुसैन फकीर साईं दा नंगी पैरीं जाणा॥ ९७१॥

राग भैरवी॥ माटी खुदी करेंदी यार॥माटी जोडा माटी घोडा माटी दा असवार॥ माटी माटी नूं मारन लागी माटी दे हथियार॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार॥ माटी माटी नूं देखन आई माटीदी बहार॥हंस खेल फिरमाटी होईं पौंदी पां-व पसार॥बुल्लाशाह बुझारत बुझी लाह सिरों भों मार९७२

गजल॥ जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तोक्या हुआ॥ जिन इश्क में शिर ना दिया जुग जुग जिया तो क्या हुआ॥मशहूर हूआ पंथ में साबित न कीया आपको॥आलि-म और फाजिल बना दाना हुआ तो क्या हुआ॥ दिल में द-रद नहिं पिया को बैठा मुशाइख होय के॥ दिल का हरट फिरता नहीं तसबी फिरी तो क्या हुआ॥ औरां नसीह-त तूं करें आप अमल करता नहीं॥ दिल का कुफर टूटा नहीं हाजी हुआ तो क्या हुआ॥ जब इश्क के दरियाय में गर्काब तू होता नहीं॥ गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ॥ बलीराम पुकारत है यही

प्रेत प्रेत कर भागी ॥ याबिधि को ब्योहार बन्योहै जासों ने
ह लगायो ॥ अंतकाल नानक बिन हरिजी कोऊ काम न
आयो ॥ १७९ ॥

राग सोरठ ॥ मनरे प्रभुको शरण बिचारो ॥ जिहिं सु
मरत गणिका सी उधरी ताको यश उर धारो ॥ अटल भये
ध्रुव जाके सुमरन अरु निर्भय पद पाया ॥ दुख हरता या त्रि
धि को स्वामी तैं काहे बिसराया ॥ जबहीं शरण गही किरप
निधि गज ग्राह ते छूटा ॥ महिमा नाम कहां लग बरणों राम
कहत बंधन तिहिं टूटा ॥ अजामील पापी जग जाने निमिष
माहिं निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामणितैं भी उतरस
पारा ॥ १८० ॥ या जग मीत न देख्यो कोई ॥ सकल जगत
अपने सुख लाग्यो दुख में संग न होई ॥ दारा मीत पूत संबं
धी सगरे धन सों लागे ॥ जबहीं निरधन देख्यो नर को संग
छांड सभ भागे ॥ कहा कहूं या मन बौरे को इनसों नेह ल
गाया ॥ दीनानाथ सकल भय भंजन यश ताको बिसराया ॥
श्वान पूंछ ज्यों भयो न सूधो बहुत जतन मैं कीनों ॥ नानक
लाज बिरद की राखो नाम तिहारो लीनो ॥ १८१ ॥

राग बरवा ॥ हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्यो
जात ॥ जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात ॥ गये
श्वास न बहुडियो तेरी पलक लखियो न जात ॥ जूए जुहारी
धन हारयो मन खेलने दे चाउ ॥ खेड कर पछोतांयगारे त
हार घर क्यों जात ॥ बनजारे ने बैल जैसे टांडा लदियो जाय

लंबीयां जटां बढाता है ॥ अंतर तेरे कुफर कटारी यूं नहिं साहिब मिलता है ॥ कौडी कौडी माया जोडो जोड जमीं पर धरता है ॥ चलने की जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है ॥ हीरा होवे परख दिखावां कौडी परखन कैसा है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि जैसे को तैसा है ॥ १७६ ॥

राग सोरठ ॥ उपजे निपजे निपज समाई ॥ नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा ॥ अंत की बार नहीं कछु तेरा ॥ अनेक जतन कर कायां पाली ॥ मरतीवेर अगन संग जाली ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ ओ तनु जलै काठ के संगा ॥ कहत कबीर सुनोरे गुनिया ॥ बिनशेगो रूप देखेगी दुनिया ॥ १७७ ॥

राग होरी ॥ तन मन रंग बनाय पिया संग खेलीये होरी ॥ तार बनाऊं जिया की तन का करूंगी तंबूरा ॥ खेलूं अपने श्याम सों सभ कारज पूर ॥ शीशी भरी गुलाब की हत्थ लेहों पिचकारी ॥ छिरकूं अपने श्याम पै सभ देखन हारी ॥ चोआ चंदन मेल के हत्थ लीयोजो अंबीरा ॥ सभ संतन मिल खेल्यो संग दास कबीरा ॥ १७८ ॥

राग धनाश्री ॥ प्रीतम जान लेहु मन माहीं ॥ अपने सुख से सभ जग बांध्यो को काहू को नाहीं ॥ सुख में आय सभी मिल बैठत रहत चहूं दिशि घेरे ॥ विपति परो सभही संग छांडत कोऊ न आवत नेरे ॥ घर की नारि बहुत हित जासों सदा रहत संग लागी ॥ जबहीं हंस तजी यह काया

राग कालिंगडा ॥ क्यादेख दिवाना हूआ रे ॥ माया बनी सार की सूली नारी नरक का कूआ रे ॥ हाड चाम नाडी को पिंजर तामें मनुआ सूआ रे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा तिन में पच पच मूआ रे ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हार चल्यो जग जूआ रे ॥ १८५ ॥

राग जंगला ॥ पीले रे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेम हरी रस कारे ॥ पाप पुण्य दोऊ भुगतन आए कौन तेरा है त किसका रे ॥ जो दम जीवे हरि के गुण गाले धन योबन स्वपना निशि कारे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारी वश कारे ॥ वृद्ध भयो कफ बाई ने घेऱ्यो खाट पडा नहिं जाय मसका रे ॥ नाभि कमल में है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशु का रे॥ बिन सतगुरु ऐसे दुख पावें जैसे मृगा फिरे बनका रे ॥ लाख चुरासी उबऱ्यो चाहे छोड कामिनीका चसका रे॥ प्रेम मगन चरणदास कहत है नख शिख रूप भऱ्यो बिषका रे॥ १८६ ॥

राग कान्हरा॥ दिन नीके बीते जाते हैं ॥ सुमरन कर श्री रामनाम तज बिषय भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो पाते हैं ॥ कौन तुम्हारा कुटुंब परिवारा किसके हो यां कौन तुम्हारा किसके बल हरिनाम बिसारा सभ जीते जीके नाते हैं ॥ लाख चुरासी भ्रमके आया बडे भाग्य मानुष तनु पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिर पीछे पछताते हैं॥जो तू लागे बिषय बिलासा मूर

लाहे कारन आयो प्रानी जल्यो मूल गँवाय॥ आछे दिन पाछे गए तैं हरि सों कीयो ना हेत ॥ अब पछतावा क्या करें जब चिडियां चुग गईं खेत॥ काची काया काँच कोरे समझ देखो लोय॥ सगुरे को समझत परत है निगुरा जावे खोय॥ जबलग तेल दीवे में बाती सूझत है सभ कोय॥ जल गया तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर चली शिर फूट गागर परी॥पछतांयगी पनिहार जिउं कर रीत घर क्यों जात ॥फटी सुरनाही फूक निकसी जायसुनी अवधेहि ॥कहे नानक दास प्रभु का तेरी अंत हो जाऊ खेहि॥१८२॥

राग परज॥मन पछतैहै औसर बीते॥दुर्लभ देह पाइ हरि पद भज कम बचन अर हींते॥ सहसबाहु दशबदन आदि नृप बच्यो न काल बलीते॥हम हम कर धन धाम सँवारे अंत चले उठ रीते॥सुत बनितादि जान स्वारथरत ना कर नेह इनहीं ते॥ अंतों तोहिं तजेंगे पामर तूं न तजें अवहीं ते॥ अब नाथहिं अनुराग जाग जड त्याग दुराशा जीते ॥ बुझे न काम अगन तुलसी को बिषय भोग बहु घी ते॥ १८३ ॥

राग भैरवी॥बार बार समझाय रही मैं मान लेरे मन मेरी कही को॥दुख सुख सों बीती सो बीती याद न कर बरबाद वही को॥एक ब्रह्म पूरन सभ जग में छोड कपट की गांठ गही को ॥ जानकीदास सुमर श्री रघुबर गई सो गई अवराख रही को ॥१८४॥

ौज हीसे मिल जावेंगी फिर कछु टंटा है न बखेडा है झग
ा है ना झमेला है ॥ १८८ ॥

राग सोरठ ॥ रेमन समझ ऐसी बात ॥ नदीके
रवाह ज्यों सभ जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अ-
ट पिता बनिता बन्यो आय संघात ॥ बसे संग सराय के
भात को उठ जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूर
 रात ॥ काल सभको खाएगा मन लाय बैठो घात ॥ भ-
न कर गोविंद का सद्गुरु बताई बात ॥ नंदलाल प्रभुजी
ुमर रे मन उतर भौ जलजात ॥ १८९ ॥

राग बिहाग ॥ काहेको बिसारी रे जपाकर माला ॥
मभजन को तुलसी की माला ओढन को मृगछाला ॥ खा-
पान को बासी जो टुकरा रहने को कुंज तमाला ॥ धन
ोबन मद में मत भूले जम कर है बेहाला ॥ निशिदिन रट
रि नाम छिनहिं छिन रहो प्रेम मतवाला ॥ कृष्णप्रिया
वन हितू न जग में सभ झूठा जंजाला ॥ १९० ॥

राग धनाश्री ॥ केते दिन हरि सुमरन बिन खोए ॥
रनिंदा रसना के रस से अपने करम बिगोए ॥ तेल
ठगाय कियो तनु मरदन वस्तर मल मल धोए ॥ तिलक ल-
ाय चले बन स्वामी विषयनके संग जोए ॥ काल बली ते
भ जग कांप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोए ॥ सूर अधम की कौ-
 गती है उदर भरे भर सोए ॥ १९१ ॥ सभ दिन गए
वषय के हेत ॥ तीनों पन ऐसेही बीते केश भए शिर श्वेत ॥

ख फँसे मौज की फाँसा क्या देखे श्वासन की आशा गए फे-
र नहिं आते हैं ॥ १८७ ॥

राग तिलंग ॥ यह जग दर्शन मेला है ॥ जे तूं आया है ईहां पै कछु देख भाल मिल जुल चल फिर हंस बोल बतादे लेखा भी किस कारन ते सब को इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है ॥ ईहां तेरी जिनस जमा है और कोई नहीं पराया है ॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना है सो जलदी कर ॥ टुक देर तोहि कोई दम की है और जियादा नहीं झमेला है ॥ इस मंदर बीच निरष तूं क्या रंग बरंगी मूरत है हिरदे से तनक परख तूं इस मूरत में क्या सूरत है ॥ धन उस कारीगर को कहिये जिन अपने हाथ बनाई है गुन ज्ञान जोबन छबि रूप रंग में एक ही एक नवेला है ॥ यह जो तूं देखें आपस में ईहां एक से एक का है नाता कोई बाप बना कोई बेटा कोई चचा भतीजा कहलाता कोई सांयां आपको जाने है कोई दास आपको माने है कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरु कोई चेला है ॥ अबलो तब ईहां है सभको सैरें हैं बाग बहारें हैं मन आनंद और चैनें हैं करते हैं लहरें मारें हैं पर सुख के सभ यह हैं सगरे रे यह देखन हारे हैं आजही के कल आप आप को चल जाएगा एक इकेला है ॥ जिस दम यह अपना अपना है ईहां से रस्ता गह जावेंगे यह दोस्ती निसबत नाते सभ ईहां के ईहां रहजावेंगे यह बूंदें जिस दरिया की हैं सभ

परयो नाहिं शीश हूं नवाय के॥ कहै हरिदास तोहिं लाज हूं न आवे नेक जनम गँवायो न कमायो कछु आय के॥१९५

राग जैजैवंती॥ रच के सँवारे नाहिं अंग अंग श्यामा श्याम एरी धिक्कार और नाना करम कीवे पै॥ पाँयन को धोय निज करते न पान कियो आली अंगार परे शीतलपय पीवे पै॥ बिचरे ना बृंदाबन कुंजन लतान तरे गाज गिरे अन्य फुलवारी सुख लीवे पै॥ ललित किशोरी बीते बरष अनेक दृग देखे नाहिं प्राण प्यारे छार ऐसे जीवे पै१९६

राग सिंधु काफी॥ रटत रटत राधा मनमोहन रसना ना फलका झलकाई॥ लिखत लिखत लीला रस द्वंद्वज अँगुरिन पोर जो ना घिसजाई॥ ललित किशोरी धिग यह देही ऐसो जीवन जन्म बृथाई॥ युगल बिहारी को मग जोवत जो न भई नयनन में झांई॥१९७॥

राग देस॥ ऐसी चतुरता पर छार॥ वृथा बाद विवाद जित तित हित न नंदकुमार॥ मात पित सुत भ्रात मर गए और सकल परिवार॥ जानत है हम हूं मरेंगे तऊ न तजत बिकार॥काम क्रोध और लोभ ब्याप्यो मोह मद हंकार॥ सूर प्रभु की शरण गहु सतसंग बारंबार॥ १९८॥

राग कालिंगडा॥ मूरख छांड वृथा अभिमान॥ औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिन को महमान॥ भूप अनेक भए पृथिवी पर रूप तेज बलवान॥ कौन बच्यो या काल ब्याल ते मिट गये नाम निशान॥ धवल धाम धन

रूंध्यो श्वास मुख बैन न आवत चंद्र ग्रस्यो जिमि केत ॥ कर तज गंगोदक पियत कूप जल हरि तज पूजत प्रेत ॥ प्रमाद गोविंद बिसाऱ्यो बूड्यो सभन समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥ १९२ ॥

राग सारंग ॥ तज मन हरि बिमुखन को संग ॥ जिनके संग कुबुद्धि ऊपजे परत भजन में भंग ॥ काम क्रोध मंद लोभ मोह में निशि दिन रहत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराए बिष नहिं तजत भुवंग ॥ कागहिं कहा कपूर खवाए श्वान न्हवाए गंग ॥ खर को कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो करत निखंग॥ सूरदास खल कारी कामर चढत न दूजो रंग॥१९३

राग देस ॥ राधे कृष्णा क्यों नहिं बोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुष देही बंदे फेर नहीं पाओगे ॥ त्रिया और कुटंबकी खातर पच पच के कमाओगे ॥ माया तेरे संग न चाले भरम गमाओगे ॥ आवेंगे वे जमके दूत पकर ले जाएं गे ॥ तुमसे मांगेंगे हिसाव प्यारे क्या बतलाओगे ॥ सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटाओगे ॥ १९४॥

राग बिभास ॥ गायो न गोपाल मन लाय के निवार लाज पायो न प्रसाद साधू मंडली में जाय के ॥ धायो न धमक वृंदाविपिन की कुंजन में रह्यो न शरण जाय बिठलेश राय के ॥ नाथ जू न देख छक्यो छिन हूं छबीली छबि सिंह पोर

लन अधिक रसाल ॥ कुंज भवन में बैठ दोऊ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नारायण या छबि को निरखत पुनि पुनि होत निहाल१००१जैजै युगल किशोर बिहारी ॥ जै निकुंज में अविचल जोरी जै मनमोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद्र चकोर परस्पर जै छबि सिंधुरूप मनुहारी ॥ जै ब्रज जीवन रसिक शिरोमणि महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जै भक्तन-वश रहत निरंतर नाना चरित करत सुखकारी ॥ भक्तराम निशि दिन यह जाचत चरण कमल राखौं उरधारी१००२॥

राग भैरव ॥ यह रस रीत प्रिया प्रीतम को दिव्य दृष्टि जल जैसेरी ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासिक प्राप्त सबनको तैसेरी ॥ कदली खंभ पपोहा सीपी स्वाति बूंद जल जैसेरी भगवत् कछू बिषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसेरी१००३॥

दोहा॥संतन को यह परम धन,सभ ग्रंथन को सार॥ भक्तन को सर्वस्व यह,रसिकन प्राण अधार ॥४९६॥सादर जो जन याहि को, पढैं नित्त कर नेम ॥ निश्चयते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम॥४९७॥हरि चरणन दृढ प्रेम जिहिं, धन्य धन्य ते धन्य ॥ भक्तराम को देहिं यह, सकल होय प्रसन्य४९८॥ पढत सुनत याके भयो, जो मन अधिक हुलास॥ मेरीहूं सुध लीजियो, जान आपनो दास४९९ जै वृंदाबनचंद्रकी, जैजैजै सुखरास॥निज चरणनमें राखिये,एक तुम्हारी आस ५००॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तथा भक्तचिंतामणौ अनुराग वैराग्य संपादने सप्तमभागाः समाप्ताः इति रागरत्नाकर सम्पूर्ण

गज रथ सेना नारी चंद्र समान ॥ अंत समय सभही को तज कर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयन में जाबिधि मर्कट श्वान॥ छिन भर बैठ न सुमरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अंत जिन भटके मेरो कह्यो अब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुँवर सों बेगहिं कर पहचान॥ ९९९ ॥ सभदिन होत न एक समान ॥ इक दिन राजा हरीचंद के गृह संपति मेरु समान ॥ इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अंबर हरत मशान ॥ इक दिन दूलह बनत बराती चहुँ दिशि घुडत निशान ॥ इक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ इक दिन सीता रुदन करत है महा विपिन उद्यान ॥ इक दिन रामचंद्र मिल दोऊ बिचरत पुष्प बिमान ॥इक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान ॥ इक दिन द्रौपदी नगन होत है चीर दुशासन तान ॥ प्रगटत है पूरब की करनी तज मन शोच अजान ॥ सूरदास गुण कहां लग बरणों बिधि के अंक प्रमान १००० भज मन श्रीराधा गोपाल ॥ गोल कपोल अधर बिंवाफल लोचन परम बिशाल ॥ शुक नाशा भौंह दूज चंद सम अति सुंदर हैं भाल ॥ मुकुट चंद्रिका शीश लसत हैं घुंघरारे वर बाल ॥ रतन जडित कुंडल कर कंकन गल मोतियन की माल॥ पग नूपुर मणि खचत बजत जब चलत हंस गति चाल ॥ गौर श्याम तनु बसन अमोलक कर महिंदी सों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बो-

कहैदेवसाखि॥एनारीहिंडोलकी,ललितविलावलराखि १५॥ देशीनटअरुकान्हरो,केदारोकामोद ॥ दीपककीप्यारीसबै,महाप्रेमपरमोद ॥१६॥ धनाशरीआसावरी,मारूवहुरिवसंत॥ श्रीरागकीरागनी,मालसरीहैअंत।१७। भोपालीअरुगूजरी, देसकारमलार॥टंकवियोगनिकामिनी, मेघरागकीनार १८

अथषट्रागनकेगुणवर्णनं ॥ भैरोंसुरसुरतागहै,कोल्हूचलैंजुधाय ॥ मालकोसजबजानिये,पाहनपघरबहाय॥१९॥ चलैहिंडोलोआपते,सुनतरागहिंडोल ॥ वरसैजलघनधारअति,मेघरागकेबोल॥२०॥ श्रीरागकेसुरसुनै,सूखोवृक्षहराय॥ दीपकदीयाबरिउठै,जोकोउजानैगाय॥ २१ ॥

अथरागकासमयवर्णनं॥ दोहा ॥ पिछलेपहरेनिशिसमै,भैरोंरागवखान॥ मालकोशतबगाइये,जवसबनिकसैभान ॥ २२॥ एकपहरजबदिनचढै,करैरागहिंडोल॥ ठीकदुपहरीकेसमै,दीपककेसुरबोल ॥ २३ ॥ श्रीरागचौथेपहर,जौलौंदिनअँथवाय ॥ मेघरागजबहीभलो,तबैमेहबरसाय ॥२४॥ फागुनमेंएरागसब,जागतआठौयाम ॥वसंतऋतुमेंनिशिसमै,एकयामविश्राम ॥२५॥ भैरोंशरदकुसकशिशिर,अरुहिंडोलवसंत॥दीपकग्रीषमहेमश्री,मेघसुपावसअंत ॥२६ ॥

अथबाजेनकेभेदवर्णनं॥ जगमेंसबसुरताकहै,बाजेसाढेतीन ॥ खालतारअरुफूंकपुनि,अरधतालसुरहीन॥२७॥खालनगारेढोलडफ,औरपखावजजानि।तारतमूरावीनहै,बहुरिरवाबबखानि ॥२८॥ फूंकनफीरीबाँसुरी,सुरनाईकरनाइ ॥ तालमजीराझाँझसब,बाजेदियेबताय॥ २९ ॥ आधोवाजेकह

अथ हियहुलास लिख्यते॥

दोहा॥ प्रथमहिंताकोसुमिरिये,जिनदीन्होगुणज्ञान॥ज्ञानीगुणगावैंसदा,ध्यानीधरैंजुध्यान॥ १ ॥ अंबरथाप्योथंभविन,धरनीअधरधराय॥ मनुषरूपह्वैअवतरचो,देखतकलिकोभाय॥ २॥ वादिनतीनोंलोकमें,दूजानाहींकोय॥ मनमेंनिजकरिदेखिये,होनीहोयसुहोय॥ ३॥पुनिकछुवरणौंरीतिरस,रसहैजगकोजीव॥ रसनारसकोजसकहै,सुनिसुखउपजैहीव ४॥ हियहुलासयाग्रंथको, राख्योनामविचार, यामेंसगरेरागके, सवैरूपशृंगार॥५॥आदिनादअनहदभयो,तातेउपज्योवेद॥ पुनिपायोवावेदते,सकलसृष्टिकोभेद ६॥प्रानषरेषट्रागसुनितवउपज्योवैराग॥ वारेतरुनैवृद्धको, तातेभावतराग ॥७॥जगकोधीरजरागहै,रागसंगकीखान॥ मनमंजनइहरागहै,रागप्रेमकेप्रान॥८॥ रागअभूषणरूपको,रूपरागकोभोग ॥ याहीते सबकहतहैं,रागरंगसंयोग ॥९॥रागहरैसबरोगको,रागचहैरसभोग ॥ विरहीवूझैरागको,उपजैविरह बियोग॥१०॥

अथषट्रागवर्णनं। दोहा। रागप्रथमभैरोकह्यो,मालकोसपुनिजानि॥ हिंडोलरागतीजोकहत,दीपकरागवखानि ११ ॥ ११ ॥ श्रीरागकविकहतहैं,मेघरागपुनिसार॥ षट्रागनकेनामए,कहैंभेदविस्तार॥ १२॥

अथरागनकीरागनी वर्णनं॥ दोहा॥भैरोंकीधुनिभैरवी,वंगालीवैरारि॥ मधुमाधवअरुसिंधवी,पाँचौंविरहनिनारि॥ १३॥ टोडीगौरीगुनकली,खंभायचपहचानि॥ औरकुकविकोकहतहैं,मालकोसकीजानि॥१४॥रामकलीपटमंजरी,और

धरै,करकंचनशृंगार॥शीशकेशसोहतछुटे,श्वेतवसनवैरार ३९
अथ।मधुमाधवीस्वरूप॥दोहा॥ कंचनतनुलोचनकमल, नागरिमहाअनूप ॥पियपैवैठीहँसतहै,मधुमाधवीस्वरूप४०
अ×थसिंधवीरागनीस्वरूपदोहा ।कानतफूलदुपहरिया, पहरैवस्तरलाल ॥क्रोधवंततिरशूलकर,रूपसिंधवीवाल४१॥
अथमालकोसराग×कोस्वरूप॥मालकोसलीलेवसन,श्वेतछरोलियेहाथ॥मुतियनकीमालागरे,सकलसखीहैंसाथ ४२
अथकबित्त ॥ कौसककोअपमानभलोतनुगौरविराजतहैपटलीले॥ मालगरेकरश्वेतछरीरसप्रेमछक्योछविछैलछवोले ॥ कामिनिकेमनमोहतहैसभकेमनभावतरूपरसीले ॥ भोरभयेउठिवैठ्योहीभावतनागरनायकरंगरँगीले ॥ ४३ ॥
अथमालकोसकीरागनीटोडीकोस्वरूप॥दोहा॥ टोडीकरवेनीगहे,गावतपियकेहेत॥चंचलछविमृगमोहनी,पहरेवस्तरश्वेत ॥ ४४
गौरीरागनीकोस्वरूप ॥दोहा ॥ गौरीछविअतिसांवरी, अंवकूपधरिकान ॥तृषावंतनितिकामकी,गावतमीठीतान४५
अथगुनकलीरागनीकोस्वरूप ।दोहा । छुटेकेशशिरगुनकली,बैठीपियकेपासि॥नीचीग्रीवाकरिरही,अतिहोचित्तउदास
खंभायचरागनीकोस्वरूप॥ दोहा॥खंभायचगोरेवदन,गावतकोकिलवैन।अतिआतुरचातुरखरी,कामवतीदिनरैन
अथककुविरागनीस्वरूप॥दोहा ॥ ककुविनायकानिशिस

! सुर ॥ ७ ॥ × ॥सुर ॥ ७॥

तहैं,कठतारीसुरहीन ॥ भेदकहेबाजेनके,गुणिजनजेपरवीन ॥

अथअलापकरनकीयुक्ति ॥ बैठेंआसनऊंटके,तोशुध होयअलाप ॥ चलतेटेढसुरभैरे, जानोमहाकलाप ॥ ३१ ॥

अथस्वरनिमित्तसरस्वतीचूरण ॥ दोहा ॥शाखाहूलीमुलहटी,ब्राह्मीवासाआनि।हरडकठवचबावची,सैंधाजीराजानि ॥ ३२ ॥ भंग्रेहअजमोदपुनि,बहुरिशतावरिलेहु ॥ समकरि पीसैछानिकरि,प्रातसुमुखमेंदेहु।३३।एकहथेलीभरिसदा,सा धदिनचालीस ॥ सुरसुंदरहोबुद्धिवहु,विधिविद्याजगदीस ३४

इति हियहुलास सम्पूर्ण॥

अथरागमालालिख्यते ॥

अथभैरोंरागकोस्वरूपवर्णनं ॥दोहा ॥भैरोंशिवछवि शिरजटा,श्वेतबसनत्रियनैन ॥ मुंडनकीमालागरे,सिंहरूपसुखदैन ॥ ३५॥ कबित्त ॥ शिवमूरतिभैरोंकोभावबन्योत्रियनैन सुमुंडकीमालगरै ॥ पटश्वेतसबैतनुमेंपहरैहिरदैभगवानको ध्यानधरै ॥ तिरशूलविराजतहैकरमेंसबभामिनोकीमतिलेत हरै॥मुखछारलगीद्युतिदूनीभईचितचाहनमेंछविजातछरै३६

अथभैरोंकीरागनीभैरवीकोस्वरूप ॥ दोहा ॥ शिवपूजतकैलाशपरि,दोऊकरनमेंताल ॥ श्वेतचीरअँगिया अरुन,रूपभैरवीवाल ॥ ३७॥

अथवंगाली*रागनीकोस्वरूप ॥दोहा॥ भस्मपिटारीकर गहे,हाथलियेतिरशूल॥वंगालीव्याकुलभई, गईसबैसुधिभूल

अ!थवैरारीरागनीस्वरूप॥दोहा॥+कदमपुहुपकानन

× सुर ॥ ७ ॥ * सुर ॥ ७ ॥ ! सुर ॥ ७ ॥ + सुर ॥ ७ ॥

दीपकरागकोकबित्त॥दीपककोपरतापवडोचढिवैठ्योगयंदकीपीठिविराजै॥अंवररातेशरीरसबैमुकतानकीमालगरेछविछाजै॥संगसखीसबसोहतहैंतिनमाहिंजोआपगयंदसोंगाजै॥साँवरोरूपअनूपमहाद्युतिदेखतदुःखदिशंतरभाजैं५७

अथदीपकरागकीरागनीदेशीकोस्वरूप॥दोहा॥ देशीकेवस्तरहरे, कामसताईनारि॥ पतिकोटेरजगावती, मिसकरिवारंवार॥५८॥

नटरागनीकोस्वरूप॥दोहा॥अरुनवरनसगरेवसन,नटवासीनटनारि॥ग्रीवापकरेकरनसों,पियतनुरहीनिहारि॥५९

अथरागनीकान्हरोस्वरूप॥दोहा॥शीशपत्रगजदंतको, करनागीतरवारि॥ मोरकंठकेवरनहै,रूपकान्हरोनारि॥६०

रागनीकेदारोस्वरूप॥दोहा॥शीशजटासबतनुलटागरेजनेऊनाग॥ केदारोइहरूपहै,धरैंध्यानवैराग॥६१॥

अथकामोदरागनीकोस्वरूप॥दोहा॥कामवंतकामोदनी,पीतवसनवनदास॥ चहूँओरपियकोतकत,अतिही चित्तउदास॥६२॥

अथश्रीरागकोस्वरूप॥दोहा॥श्रीयरागकेकरकमल,पुहुपरूपपटलाल॥बरसअठारहकोतरुन,गावतकंठरसाल६३

श्रीरागकोकवित्त॥वरसअठारहकोतरुनौमुखदेखतही सबकेमनभावै॥वामसबैवशकीअपनेगुणगायकैभावतेभेद बतावै॥रातौजोवागोविराजतहैकरवारिजफूललियेमुसकावै॥पुहुपकेरूपस्वरूपवन्योसबहीमेंभलोश्रीरागकहावै॥६४

मै,जागीपियकेसंगरतिमानैकेचहनअति,अंगअंगभेरंग४८

अथहिंडोलरागस्वरूप ॥ दोहा॥ पीतवसनहिंडोलके,
हैजुहिंडोलेमाहि।सखीझुलावैंचावसों,गायगायमुसकाहि४९

हिंडोलरागकोकबित्त ॥ कोन्हेवनावमहाछविसुंदरभा
वतेवैठ्योहिंडोलहिंडोलै॥ झूलझुलावतऔरनिहूंसबगावतहै
सखियाँमुखखोलै ॥ गोरेजोगातदिपातबरीद्युतिदामिनिसी
मानौपीतपटोलै ॥ केलिकरैअवलाअलवेलीअलोलसवैरस
कामकिलोलै ॥ ५० ॥

अथहिंडोलरागकीरागनीरामकलीकोस्वरूप॥दोहा॥
रामकलीलीलेवसन,कंचनसीसबदेह॥ प्रियवानीगावतउठी,
पियकेपरमसनेह ॥ ५१ ॥

अथपटमंजरीरागनीस्वरूप॥दोहा॥विरहभरीपटमंजरी,
मनमैलीतनुछीन ॥सखीसीखअतिदेतहै,भईप्रेमआधीन५२

देवसाषिरागनीस्वरूप दोहा ॥ पियकेकरपरकरधरै-
अतिव्याकलमनुकाम॥तनुदुर्वलदेवसाषिहै,महाविरहनीना-
म॥५३॥ ललितरागनीस्वरूप दोहा ॥ ललितगरेमाला-
पुहुप,सुंदरतरुनीजानि॥ गोरीछविविस्तरअरुन,वदनमदन-
कीखानि ॥ ५४ ॥

विलावलरागनिकोस्वरूप॥दोहा॥ कामदेवकोध्यानधरि,
पटतेपटसंगीत॥करतसिँगारविलावलो,लीलेवस्तरप्रीत५५

अथदीपकरागकोस्वरूप ॥ दोहा॥दीपकगजकीपीठपरि,
वैठ्योवागोलाल ॥मुकतमालपहरेगरे,चहूँओररसवाल५६॥

रोवतछूटेकेश ॥ कामदेवकाननलग्यो,इहैदियोउपदेश॥७३
देशकाररागनीकोस्वरूप॥दोहा॥ देशकारकंचनवरण,खे
लतपियकेसंग॥ हियहुलासजोकामको,चढ्योचौगुनोरंग ७४
अथमलाररागनीकोस्वरूप॥दोहा ॥वीनगहैगावतवहुत
रोवतहैजलधार ॥ तनुदुर्वलविरहादही, विरहनिनारिमलार
टंकरागनीकोस्वरूप ॥ दोहा ॥ सेजबिछाईकमलदल,ले-
टिरहीमनमारि।लेतउसासजुसीयसे,टंकवियोगनिनारि ७६
इतिषड्राग तीसरागनीनकेस्वरूपवर्णनं समाप्त ॥

अथ आमेजी राग वर्णन ॥

दोहा॥रागरागनीसबकहे,जैसोजाकीरीति॥अबआमेजी
रागकोसुनौसकलकरिप्रीति ॥ ७७ ॥

छप्पय ॥ देशकारकोपुत्रपासदरशातराजघन॥मंडितमु-
खतंबोलतेजवलगहरगौरतन ॥ श्वेतसरसमिलिवसनकंठम-
णिमालमनोहर॥कंजअक्षशिरछत्रविजनदहुँविदितविजैवर॥
बैठ्योकल्याणसिंहासनहिं,रतनरागसंचारियो॥ पंडितप्रवी-
नपरिजनसहितदिवसअंतउच्चारियो ॥ ७८ ॥

दोहा ॥ तिलकगौडकामोदये,मिलैमिश्रतामान॥इनकेकि
येअलापको,जानौसुधकल्यान ॥ ७९ ॥ तिलकषड्जकामोद-
युत,आलापिनमैहोत॥कामोदकपहलेकल्यो,वहुरिगौडकोसे
त ॥ ८० ॥ इतनेमिलिआलापसों,श्लेससकलसरसाय॥ सुर
उच्चारयोसमुझियो,प्रगटरूपदरशाय ॥८१ ॥संकराभरनस्व-
रूपहै,गौररक्ततनुवास ॥कमलमालशृंगारहै,सुखीरूपहैतास

अथश्रीरागकीरागनीधनाश्रीकोस्वरूप ॥ दोहा ॥ धनासरीरोवतषरी,हिरदैविरहअपार ॥ सबतनुपीरोह्वैरह्यो-निपटविरहनीनारि ॥ ६५ ॥

आसावरीरागनीस्वरूप॥ दोहा॥ चंदनटीकोभालपर,गरे नागकोहार ॥ छविअतिसुंदरसाँवरी,आसावरीकुँवारि ॥६६

अथमारूरागनीकोस्वरूप॥दोहा ॥मारूकेमालागरे,पिये प्रेममधुमात ॥ तरुनीसुंदरसाँवरी,बैठीअतिअरसात ॥६७

वसंतरागनीकोस्वरूप॥ दोहा॥ मोरपंखशिरपरधरे,वसन जुपीतवसंत ॥ काननमौरजुअंबके,चहुँदिशिभौंरभ्रमंत॥६८

मालसरीरागनीकोस्वरूप॥ दोहा ॥ मालसरीदुर्वलबदन सखोहाथपरहाथ॥अंबतरेबैठीरहत,विछरेपियकोसाथ ॥ ६९

अथमेघरागकोस्वरूप॥ दोहा ॥ श्यामबसनहैमेघको,गहै हाथकरवारि।अतिआतुरचातुरखरो,गावतसुरतिविचारि ७०

मेघरागस्वरूपकवित्त।मेघमलारमहाद्युतिसुंदरइंद्रही कीछविआपवन्यौ ॥ पहरैपटश्यामगहैकरवारिजुग्रंथनमेंइ हभाँतिभन्यौ ॥ जैसोजहाँचहियेसोइअंगसुतैसीभाँतितैं-ठीकठन्यौ ॥ कामकोआतुरहैअतिहीतियकेरतिकोचितचा-वघनौ ॥ ७१ ॥

अथमेघरागकीरागनीभोपालीकोस्वरूप ॥ दोहा ॥ भोपालीविरहनिवडी,केशरिगरेचीर ॥ भईविरहकीज्वालतें-पियरोसवैशरीर ॥ ७२ ॥

अथगूजरीरागनीकोस्वरूप॥ दोहा ॥विरहसताईगूजरी,

॥ ८२ ॥ प्रथमरागकेदारमें.मिलैबिलावलआन॥ इनकोमूल अलापसों,शंकरभरनिसुजानि॥८३॥ केदारोईमनमिलै,मि-लैशुद्धकल्यान॥इनकेमिलेअलापसों,रागहमीरँहजान ॥८४ केदारोकल्याणसम,तनकबिलावलभास ॥इनकेकियेअलाप सों,ईमनहोतउजास ॥८५ ॥ सारँगमारूकेमिले,केदारोसम आनि ॥ मिश्रितकरिआलापिये,इहैविहंगमजानि ॥८६॥ तीनिरागतोयेमिलै,फेरिमलारमिलाय।इनकीसमतासोंसही, सोसाँवंतकहाय ८७ जैतसरीसंकरभरन,नटनारायणतुल्य ॥इनकेमिलेविभागसो,रागसरस्वतीतुल्य॥८८।वहुलाआसावरिमिलै,अरुमलारसमभाग॥ कछुकमेलिगंधारको,षड्जजानियोराग ॥ ८९ ॥ प्रथमपूरवीनाटसुध,धनाश्रीसमभाय। समलैभागअलापिये,भीवपलासीआय ॥९०॥ रामकलीपुनिगूजरी,गुनकलीजुगंधार ॥पूरविरागनिमिश्रिता,शक्तिवह्लभासार ॥९१॥ भैरवसुधिआसावरी,अरुगौंडीकोमानि ॥ देवगिरीसंभावले,यौगंधारहिजानि९२बिलावलीवाघेसुरी,नूतबिलावलशुद्ध ॥ बाघेसुरसुरपूरहै,रागसुहासुदबुद्ध ॥ ९३ मिलिधनाशरीकान्हरो,संभागिनिआलाप ॥ सुरउचारसौं जानियौ,बाघेसुरीजुछाप ९४मूलसदेवगिरीगिनौ,नटमलारहैतन॥करिसमानआलापिये,सारँगरागसितून ९५समैजुसारंगकीसुनौ,दिनग्रीषमऋतुपाय।द्वितियामतैपहरलग,गुनीरूदरशाय॥९६॥आसावरीअहीरिमिलि,समभागिनिउच्चारितौलकरोआलापको,सिंधुरागगुनकार ॥भैरवस्मिगूज्जरी.बं

॥ ८२ ॥ प्रथमरागकेदारमें,मिलैबिलावलआन॥ इनकोमूल अलापसों,शंकरभरनिसुजानि॥८३॥ केदारोईमनमिलै,मि-लैशुद्धकल्यान॥इनकेमिलेअलापसों,रागहमीरँहजान ॥८४ केदारोकल्याणसम,तनकबिलावलभास ॥इनकेकियेअलाप सों,ईमनहोतउजास ॥८५ ॥ सारँगमारूकेमिले,केदारोसम आनि ॥ मिश्रितकरिआलापिये,इहैविहंगमजानि ॥८६॥ ती निरागतोयेमिलै,फेरिमलारमिलाय।इनकीसमतासोंसही, सो साँवंतकहाय ८७ जैतसरीसंकरभरन,नटनारायणतुल्य ॥इ नकेमिलेविभागसो,रागसरस्वतीतुल्य॥८८।वहुलाआसाव रिमिलै,अरुमलारसमभाग॥ कछुकमेलिगंधारको,षड्जजा नियोराग ॥ ८९ ॥ प्रथमपूरवीनाटसुध,धनाश्रीसमभाय । समलैभागअलापिये,भीवपलासीआय ॥९०॥ रामकलीपु निगूजरी,गुनकलीजुगंधार ॥पूरविरागनिमिश्रिता,शक्तिवह्न भासार ॥९१॥ भैरवसुधिआसावरी,अरुगौडीकोमानि ॥ं वगिरीसंभावले,यौगंधारहिजानि९२बिलावलीवाघेसुरी,नू बिलावलशुद्ध ॥ बाघेसुरसुरपूरहै,रागसुहासुदबुद्ध ॥ ९३ मिलिधनाश्रीकान्हरो,संभागिनिआलाप ॥ सुरउचारसौ ज निगौ,वाघेसुरीजुछाप ९४मूलसदेवगिरीगिनौ,नटमलारहै न॥करिसमानआलापिये,सारँगरागसितून ९५समैजुसारं कीसुनौ,दिनग्रीषमऋतुपाय।द्वितियपामतैपहरलग,गुनीरू दरशाय॥९६॥आसावरीअहीरिमिलि,समभ[illegible]उचारि तोलकरोआलापको,सिंधुरागगुनकार ॥भैर[illegible]गूजरी.बं